CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment- Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

3.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

उ०
स०

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामुनि आदिकवि श्रीवाल्मीकिप्रणीत

श्रीरामायण महाकाव्य

[सप्तम भाग]

(७)

युद्ध-काण्ड

[पूर्वार्ध]

(हिंदी भाषामें अनुवाद के साथ)

संपादक

पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

अध्यक्ष- स्वाध्याय मण्डल

पारडी (जि० सूरत)

प्रथम आवृत्ति

संवत् २००९, शके १८७४, सन १९५२

मूल्य ४) रु०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

युद्ध-काण्ड

पूर्वार्ध

युद्ध-काण्डका पूर्वार्ध पाठकों के सन्मुख रखा जाता है। संपूर्ण युद्ध-काण्डकी समालोचना युद्ध-काण्डके अन्तमें ही दी जायगी, क्योंकि आधे युद्ध-काण्डकी समालोचना नहीं हो सकती। अतः सब युद्धका विचार आगे ही किया जायगा।

निवेदक
श्री. दा. सातवलेकर

मुद्रक और प्रकाशक
वसंत श्रीपाद सातवलेकर, बी. ए.
स्वाध्याय-मंडल, भारत-मुद्रणालय, आनन्दाश्रम, किल्ला पारडी (जि. सूरत)

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युद्धकाण्डकी--विषयसूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	सीताकी खोज करके आये हनुमानका आदर	१
२	सुग्रीवका कथन, समुद्र पार करनेका उपाय	५
३	लंका वर्णन	७
४	समुद्र वर्णन	११
५	श्रीरामचन्द्रजीका सीताके स्मरणसे शोक	२७
६	रावणका मंत्रियोंके साथ विचार	३०
७-१२	रावण और मंत्रियोंकी मंत्रणा	३२
१३-१५	विभीषणकी मंत्रणाका निरादर	५५
१६	विभीषणके प्रति रावणके कठोर वचन	६३
१७	विभीषणका रामचन्द्रके पास आगमन	६७
१८-१९	परीक्षा करके विभीषणके साथ मित्रता	७३
२०	रावणके दूतका रामसेना निरीक्षण	८३
२१-२२	नलके द्वारा सेतु बनानेकी योजना	९०
२३	वानरोंका समुद्र पार होना	१०३
२४	सुग्रीवका युद्धसमिति बनाना	१०८
२५	रामसेनाके समुद्र पार होनेपर रावणकी चिंता	११४
२६-३०	रामसेनाका वर्णन रावण सुनता है	११८
३१-३२	रामके कृत्रिम सिरका सीताके समीप प्रदर्शन और सीताका शोक	१४४
३३-३४	सरमाद्वारा सीताको समझाना	१५५
३५	राम युद्धके लिये उद्यत होते हैं	१६३
३६	माल्यवानके हित वचनका रावणसे अनादर	१६७
३७	लंकाका वर्णन राम सुनते हैं	१७०
३८-४०	सुवेल पर्वतपरसे लंकाका निरीक्षण और सुग्रीवका साहस	१७५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अध्याय	विषय	पृष्ठ
४१	रामका आदरपूर्वक सुग्रीवके साहसका निषेध करना	१८४
४२	वानरोंका लंकाको घेरना	१९६
४३–४४	युद्ध शुरू हुआ, मेघनादका युद्ध	२०२
४५–४७	नागपाशसे रामलक्ष्मण बद्ध हुए	२१२
४८	सीताका विलाप	२२५
४९–५०	रामलक्ष्मणको क्षतविक्षत देखकर वानरोंकी व्याकुलता	२३०
५१–५२	वानरोंकी उत्साहकी गर्जना और धूम्राक्षकी मृत्यु	२४१
५३–५४	अंगदका पराक्रम और वज्रदंष्ट्रकी मृत्यु	२५०
५५–५६	अकंपन राक्षससे युद्ध और उसका वध	२५८
५७–५८	प्रहस्तका वध	२६०
५९–६०	रावणका युद्ध और उसका पराजय	२८०
६१–६७	कुंभकर्णका युद्ध और उसकी मृत्यु	३०९
६८–७०	रावणका शोक, नरान्तकादिकोंकी मृत्यु	३६२
७१	अतिकायसे युद्ध और उसकी मृत्यु	३८६
७२–७३	रावणका शोक, मेघनादका युद्ध और राम-लक्ष्मणोंकी मूर्च्छा	४००
७४-७५	हनुमानका औषधियोंको लाना और मूर्च्छाका दूर करना, लंकादहनके पश्चात् वानरों और राक्षसोंका युद्ध	४१०

॥ पूर्वार्ध समाप्त ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमहामुनि–वाल्मीकि–प्रणीतं

श्री रा मा य ण म् ।

युद्धकांडम् ।

प्रथमः सर्गः ।

श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं यथावदभिभाषितम् ।
रामः प्रीतिसमायुक्तो वाक्यमुत्तरमब्रवीत् १
कृतं हनूमता कार्यं सुमहद्भुवि दुर्लभम् ।
मनसापि यदन्येन न शक्यं धरणीतले २
न हि तं परिपश्यामि यस्तरेत महोदधिम् ।
अन्यत्र गरुडाद्वायोरन्यत्र च हनूमतः ३
देवदानवयक्षाणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
अप्रधृष्यां पुरीं लङ्कां रावणेन सुरक्षिताम् ४
प्रविष्टः सत्त्वमाश्रित्य जीवन्को नाम निष्क्रमेत् ।
को विशेत्सुदुराधर्षां राक्षसैश्च सुरक्षिताम् ५

हनुमान्के वचन सुन प्रेमपूर्वक राम बोले कि जो कार्य हनुमानने किया है वह पृथ्वीमें दुर्लभ है । पृथ्वीमें मनसे भी और कोई ऐसा कार्य नहीं कर सकता ॥ १–२ ॥ गरुड पवन तथा हनुमानको छोड मैं और किसीको नहीं देखता जो समुद्र लांघ जाय ॥३॥ रावण पालित लङ्का देवता दानव, यक्ष, नाग, राक्षसोंके भी जाने योग्य नहीं है ॥ ४ ॥ उस राक्षस रक्षित लङ्कामें इसके अतिरिक्त और कौन प्रवेश कर जीता निकल आवेगा ॥ ५ ॥ सेवकको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यो वीर्यबलसंपन्नो न समः स्याद्धनूमतः।
भृत्यकार्यं हनुमता सुग्रीवस्य कृतं महत्॥
एवं विधाय स्वबलं सदृशं विक्रमस्य च ६
यो हि भृत्यो नियुक्तः सन्भर्त्रा कर्मणि दुष्करे।
कुर्यात्तदनुरागेण तमाहुः पुरुषोत्तमम् ७
यो नियुक्तः परं कार्यं न कुर्यान्नृपतेः प्रियम्।
भृत्यो युक्तः समर्थश्च तमाहुर्मध्यमं नरम् ८
नियुक्तो नृपतेः कार्यं न कुर्याद्यः समाहितः।
भृत्यो युक्तः समर्थश्च तमाहुः पुरुषाधमम् ९
तन्नियोगे नियुक्तेन कृतं कृत्यं हनूमता।
न चात्मा लघुतां नीतः सुग्रीवश्चापि तोषितः १०
अहं च रघुवंशश्च लक्ष्मणश्च महाबलः।
वैदेह्या दर्शनेनाद्य धर्मतः परिरक्षिताः ११
इदं तु मम दीनस्य मनो भूयः प्रकर्षति।

जैसा कार्य करना चाहिये उससे अधिक हनुमानने विक्रमसे सुग्रीवका कार्य किया ॥ ६ ॥

जो सेवक अपने स्वामीकी आज्ञासे कठिन कार्यको भी अनुरागसे करता है तत्त्वज्ञानी उसे उत्तम पुरुष कहते हैं ॥ ७ ॥ जो सेवक समर्थ होनेपर भी केवल स्वामीसे आज्ञप्त कार्यको ही करता है और कुछ स्वामीका प्रिय नहीं करता उसको मध्यम पुरुष कहते हैं ॥ ८ ॥ जो सेवक समर्थ होनेपर भी स्वामीका कार्य एकाग्रचित्त हो नहीं करता उसे पण्डित जन अधम पुरुष कहते हैं ॥ ९ ॥ जिससे हनुमानको जिस कार्य करनेकी आज्ञा हुई थी उसे उत्तमतासे किया तथा अपना राक्षसोंसे निरादर न कराया, सुग्रीवको भी संतुष्ट किया इससे यह धन्य है ॥ १० ॥

सेवक धर्ममें स्थित हो इसने सीताको देखकर मेरी रघुवंशकी तथा लक्ष्मणकी भी रक्षा की ॥ ११ ॥ ऐसे प्रियवादी हनुमानका जो मैं इसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदिहास्य प्रियाख्यातुर्न कुर्मि सदृशं प्रियम् १२
एष सर्वस्वभूतस्तु परिष्वङ्गो हनूमतः।
मया कालमिमं प्राप्य दत्तस्तस्य महात्मनः १३
इत्युक्त्वा प्रीतिहृष्टाङ्गो रामस्तं परिषस्वजे।
हनूमन्तं कृतात्मानं कृतवाक्यमुपागतम् १४
ध्यात्वा पुनरुवाचेदं वचनं रघुसत्तमः।
हरीणामीश्वरस्यापि सुग्रीवस्योपशृण्वतः १५
सर्वथा सुकृतं तावत्सीतायाः परिमार्गणम्।
सागरं तु समासाद्य पुनर्नष्टं मनो मम १६
कथं नाम समुद्रस्य दुष्पारस्य महाम्भसः।
हरयो दक्षिणं पारं गमिष्यन्ति समागताः १७
यद्यप्येष तु वृत्तान्तो वैदेह्या गदितो मम।
समुद्रपारगमने हरीणां किमिवोत्तरम् १८
इत्युक्त्वा शोकसंभ्रान्तो रामः शत्रुनिबर्हणः।
हनूमन्तं महाबाहुस्ततो ध्यानमुपागमत् १९
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

योग्य कुछ प्रत्युपकार नहीं करता यह मुझे खेद करता है ॥ १२ ॥ अतः सब प्राणियोंको आनन्द देनेवाला निज आलिंगन ही महात्मा हनुमानको देता हूं ॥ १३ ॥ यह कह रामप्रीतियुक्त हो आये हुए हनुमानको अच्छी तरह मिले ॥ १४ ॥ तथा कुछ देरतक विचार कर सुग्रीवको सुनाते हुए यह बोले ॥ १५ ॥ यद्यपि हनुमानने सीताका पता बताया है तथापि समुद्रको तैरकर ही सीता मिलनेसे मन उदास हुआ जाता है ॥ १६ ॥ इस अपार समुद्रके दक्षिण तटपर वानर कैसे पहुंचेंगे ॥ १७ ॥

हनुमानने आकर जानकीका वृत्तांत हमसे कहा पर वानरोंको समुद्रके उस पार पहुंचनेका क्या उत्तर है ॥ १८ ॥ शत्रुघ्न महाबाहु राम इस तरह शोक सन्तप्त हो हनुमानसे यह कह कर फिर शोचने लगे ॥ १९ ॥

॥ यहाँ प्रथम सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

॥ द्वितीयः सर्गः ॥

तं तु शोकपरिद्यूनं रामं दशरथात्मजम्।
उवाच वचनं श्रीमान्सुग्रीवः शोकनाशनम् १
किं त्वया तप्यते वीर यथान्यः प्राकृतस्तथा।
मैवं भूस्त्यज संतापं कृतघ्न इव सौहृदम् २
संतापस्य च तं स्थानं न हि पश्यामि राघव।
प्रवृत्तावुपलब्धायां ज्ञाते च निलये रिपोः ३
मतिमाञ्शास्त्रवित्प्राज्ञः पण्डितश्चासि राघव।
त्यजेमां प्राकृतां बुद्धिं कृतात्मेवार्थदूषिणीम् ४
समुद्रं लङ्घयित्वा तु महानक्रसमाकुलम्।
लङ्कामारोहयिष्यामो हनिष्यामश्च ते रिपुम् ५
निरुत्साहस्य दीनस्य शोकपर्याकुलात्मनः।
सर्वार्था व्यवसीदन्ति व्यसनं चाधिगच्छति ६
इमे शूराः समर्थाश्च सर्वतो हरियूथपाः।
त्वत्प्रियार्थं कृतोत्साहाः प्रवेष्टुमपि पावकम् ७
एषां हर्षेण जानामि तर्कश्चापि दृढो मम ८

रामको इस तरह शोकाकुल देख सुग्रीव शोकनाशक वचन बोले॥ १॥ आप अन्य प्राकृत मनुष्योंके समान क्या विषाद करते हैं जैसे कृतघ्न पुरुष सौहृद छोड देता है वैसे ही शोक छोड दीजिये ॥ २ ॥ राघव यह शोकका समय नहीं वरन आनन्दका है ॥ ३ ॥ हे राघव! आपतो बडे बुद्धिमान् शास्त्रज्ञ प्राज्ञ तथा पण्डित हैं, इस प्राकृत बुद्धिको छोड दीजिये ॥ ४ ॥ हम सब महामीनग्राहगर आदिसे पूर्ण समुद्रको उतर लङ्काको चले जांयगे तथा आपके शत्रुको मार डालेंगे ॥ ५ ॥

उत्साह रहित दीन तथा शोकसे व्याकुल मनुष्यके प्रयोजन नष्ट हो जाते हैं बडे शूर समर्थ तथा सब कहीं जानेको उद्यत ये वानर आपके लिये ऐसा उत्साह किये हैं कि अग्निमें भी प्रवेशकर जायँ॥७॥ मैं इन लोगोंके हर्षसे यह बात जानता हूं तथा इस समयमें मेरा अनुमान भी पुष्ट है ॥ ८ ॥ जैसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विक्रमेण समानेष्ये सीतां हत्वा यथा रिपुम्।
रावणं पापकर्माणं तथा त्वं कर्तुमर्हसि ९
सेतुरत्र यथा बध्येद्यथा पश्येम तां पुरीम्।
तस्य राक्षसराजस्य तथा त्वं कुरु राघव १०
दृष्ट्वा तां हि पुरीं लङ्कां त्रिकूटशिखरे स्थिताम्।
हतं च रावणं युद्धे दर्शनादवधारय ११
अबद्ध्वा सागरे सेतुं घोरे च वरुणालये।
लङ्का न मर्दितुं शक्या सेन्द्रैरपि सुरासुरैः १२
सेतुबन्धः समुद्रे च यावल्लङ्कासमीपतः।
सर्वं तीर्णं च मे सैन्यं जितमित्युपधारय॥
तथा हि समरे वीरा हरयः कामरूपिणः १३
तदलं विक्लवां बुद्धिं राजन्सर्वार्थनाशनीम्।
पुरुषस्य हि लोकेऽस्मिञ्शोकः शौर्यापकर्षणः १४
यत्तु कार्यं मनुष्येण शौटीर्यमवलम्ब्यताम्।
तदलंकरणायैव कर्तुर्भवति सत्वरम् १५
अस्मिन्काले महाप्राज्ञ सत्त्वमातिष्ठ तेजसा १६

पापी रावणको मार सीताको लावें आप वैसा ही करनेके योग्य हैं ॥ ९ ॥ राघव! जिससे समुद्रमें सेतु बंधे और हम सब लङ्कापुरी देखें आप वैसा ही करें ॥ १० ॥ त्रिकूट पर्वतपर स्थित लङ्कापुरीको देख युद्धमें रावणको देखने मात्रसे ही मरा समझिये ॥ ११ ॥ इस घोर वरुणालयमें सेतु बिना देवता तथा दैत्य भी लङ्कामें नहीं जासकते॥ १२ ॥

जैसे ही लङ्काके समीप समुद्रमें सेतु बँध गया वैसे ही सब हमारा सैन्य उतर जायगा और शत्रुको जय कर लेगा ॥ १३ ॥ राजन्! सब अर्थ नाश करनेवाली इस व्याकुल बुद्धिको छोडिये ॥ १४ ॥ जो मनुष्य शूरताका कार्य करता है वह करनेवालेका भूषण हो जाता है ॥ १५ ॥ हे महाप्राज्ञ इस समय तुम तेज और सत्वगुणका अवलम्बन करो ॥ १६ ॥ जिससे कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

शूराणां हि मनुष्याणां त्वद्विधानां महात्मनाम्।
विनष्टे वा प्रनष्टे वा शोकः सर्वार्थनाशनः १७
तत्त्वं बुद्धिमतां श्रेष्ठः सर्वशास्त्रार्थकोविदः।
मद्विधैः सचिवैः सार्धमरिं जेतुं समर्हसि १८
न हि पश्याम्यहं कंचित्त्रिषु लोकेषु राघव।
गृहीतधनुषो यस्ते तिष्ठेदभिमुखो रणे १९
वानरेषु समासक्तं न ते कार्यं विपत्स्यते।
अचिराद्द्रक्ष्यसे सीतां तीर्त्वा सागरमक्षयम् २०
तदलं शोकमालम्ब्य क्रोधमालम्ब भूपते।
निश्चेष्टाः क्षत्रिया मन्दाः सर्वे चण्डस्य बिभ्यति २१
लङ्घनार्थं च घोरस्य समुद्रस्य नदीपतेः।
सहास्माभिरिहोपेतः सूक्ष्मबुद्धिर्विचारय २२
लङ्घिते तत्र तैः सैन्यैर्जितमित्येव निश्चिनु।
सर्वं तीर्णं च मे सैन्यं जितमित्यवधार्यताम् २३
इमे हि हरयः शूराः समरे कामरूपिणः।

आप सरीखे शूर लोगोंको धैर्य करना चाहिये, खराब हो गये तथा खोगये पदार्थका शोक करना सब अर्थोंका नाशक होता है ॥ १७ ॥ आप तो बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ न सर्वशास्त्रोंके अर्थ जाननेमें चतुर हो, हम सरीखे मन्त्रियोंके साथ शत्रुको जीतलोगे ॥ १८ ॥

राघव ! मैं तीनों लोकोंमें ऐसा किसीको नहीं देखता जो धनुष लेकर आपके सामने खडा रहे ॥ १९ ॥ आप जो कार्य वानरोंके सपुर्द करेंगे वह कभी नष्ट न होगा ॥ २० ॥ अब शोक छोड क्रोध कीजिये, शत्रुके प्रति क्रोध न करनेवाले क्षत्रिय मन्द होते हैं और क्रोध करनेवालेसे सब डरते हैं ॥ २१ ॥ हम लोगों सहित घोर समुद्रके उतरनेके लिये सूक्ष्म बुद्धिसे विचार कीजिये ॥ २२ ॥ समुद्र उतर जानेपर हमारी सेनाको रावण सेनापर विजयी समझिये ॥ २३ ॥ ये कामरूपी बलवान् वानर शिला पादप बरसाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानरीन्विधमिष्यन्ति शिलापादपवृष्टिभिः २४
कथंचित्परिपश्यामि लङ्घितं वरुणालयम्।
हतमित्येव तं मन्ये युद्धे शत्रुनिबर्हण २५
किमुक्त्वा बहुधा चापि सर्वथा विजयी भवान्।
निमित्तानि च पश्यामि मनो मे संप्रहृष्यति २६

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे द्वितीयः सर्गः॥ २ ॥ [४५]॥

॥ तृतीयः सर्गः ॥

सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा हेतुमत्परमार्थवत्।
प्रतिजग्राह काकुत्स्थो हनूमन्तमथाब्रवीत् १
तपसा सेतुबन्धेन सागरोच्छोषणेन च।
सर्वथापि समर्थोऽस्मि सागरस्यास्य लङ्घने २
कति दुर्गाणि दुर्गाया लङ्कायास्तद्ब्रवीष्व मे।
ज्ञातुमिच्छामि तत्सर्वं दर्शनादिव वानर ३
बलस्य परिमाणं च द्वारदुर्गक्रियामपि।
गुप्तिकर्म च लङ्कायां रक्षसां सदनानि च ४

शत्रुओंको मारेंगे ॥२४॥ किसी प्रकार समुद्रको उतरचालिये फिर शत्रुको मरा हुआ जानना ॥२५॥ ज्यादा बोलनेसे उपयोग क्या ? सब तरहसे तुम विजयी हो, क्योंकि शुभसूचक चिन्ह मुझे दिखाई पडते हैं और मन भी हर्षयुक्त है ॥ २६ ॥

॥ यहाँ द्वितीय सर्ग समाप्त हुआ ॥

सुग्रीवके सहेतुक वचन सुन रामने अङ्गीकार किये और हनुमानसे बोले ॥ १ ॥ मैं स्वतपसे समुद्रमें सेतुबांध सकता हूं सागरको सुखा सकता हूं सब तरहसे हम इस समुद्रको उतर जानेमें समर्थ हैं ॥ २ ॥ अब यह बताओ कि उस दुर्गम लङ्कामें कितने दुर्ग हैं, उन सबका हाल जानना चाहता हूं ॥ ३ ॥ वहां सेना कितनी है द्वारोंपर शत्रुके प्रवेशके रोकनेका क्या यत्न किया गया है लङ्काकी रक्षा करनेके लिये कितने गुप्त यँत्र लगे हैं तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यथासुखं यथावच्च लङ्कायामासि दृष्टवान्।
सर्वमाचक्ष्व तत्त्वेन सर्वथा कुशलो ह्यसि ५
श्रुत्वा रामस्य वचनं हनूमान्मारुतात्मजः।
वाक्यं वाक्यविदां श्रेष्ठो रामं पुनरथाब्रवीत् ६
श्रूयतां सर्वमाख्यास्ये दुर्गकर्मविधानतः।
गुप्ता पुरी यथा लङ्का रक्षिता च यथा बलैः ७
राक्षसाश्च यथा स्निग्धा रावणस्य च तेजसा।
परां समृद्धिं लङ्कायाः सागरस्य च भीमताम् ८
विभागं च बलौघस्य निर्देशं वाहनस्य च।
एवमुक्त्वा कपिश्रेष्ठः कथयामास तत्त्ववित् ९
हृष्टप्रमुदिता लङ्का मत्तद्विपसमाकुला।
महती रथसंपूर्णा रक्षोगणनिषेविता १०
दृढबद्धकपाटानि महापरिघवन्ति च।
चत्वारि विपुलान्यस्या द्वाराणि सुमहान्ति च ११
तत्रेषूपलयन्त्राणि बलवन्ति महान्ति च।
आगतं प्रतिसैन्यं तैस्तत्र प्रतिनिवार्यते १२

राक्षसोंके मन्दिर कितने होंगे ॥ ४ ॥ तुमने लङ्का अच्छी तरह देखी है सो सब हाल कहो ॥ ५ ॥

रामके वचन सुन हनुमान बोले ॥ ६ ॥ जिस तरहसे बड़ी सेनासे रक्षित तथा उसमें जिस तरह किला बन्दी है व जिस तरह रावणके तेजसे राक्षसोंका पालन किया जाता है जैसी लङ्काकी समृद्धि है तथा जैसा समुद्र भयानक है ॥ ७-८ ॥ व जैसा सेनासमूहका विभाग है तथा जितने वहां बाहन हैं सब सुनिये ॥ ९ ॥ लंका हर्षित राक्षसोंसे भरी है, मतवाले हाथियों बहुत रथोंसे पूर्ण है ॥ १० ॥ उसमें पुष्ट किवाड़ तथा बड़े बड़े बेलन लगे चार फाटक हैं ॥ ११ ॥ उन फाटकोंमें बाण पत्थर तथा अन्य बड़े बड़े यंत्र ऐसे लगे हैं कि शत्रु सेना वहां आकर उनसे रुक जाती है ॥ १२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वारेषु संस्कृता भीमाः कालायसमयाः शिताः।
शतशो रचिता वीरैः शतघ्न्यो रक्षसां गणैः ॥ १३
सौवर्णस्तु महांस्तस्याः प्राकारो दुष्प्रधर्षणः।
मणिविद्रुमवैदूर्यमुक्ताविरचितान्तरः ॥ १४
सर्वतश्च महाभीमाः शीततोया महाशुभाः।
अगाधा ग्राहवत्यश्च परिखा मीनसेविताः ॥ १५
द्वारेषु तासां चत्वारः संक्रमाः परमायताः।
यन्त्रैरुपेता बहुभिर्महद्भिर्गृहपङ्क्तिभिः ॥ १६
त्रायन्ते संक्रमास्तत्र परसैन्यागते सति।
यन्त्रैस्तैरवकीर्यन्ते परिखासु समन्ततः ॥ १७
एकस्त्वकम्प्यो बलवान्संक्रमः सुमहादृढः।
काञ्चनैर्बहुभिः स्तम्भैर्वेदिकाभिश्च शोभितः ॥ १८
स्वयं प्रकृतिमापन्नो युयुत्सू राम रावणः।
उत्थितश्चाप्रमत्तश्च बलानामनुदर्शने ॥ १९
लङ्का पुनर्निरालम्बा देवदुर्गा भयावहा।

उन्हीं फाटकोंके सामने अति निर्मल भयंकर सैकड़ों शतघ्नी नाम अस्त्र रक्खे हैं ॥ १३ ॥

उस लंकाका मणिमूंगा वैदूर्यमणि व मोतीजटित सुवर्णका बड़ा भारी प्राकार है जो अतिदुर्धर्ष है ॥ १४ ॥ उस प्राकारके सब ओर अथाह जल भरा है बड़े घड़ियाल मगर मच्छोंसे पूर्ण भयंकर खाई है ॥ १५ ॥ चारों फाटकोंसे सामने आने जानेके लिये चार मञ्चाना रूप संक्रम बने हैं इनके ऊपर अस्त्र शस्त्र धरे हैं व मकान युद्ध करनेके उपयोगी इधर उधर बने हैं ॥ १६ ॥ जब शत्रु सेना वहां फाटकोंके सामने उन संक्रमोंपर चढ़ती है तो उनमें लगी कलोंसे गिरा दी जाती है ॥ १७ ॥ एक बड़ा दुर्भेद्य संक्रम सोनेके खम्भों तथा वेदियोंसे शोभित बना है ॥ १८ ॥

रावण सदा मदिरापान किये रहता है, पर युद्धार्थ सदा उद्यत रहता है ॥ १९ ॥ लङ्का ऊंचे पर्वतपर स्थित होनेसे देवताओंको भी दुर्गम है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नादेयं पार्वतं चान्यं कृत्रिमं च चतुर्विधम् २०
स्थितापारे समुद्रस्य दूरपारस्य राघव।
नौपथश्चापि नास्त्यत्र निरुद्देशश्च सर्वशः २१
शैलाग्रे रचिता दुर्गा सा पूर्देवपुरोपमा।
वाजिवारणसंपूर्णा लङ्का परमदुर्जया २२
परिखाश्च शतघ्न्यश्च यन्त्राणि विविधानि च।
शोभयन्ति पुरीं लङ्कां रावणस्य दुरात्मनः २३
अयुतं रक्षसामत्र पूर्वद्वारं समाश्रितम्।
शूलहस्ता दुराधर्षाः सर्वे खड्गाग्रयोधिनः २४
नियुतं रक्षसामत्र दक्षिणद्वारमाश्रितम्।
चतुरङ्गेण सैन्येन योधास्तत्राप्यनुत्तमाः २५
प्रयुतं रक्षसामत्र पश्चिमद्वारमाश्रितम्।
चर्मखड्गधराः सर्वे तथा सर्वास्त्रकोविदाः २६
न्यर्बुदं रक्षसामत्र उत्तरद्वारमाश्रितम्।
रथिनश्चाश्ववाहाश्च कुलपुत्राः सुपूजिताः २७
शतशोऽथ सहस्राणि मध्यमं स्कन्धमाश्रिताः।
यातुधाना दुराधर्षाः साग्रकोटिश्च रक्षसाम् २८

नादेय, पार्वत, वान्य तथा कृत्रिम चार तरहके वहां किले हैं॥ २०॥ अति विस्तृत समुद्रके पार लङ्का है किसी ओरसे उसमें जानेकी राह नहीं है॥ २१॥ पर्वतश्रृंगपर बसी हुई घोडे हाथियोंसे पूर्ण लंका दुर्जय है॥ २२॥ रावणकी यह लङ्कापुरी खाई शतघ्नी तथा अन्य बडे बडे यंत्रोंसे शोभित है॥ २३॥ लङ्काके पूर्व द्वारपर बडे दुर्धर्ष दश हजार राक्षस रहते हैं॥ २४॥ दक्षिण फाटकपर चतुरंगिणीसेना सहित दुर्जय लक्ष राक्षस है॥ २५॥ और शस्त्रास्त्रकोविद दश लाख राक्षस पश्चिम द्वारपर रहते हैं॥ २६॥ रथ घोडोंपर सवार करोड राक्षस उत्तर फाटकपर रहते हैं॥ २७॥ लङ्काके केन्द्रमें एक करोड पचीस लाख रणकुशल राक्षस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते मया संक्रमा भग्नाः परिखाश्चावपूरिताः।
दग्धा च नगरी लङ्का प्राकाराश्चावसादिताः २९
येन केन तु मार्गेण तराम वरुणालयम्।
हतेति नगरीं लङ्कां वानरैरुपधार्यताम् ३०
अङ्गदो द्विविदो मैन्दो जाम्बवान्पनसो नलः।
नीलः सेनापतिश्चैव बलशेषेण किं तव ३१
प्लवमाना हि गत्वा तां रावणस्य महापुरीम्।
सपर्वतवनां भित्त्वा सखातां च सतोरणाम्॥
सप्राकारां सभवनामानयिष्यन्ति राघव ३२
एवमाज्ञापय क्षिप्रं बलानां सर्वसंग्रहम्।
मुहूर्तेन तु युक्तेन प्रस्थानमभिरोचय ३३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे तृतीयः सर्गः॥ ३॥ [७८]

॥ चतुर्थः सर्गः॥

श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं यथावदनुपूर्वशः।
ततोऽब्रवीन्महातेजा रामः सत्यपराक्रमः १
यन्निवेदयसे लङ्कां पुरीं भीमस्य रक्षसः।
क्षिप्रमेनां वधिष्यामि सत्यमेतद्ब्रवीमि ते २

रहते हैं॥ २८॥ सब संक्रम तोड डाले खाइयोंको पाटदिया। सब लङ्कापुरी जला डाली॥ २९॥

अब किसी मार्गसे समुद्र उतर चलिये, उत्तरतेही लङ्का विध्वंस देखिये॥ ३०॥ अङ्गद द्विविद मयन्द जाम्बवान् पनस नल और सेनापति नीलके सिवा और सेना लेकर क्या करोगे॥३१॥ ये सब समुद्र लांघ लङ्कामें जा पर्वत वनखाई प्राकार सहित लङ्का विध्वंस कर देंगे॥३२॥ आप शीघ्रही सेना को यात्रा करनेकी आज्ञा दीजिये॥ ३३॥

॥ तृतीय सर्ग समाप्त हुआ॥

हनुमानकी बात सुन तेजस्वी राम बोले॥ १॥ भयंकर राक्षसोंकी जिस पुरीको विध्वंस करनेको कहते हो उसे मैं शीघ्र ही नष्ट भ्रष्ट कर दूंगा॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अस्मिन्मुहूर्ते सुग्रीव प्रयाणमभिरोचय ।
युक्तो मुहूर्ते विजये प्राप्तो मध्यं दिवाकरः ३
सीतां हृत्वा तु तद्यातु क्वासौ यास्यति जीवितः ४
सीता श्रुत्वाभियानं म आशामेष्यति जीविते ।
जीवितान्तेऽमृतं स्पृष्ट्वा पीत्वामृतमिवातुरः ५
उत्तराफल्गुनी ह्यद्य श्वस्तु हस्तेन योक्ष्यते ।
अभिप्रयाम सुग्रीव सर्वानीकसमावृताः ६
निमित्तानि च पश्यामि यानि प्रादुर्भवन्ति वै ।
निहत्य रावणं सीतामानयिष्यामि जानकीम् ७
उपरिष्टाद्धि नयनं स्फुरमाणमिमं मम ।
विजयं समनुप्राप्तं शंसतीव मनोरथम् ८
ततो वानरराजेन लक्ष्मणेन सुपूजितः ।
उवाच रामो धर्मात्मा पुनरप्यर्थकोविदः ९
अग्रे यातु बलस्यास्य नीलो मार्गमवेक्षितुम् ।
वृतः शतसहस्रेण वानराणां तरस्विनाम् १०
फलमूलवता नील शीतकाननवारिणा ।

सुग्रीव ! इस समय सूर्य मध्यमें स्थित हैं, इससे विजयकारक मुहूर्त है इसीमें यात्रा है इसे तुम भी पसन्द करो ॥ ३ ॥ सीताको हरकर रावण अब अवश्य मारा जायगा ॥ ४ ॥ सीता हमारी यात्रा सिद्धादिकोंके मुखसे सुन जीवन धारण करे रहेंगी ॥ ५ ॥ हे सुग्रीव ! आज उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र है कल प्रातःकाल हस्त होगा, इससे इसी मुहूर्तमें चलेंगे तुम सब सेना सहित चलो ॥ ६ ॥ शकुनोंसे जान पडता है कि रावणको मार जानकीको लावेंगे ॥ ७ ॥ दाहिने नेत्रका जो ऊपरी भाग फडकता है वह विजय रूप मनोरथ कह रहा है ॥ ८ ॥ रामके ऐसा कहनेपर सुग्रीव व लक्ष्मणने उनकी बडाई की । तब राम फिर बोले ॥ ९ ॥

नल असंख्य वानरोंको साथ ले यह देखनेको जावे कि मार्ग कहीं ऊंचा नीचा तो नहीं है ॥ १० ॥ हे सेनापति नील जिस मार्गमें फल मूल शीतल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पथा मधुमता चाशु सेनां सेनापते नय ११
दूषयेयुर्दुरात्मानः पथि मूलफलोदकम्।
राक्षसाः पथि रक्षेथास्तेभ्यस्त्वं नित्यमुद्यतः १२
निम्नेषु वनदुर्गेषु वनेषु च वनौकसः।
अभिप्लुत्याभिपश्येयुः परेषां निहितं बलम् १३
यत्तु फल्गु बलं किंचित्तदत्रैवोपपद्यताम्।
एतद्धि कृत्यं घोरं नो विक्रमेण प्रयुज्यताम् १४
सागरौघनिभं भीममग्रानीकं महाबलाः।
कपिसिंहाः प्रकर्षन्तु शतशोऽथ सहस्रशः १५
गजश्च गिरिसंकाशो गवयश्च महाबलः।
गवाक्षश्चाग्रतो यातु गवां दृप्त इवर्षभः १६
यातु वानरवाहिन्या वानरः प्लवतां पतिः।
पालयन्दक्षिणं पार्श्वमृषभो वानरर्षभः १७
गन्धहस्तीव दुर्धर्षस्तरस्वी गन्धमादनः।
यातु वानरवाहिन्याः सव्यं पार्श्वमधिष्ठितः १८

जलसघन वन हो उसीसे सेना शीघ्र ले चलो ॥ ११ ॥ राक्षस मार्गके फलफूल सब खराब कर डालेंगे, इससे सत् फलादिकोंकी रक्षा किये रहना ॥ १२ ॥ सघन वनों तथा नालोंमें वानर लोग देख लिया करें कि कहीं शत्रुकी सेना छिपी तो नहीं है ॥ १३ ॥ कुछ थोडी सेनाको किष्किन्धामें छोड दो शेष सब सेना चले, यह महत्कार्य बडे विक्रमसे होगा ॥ १४ ॥

हे वानर सिंहों तुम आगे २ चल बडी भारी सेनाको आगे बढाते जाओ ॥ १५ ॥ गज तथा महाबली गवय और गवाक्ष ये तीनों सेनाके आगे २ चलें ॥ १६ ॥ ऋषभ वानर सेनाके दक्षिण पार्श्वकी रक्षा करता हुआ चले ॥ १७ ॥ गन्धमादन वानर सेनाकी वामपार्श्वकी रक्षा करता चले ॥ १८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यास्यामि बलमध्येऽहं बलौघमभिहर्षयन् ।
अधिरुह्य हनूमन्तमैरावतमिवेश्वरः १९
अङ्गदेनैष संयातु लक्ष्मणश्चान्तकोपमः ।
सार्वभौमेन भूतेशो द्रविणाधिपतिर्यथा २०
जाम्बवांश्च सुषेणश्च वेगदर्शी च वानरः ।
ऋक्षराजो महाबाहुः कुक्षिं रक्षन्तु ते त्रयः २१
राघवस्य वचः श्रुत्वा सुग्रीवो वाहिनीपतिः ।
व्यादिदेश महावीर्यो वानरान्वानरर्षभः २२
ते वानरगणाः सर्वे समुत्पत्य महौजसः ।
गुहाभ्यः शिखरेभ्यश्च आशु पुप्लुविरे तदा २३
ततो वानरराजेन लक्ष्मणेन च पूजितः ।
जगाम रामो धर्मात्मा ससैन्यो दक्षिणां दिशम् २४
शतैः शतसहस्रैश्च कोटिभिश्चायुतैरपि ।
वारणाभैश्च हरिभिर्ययौ परिवृतस्तदा २५
तं यान्तमनुयान्ती सा महती हरिवाहिनी ।
हृष्टाः प्रमुदिताः सर्वे सुग्रीवेणापि पालिताः २६
आप्लवन्तः प्लवन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवङ्गमाः ।
क्ष्वेलन्तो निगदन्तश्च जग्मुर्वै दक्षिणां दिशम् २७

तथा सब सेना समूहके मध्यमें हम हनुमानकी पीठपर चढकर चलेंगे ॥ १९ ॥ लक्ष्मण अङ्गदकी पीठपर चढकर चलें ॥ २० ॥ जाम्बवान् सुषेण महाबाहु वेगदर्शी वानर ये तीनों सेनाके पश्चाद्भागकी रक्षा करते चलें ॥ २१ ॥ रामके वचन सुन वानरराज सुग्रीवने वानरोंको चलनेकी आज्ञा दी ॥ २२ ॥

वे पराक्रमी वानर गुहाओं पर्वतोंके कंगूरों परसे कूदे ॥ २३ ॥ सुग्रीव लक्ष्मणसे पूजित सेना सहित दक्षिणको चले ॥ २४ ॥ सैकडों हजारों लाखों करोडों वानरोंको साथ ले राम चले ॥ २५ ॥ उनके पीछे २ वानरोंकी बडी भारी सेना चली ॥ २६ ॥ सब वानर कूदते फांदते तथा गर्जते हुए दक्षिणको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्षयन्तः सुगन्धीनि मधूनि च फलानि च।
उद्वहन्तो महावृक्षान्मञ्जरीपुञ्जधारिणः २८
अन्योऽन्यं सहसा दृप्ता निर्वहन्ति क्षिपन्ति च।
पतन्तश्चोत्पतन्त्यन्ये पातयन्त्यपरे परान् २९
रावणो नो निहन्तव्यः सर्वे च रजनीचराः।
इति गर्जन्ति हरयो राघवस्य समीपतः ३०
पुरस्तादृषभो नीलो वीरः कुमुद एव च।
पन्थानं शोधयन्ति स्म वानरैर्बहुभिः सह ३१
मध्ये तु राजा सुग्रीवो रामो लक्ष्मण एव च।
बलिभिर्बहुभिर्भीमैर्वृतः शत्रुनिबर्हणः ३२
हरिः शतबलिर्वीरः कोटिभिर्दशभिर्वृतः।
सर्वामेको ह्यवष्टभ्य ररक्ष हरिवाहिनीम् ३३
कोटीशतपरीवारः केसरी पनसो गजः।
अर्कश्च बहुभिः पार्श्वमेकं तस्याभिरक्षति ३४
सुषेणो जाम्बवांश्चैव ऋक्षैर्बहुभिरावृतौ।
सुग्रीवं पुरतः कृत्वा जघनं संररक्षतुः ३५

चले ॥ २७ ॥ फल खाते मधु पीते तथा वृक्षोंको उखाडते २ अपने ऊपर लादकर चले ॥ २८ ॥ एक दूसरे पर पुष्पादि फेंकते कूदते तथा एक दूसरे पर गिरते चले ॥ २९ ॥ सब रामके समीप जा कहते कि राक्षसों तथा रावणको मारना है ॥ ३० ॥

सेनाके आगे ऋषभ नील व कुमुद बहुतसे वानर लिये मार्ग शोधते चले जाते थे ॥ ३१ ॥ बडे बली बहुत वानरोंसे घिरे शत्रुहन्ता सुग्रीव तथा राम व लक्ष्मण बीचमें जाते थे ॥ ३२ ॥ शतबलि वानर दश करोड वानर साथ लिये सेनाकी रक्षा करता हुआ जाता था ॥ ३३ ॥ केशरी तथा पनस सर्व वानरोंको संग लिये उस सेनाके दाहिनेपर जाते थे गज व अर्क नाम वानर अपने संग बहुत वानर लिये उसकी बांई ओर चलते थे ॥ ३४ ॥ सुषेण और जाम्बवान् बहुत ऋक्षोंको साथ लिये सुग्रीवको आगे किये सेनाके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तेषां सेनापतिर्वीरो नीलो वानरपुङ्गवः ।
संयतश्चरतां श्रेष्ठस्तद्बलं पर्यवारयत् ३६
वलीमुखः प्रजङ्घश्च जम्भोऽथ रभसः कपिः ।
सर्वतश्च ययुर्वीरास्त्वरयन्तः प्लवङ्गमान् ३७
एवं ते हरिशार्दूला गच्छन्ति बलदर्पिताः ।
अपश्यन्त गिरिश्रेष्ठं सह्यं गिरिशतायुतम् ॥
सरांसि च सुफुल्लानि तटाकानि वराणि च ३८
रामस्य शासनं ज्ञात्वा भीमकोपस्य भीतवत् ।
वर्जयन्नगराभ्याशांस्तथा जनपदानपि ३९
सागरौघनिभं भीमं तद्वानरबलं महत् ।
निःससर्प महाघोरं भीमघोषमिवार्णवम् ४०
तस्य दाशरथेः पार्श्वे शूरास्ते कपिकुञ्जराः ।
तूर्णमापुप्लुवुः सर्वे सदश्वा इव चोदिताः ४१
कपिभ्यामुह्यमानौ तौ शुशुभाते नरर्षभौ ।
महद्भ्यामिव संस्पृष्टौ ग्रहाभ्यां चन्द्रभास्करौ ४२

पश्चाद्भागकी रक्षा करते जाते थे ॥ ३५ ॥ सेनापति नील सेनाको ग्रामोंमें अत्याचार करनेसे रोकता जाता था ॥ ३६ ॥ बलीमुख प्रजंघ जंभनाम रभस-नाम वानर सेनाके सब ओर चलते तथा सबको शीघ्र चलनेका आदेश करते थे ॥ ३७ ॥

इस तरह वानर चले जाते थे, चलते २ उन्होंने सैकडों पर्वतोंके बीचमें सह्य पर्वत देखा, कमल फूले हुए सरित तथा तडाग भी देखे ॥ ३८ ॥ व रामकी आज्ञा पाकर सब सेना नगर तथा ग्रामोंको छोडती हुई ॥ ३९ ॥ भयंकर वेग समुद्रके समान भय कराती हुई चली जाती थी, मानो भयङ्कर शब्द करता समुद्र उफलता चला जाता है ॥ ४० ॥ रामके समीप बडे २ शूरवीर वानर अच्छे घोडोंके समान शीघ्रतासे चले जाते थे ॥ ४१ ॥ राम लक्ष्मण हनुमान् अङ्गदपर सवार महा ग्रहोंसे छुवे चन्द्रमा व सूर्यके समान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततो वानरराजेन लक्ष्मणेन सुपूजितः ।
जगाम रामो धर्मात्मा ससैन्यो दक्षिणां दिशम् ४३
तमङ्गदगतो रामं लक्ष्मणः शुभया गिरा ।
उवाच परिपूर्णार्थं पूर्णार्थप्रतिभानवान् ४४
हृतामवाप्य वैदेहीं क्षिप्रं हत्वा च रावणम् ।
समृद्धार्थः समृद्धार्थामयोध्यां प्रतियास्यसि ४५
महान्ति च निमित्तानि दिवि भूमौ च राघव ।
शुभानि तव पश्यामि सर्वाण्येवार्थसिद्धये ४६
अनुवाति शिवो वायुः सेनां मृदुर्हितः सुखः ।
पूर्णवल्गुस्वराश्चेमे प्रवदन्ति मृगद्विजाः ४७
प्रसन्नाश्च दिशः सर्वा विमलश्च दिवाकरः ।
उशना च प्रसन्नार्चिरनु त्वां भार्गवो गतः ४८
ब्रह्मराशिर्विशुद्धश्च शुद्धाश्च परमर्षयः ।
अर्चिष्मन्तः प्रकाशन्ते ध्रुवं सर्वे प्रदक्षिणम् ४९
त्रिशङ्कुर्विमलो भाति राजर्षिः सपुरोहितः ।
पितामहः पुरोऽस्माकमिक्ष्वाकूणां महात्मनाम् ५०
विमले च प्रकाशेते विशाखे निरुपद्रवे ।

शोभित होते थे, ससैन्य राम दक्षिणको चले जाते थे ॥ ४२–४३ ॥ कि अङ्गदपर सवार लक्ष्मणसे बोले कि रावणको समरमें मार हरी हुई वैदेही को पाकर अर्थ सिद्ध हो अयोध्याको शीघ्र ही आप जावेंगे ॥ ४४–४५ ॥ क्योंकि अर्थ सिद्धिसूचक आकाश व भूतलमें बहुतसे कारण इस समय देख पडते हैं ॥ ४६ ॥ पवन बहुत कोमल हित सुखकारी और अनुकूल चलता है, मृगगण व पक्षी बडी सुहावनी बोली बोलते हैं ॥ ४७ ॥

दिशा प्रसन्न हैं सूर्य निर्मल है शुक्रसाफ हो पीछे उदित हैं, ध्रुव बहुत प्रकाशित उदित है ॥ ४८ ॥ सब ब्रह्मर्षि बहुत निर्मल हैं ध्रुवकी प्रदक्षिणा कर रहे हैं ॥ ४९ ॥ राजर्षि त्रिशंकु विमल हो विश्वामित्रके साथ सामने उदित हैं ॥ ५० ॥ नक्षत्र विशाखाविमल व ग्रहाकान्ति रहित हो उदित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नक्षत्रं परमस्माकमिक्ष्वाकूणां महात्मनाम् ५१
नैर्ऋतं नैर्ऋतानां च नक्षत्रमतिपीड्यते।
मूलो मूलवता स्पृष्टो धूप्यते धूमकेतुना ५२
सर्वं चैतद्विनाशाय राक्षसानामुपस्थितम्।
काले कालगृहीतानां नक्षत्रं ग्रहपीडितम् ५३
प्रसन्नाः सुरसाश्चापो वनानि फलवन्ति च।
प्रवान्ति नाधिका गन्धा यथर्तुकुसुमा द्रुमाः ५४
व्यूढानि कपिसैन्यानि प्रकाशन्तेऽधिकं प्रभो।
देवानामिव सैन्यानि सङ्ग्रामे तारकामये ५५
एवमार्य समीक्ष्यैतत्प्रीतो भवितुमर्हसि।
इति भ्रातरमाश्वास्य हृष्टः सौमित्रिरब्रवीत् ५६
अथावृत्य महीं कृत्स्नां जगाम हरिवाहिनी।
ऋक्षवानरशार्दूलैर्नखदंष्ट्रायुधैरपि ५७
कराग्रैश्चरणाग्रैश्च वानरैरुद्धतं रजः।
भीममन्तर्दधे लोकं निवार्य सवितुः प्रभाम् ५८
सपर्वतवनाकाशां दक्षिणां हरिवाहिनी।

है ॥ ५१ ॥ राक्षसोंका नक्षत्र मूल आजकल धूमकेतु ग्रहसे पीडित है इस राक्षसोंका पराजय होगा ॥ ५२ ॥ यह सब राक्षसोंके विनाश ही के लिये राक्षस कालके वशमें पडे हैं ।॥५३॥ जल साफ व मीठा हो गया है, वन स फूले फले हैं, पवन अधिक नहीं बहता है, वृक्षोंमें बिना समय फूल फूल उ हैं ॥ ५४ ॥ हे प्रभो ! जिस समय तारका युद्धमें देवताओंकी सेना प्रकाशि हुई थी ॥ ५५ ॥ वैसे ही इस समय वानरोंकी सेना प्रकाशित होती प्रसन्न हो लक्ष्मणजीने अपने भाईसे कहा ॥ ५६ ॥

यह वानरोंकी सेना सम्पूर्ण पृथ्वीमें फैल गई। नख, दांत, आयुध वा ऋक्षव वानरशार्दूलोंके नखोंसे उठी हुई धूलिने सूर्यकी प्रभा आच्छादि करली तथा अन्धकार छागया ॥ ५७-५८ ॥ जब बहुत योजनोंतक निरन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छादयन्ती ययौ भीमा द्यामिवाम्बुदसंततिः ५९
उत्तरन्त्याश्च सेनायाः सततं बहुयोजनम् ।
नदीस्रोतांसि सर्वाणि सस्यन्दुर्विपरीतवत् ६०
सरांसि विमलाम्भांसि द्रुमाकीर्णांश्च पर्वतान् ।
समान्भूमिप्रदेशांश्च वनानि फलवन्ति च ६१
मध्येन च समन्ताच्च तिर्यक्चाधश्च साविशत् ।
समावृत्य महीं कृत्स्नां जगाम महती चमूः ६२
ते हृष्टवदनाः सर्वे जग्मुर्मारुतरंहसः ।
हरयो राघवस्यार्थे समारोपितविक्रमाः ६३
हर्षं वीर्यं बलोद्रेकान्दर्शयन्तः परस्परम् ।
यौवनोत्सेकजाद्दर्पाद्विविधांश्चक्रुरध्वनि ६४
तत्र केचिद्द्रुतं जग्मुरुत्पेतुश्च तथापरे ।
केचित्किलकिलां चक्रुर्वानरा वनगोचराः ६५
प्रास्फोटयंश्च पुच्छानि संनिजघ्नुः पदान्यपि ।
भुजान्विक्षिप्य शैलांश्च द्रुमानन्ये बभञ्जिरे ६६
आरोहन्तश्च शृङ्गाणि गिरीणां गिरिगोचराः ।
महानादान्प्रमुञ्चन्ति क्ष्वेडामन्ये प्रचक्रिरे ६७

वानरोंकी सेना उतरने लगी तो नदियोंके सम्पूर्ण स्रोत उलटे बहने लगे ॥ ५९-६० ॥ वह सेना बडे स्वच्छ तडागों बहुत वृक्ष लगे पर्वतों समदेशों तथा फले हुए वनोंमें होकर ॥ ६१ ॥ नीचे ऊंचे, तिरछी सीधी सब ओरसे सब तरहसे चली, पवन समवेगसे चलनेवाले वानर हर्षित चले जाते थे, सब वानर रामके अर्थबलकी जल्पना करते ॥६२-६३॥ तथा परस्पर हर्ष, वीर्य दिखाते जाते थे युवावस्थाके घमण्डसे मार्गमें विविध तरहकी क्रीडा करते जाते थे ॥ ६४ ॥ उनमें कोई तो बडी शीघ्रतासे, कोई किलकिलाते चलते ॥ ६५ ॥ कोई अपनी पूछ ऊपरको उठा फिर फटकते कोई कोई अपने पांव पटकते, कोई भुजा फैला वृक्ष तथा पर्वत उखाड तोड डालते ॥ ६६ ॥ कोई कोई कूद कर पर्वतोंके शृंगोंपर चढ जाते, कोई चीत्कार करते कोई हास्य करते ॥ ६७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ऊरुवेगैश्च ममृदुर्लताजालान्यनेकशः।
जृम्भमाणाश्च विक्रान्ता विचिक्रीडुः शिलाद्रुमैः। ६८
ततः शतसहस्रैश्च कोटिभिश्च सहस्रशः।
वानराणां सुघोराणां श्रीमत्परिवृतामही ६९
सा स्म याति दिवारात्रं महती हरिवाहिनी।
प्रहृष्टमुदिताः सर्वे सुग्रीवेणाभिपालिताः ७०
वानरास्त्वरिता यान्ति सर्वे युद्धाभिनन्दिनः।
प्रमोक्षयिषवः सीतां मुहूर्तं क्वापि नावसन् ७१
ततः पादपसंबाधं नानावनसमायुतम्।
सह्यपर्वतमासाद्य वानरास्ते समारुहन् ७२
काननानि विचित्राणि नदीप्रस्रवणानि च।
पश्यन्नपि ययौ रामः सह्यस्य मलयस्य च ७३
चम्पकांस्तिलकांश्चूतान्प्रसेकान्सिन्दुवारकान्।
तिनिशान्करवीरांश्च भवन्ति स्म प्लवङ्गमाः ७४
अशोकांश्च करञ्जांश्च प्लक्षन्यग्रोधपादपान्।
जम्बुकामलकान्नागान्भजन्ति स्म प्लवङ्गमाः ७५

तथा कोई कोई अपनी जांघोंके वेगसे लता समूहोंको मींज डालते कोई को जम्भाते विक्रमसे शिला वृक्षादि उखाड उखाड फेंक फेंक क्रीडा करते थे ॥६८॥

ऐसे सैकडों हजारों लाखों करोडों वानरोंसे पृथ्वी पूर्ण हो गई ॥ ६९ ॥ वानरोंकी सेना दिन बराबर चली जाती कहीं विश्राम नहीं करती थी, सब वानर हर्षित चित्त युद्धकी इच्छा तथा सीताके छुडानेकी इच्छा किये चले जाते थे ॥ ७०-७१ ॥ नाना प्रकारके वृक्ष लगे हुए सह्य पर्वतपर कूद कूदि चढे ॥ ७२ ॥ सह्य और मलय दोनों पर्वतोंपरकी नदियां झरने आदि देखते हुए राम चले जाते थे ॥ ७३ ॥ चम्पको करवीरादि वृक्षोंको वानर लो तोडते चले जाते थे ॥ ७४ ॥

अशोक करंज प्लक्ष न्यग्रोध पुन्नागादि वृक्षोंको भी तोडते जाते थे ॥ ७५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधाः काननद्रुमाः ।
वायुवेगप्रचलिताः पुष्पैरवकिरन्ति तान् ७६
मारुतः सुखसंस्पर्शो वाति चन्दनशीतलः ।
षट्पदैरनुकूजद्भिर्वनेषु मधुगन्धिषु ७७
अधिकं शैलराजस्तु धातुभिस्तु विभूषितः ।
धातुभ्यः प्रसृतो रेणुर्वायुवेगेन घट्टितः ॥
सुमहद्वानरानीकं छादयामास सर्वतः ७८
गिरिप्रस्थेषु रम्येषु सर्वतः संप्रपुष्पिताः ।
केतक्यः सिन्दुवाराश्च वासन्त्यश्च मनोरमाः ७९
माधव्यो गन्धपूर्णाश्च कुन्दगुल्माश्च पुष्पिताः ।
चिरिबिल्वा मधूकाश्च वञ्जुला वकुलास्तथा ८०
रञ्जकास्तिलकाश्चैव नागवृक्षाश्च पुष्पिताः ।
चूताः पाटलिकाश्चैव कोविदाराश्च पुष्पिताः ८१
मुचुलिन्दार्जुनाश्चैव शिंशपाः कुटजास्तथा ।
हिन्तालास्तिनिशाश्चैव चूर्णका नीपकास्तथा ८२
नीलाशोकाश्च सरला अङ्कोलाः पद्मकास्तथा ।
प्रीयमाणैः प्लवङ्गैस्तु सर्वे पर्याकुलीकृताः ८३
वाप्यस्तस्मिन्गिरौ रम्याः पल्वलानि तथैव च ।

अच्छे अच्छे पत्थरोंपर चले जाते वानरोंके ऊपर वनवृक्ष वायुवेगसे कम्पित हो फूल बरसाते ॥ ७६ ॥ सुगन्धित वनोंमें भ्रमर गूंज रहे थे, सुखदाई पवन बहता था ॥ ७७ ॥ वह पर्वत धातुओंसे अधिक विभूषित था इससे वायुके वेगसे धातुओंके रगड जानेसे ऐसी धूलि उठी कि उसने वानरी सेनाको ढक दिया ॥ ७८ ॥ सब पर्वतपर केतकी, वासन्ती कुन्दकी, व झाडियां फूल रही थीं ॥ ७९ ॥

चिलौल, महुआ, वकुल, तिलक आदि वृक्ष फूल रहे थे, आम्र कोबिदार, मुचुकुन्द अर्ज्जुन कुरैया, आदि पेड ॥ ८०–८१ ॥ तथा हिन्ताल, तिनिश, चूर्णक, कदम्ब, अशोक, अङ्कोल पद्मक ये पुष्पसहित पादप सब हर्षित वानरोंसे समाकुल हो गये ॥ ८२–८३ ॥ उस पर्वतपर रम्य वापियां तथा छोटी छोटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चक्रवाकानुचारिताः कारण्डवनिषेविताः ८४
प्लवैः क्रौञ्चैश्च संकीर्णा वराहमृगसेविताः।
ऋक्षैस्तरक्षुभिः सिंहैः शार्दूलैश्च भयावहैः ८५
व्यालैश्च बहुभिर्भीमैः सेव्यमानाः समन्ततः ।
पद्मैः सौगन्धिकैः फुल्लैः कुमुदैश्चोत्पलैस्तथा ८६
वारिजैर्विविधैः पुष्पै रम्यास्तत्र जलाशयाः।
तस्य सानुषु कूजन्ति नाना द्विजगणास्तथा ८७
स्नात्वा पीत्वोदकान्यत्र जले क्रीडन्ति वानराः ।
अन्योन्यं प्लावयन्ति स्म शैलमारुह्य वानराः ८८
फलान्यमृतगन्धीनि मूलानि कुसुमानि च ।
बभञ्जुर्वानरास्तत्र पादपानां मदोत्कटाः ८९
द्रोणमात्रप्रमाणानि लम्बमानानि वानराः ।
ययुः पिबन्तः स्वस्थास्ते मधूनि मधुपिङ्गलाः ९०
पादपानवभञ्जन्तो विकर्षन्तस्तथा लताः ।
विधमन्तो गिरिवरान्प्रययुः प्लवगर्षभाः ९१

तलैयां थीं उनमें चकई चकवा, कारण्डव ॥ ८४ ॥ क्रौंचादि पक्षी मधु वाणी बोल रहे थे वराह मृगादि सेव वनोंमें घूम रहे थे, रीछ, सिंह, शार्दूल ॥ ८५ ॥ सर्प आदि भयावह जन्तुओंसे सेवित फूले हुए सौगन्धिक कुमुद उत्पल ॥ ८६ ॥ तथा नानाकमलोंसे बहुत सुन्दर वहांके तालाब हो रहे थे, उस पर्वतके शृंगोंपर नाना पक्षी बोला करते ॥ ८७ ॥ उनमें स्नान व जलपान कर वानरगण जलक्रीडा करने लगे वे वानर पर्वतपर चढ एक दूसरेको ढकेलने ॥ ८८ ॥ व वृक्षोंके अमृततुल्य मीठे व सुगन्धित फूल फल, मूल तोड तोड फेंकने व खाने लगे और वृक्षोंसें दोनोंके आकार हो लटक गये; मधु पी पी स्वस्थचित्त हो पेडोंको तोडते, लताओंको खींचते, पहाडोंको धमकाते चले जाते थे ॥ ८९-९१ ॥ तथा बहुत वानर मधु पी हर्षित हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृक्षेभ्योऽन्ये तु कपयो नन्दन्तो मधुदार्पिताः।
अन्ये वृक्षान्प्रपद्यन्ते प्रपिबन्त्यपि चापरे ९२
बभूव वसुधा तैस्तु संपूर्णा हरिपुङ्गवैः।
यथा कलमकेदारैः पक्वैरिव वसुन्धरा ९३
महेन्द्रमथ संप्राप्य रामो राजीवलोचनः।
आरुरोह महाबाहुः शिखरं द्रुमभूषितम् ९४
ततः शिखरमारुह्य रामो दशरथात्मजः।
कूर्ममीनसमाकीर्णमपश्यत्सलिलाकुलम् ९५
ते सह्यं समतिक्रम्य मलयं च महागिरिम्।
आसेदुरानुपूर्व्येण समुद्रं भीमनिःस्वनम् ९६
अवरुह्य जगामाशु वेलावनमनुत्तमम्।
रामो रमयतां श्रेष्ठः ससुग्रीवः सलक्ष्मणः ९७
अथ धौतोपलतलां तोयौघैः सहसोत्थितैः।
वेलामासाद्य विपुलां रामो वचनमब्रवीत् ९८
एते वयमनुप्राप्ताः सुग्रीववरुणालयम्।
इहेदानीं विचिन्ता सा या नः पूर्वमुपस्थिता ९९

एक पेडसे दूसरेपर कूद जाते ॥ ९२ ॥ उन वानरोंसे भूमि ऐसी पूर्ण होगई जैसी जडहन धानसे ॥ ९३ ॥

महाबाहु राम महेंद्राचलपर चढ वृक्षोंसे भूषित उसके शिखरपर चढे ॥ ९४ ॥ वहां मीन, कच्छप, मगर आदिसे भरा एक तालाव देखा ॥ ९५ ॥ तदनु उन सबने सह्य व मलय पर्वतको लांघ भयङ्कर शब्दवाला समुद्र देखा ॥ ९६ ॥ फिर महेंद्राचलकी तराईसे निकल समुद्रतटके वनमें राम, सुग्रीव व लक्ष्मण सहित पहुंचे ॥ ९७ ॥ समुद्रकी लहरों द्वारा धुले समुद्र तीरपर पहुंच राम बोले हे सुग्रीव! अब तो हम समुद्रके पास पहुंच गये पर यहां वही चिन्ता फिर हुई जो प्रथम हुई थी ॥ ९८-९९ ॥ यहांसे आगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अतः परमतीरोयं सागरः सरितां पतिः।
न चायमनुपायेन शक्यस्तरितुमर्णवः १००
तदिहैव निवेशोऽस्तु मन्त्रः प्रस्तूयतामिह।
यथेदं वानरबलं परं पारमवाप्नुयात् १०१
इतीव स महाबाहुः सीताहरणकर्शितः।
रामः सागरमासाद्य वासमाज्ञापयत्तदा १०२
सर्वाः सेना निवेश्यन्तां वेलायां हरिपुङ्गव।
संप्राप्तो मन्त्रकालो नः सागरस्येह लङ्घने १०३
स्वां स्वां सेनां समुत्सृज्य मा च कश्चित्कुतो व्रजेत्।
गच्छन्तु वानराः शूरा ज्ञेयं छन्नं भयं च नः १०४
रामस्य वचनं श्रुत्वा सुग्रीवः सहलक्ष्मणः।
सेनां निवेशयत्तीरे सागरस्य द्रुमायुते १०५
विरराज समीपस्थं सागरस्य च तद्बलम्।
मधुपाण्डुजलः श्रीमान्द्वितीय इव सागरः १०६
वेलावनमुपागम्य ततस्ते हरिपुङ्गवाः।
निविष्टाश्च परं पारं काङ्क्षमाणा महोदधेः १०७

अब समुद्र ही है बिना उपाय इसे नहीं उतर सकेंगे ॥ १०० ॥ अब यहां सब ठहर वह विचारें कि कैसे वानरोंकी सेना समुद्रके दूसरी पार जावे ॥ १०१ ॥ सीताके वियोगसे दुर्बल महाबाहु रामने वहीं रहनेकी आज्ञा दी ॥ १०२ ॥

हे वानर पुङ्गव सब सेना समुद्रके तटपर ठहरा दो अब समुद्र तरनेके लिये सम्मति करनेका समय आया है ॥ १०३ ॥ अपनी २ सेना छोड कोई कहीं न जावे, राक्षसोंसे यहां गुप्त भय है इससे कुछ शूरवीर वानर सेनाके चारों ओर सावधानीसे घूमते रहें ॥ १०४ ॥ रामकी बात सुन लक्ष्मण सहित सुग्रीवने वृक्ष लगे हुए समुद्रके तटपर सब सेनाको उतार दिया ॥ १०५ ॥ समुद्र तटपर ठहरनेसे वह सेना मधुसम धूसर रंगके जलके सागरवत् शोभित हुई ॥ १०६ ॥ सागर तटके वनमें सब वानर समुद्रके दूसरी पार जानेकी इच्छा किये हुए बैठे ॥ १०७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषां निविशमानानां सैन्यसन्नाहनिःस्वनः ।
अन्तर्धाय महानादमर्णवस्य प्रशुश्रुवे १०८
सा वानराणां ध्वजिनी सुग्रीवेणाभिपालिता ।
त्रिधा निविष्टा महती रामस्यार्थपराभवत् १०९
सा महार्णवमासाद्य हृष्टा वानरवाहिनी ।
वायुवेगसमाधूतं पश्यमाना महार्णवम् ११०
दूरपारमसंबाधं रक्षोगणनिषेवितम् १११
पश्यन्तो वरुणावासं निषेदुर्हरियूथपाः ।
चण्डनक्रग्राहघोरं क्षपादौ दिवसक्षये ११२
हसन्तमिव फेनौघैर्नृत्यन्तमिव चोर्मिभिः ।
चन्द्रोदये समुद्भूतं प्रतिचन्द्रसमाकुलम् ११३
चण्डानिलमहाग्राहैः कीर्णं तिमितिमिङ्गिलैः ।
दीप्तभोगैरिवाकीर्णं भुजङ्गैर्वरुणालयम् ११४
अवगाढं महासत्त्वैर्नानाशैलसमाकुलम् ।
सुदुर्गं दुर्गमार्गं तमगाधमसुरालयम् ११५
मकरैर्नागभोगैश्च विगाढा वातलोलिताः ।

वहां निविष्ट सैनिकोंके शब्दको तुच्छ करता हुआ सागरका बड़ा भारी गर्जन सुनाई देने लगा ॥ १०८ ॥ वानरोंकी वह सेना तीन भागोंमें विभक्त रामके अर्थमें तत्पर हुई ॥ १०९ ॥ समुद्रतट स्थित वानर वायु वेगसे अधिक लहराते हुएको सागर देखने लगे ॥ ११० ॥ दूरान्त राक्षस सेवित बाधारहित सागरको देखते हुए वानर सरदार वहां स्थित हुए, बड़े बड़े मकर घड़ियालोंसे सेवित ॥ १११-११२ ॥ तथा संध्याकालमें पानीसे मानो हँसनेवाला सागर लहरोंसे नाचता था और प्रचण्ड पवनके समान दौड़ते हुए ॥ ११३ ॥ तिमि व तिमिंगिलादि मछलियोंसे युक्त था, प्रकाशित फणवाले सांपों तथा और अन्य जल जीवोंसे युक्त पर्वतोंसे व्याप्त ॥ ११४ ॥ इसीसे मार्ग रहित अगम्य असुरोंका स्थान नाके व सर्पों युक्त पवनके वेगसे ॥ ११५ ॥ बड़ी भारी लहरें जिसमें उठती थीं व गिरती थीं मणियोंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उत्पेतुश्च निपेतुश्च प्रहृष्टा जलराशयः ११६
अग्निचूर्णमिवाविद्धं भास्वराम्बुमहोरगम् ।
सुरारिनिलयं घोरं पातालविषयं सदा ११७
सागरं चाम्बरप्रख्यमम्बरं सागरोपमम् ।
सागरं चाम्बरं चेति निर्विशेषमदृश्यत ११८
संपृक्तं नभसाप्यम्भः संपृक्तं च नभोऽम्भसा ।
तादृग्रूपे स्म दृश्येते तारारत्नसमाकुले ११९
समुत्पतितमेघस्य वीचिमालाकुलस्य च ।
विशेषो न द्वयोरासीत्सागरस्याम्बरस्य च १२०
अन्योन्यैराहताः सक्ताः सस्वनुर्भीमनिःस्वनाः ।
ऊर्मयः सिन्धुराजस्य महाभेर्य इवाम्बरे १२१
रत्नौघजलसन्नादं विषक्तमिव वायुना ।
उत्पतन्तमिव क्रुद्धं यादोगणसमाकुलम् १२२
ददृशुस्ते महात्मानो वाताहतजलाशयम् ।
अनिलोद्धूतमाकाशे प्रलपन्तमिवोर्मिभिः १२३

प्रकाशित सर्पोंसे छोडा हुआ ॥ ११६ ॥ विष अग्निकी चिनगारियोंके तुल्य विदित होता था ॥ ११७ ॥

मणियुक्त समुद्र नक्षत्र युक्त आकाशके तुल्य और तारागण युक्त आकाश मणियुक्त सागरवत् ज्ञात होता था ॥ ११८ ॥ आकाशसे जल तथा जलसे आकाश बँधा था जिससे नक्षत्र व रत्नोंके होनेसे आकाश व समुद्रका समान रूप दीख पडता था ॥ ११९ ॥ आकाशमें बादलों तथा समुद्रमें लहरोंसे भी आकाश व समुद्रमें कुछ विशेषता नहीं दीख पडती थी ॥ १२० ॥ आपसमें टकराती सागर तरङ्गोंसे जो गर्जन होता था वह आकाशस्थमें देवताओंके नगारोंके तुल्य था ॥ १२१ ॥ वायुसे बंधा रत्नोंको उछलता जल खलभलाता था मानो क्रोध युक्त समुद्र कुछ उबाल रहा है ॥ १२२ ॥ वायुके लगनेसे बडी बडी लहरोंके उठनेसे समुद्र मानो आकाशसे वार्त्ता कर रहा था ऐसा समुद्र वानरोंने देखा ॥ १२३ ॥ तरङ्गोंके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततो विस्मयमापन्ना हरयो ददृशुः स्थिताः ।
भ्रान्तोर्मिजालसन्नादं प्रलोलमिव सागरम् ॥ १२४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥ [२०२]

॥ पञ्चमः सर्गः ॥

सा तु नीलेन विधिवत्स्वारक्षा सुसमाहिता ।
सागरस्योत्तरे तीरे साधु सा विनिवेशिता ॥ १
मैन्दश्च द्विविदश्चोभौ तत्र वानरपुङ्गवौ ।
विचेरतुश्च तां सेनां रक्षार्थं सर्वतो दिशम् ॥ २
निविष्टायां तु सेनायां तीरे नदनदीपतेः ।
पार्श्वस्थं लक्ष्मणं दृष्ट्वा रामो वचनमब्रवीत् ॥ ३
शोकश्च किल कालेन गच्छता ह्यपगच्छति ।
मम चापश्यतः कान्तामहन्यहनि वर्धते ॥ ४
न मे दुःखं प्रिया दूरे न मे दुःखं हृतेति च ।
एतदेवानुशोचामि वयोऽस्या ह्यतिवर्तते ॥ ५
वाहि वात यतः कान्ता तां स्पृष्ट्वा मामपि स्पृश ।
त्वयि मे गात्रसंस्पर्शश्चन्द्रे दृष्टिसमागमः ॥ ६

उठनेके शब्दसे मानो आकाशसे बातें करते हुएसे समुद्रको देख वानरोंको बडा आश्चर्य हुआ ॥ १२४ ॥

॥ यहाँ ४ था सर्ग समाप्त हुआ ॥

उस सेनाको नीलने सागरके उत्तर तटपर अच्छे सुप्रबन्धसे ठहराया ॥ १ ॥ मैन्द द्विविद दोनों वानर सेनाकी रक्षाके लिये उसके चहुं ओर घूमने लगे ॥ २ ॥ जब सागरतीरपर सेना ठहर गई तो पार्श्वस्थित लक्ष्मणसे राम कहने लगे ॥ ३ ॥ जैसे समय बीतता जाता है वैसे वैसे शोक दूर होता है, जानकीको बिना देखे मेरा शोक दिन दिन बढता है ॥ ४ ॥ मुझे प्रियाके दूर रहने तथा उसके हरे जानेका उतना दुःख नहीं उसकी अवस्था व्यर्थ बीती जानेका है ॥ ५ ॥

यह कह शोकातुर हो बोले हे पवन ! तुम बहो क्योंकि सीताको छूकर मुझको छूनेसे तुम्हारा स्पर्श मुझे चन्द्रमाके समागमके तुल्य जान पडता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तन्मे दहति गात्राणि विषं पीतमिवाशये।
हा नाथेति प्रिया सा मां ह्रियमाणां यदब्रवीत् ७
तद्वियोगेन्धनवता तच्चिन्ताचिमलार्चिषा।
रात्रिन्दिवं शरीरं मे दह्यते मदनाग्निना ८
अवगाह्यार्णवं स्वप्स्ये सौमित्रे भवता विना।
एवं च प्रज्वलन्कामो न मां सुप्तं जले दहेत् ९
बह्वेतत्कामयानस्य शक्यमेतेन जीवितुम्।
यदहं सा च वामोरूरेकां धरणिमाश्रितौ १०
केदारस्येव केदारः सोदकस्य निरूदकः।
उपस्नेहेन जीवामि जीवन्तीं यच्छृणोमि ताम् ११
कदा नु खलु सुश्रोणीं शतपत्रायतेक्षणाम्।
विजित्य शत्रून्द्रक्ष्यामि सीतां स्फीतामिव श्रियम् १२
कदा सुचारुदन्तोष्ठं तस्याः पद्ममिवाननम्।
ईषदुन्नाम्य पास्यामि रसायनमिवातुरः १३
तौ तस्याः सहितौ पीनौ स्तनौ तालफलोपमौ।

है ॥ ६ ॥ हरनेके समय मेरी प्रियाने जो हा नाथ कह मुझको पुकारा था वह मेरे अंगोंको ऐसा जलाता है जैसे विषपान किये मनुष्यको विष ॥ ७ ॥ सीताके वियोग रूपी ईंधनसे बढी हुई उसकी चिन्तारूपी प्रज्वलित चिनगारी व मदनाग्नि मेरे अंग जलाये देती है ॥ ८ ॥ हे लक्ष्मण ! मैं तुम्हारे बिना सागरमें सो रहूंगा जिससे जलमें सोते हुए मुझे काम भस्म न करे ॥ ९ ॥ यदि मैं और सीता एक ही पृथ्वीपर स्थित न होते तो उनके वियोगसे व्याकुल हो न जीता ॥ १० ॥ जैसे पानीसे भरे हुए खेतकी सर्दीसे निकटस्थ सूखा खेत भी कुछ हरा बना रहता है उसी तरह मैं जानकीको जीती सुन जीता हूं ॥ ११ ॥

समरमें शत्रुओंको जीत कमलनयनी सीताको कब देखूंगा ॥ १२ ॥ मनोहर दांत, होठवाली जानकी कमलवत् मुखका अधरामृत कब पान करूंगा ॥ १३ ॥ उस हँसती हुई सीताके तालफलवत् पीन स्तन कब मुझको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कदा नु खलु सोत्कम्पौ हसन्त्या मां भजिष्यतः १४
सा नूनमसितापाङ्गी रक्षोमध्यगता सती।
मन्नाथा नाथहीनेव त्रातारं नाधिगच्छति १५
कथं जनकराजस्य दुहिता मम च प्रिया।
राक्षसीमध्यगा शेते स्नुषा दशरथस्य च १६
अविक्षोभ्याणि रक्षांसि सा विधूयोत्पतिष्यति।
विधूय जलदान्नीलाञ्शशिलेखा शरत्स्विव १७
स्वभावतनुका नूनं शोकेनानशनेन च।
भूयस्तनुतरा सीता देशकालविपर्ययात् १८
कदा नु राक्षसेन्द्रस्य निधायोरसि सायकान्।
शोकं प्रत्याहरिष्यामि शोकमुत्सृज्य मानसम् १९
कदा नु खलु मे साध्वी सीतामरसुतोपमा।
सोत्कण्ठा कण्ठमालम्ब्य मोक्ष्यत्यानन्दजं जलम् २०
कदा शोकमिमं घोरं मैथिलीविप्रयोगजम्।
सहसा विप्रमोक्ष्यामि वासः शुक्लेतरं यथा २१
एवं विलपतस्तस्य तत्र रामस्य धीमतः।
दिनक्षयान्मन्दवपुर्भास्करोऽस्तमुपागतः २२

भजेंगे ॥ १४ ॥ राक्षसोंके बीचमें बैठी हुई सीता मुझसा नाथ पाकर भी अनाथोंकी भांति अपना रक्षक नहीं देखती ॥ १५ ॥ जनककन्या मेरी प्रिया व दशरथजीकी पुत्रवधू हो राक्षसोंके बीचमें सोती होगी ! ॥ १६ ॥ दुर्जय राक्षसोंको कम्पा सीता ऐसी निकल आवेंगी जैसे शरद ऋतुमें नील मेघको कंपाकर चन्द्र रेखा ॥ १७ ॥ स्वभावतः कृश सीता शोक व उपवासोंसे और भी दुबली होगई होगी ॥ १८ ॥

मैं कब रावणकी छातीमें बाण मार अपना शोक छोड उसको शोक कराऊं ॥ १९ ॥ सीता प्रीतिसे मेरे गलेमें लिपटकर आनन्दाश्रु कब छोडेगी ॥ २० ॥ सीताके वियोगसे उत्पन्न शोकको कब मालिन वस्त्रके समान छोड सकूंगा ? इस तरह रामके विलाप करते दिनके क्षयसे मन्दतेज सूर्य अस्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आश्वासितो लक्ष्मणेन रामः सन्ध्यामुपासत ।
स्मरन्कमलपत्राक्षीं सीतां शोकाकुलीकृतः २३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥ [२२५]

॥ षष्ठः सर्गः ॥

लङ्कायांतु कृतं कर्म घोरं दृष्ट्वा भयावहम् ।
राक्षसेन्द्रो हनुमता शक्रेणेव महात्मना ॥
अब्रवीद्राक्षसान्सर्वान्ह्रिया किंचिदवाङ्मुखः १
धर्षिता च प्रविष्टा च लङ्का दुष्प्रसहा पुरी ।
तेन वानरमात्रेण दृष्टा सीता च जानकी २
प्रासादो धर्षितश्चैत्यः प्रवरा राक्षसा हताः ।
आविला च पुरी लङ्का सर्वा हनुमता कृता ३
किं करिष्यामि भद्रं वः किं वो युक्तमनन्तरम् ।
उच्यतां नः समर्थं यत्कृतं च सुकृतं भवेत् ४
मन्त्रमूलं च विजयं प्रवदन्ति मनस्विनः ।
तस्माद्वै रोचये मन्त्रं रामं प्रति महाबलाः ५

होगया ॥ २२ ॥ लक्ष्मणके बहुत समझानेपर रामने सन्ध्योपासन किया तथा फिर सीताका स्मरण करते हुए वह शोकाकुल होगये ॥ २३ ॥

॥ यहाँ ५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

हनुमान्का लङ्कामें बडा घोर युद्ध भयावह कर्म देख रावण लज्जासे कुछ नीचा मुखकर सब राक्षसोंसे बोला ॥ १ ॥ उस तुच्छ वानरने लङ्कामें आ सब पुरीको व्याकुल कर सीताको भी देख लिया ॥ २ ॥ प्रासादों और उपवनोंको विध्वंस कर बली राक्षसोंको मार लङ्काको भस्म कर हनुमान्ने मलिन कर दी ॥ ३ ॥ अब क्या किया जाय, तुम इस विषयमें क्या उचित समझते हो वह बताओ जो हम लोगोंसे हो सके ॥ ४ ॥ बुद्धिमानोंका कथन है कि सलाहसे कार्य करनेसे विजय होती है अतः मुझको सलाह ही कर कार्य करना रुचिकर है ॥ ५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रिविधाः पुरुषा लोके उत्तमाधममध्यमाः ।
तेषां तु समवेतानां गुणदोषौ वदाम्यहम् ६
मन्त्रिभिर्हि संयुक्तः समर्थैर्मन्त्रनिर्णये ।
मित्रैर्वापि समानार्थैर्बान्धवैरपि वाधिकैः ७
सहितो मन्त्रयित्वा यः कर्मारम्भान्प्रवर्तयेत् ।
दैवे च कुरुते यत्नं तमाहुः पुरुषोत्तमम् ८
एकोऽर्थं विमृशेदेको धर्मे प्रकुरुते मनः ।
एकः कार्याणि कुरुते तमाहुर्मध्यमं नरम् ९
गुणदोषौ न निश्चित्य त्यक्त्वा दैवव्यपाश्रयम् ।
करिष्यामीति यः कार्यमुपेक्षेत्स नराधमः १०
यथेमे पुरुषा नित्यमुत्तमाधममध्यमाः ।
एवं मन्त्रोऽपि विज्ञेय उत्तमाधममध्यमः ११
ऐकमत्यमुपागम्य शास्त्रदृष्टेन चक्षुषा ।
मन्त्रिणो यत्र निरतास्तमाहुर्मन्त्रमुत्तमम् १२
बह्वीरपि मतीर्गत्वा मन्त्रिणामर्थनिर्णयः ।
पुनर्यत्रैकतां प्राप्तः स मन्त्रो मध्यमः स्मृतः १३

उत्तम, मध्यम, अधम तीन प्रकारके मनुष्य होते हैं उनके गुणदोष मैं कहता हूं ॥ ६ ॥ जो सलाह करनेवाले कार्यमें अपने बराबर वाले मित्रोंसे व एकाग्रचित्त अपने भाई बान्धवोंसे मन्त्रणा करता और ॥ ७ ॥ सलाह कर कार्यका आरम्भ करता तथा देवताओंके कार्यमें भी कुछ यत्न करता है उसे उत्तम पुरुष कहते हैं ॥ ८ ॥ जो अकेला ही अर्थका चिन्तन व धर्ममें भी मति करता अकेला ही कार्यको करता उसे मध्यम पुरुष कहते हैं ॥ ९ ॥ और जो गुण दोषको न विचार दैवबलको कुछ नहीं समझता स्वयं ही सब कार्य करनेका विचार कर अन्योंकी उपेक्षा करता है उसे अधम पुरुष कहते हैं जैसे यह उत्तम मध्यम पुरुष होते हैं वैसे ही उत्तम, मध्यम, अधम तीन प्रकारका मन्त्र भी जानना चाहिये ॥ ११ ॥

जहां यथाशास्त्र बहुत लोग इकट्ठे होकर मन्त्रणा करते हैं उसे उत्तम सलाह कहते हैं ॥ १२ ॥ जहां मन्त्रियोंकी प्रथम बहुत मति होती है फिर मिलकर एक हो जाते हैं वह मन्त्रणा मध्यम कहलाती है ॥ १३ ॥ जहां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अन्योन्यमतिमास्थाय यत्र संप्रतिभाष्यते।
न चैकमत्ये श्रेयोस्ति मन्त्रः सोधम उच्यते १४
तस्मात्सुमन्त्रितं साधु भवन्तो मतिसत्तमाः।
कार्यं संप्रतिपद्यन्तामतत्कृत्यं मतं मम १५
वानराणां हि धीराणां सहस्रैः परिवारितः।
रामोभ्येति पुरीं लङ्कामस्माकमुपरोधकः १६
तरिष्यति च सुव्यक्तं राघवः सागरं सुखम्।
तरसा युक्तरूपेण सानुजः सबलानुगः १७
समुद्रमुच्छोषयति वीर्येणान्यत्करोति वा १८
तस्मिन्नेवं विधे कार्ये विरुद्धे वानरैः सह।
हितं पुरे च सैन्ये च सर्वं संमन्त्र्यतां मम १९

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥ [२४४]

॥ सप्तमः सर्गः ॥

इत्युक्ता राक्षसेन्द्रेण राक्षसास्ते महाबलाः।
ऊचुः प्राञ्जलयः सर्वे रावणं राक्षसेश्वरम् १
द्विषत्पक्षमविज्ञाय नीतिबाह्यास्त्वबुद्धयः।

बहुत लोग बैठे सलाह करते हैं पर उन सबकी एक राय नहीं होती वह सलाह अधम कहलाती है ॥ १४ ॥ इस विषय जो कार्य करना हो वह विचारो और जो है वह बताओ ॥ १५ ॥

बडी वानरसेना संग ले लङ्कापुरीको घेरेंगे ॥ १६ ॥ राम अपने भाई मन्त्री तथा सेनासहित निस्सन्देह सागर उतर आवेंगे ॥ १७ ॥ क्या तो समुद्रको स्ववीर्यसे सोख लेंगे या और ही उपाय करेंगे इस विषयमें वह वानरोंके साथ सलाह करेंगे ही इससे पुरी तथा सैन्य सबका हित हो ऐसा उपाय विचारिये ॥ १८ ॥

॥ यहाँ ६ ठा सर्ग समाप्त हुआ ॥

रावणके उन राक्षसोंसे ऐसा कहनेपर वे हाथ जोड नीति विरुद्ध शत्रु बलका विचार न कर बोले ॥ १ ॥ राजन् ! मुद्गर, शूल, शक्ति, पटा आदि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजन्परिघशक्त्यृष्टिशूलपाट्टिशकुन्तलम् २
सुमहन्नो बलं कस्माद्विषादं भजते भवान्।
त्वया भोगवतीं गत्वा निर्जिताः पन्नगा युधि ३
कैलासशिखरावासी यक्षैर्बहुभिरावृतः।
सुमहत्कदनं कृत्वा वश्यस्ते धनदः कृतः ४
स महेश्वरसख्येन श्लाघमानस्त्वया विभो।
निर्जितः समरे रोषाल्लोकपालो महाबलः ५
विनिपात्य च यक्षौघान्विक्षोभ्य विनिगृह्य च।
त्वया कैलासशिखराद्विमानमिदमाहृतम् ६
मयेन दानवेन्द्रेण त्वद्भयात्सख्यमिच्छता।
दुहिता तव भार्यार्थं दत्ता राक्षसपुङ्गव ७
दानवेन्द्रो महाबाहो वीर्योत्सिक्तो दुरासदः।
विगृह्य वशमानीतः कुम्भीनस्याः सुखावहः ८
निर्जितास्ते महाबाहो नागा गत्वा रसातलम्।
वासुकिस्तक्षकः शङ्खो जटी च वशमाहृताः ९
अक्षया बलवन्तश्च शूरा लब्धवराः पुनः।
त्वया संवत्सरं युद्ध्वा समरे दानवा विभो १०

सब युक्त ॥ २ ॥ हमारी बडी सेनाके होते विषाद क्यों करते हो ॥ ३ ॥ आपने तो कैलास स्थित यक्षों सहित कुबेरको जीतकर वशमें कर लिया था ॥ ४ ॥ महादेवके मित्र होनेके कारण बडो बडाईके योग्य तथा महाबली लोकपाल होनेपर भी तुमने उनको जीत लिया था ॥ ५ ॥ यक्षोंको मार बन्दी कर तुम यह पुष्पक विमान ले आये थे ॥ ६ ॥ तुम्हारे डरसे दानवने अपनी कन्या तुमको दे दी ॥ ७ ॥ अति बली दानवोंमें श्रेष्ठ दुरासद मधुदैत्यको भी पकड अपने वशमें कर लिया था ॥ ८ ॥ बासुकि, तक्षक, शंख आदि नागोंको जीत तुमने वशमें किया था ॥ ९ ॥
अक्षय बलवान् शूर ,दानवोंसे एक वर्षतक युद्ध कर ॥ १० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स्वबलं समुपाश्रित्य नीता वशमरिन्दम ।
मायाश्चाधिगतास्तत्र बह्वयो वै राक्षसाधिप ११
शूराश्च बलवन्तश्च वरुणस्य सुता रणे ।
निर्जितास्ते महाभाग चतुर्विधबलानुगाः । १२
मृत्युदण्डमहाग्राहं शाल्मलीद्रुममण्डितम् ।
कालपाशमहावीचिं यमकिङ्करपन्नगम् १३
महाज्वरेण दुर्धर्षं यमलोकमहार्णवम् ।
अवगाह्य त्वया राजन्यमस्य बलसागरम् १४
जयश्च विपुलः प्राप्तो मृत्युश्च प्रतिषेधितः ।
सुयुद्धेन च ते सर्वे लोकास्तत्र सुतोषिताः १५
क्षत्रियैर्बहुभिर्वीरैः शक्रतुल्यपराक्रमैः ।
आसीद्वसुमती पूर्णा महद्भिरिव पादपैः १६
तेषां वीर्यगुणोत्साहैर्न समो राघवो रणे ।
प्रसह्यते त्वया राजन्हताः समरदुर्जयाः १७
तिष्ठ वा किं महाराज श्रमेण तव वानरान् ।
अयमेको महाराज इन्द्रजित्क्षपयिष्यति १८

स्वबलसे उनको अपने वशमें कर वहां बहुतसी माया सीखी
॥ ११ ॥ और वरुणके बली पुत्रोंको सेनासहित तुमने रणमें जीता
॥ १२ ॥ घडियाल रूप मृत्युयुक्त, सेमरके वृक्षसे भूषित, काल फां
सहित यमदूतोंको महानाग बनाये ॥ १३ ॥ बडे दुःखसे सहनेयोग्य मह
सागर रूप यमलोकमें स्नान कर ॥ १४ ॥ बडी भारी जय तुमने पाई
तथा मृत्युको भी रोक घोर युद्धसे सब लोकोंको सन्तुष्ट कर दिया
॥ १५ ॥ इन्द्र तुल्य बली बडे वीर क्षत्रियोंसे सब पृथ्वी वृक्षोंके सम
पूर्ण थी ॥ १६ ॥ उनके वीर्यगुण व उत्साहोंके समान राम रणमें नहीं
तुमने उन सबको दुर्जय होनेपर भी रणमें जीतकर मार डाला ॥ १७ ॥
इससे यह मेघनाद अकेले ही सब वानरोंको मार डालेंगे ॥ १८ ॥ क्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेन च महाराज माहेश्वरमनुत्तमम्।
इष्ट्वा यज्ञं वरो लब्धो लोके परमदुर्लभः १९
शक्तितोमरमीनं च विनिकीर्णान्त्रशैवलम्।
गजकच्छपसंबाधमश्वमण्डूकसंकुलम् २०
रुद्रादित्यमहाग्राहं मरुद्वसुमहोरगम्।
रथाश्वगजतोयौघं पदातिपुलिनं महत् २१
अनेन हि समासाद्य देवानां बलसागरम्।
गृहीतो दैवतपतिर्लङ्कां चापि प्रवेशितः २२
पितामहनियोगाच्च मुक्तः शम्बरवृत्रहा।
गतस्त्रिविष्टपं राजन्सर्वदेवनमस्कृतः २३
तमेव त्वं महाराज विसृजेन्द्रजितं सुतम्।
यावद्वानरसेनां तां सरामां नयति क्षयम् २४
राजन्नापद्युक्तेयमागता प्राकृताज्जनात्।
हृदि नैव त्वया कार्या त्वं वधिष्यसि राघवम् २५

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ [२६९]

इन्होंने महादेवका भारी यज्ञकर दुर्लभ बर पाया है ॥ १९ ॥ तथा यह शक्ति तोमर रूपी मीन मेदा चर्बी तथा आंतें रूपी सिवाल हाथी रूपी कच्छप घोडा रूपी मेंढक ॥ २० ॥ रुद्र आदित्य रूपी मगर, पवन और वसुरूप महोरग रथ अश्व और गज रूपी जल तथा पदाति रूपी तटसे पूर्ण ॥ २१ ॥ देव समुद्रमें स्नान कर इन्द्रको पकड कर लङ्कामें प्रवेश कर गये थे ॥ २२ ॥ ब्रह्माके कहनेपर इन्द्रको छोडा था तब वह स्वर्गको गये थे ॥ २३ ॥ सो आप इन्द्रजीतको जबतक वह वानरों सहित रामचन्द्रको यमपुर न भेज दे तबतक छोड दीजिये ॥ २४ ॥ मनुष्योंसे आई हुई आपदको आप कुछ न समझें निस्सन्देह आप रामका वध करेंगे ॥ २५ ॥

॥ यहाँ ७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अष्टमः सर्गः ।

ततो नीलाम्बुदप्रख्यः प्रहस्तो नाम राक्षसः ।
अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं शूरः सेनापतिस्तदा १
देवदानवगन्धर्वाः पिशाचपतगोरगाः ।
सर्वे धर्षयितुं शक्याः किं पुनर्मानवौ रणे २
सर्वे प्रमत्ता विश्वस्ता वञ्चिताः स्म हनूमता ।
न हि मे जीवतो गच्छेज्जीवन्स वनगोचरः ३
सर्वां सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम् ।
करोम्यवानरां भूमिमाज्ञापयतु मां भवान् ४
रक्षां चैव विधास्यामि वानराद्रजनीचर ।
नागमिष्यति ते दुःखं किंचिदात्मापराधजम् ५
अब्रवीत्तमसंक्रुद्धो दुर्मुखो नाम राक्षसः ।
इदं न क्षमणीयं हि सर्वेषां नः प्रधर्षणम् ६
अयं परिभवो भूयः पुरस्यान्तःपुरस्य च ।
श्रीमतो राक्षसेन्द्रस्य वानरेन्द्रप्रधर्षणम् ७
अस्मिन्मुहूर्ते गत्वैको निवर्तिष्यामि वानरान् ।
प्रविष्टान्सागरं भीममम्बरं वा रसातलम् ८

ततः सेनापति, अतिशूर प्रहस्त नामका राक्षस हाथ जोड रावणसे बो॰ ॥ १ ॥ कि हम देव दानव, गंधर्व, नाग, इन सबको जीतनेमें समर्थ फिर मनुष्य राम लक्ष्मण क्या चीज हैं ॥ २ ॥ हमारे प्रमत्त होनेसे हनुमनके छलमें हम आगये हम सब सावधान होते तो वह जीता कभी न जा पाता ॥ ३ ॥ अब आप आज्ञा दें तो सागर वन पर्वत सहित भूमि वा रहित कर डालें ॥ ४ ॥ वानरोंसे राक्षसोंकी रक्षा करें ॥ ५ ॥

बडा क्रोधकर दुर्मुख नाम राक्षस बोला कि उस वानरका किया हु अनादर हम नहीं सह सकते ॥ ६ ॥ लङ्का अन्तःपुर तथा राक्षसराज अपमान जो उसने किया है उसे भी हम लोग नहीं सह सकते ॥७॥ इस अभी मैं अकेला ही जाकर जहां कहीं वानर होंगे सबको मार डालूंगा ॥ ८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततोऽब्रवीत्सुसंक्रुद्धो वज्रदंष्ट्रो महाबलः ।
प्रगृह्य परिघं घोरं मांसशोणितदूषितम् ९
किं नो हनूमता कार्यं कृपणेन तपस्विना ।
रामे तिष्ठति दुर्धर्षे सुग्रीवेऽपि सलक्ष्मणे १०
अद्य रामं ससुग्रीवं परिघेण सलक्ष्मणम् ।
आगमिष्यामि हत्वैको विक्षोभ्य हरिवाहिनीम् ११
इदं ममापरं वाक्यं शृणु राजन्यदिच्छसि ।
उपायकुशलो ह्येव जयेच्छत्रूनतन्द्रितः १२
कामरूपधराः शूराः सुभीमा भीमदर्शनाः ।
राक्षसानां सहस्राणि राक्षसाधिप निश्चिताः १३
काकुत्स्थमुपसंगम्य बिभ्रतं मानुषं वपुः ।
सर्वे ह्यसंभ्रमा भूत्वा ब्रुवन्तु रघुसत्तमम् १४
प्रेषिता भरतेनैव भ्रात्रा तव यवीयसा ।
स हि सेनां समुत्थाप्य क्षिप्रमेवोपयास्यति १५
ततो वयमितस्तूर्णं शूलशक्तिगदाधराः ।
चापबाणासिहस्ताश्च त्वरितास्तत्र यामहे १६

तदनु महाबली वज्रदंष्ट्र मांस रुधिर लगा परिघ ग्रहण कर बोला ॥ ९ ॥ कि दुर्धर्ष राम लक्ष्मण व सुग्रीवके होते हनुमानको मारनेसे क्या प्रयोजन सिद्ध होगा ? ॥ १० ॥ सो मैं आज अकेला ही इस मुद्गरसे राम लक्ष्मण व सुग्रीवको मार कपिसेनाको कंपा कर चला आऊं ॥ ११ ॥

राजन् ! मेरी एक और भी बात सुनो क्योंकि जो उपाय करनेमें कुशल होता है वही सावधान हो वैरियोंको जीतता है ॥ १२ ॥ हे राक्षसराज भयंकर रूपधारी बडे वीर एक सहस्र राक्षस निश्चय कर ॥ १३ ॥ मनुष्य बन रामके पास पहुंच मनुष्यकी बोलीसे सावधानीसे कहें कि ॥ १४ ॥ हम लोगोंको तुम्हारे छोटे भाई भरतजीने भेजा है यह सुन राम सेनाको छोड शीघ्र वहां चले आवेंगे ॥ १५ ॥ तब हम सब शीघ्रतासे शूल गदादि धारण किये धनुषबाण हाथमें लिये तुरन्त उनके पास पहुंचेंगे ॥ १६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आकाशे गणशः स्थित्वा हत्वा तां हरिवाहिनीम् ।
अश्मशस्त्रमहावृष्ट्या प्रापयाम यमक्षयम् १७
एवं चेदुपसर्पेतामनयं रामलक्ष्मणौ ।
अवश्यमपनीतेन जहतामेव जीवितम् १८
कौम्भकर्णिस्ततो वीरो निकुम्भो नाम वीर्यवान् ।
अब्रवीत्परमक्रुद्धो रावणं लोकरावणम् १९
सर्वे भवन्तस्तिष्ठन्तु महाराजेन संगताः ।
अहमेको हनिष्यामि राघवं सहलक्ष्मणम् २०
सुग्रीवं सहनूमन्तं सर्वांश्चैवात्र वानरान् ।
ततो वज्रहनुर्नाम राक्षसः पर्वतोपमः २१
क्रुद्धः परिलिहन्सृक्कां जिह्वया वाक्यमब्रवीत् ।
स्वैरं कुर्वन्तु कार्याणि भवन्तो विगतज्वराः २२
एकोऽहं भक्षयिष्यामि तां सर्वां हरिवाहिनीम् ।
स्वस्थाः क्रीडन्तु निश्चिन्ताः पिबन्तु मधुवारुणम् २३
अहमेको वधिष्यामि सुग्रीवं सहलक्ष्मणम् ।

और उनको वशमें कर आकाशको उड जायेंगे वहांसे पत्थर आदिकी वृं
कर वानरसेनाको मार यमालय भेज देंगे ॥ १७ ॥ जब हमारा यह छल रा
लक्ष्मण जानेंगे तो अकेले होनेसे तब क्या करेंगे वे भाग जांयगे वा प्रा
त्याग देंगे ॥ १८ ॥

ततः कुम्भकर्णका पुत्र निकुंभ राक्षस बडा क्रोधकर रावणसे बोल
॥ १९ ॥ कि आप सब लोग महाराजके साथ यहीं रहें मैं अकेला ही रा
लक्ष्मणको मार डालूंगा ॥ २० ॥ सुग्रीव व हनुमान सहित सब वानरसेनाक
भी नष्ट कर दूंगा इसके पीछे पर्वताकार बज्रहनु राक्षस ॥ २१ ॥ क्रोधं
जीभसे होट चाटता बोला कि आप लोग अपना अपना कार्य करें ॥ २२ ॥
अकेला ही सब वानरसेना खालूंगा। तुम निश्चिन्त हो क्रीडा करो और सु
पान करो ॥ २३ ॥ मैं अकेला ही लक्ष्मण व सुग्रीवको मार डालूंगा औ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साङ्गदं च हनूमन्तं सर्वांश्चैवात्र वानरान् २४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डेऽष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥ [२९३]

नवमः सर्गः ।

ततो निकुम्भो रभसः सूर्यशत्रुर्महाबलः ।
सुप्तघ्नो यज्ञकोपश्च महापार्श्वमहोदरौ १
अग्निकेतुश्च दुर्धर्षो रश्मिकेतुश्च राक्षसाः ।
इन्द्रशत्रुश्च बलवांस्ततो वै रावणात्मजः २
प्रहस्तोऽथ विरूपाक्षो वज्रदंष्ट्रो महाबलः ।
धूम्राक्षोऽथ निकुम्भश्च दुर्मुखश्चैव राक्षसः ३
परिघान्पट्टिशाञ्छूलान्प्रासाञ्शक्तिपरश्वधान् ।
चापानि च सुबाणानि खड्गांश्च विपुलाञ्छुभान् ४
प्रगृह्य परमक्रुद्धाः समुत्पत्य च राक्षसाः ।
अब्रुवन्रावणं सर्वे प्रदीप्ता इव तेजसा ५
अद्य रामं वधिष्यामः सुग्रीवं च सलक्ष्मणम् ।
कृपणं च हनूमन्तं लङ्का येन प्रधर्षिता ६
तान्गृहीतायुधान्सर्वान्वारयित्वा विभीषणः ।
अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं पुनः प्रत्युपवेश्य तान् ७

अङ्गद हनुमान सहित सब वानरोंको भी वध कर दूंगा ॥ २४ ॥

॥ यहाँ ८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः निकुंभ, रभस, सूर्यशत्रु, सुप्तघ्न, यज्ञकोप, महापार्श्व, महोदर ॥ १ ॥ अग्निकेतु, दुर्द्धर्ष, रश्मिकेतु व मेघनाद ॥ २ ॥ प्रहस्त, विरूपाक्ष, वज्रदंष्ट्र धूम्राक्ष, निकुंभ व दुर्मुख आदि राक्षस ॥ ३ ॥ परिघ, पट्टिश शूल, शक्ति धनुष खड्ग ग्रहण कर ॥ ४ ॥ महाक्रोधसे तेजस्वी रावणसे सब मिलकर बोले ॥ ५ ॥ कि आज लक्ष्मण, सुग्रीव व रामको तथा उस कृपण हनुमानको भी मार डालेंगे जिसने हमारी पुरीकी दुर्दशा की है ॥ ६ ॥ उन सबोंको शस्त्र लिये देख सबको रोक हाथ जोड विभीषण रावणसे बोले ॥ ७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अप्युपायैस्त्रिभिस्तात योऽर्थः प्राप्तुं न शक्यते।
तस्य विक्रमकालांस्तान्युक्तानाहुर्मनीषिणः ८
प्रमत्तेष्वभियुक्तेषु दैवेन प्रहतेषु च।
विक्रमास्तात सिध्यन्ति परीक्ष्य विधिना कृताः ९
अप्रमत्तं कथं तं तु विजिगीषुं बले स्थितम्।
जितरोषं दुराधर्षं तं धर्षयितुमिच्छथ १०
समुद्रं लङ्घयित्वा तु घोरं नदनदीपतिम्।
गतिं हनुमतो लोके को विद्यात्तर्कयेत वा ११
बलान्यपरिमेयानि वीर्याणि च निशाचराः।
परेषां सहसावज्ञा न कर्तव्या कथंचन १२
किं च राक्षसराजस्य रामेणाप्रकृतं पुरा।
आजहार जनस्थानाद्यस्य भार्यां यशस्विनः १३
खरो यद्यतिवृत्तस्तु स रामेण हतो रणे।
अवश्यं प्राणिनां प्राणा रक्षितव्या यथाबलम् १४
एतन्निमित्तं वैदेही भयं नः सुमहद्भवेत्।
आहृता सा परित्याज्या कलहार्थे कृते नु किम् १५

तात विद्वानोंका वचन है कि जो कार्य साम दाम व भेद तीनों उपायोंसे न हो सके उसीमें विक्रम करना उचित है ॥ ८ ॥ प्रमत्त रोगादिकोंसे युक्त युद्ध करनेके लिये आये हुओंके साथ भी बहुत शोच विचार कर विक्रम सिद्ध होते हैं ॥ ९ ॥ सो सावधान जीतनेकी इच्छा किये सेना युक्त दुराधर्ष रामको कैसे जीतना चाहते हो ॥ १० ॥ जो हनुमान समुद्रको लांघ आये उसकी गति कौन जान सकेगा ? ॥ ११ ॥ जिन शत्रुओंका अपरिमित बल वीर्य हो उनका अनादर कभी न करना चाहिये ॥ १२ ॥ रावणका रामजीने क्या अपराध किया था जो उनकी भार्याको हर लाये ॥ १३ ॥ यदि कहो कि रामने खरको मारा तो प्राणीको अवश्य ही शक्तिभर अपने प्राणोंकी रक्षा करनी चाहिये ॥ १४ ॥ यदि खरहीके मारनेसे सीताको हरा जिससे हमपर इतनी बडी विपत्ति आई है तो अब सीताको छोड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न तु क्षमं वीर्यवता तेन धर्मानुवर्तिना।
वैरं निरर्थकं कर्तुं दीयतामस्य मैथिली १६
यावन्न सगजां साश्वां बहुरत्नसमाकुलाम्।
पुरीं दारयते बाणैर्दीयतामस्य मैथिली १७
यावत्सुघोरा महती दुर्धर्षा हरिवाहिनी।
नावस्कन्दति नो लङ्कां तावत्सीता प्रदीयताम् १८
विनश्येद्धि पुरी लङ्का शूराः सर्वे च राक्षसाः।
रामस्य दीयतां पत्नी न स्वयं यदि दीयते १९
प्रसादये त्वां बन्धुत्वात्कुरुष्व वचनं मम।
हितं तथ्यं त्वहं ब्रूमि दीयतामस्य मैथिली २०
पुरा शरत्सूर्यमरीचिसंनिभान्नवाग्रपुङ्खान्सुदृढान्नृपात्मजः।
सृजत्यमोघान्विशिखान्वधाय ते प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली २१
त्यजाशु कोपं सुखधर्मनाशनं भजस्व धर्मं रतिकीर्तिवर्धनम्।
प्रसीद जीवेम सपुत्रबान्धवाः प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली २२
विभीषणवचः श्रुत्वा रावणो राक्षसेश्वरः।

दीजिये कलहसे कुछ भी सिद्ध न होगा ॥ १५ ॥ उन रामके साथ निरर्थक शत्रुता करना मैं उचित नहीं समझता सो सीता उनको वापिस दे दीजिये ॥ १६ ॥ जबतक राम पुरी लङ्काको विदीर्ण न करें तबतक उनकी भार्याको उन्हें दे दीजिये ॥ १७ ॥ जबतक दुर्द्धर्ष वानरसेना लङ्काको विध्वंस न करें तबतक सीता वापिस दे दीजिये ॥ १८ ॥ रामकी स्त्री दे दीजिये, क्योंकि स्वयं न देनेसे राक्षसोंसहित यह लंका नष्ट हो जायगी ॥ १९ ॥

मैं तुम्हारा भाई हूं मेरा वचन मानिये, क्योंकि मैं आपके हितकी बात कहता हूं उनकी भार्या वापिस दे दीजिये ॥ २० ॥ जबतक राम सूर्य किरणोंके समान चमकते अति दृढ सफल बाण तुम्हारे मार डालनेके लिये छोड़ें उसके पूर्व ही दे डालो ॥ २१ ॥ सुख तथा धर्मनाशक कोप शीघ्र ही छोडो तथा सुख और कीर्ति बढानेवाले धर्मको सेवन करो, प्रसन्न हो रामको सीता दे दो ॥ २२ ॥ विभीषणके वचन सुन राक्षसराज रावण राक्षसोंको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विसर्जयित्वा तान्सर्वान्प्रविवेश स्वकं गृहम् २३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे नवमः सर्गः ॥ ९ ॥ [३१६]

दशमः सर्गः।

ततः प्रत्युषसि प्राप्ते प्राप्तधर्मार्थनिश्चयः।
राक्षसाधिपतेर्वेश्म भीमकर्मा विभीषणः १
शैलाग्रचयसंकाशं शैलशृङ्गमिवोन्नतम्।
सुविभक्तमहाकक्षं महाजनपरिग्रहम् २
मतिमद्भिर्महामात्रैरनुरक्तैरधिष्ठितम्।
राक्षसैराप्तपर्याप्तैः सर्वतः परिरक्षितम् ३
मत्तमातङ्गनिःश्वासैर्व्याकुलीकृतमारुतम्।
शङ्खघोषमहाघोषं तूर्यसंबाधनादितम् ४
प्रमदाजनसंबाधं प्रजल्पितमहापथम्।
तप्तकाञ्चननिर्यूहं भूषणोत्तमभूषितम् ५
गन्धर्वाणामिवावासमालयं मरुतामिव।
रत्नसंचयसंबाधं भवनं भोगिनामिव ६
तं महाभ्रमिवादित्यस्तेजोविस्तृतरश्मिवान्।
अग्रजस्यालयं वीरः प्रविवेश महाद्युतिः ७

विदाकर अन्तःपुरको चला गया ॥ २३ ॥

॥ यहाँ ९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

जब प्रातः हुआ तो धर्मार्थमें निश्चय किये हुए बिभीषण रावणके लिये ॥ १ ॥ प्रकाशित पर्वत शृङ्गोंके तुल्य ऊंचे बडे बडे प्रासादोंसहित तथा महाराजोंकी सामग्रीसे युक्त ॥ २ ॥ बुद्धिमान कार्य तत्पर महावत तथा श्रेष्ठ जनोंसे शोभित राक्षसों द्वारा सब ओरसे रक्षित ॥ ३ ॥ मतवाले हाथियोंके श्वाससे व्याकुल पवन युक्त शंख नक्कारोंके शब्दसे व्याप्त ॥ ४ ॥ स्त्रियोंसे भरा पक्के सुवर्णके दरवाजे वाली उत्तम भूषणोंसे भूषित ॥ ५ ॥ गन्धर्वों, देवताओंके स्थानोंके तुल्य रत्नोंके अतिसञ्चयसे नागलोकके समान ॥ ६ ॥ ऐसे रावणके प्रासादमें बादलके बीचमें सूर्यकी किरणों समान बिभीषणने प्रवेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुण्यान्पुण्याहघोषांश्च वेदविद्भिरुदाहृतान् ।
शुश्राव सुमहातेजा भ्रातुर्विजयसंश्रितान् ८
पूजितान्दधिपात्रैश्च सर्पिर्भिः सुमनोक्षतैः ।
मन्त्रवेदविदो विप्रान्ददर्श स महाबलः ९
स पूज्यमानो रक्षोभिर्दीप्यमानं स्वतेजसा ।
आसनस्थं महाबाहुर्ववन्दे धनदानुजम् १०
स राजदृष्टिसंपन्नमासनं हेमभूषितम् ।
जगाम समुदाचारं प्रयुज्याचारकोविदः ११
स रावणं महात्मानं विजने मन्त्रिसंनिधौ ।
उवाच हितमत्यर्थं वचनं हेतुनिश्चितम् १२
प्रसाद्य भ्रातरं ज्येष्ठं सान्त्वेनोपस्थितक्रमः ।
देशकालार्थसंवादि दृष्टलोकपरावरः १३
यदाप्रभृति वैदेही संप्राप्तेह परन्तप ।
तदाप्रभृति दृश्यन्ते निमित्तान्यशुभानि नः १४
सस्फुलिङ्गः सधूमार्चिः सधूमकलुषोदयः ।

किया ॥ ७ ॥ वहां अपने भाईकी विजयके विषयसें वेदवादी राक्षसोंसे उच्चारित पुण्याहवाचन सुने ॥ ८ ॥

शुभ वस्तुओंसे पूजित वेदमन्त्रवेत्ता ब्राह्मणोंको बिभीषणने यहां देखा ॥ ९ ॥ राक्षसोंसे पूजित हो अपने तेजसे प्रकाशित व आसनपर स्थित कुबेरके लघुभ्राता रावणको विभीषणने प्रणाम किया ॥ १० ॥ दृष्टिमात्रसे राजाकी आज्ञा पा सुवर्णसे भूषित आसनपर राजाकी जय कह बिभीषण बैठ गये ॥ ११ ॥ एकान्त, जनरहित, मन्त्रियोंके जानेहीके योग्य जगहमें बैठे रावणको प्रसन्न कर देशकालज्ञ बिभीषण हित व अर्थयुक्त वचन बोले ॥ १२ ॥ कि जबसे यहां वैदेही आई हैं तबसे अशुभ ही दिखाई देते हैं ॥ १४ ॥

अग्निमन्थन समयमें धुआंसहित ही निकलती तथा चिनगारियां उडने लगतीं हैं ज्योति भी धुआंसहित ही निकलती है यद्यपि अच्छे अच्छे मन्त्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मन्त्रसङ्घहुतोऽप्यग्निर्न सम्यगभिवर्धते १५
अग्निष्टेष्वग्निशालासु तथा ब्रह्मस्थलीषु च।
सरीसृपाणि दृश्यन्ते हव्येषु च पिपीलिकाः १६
गवां पयांसि स्कन्नानि विमदा वरकुञ्जराः।
दीनमश्वाः प्रहेषन्ते नवग्रासाभिनन्दिनः १७
खरोष्ट्राश्वतरा राजन्भिन्नरोमाः स्रवन्ति च।
न स्वभावेवतिष्ठन्ते विधानैरपि चिन्तिताः १८
वायसाः सङ्घशः क्रूरा व्याहरन्ति समन्ततः।
समवेताश्च दृश्यन्ते विमानाग्रेषु सङ्घशः १९
गृध्राश्च परिलीयन्ते पुरीमुपरि पीडिताः।
उपपन्नाश्च संध्ये द्वे व्याहरन्त्यशिवं शिवाः २०
क्रव्यादानां मृगाणां च पुरीद्वारेषु सङ्घशः।
श्रूयन्ते विपुला घोषाः सविस्फूर्जितनिःस्वनाः २१
तदेवं प्रस्तुते कार्ये प्रायश्चित्तमिदं क्षमम्।

विधिसे पढे जानेपर वह आहुतिसे भलीभांति नहीं बढती हैं ॥ १५ ॥ अग्निशालाओं और वेद पढनेके स्थानोंमें सर्प दिखाई देते तथा हव्यमें चीटियां दिखाई देती हैं ॥ १६ ॥ गायोंका दूध सूख गया है हाथियोंका मद बहना बन्द हो गया है अश्वोंको सुभोजन मिलनेपर भी वे दुःखित हो हिन हिनाया करते हैं ॥ १७ ॥ राजन् गधे, ऊंट तथा खचर रोदन किया करते हैं, यद्यपि उनको औषध, की जाती है पर वे अपने स्वभावपर नहीं आते ॥ १८ ॥ कौओंके झुण्ड दिशाओंमें कटु शब्द करते हैं तथा विमानोंके ऊपर भी शब्द करते हुए मडराते हैं ॥ १९ ॥

गिद्धोंके झुण्ड पुरीके ऊपर बहुत निकट ही मडराया करते तथा गीदडियां लङ्काके निकट प्रातः व सायंमें अमङ्गल शब्द बोलती हैं ॥ २० ॥ भेडियां आदि मांसभक्षी जन्तुओंका वज्रके समान शब्द दरवाजोंके समीप ही सुनाई दिया करता हैं ॥ २१ ॥ इन अशुभोंकी शान्तिके लिये मुझे यही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोचये वीर वैदेही राघवाय प्रदीयताम् २२
इदं च यदि वा मोहाल्लोभाद्वा व्याहृतं मया।
तत्रापि च महाराज न दोषं कर्तुमर्हसि २३
अयं हि दोषः सर्वस्य जनस्यास्योपलक्ष्यते।
रक्षसां राक्षसीनां च पुरस्यान्तःपुरस्य च २४
प्रापणे चास्य मन्त्रस्य निवृत्ताः सर्वमन्त्रिणः।
अवश्यं च मया वाच्यं यद्दृष्टमथवा श्रुतम्॥
संविधाय यथान्यायं तद्भवान्कर्तुमर्हति २५
इति स्वमन्त्रिणां मध्ये भ्राता भ्रातरमूचिवान्।
रावणं रक्षसां श्रेष्ठं पथ्यमेतद्विभीषणः २६
हितं महार्थं मृदु हेतुसंहितं व्यतीतकालायतिसंप्रति क्षमम्।
निशम्य तद्वाक्यमुपस्थितज्वरः प्रसङ्गवानुत्तरमेतदब्रवीत् २७
भयं न पश्यामि कुतश्चिदप्यहं न राघवः प्राप्स्यति जातु मैथिलीम्।
सुरैः सहेन्द्रैरपि सङ्गरे कथं ममाग्रतः स्थास्यति लक्ष्मणाग्रजः २८
इत्येवमुक्त्वा सुरसैन्यनाशनो महाबलः संयति चण्डविक्रमः।

उपाय जान पडता है कि रामको सीता वापिस दे दीजिये ॥ २२ ॥ महाराज यदि बात मैंने लोभ मोहसे कही हो तौ भी इसमें कुछ दोषारोपण न कर मान लीजिये ॥ २३ ॥ सब राक्षसों, पुरी तथा अन्तःपुरमें भी सबको यह विदित हो गया है कि ये सीताके कारण ही होते हैं ॥ २४ ॥ यह सलाह और भी बहुत मन्त्री लोग देनेवाले थे परन्तु भयसे नहीं देसके मैंने जो देखा सुना था आपसे कह दिया, जैसा उचित हो कीजिये ॥ २५ ॥

मन्त्रियोंके बीचमें बैठे हुए रावणसे यह हित वचन बिभीषणने कहा ॥ २६ ॥ बिभीषणका वचन सुन बहुत सन्तुष्ट हो रावण उत्तर देने लगा ॥ २७ ॥ कि मैं कहींसे भी भय नहीं देखता इससे राम सीताको कभी न पावेंगे वे इन्द्र सहित देवताओंके साथ भी मेरे आगे युद्धमें कैसे खडे हो सकते हैं ॥२८॥ देवताओंकी सेनाको नाश करनेवाले युद्धमें प्रचण्ड विक्रम रावणने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दशाननो भ्रातरमाप्तवादिनं विसर्जयामास तदा विभीषणम् २९

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे दशमः सर्गः ॥ १० ॥ [३४५]

एकादशः सर्गः ।

स बभूव कृशो राजा मैथिलीकाममोहितः ।
असम्मानाच्च सुहृदां पापः पापेन कर्मणा १
अतीव कामसंपन्नो वैदेहीमनुचिन्तयन् ।
अतीतसमयं काले तस्मिन्वै युधि रावणः २
अमात्यैश्च सुहृद्भिश्च प्राप्तकालमनन्यत ३
स हेमजालविततं मणिविद्रुमभूषितम् ।
उपगम्य विनीताश्वमारुरोह महारथम् ४
तमास्थाय रथश्रेष्ठं महामेघसमस्वनम् ।
प्रययौ रक्षसां श्रेष्ठो दशग्रीवः सभां प्रति ५
असिचर्मधरा योधाः सर्वायुधधरास्ततः ।
राक्षसा राक्षसेन्द्रस्य पुरस्तात्संप्रतस्थिरे ६
नानाविकृतवेषाश्च नानाभूषणभूषिताः ।
पार्श्वतः पृष्ठतश्चैनं परिवार्य ययुस्तदा ७

ऐसा कह विभीषणको विदा किया ॥ २९ ॥

॥ यहाँ १० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रावण जानकीके साथ कामबुद्धिसे तथा सुहृदोंका अपमान करनेसे दुर्बल हो गया ॥ १ ॥ नित्य सीताका स्मरण करते रहनेसे निकट आये हुए रामके साथ युद्ध होनेकी बात याद न थी ॥ २ ॥ परन्तु राक्षसों व मित्रोंके कहनेसे उसे ज्ञात हुआ कि अब युद्धका समय उपस्थित हो गया, अतः सुवर्णसे बने मणियों व मूंगोंसे भूषित शिक्षित घोडे जुते हुए रथपर सवार हुआ ॥ ३-४ ॥ रथपर चढ श्रेष्ठ रावण अपनी सभाको गया ॥ ५ ॥ वहां ढाल तलवार तथा अन्य समस्त आयुध धारण किये राक्षस रावणके आगे खडे हुए ॥ ६ ॥ नाना वेषधारे और नाना भूषणोंसे अलंकृत राक्षस लोग रावणको चारों ओरसे घेर कर चले ॥ ७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रथैश्चातिरथाः शीघ्रं मत्तैश्च वरवारणैः।
अनूत्पेतुर्दशग्रीवमाक्रीडद्भिश्च वाजिभिः ॥
गदापरिघहस्ताश्च शक्तितोमरपाणयः ८
ततस्तूर्यसहस्राणां संजज्ञे निःस्वनो महान्।
तुमुलः शङ्खशब्दश्च सभां गच्छति रावणे ९
स नेमिघोषेण महान्सहसाभिनिनादयन्।
राजमार्गं श्रिया जुष्टं प्रतिपेदे महारथः १०
विमलं चातपत्रं च प्रगृहीतमशोभत।
पाण्डुरं राक्षसेन्द्रस्य पूर्णस्ताराधिपो यथा ११
हेममञ्जरिगर्भे च शुद्धस्फाटिकविग्रहे।
चामरव्यजने तस्य रेजतुः सव्यदक्षिणे १२
ते कृताञ्जलयः सर्वे रथस्थं पृथिवीस्थिताः।
राक्षसा राक्षसश्रेष्ठं शिरोभिस्तं ववन्दिरे १३
राक्षसैः स्तूयमानः सञ्जयाशीर्भिररिन्दमः।
आससाद महातेजाः सभां विरचितां तदा १४
सुवर्णरजतास्तीर्णां विशुद्धस्फाटिकान्तराम्।

बडे बडे महारथी राक्षस रथों, शीघ्रगामी मतवाले हाथियों तथा घोडों-पर चढ रावणके पीछे पीछे चले, वे लोग गदा, मुद्गर, शक्ति आदि अस्त्र हाथोंमें लिये तैयार चले जाते थे ॥ ८ ॥ रावणके सभाको जाते समय शंखोंका तुमुल शब्द भी होने लगा ॥ ९ ॥ रावण नाना प्रकारकी शोभा तथा छत्रसे शोभित रथपर चढा हुआ राजमार्गमें चला जाता था ॥ १० ॥

इसके बाद राक्षसाधिपति रावणके ऊपर धारण किया हुआ सफेद स्वच्छ छत्र पूर्ण चन्द्रमाके समान शोभित होने लगा ॥ ११ ॥ रावणके दक्षिण वाम पार्श्व में रजतके समान चमरछत्र शोभा दे रहे थे ॥ १२ ॥ रथपर चढे राक्षसेंद्रको राक्षसगण पृथ्वीमें खडे हो हाथ जोड अभिवादन करते थे ॥ १३ ॥ इस तरह राक्षसोंसे स्तूयमान जयके लिये आशीर्वचन सुनता हुआ ॥ १४ ॥ अति सुन्दर सभा जिसमें सुहनले रुपहले आसन जो शुद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विराजमानो वपुषा रुक्मपट्टोत्तरच्छदाम् १५
तां पिशाचशतैः षड्भिरभिगुप्तां सदाप्रभाम् ।
प्रविवेश महातेजाः सुकृतां विश्वकर्मणा १६
तस्याः स वैदूर्यमयं प्रियकाजिनसंवृतम् ।
महत्सोपाश्रयं भेजे रावणः परमासनम् १७
ततः शशासेश्वरवद्दूताँल्लघुपराक्रमान् ।
समानयत मे क्षिप्रमिहैतान्राक्षसानिति १८
कृत्यमस्ति महज्जाने कर्तव्यमिति शत्रुभिः ।
राक्षसास्तद्वचः श्रुत्वा लङ्कायां परिचक्रमुः १९
अनुगेहमवस्थाय विहारशयनेषु च ।
उद्यानेषु च रक्षांसि चोदयन्तो ह्यभीतवत् २०
ते रथान्तचरा एके दृप्तानेके दृढान्हयान् ।
नागानेकेऽधिरुरुहुर्जग्मुश्चैके पदातयः २१
सा पुरी परमाकीर्णा रथकुञ्जरवाजिभिः ।
संपतद्भिर्विरुरुचे गरुत्मद्भिरिवाम्बरम् २२

स्फटिक मणिके समान उजले थे बिछे हुए थे ॥ १५ ॥ और छःसौ राक्ष उसकी रक्षा कर रहे थे ऐसी सभामें तेजस्वी रावणने प्रवेश किया ॥ १६ ॥ यह सभा विश्वकर्माने बनाई थी उसमें वैदूर्यमणिसे युक्त प्रियका नाम मृगका चर्म बिछा था ॥ १७ ॥ राजासिंहासनपर बैठ राक्षसराजने बड़े पराक्रमी दूतोंको आज्ञा दी कि शत्रुओंके प्रति हमको बहुत कुछ करना है कि हरेक घरमें घूम घूम राक्षसोंको बुलाने लगे ॥ १८–१९ ॥ उस समय कोई कोई विहार कर रहे थे कोई सोते ही थे और अनेक बागीचोंमें विचरते थे ॥ २० ॥

यह आज्ञा पा कोई रथोंपर कोई अति चञ्चल घोडों और कोई हाथियोंपर सवार हो चले बहुतसे पैदल ही चले ॥ २१ ॥ उस समय वह पुरी, रथ, हाथी, घोडोंसे पूर्ण हो शोभित हुई ॥ २२ ॥ अपनी अपनी सवारियोंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ते वाहनान्यवस्थाय यानानि विविधानि च ।
सभां पद्भिः प्रविविशुः सिंहा गिरिगुहामिव २३
राज्ञः पादौ गृहीत्वा तु राज्ञा ते प्रतिपूजिताः ।
पीठेष्वन्ये बृसीष्वन्ये भूमौ केचिदुपाविशन् २४
ते समेत्य सभायां वै राक्षसा राजशासनात् ।
यथार्हमुपतस्थुस्ते रावणं राक्षसाधिपम् २५
मन्त्रिणश्च यथामुख्या निश्चितार्थेषु पण्डिताः ।
अमात्याश्च गुणोपेताः सर्वज्ञा बुद्धिदर्शनाः २६
समीयुस्तत्र शतशः शूराश्च बहवस्तथा ।
सभायां हेमवर्णायां सर्वार्थस्य सुखाय वै २७
ततो महात्मा विपुलं सुयुग्यं रथं वरं हेमविचित्रिताङ्गम् ।
शुभं समास्थाय ययौ यशस्वी विभीषणः संसदमग्रजस्य २८
स पूर्वजायावरजः शशंस नामाथ पश्चाच्चरणौ ववन्दे ।
शुकः प्रहस्तश्च तथैव तेभ्यो ददौ यथार्हं पृथगासनानि २९
सुवर्णनानामणिभूषणानां सुवाससां संसदि राक्षसानाम् ।

सभाद्वारपर छोड सबने पैदल ही सभामें प्रवेश किया ॥ २३ ॥ सभामें पहुंच राजाके चरणोंमें झुक राक्षसेन्द्रकी आज्ञा पा कोई चौकी कोई आसन और कोई पृथ्वी ही पर बैठ गये ॥ २४ ॥ राजाज्ञासे यथायोग्य स्थानपर बैठ रावणकी स्तुति करने लगे ॥ २५ ॥ मंत्रविषयमें मुख्य निश्चितार्थ पण्डित मन्त्रीगण तथा बडे गुणी विचक्षण अमात्य ॥ २६ ॥ सहस्रों वीर लोग राजाके सब अर्थोंके विचारनेके लिये उस सभामें इकट्ठे हुए ॥ २७ ॥

तदनु सुन्दर जुआ लगे सुवर्ण विरचित रथपर सवार हो महायशस्वी विभीषण रावणकी सभामें आये ॥ २८ ॥ और बडे भाईसे अपना नाम कह फिर प्रणाम किया, शुक, प्रहस्त नामक मन्त्रियोंने भी आकर अपना अपना नाम कह अभिवादन किया। रावणने सबको अलग अलग आसन दिये ॥ २९ ॥ सुन्दर वर्ण तथा नाना प्रकारकी मणियोंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तेषां परार्ध्यागुरुचन्दनानां स्रजां च गन्धाः प्रववुः समन्तात् ३०
न चुक्रुशुर्नानृतमाह कश्चित्सभासदो नापि जजल्पुरुच्चैः।
संसिद्धार्थाः सर्व एवोग्रवीर्या भर्तुः सर्वे ददृशुश्चाननं ते ३१
स रावणः शस्त्रभृतां मनस्विनां महाबलानां समितौ मनस्वी।
तस्यां सभायां प्रभया चकाशे मध्ये वसूनामिव वज्रहस्तः ३२
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे एकादशः सर्गः ॥११॥ [३७७]

॥ द्वादशः सर्गः ॥

स तां परिषदं कृत्स्नां समीक्ष्य समितिञ्जयः।
प्रबोधयामास तदा प्रहस्तं वाहिनीपतिम् १
सेनापते यथा ते स्युः कृतविद्याश्चतुर्विधाः।
योधा नगररक्षायां तथा व्यादेष्टुमर्हसि २
स प्रहस्तः प्रणीतात्मा चिकीर्षन्राजशासनम्।
विनिक्षिप्य बलं सर्वं बहिरन्तश्च मन्दिरे ३
ततो विनिक्षिप्य बलं सर्वं नगरगुप्तये।
प्रहस्तः प्रमुखे राज्ञो निषसाद जगाद च ४

भूषित वस्त्र धारे सभामें उन राक्षसोंको अगरु चन्दन व मालाओंकी सुगन्ध चारों ओरसे आने लगी ॥ ३० ॥ उस समय सभामें कोई नहीं बोलता था सब अति बलवान् राजा ही का मुख देख रहे थे ॥ ३१ ॥ शस्त्रधारी मनस्वियोंमें रावण ऐसा था जैसे वसुओंके बीचमें इन्द्र ॥ ३२ ॥

॥ यहाँ ११ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

समरविजयी रावण सब परिषद्की ओर देख सेनापति प्रहस्तको समझाने लगा ॥ १ ॥ हे सेनापते ! चारों प्रकारके योधगण जिस तरहसे नगरकी रक्षा करनेमें तत्पर हों वैसी तुम आज्ञा दो ॥ २ ॥ यह सुन सावधान चित्त प्रहस्त राजाकी आज्ञा पूर्ण करनेकी इच्छासे मन्दिरके बाहिर यथायोग्य सम्पूर्ण सेना नियत कर ॥ ३ ॥ और नगरकी रक्षाके लिये सेनानियोंको नियतकर राजाके सन्मुख बोला ॥ ४ ॥ कि बड़ी बलवान् सेना भीतर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विहितं बहिरन्तश्च बलं बलवतस्तव ।
कुरुष्वाविमनाः क्षिप्रं यदभिप्रेतमस्ति ते ५
प्रहस्तस्य वचः श्रुत्वा राजा राज्यहितैषिणः ।
सुखेप्सुः सुहृदां मध्ये व्याजहार स रावणः ६
प्रियाप्रिये सुखे दुःखे लाभालाभे हिताहिते ।
धर्मकामार्थकृच्छ्रेषु यूयमर्हथ वेदितुम् ७
सर्वकृत्यानि युष्माभिः समारब्धानि सर्वदा ।
मन्त्रकर्मनियुक्तानि न जातु विफलानि मे ८
ससोमग्रहनक्षत्रैर्मरुद्भिरिव वासवः ।
भवद्भिरहमत्यर्थं वृतः श्रियमवाप्नुयाम् ९
अहं तु खलु सर्वान्वः समर्थयितुमुद्यतः ।
कुम्भकर्णस्य तु स्वप्नान्नेममर्थमचोदयम् १०
अयं हि सुप्तः षण्मासान्कुम्भकर्णो महाबलः ।
सर्वशस्त्रभृतां मुख्यः स इदानीं समुत्थितः ११
इयं च दण्डकारण्याद्रामस्य महिषी प्रिया ।
रक्षोभिश्चरितोद्देशादानीता जनकात्मजा १२

बाहर सब कहीं नियुक्त कर दी गई है अब जो आपको अभीष्ट हो करें ॥ ५ ॥

प्रहस्तके वचन सुन रावण सबके गुणकी चाहनासे मित्रोंके बीचमें बोला ॥ ६ ॥ सुख दुख, लाभ, हानि, हित, अहित, तथा धर्म अर्थ काम इनके विषयमें कुछ कठिनता पडनेपर समझानेके लिये तुम लोग समर्थ हो ॥ ७ ॥ आप लोगोंकी ही सम्मतिसे सब कार्य प्रारम्भ होते रहे पर कोई कार्य विफल नहीं हुआ ॥ ८ ॥ इससे ग्रह नक्षत्रों सहित चन्द्रमा वैसे ही तुम लोगोंके संग मैं सब राज्य लक्ष्मी पाऊंगा ॥ ९ ॥ मैं अपना अभिप्राय आपसे कहता हुआ कुम्भकर्णके सोनेके कारण नहीं कह सका ॥ १० ॥ यह महाबली कुम्भकर्ण छः मासतक सो कर इस समय जागा है ॥ ११ ॥ सुनो राक्षस सेवित जनस्थानसे जो जनककुमारी सीताको मैं हरलाया हूं ॥ १२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सा मे न शय्यामारोढुमिच्छत्यलसगामिनी ।
त्रिपु लोकेषु चान्या मे न सीता सदृशी तथा १३
तनुमध्या पृथुश्रोणी शरदिन्दुनिभानना ।
हेमबिम्बनिभा सौम्या मायेव मयनिर्मिता १४
सुलोहिततलौ श्लक्ष्णौ चरणौ सुप्रतिष्ठितौ ।
दृष्ट्वा ताम्रनखौ तस्या दीप्यते मे शरीरजः १५
हुताग्निरर्चिःसंकाशामेनां सौरीमिव प्रभाम् ।
उन्नसं विमलं वल्गु वदनं चारुलोचनम् १६
पश्यंस्तदवशस्तस्याः कामस्य वशमेयिवान् ।
क्रोधहर्षसमानेन दुर्वर्णकरणेन च १७
शोकसंतापनित्येन कामेन कलुषीकृतः ।
सा तु संवत्सरं कालं मामयाचत भामिनी १८
प्रतीक्षमाणा भर्तारं राममायतलोचना ।
तन्मया चारुनेत्रायाः प्रतिज्ञातं वचः शुभम् १९
श्रान्तोऽहं सततं कामाद्यातो हय इवाध्वनि ।

वह अलसगामिनी मेरी शय्यापर नहीं चढना चाहती, तीनों लोकोंमें सीताके समान अन्य स्त्री मैं नहीं देखता ॥ १३ ॥ वह तनुमध्या, पृथुश्रोणी शरद् चन्द्रके समान मुखवाली, सौम्य स्वभाव मयकी बनाई मायाके समान है ॥ १४ ॥ उसके सुप्रतिष्ठित चिकने चरण तथा अरुण नख देख मेरा कामदेव प्रदीप्त होता है ॥ १५ ॥ प्रज्वलित अग्निकी दीप्तिके समान प्रकाशित तथा सूर्य प्रभाके सम सीताकी ऊंची नासिका और विमल मुख ॥ १६ ॥ देख मैं उसके वशीभूत हो कामातुर हो गया हूं, क्रोध व हर्ष समान होनेसे तथा दुर्वर्ण हो जानेसे ॥ १७ ॥ नित्य शोक सन्ताप होनेसे कामने मुझे अति व्यथित किया, पर सीताको यहां एक वर्ष होने आया उसने उसमें मेरी इच्छा न की ॥ १८ ॥

मैंने सुना है कि अपने भर्त्ता रामकी ही राह देखती है यही उसकी प्रतिज्ञा है ॥ १९ ॥ मैं कामवश हो बिल्कुल थक गया हूं ये वानर अक्षोभ्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कथं सागरमक्षोभ्यं तरिष्यन्ति वनौकसः २०
बहुसत्त्वझषाकीर्णं तौ वा दशरथात्मजौ।
अथ वा कपिनैकेन कृतं नः कदनं महत् २१
दुर्ज्ञेयाः कार्यगतयो ब्रूत यस्य यथामति।
मानुषान्नो भयं नास्ति तथापि तु विमृश्यताम् २२
तदा देवासुरे युद्धे युष्माभिः सहितोऽजयम्।
ते मे भवन्तश्च तथा सुग्रीवप्रमुखान्हरीन् २३
परे पारे समुद्रस्य पुरस्कृत्य नृपात्मजौ।
सीतायाः पदवीं प्राप्य संप्राप्तौ वरुणालयम् २४
अदेया च यथा सीता वध्यौ दशरथात्मजौ।
भवद्भिर्मन्त्र्यतां मन्त्रः सुनीतं चाभिधीयताम् २५
न हि शक्तिं प्रपश्यामि जगत्यन्यस्य कस्यचित्।
सागरं वानरैस्तीर्त्वा निश्चयेन जयो मम २६
तस्य कामपरीतस्य निशम्य परिदेवितम्।
कुम्भकर्णः प्रचुक्रोध वचनं चेदमब्रवीत् २७

समुद्रको कैसे उतरेंगे ॥ २० ॥ तथा वे दोनों दशरथके पुत्र यह समुद्र कैसे उतरेंगे पर अकेले ही वानरने हमारा अपमान किया है ॥ २१ ॥ इससे कार्यकी गति दुर्ज्ञेय है इस विषयमें आप लोगोंके विचारमें जो कुछ आवे सो कहो यद्यपि मनुष्यसे भय नहीं है तौ भी सलाह करनी चाहिये ॥ २२ ॥ मैंने तो तब तुम लोगोंको साथ ले देवताओं व दैत्योंको भी जीत लिया था पर सुग्रीवादि वानरोंको ॥ २३ ॥ साथ ले वे दोनों राजकुमार समुद्रके उत्तरतटपर सीताका समाचार सुन आगये हैं ॥ २४ ॥ पर मैं सीताको वापिस न दूंगा वरन् उन दोनों राजकुमारोंको मार डालेगा इससे आप विचार करें सुन्दर न्याय युक्त बातके ॥ २५ ॥ मैं अन्यसें ऐसी शक्ति नहीं देखता कि वानरोंको समुद्र पार उतार यहां चला आवे इससे सब तरह हमारी ही जय निश्चित है ॥ २६ ॥

रावणका ऐसा रोना सुन कुम्भकर्ण बडा क्रोधकर बोला ॥ २७ कि जब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यदा तु रामस्य सलक्ष्मणस्य प्रसह्य सीता खलु सा इहाहृता।
सकृत्समीक्ष्यैव सुनिश्चितं तदा भजेत चित्तं यमुनेव यामुनम् २८
सर्वमेतन्महाराज कृतमप्रतिमं तव।
विधीयेत सहास्माभिरादावेवास्य कर्मणः २९
न्यायेन राजकार्याणि यः करोति दशानन।
न स संतप्यते पश्चान्निश्चितार्थमतिर्नृपः ३०
अनुपायेन कर्माणि विपरीतानि यानि च।
क्रियमाणानि दुष्यन्ति हवींष्यप्रयतेष्विव ३१
यः पश्चात्पूर्वकार्याणि कर्माण्यभिचिकीर्षति।
पूर्वं चापरकार्याणि स न वेद नयानयौ ३२
चपलस्य तु कृत्येषु प्रसमीक्ष्याधिकं बलम्।
छिद्रमन्ये प्रपद्यन्ते क्रौञ्चस्य खमिव द्विजाः ३३
त्वयेदं महदारब्धं कार्यमप्रतिचिन्तितम्।
दिष्ट्या त्वां नावधीद्रामो विषमिश्रमिवामिषम् ३४
तस्मात्त्वया समारब्धं कर्म ह्यप्रतिमं परैः।

सीता तुम हरकर यहां लाये थे तभी हम लोगोंसे पूंछकर इसका विचार करते ॥ २८ ॥ हे महाराज! यह जो सब कर्म तुमने किया है सब अप्रतिम हैं, करनेसे पहिले पूंछते तो हम रोक देते ॥ २९ ॥ मन्त्रसे निश्चय युक्त जिस राजाकी मति होती है तथा सब कार्य न्याययुक्त ही करता है वह पीछे कभी दुःखी नहीं होता है ॥ ३० ॥ उपाय सहित जो कर्म शास्त्रसे विपरीत किये जाते हैं वे सब दूषित हो जाते हैं ॥ ३१ ॥ जो प्रथम करनेवाले कार्यका विचार पीछे करता तथा पीछेके करनेवालेको प्रथम विचारता वह न्यायान्यायको नहीं जानता ॥ ३२ ॥ अविचारी पुरुषका बलाधिक्य देख शत्रुलोग उनके कर्मोंसे छिद्र देखने लगते हैं ॥ ३३ ॥ तुमने विना विचारे ही यह जो काम किया उसपर राम मारने नहीं डाला यह बड़ी बात हुई ॥ ३४ ॥

यद्यपि तुमने अच्छे कामका प्रारम्भ नहीं किया तो भी मैं तुम्हारे शत्रु-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अहं समीकरिष्यामि हत्वा शत्रूंस्तवानघ ३५
अहमुत्सादयिष्यामि शत्रूंस्तव निशाचर ३६
यदि शक्रविवस्वन्तौ यदि पावकमारुतौ ।
तावहं योधयिष्यामि कुबेरवरुणावपि ३७
गिरिमात्रशरीरस्य महापरिघयोधिनः ।
नर्दतस्तीक्ष्णदंष्ट्रस्य बिभीयाद्वै पुरन्दरः ३८
पुनर्मां स द्वितीयेन शरेण निहनिष्यति ।
ततोऽहं तस्य पास्यामि रुधिरं काममाश्वस ३९
वधेन वै दाशरथेः सुखावहं जयं तवाहर्तुमहं यतिष्ये ।
हत्वा च रामं सह लक्ष्मणेन खादामि सर्वान्हरियूथमुख्यान् ४०
रमस्व कामं पिब चाग्र्यवारुणीं कुरुष्व कार्याणि हितानि विज्वरः ।
मया तु रामे गमिते यमक्षयं चिराय सीता वशगा भविष्यति ४१
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे द्वादशः सर्गः ॥१२॥ [४१८]

॥ त्रयोदशः सर्गः ॥

रावणं क्रुद्धमाज्ञाय महापार्श्वो महाबलः ।
मुहूर्तमनुसंचिन्त्य प्राञ्जलिर्वाक्यमब्रवीत् १
यः खल्वपि वनं प्राप्य मृगव्यालनिषेवितम् ।

ओंको मार इस कामकी शान्ति करूंगा ॥३५॥ जो तुम्हारे शत्रु इन्द्र सूर्य, अग्नि, पवन, कुबेर, तथा वरुणके समान भी होंगे तो भी मैं मार डालूंगा ३६-३७॥क्योंकि पर्वताकार शरीर महापरिघ ले लडनेवाले तथा तीक्ष्ण दांतवाले मेरे शब्दसे इन्द्र भी डरता है ॥ ३८ ॥ यदि वे मुझको एक बाणसे मारेंगे तो दूसरा न मारने पावेंगे मैं उनका रक्त पीलूंगा ॥ ३९ ॥ मैं रामलक्ष्मणको मारकर वानर यूथपोंको खा जाऊंगा ॥ ४० ॥ सुखपूर्वक रमण करो, सुरा पान करो विगतज्वर हो निजकार्य करो रामके मेरे हाथसे मरते ही सदैवके लिये सीता तुम्हारी हो जायगी ॥ ४१ ॥

॥ यहाँ १२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रावणको क्रुद्ध जान महाबली महापार्श्व मुहूर्त भर विचार रावणसे बोला ॥ १ ॥ कि जो मृग सर्प निषेवित वनमें जा मधु पाकर भी मधुपान नहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

न पिबन्मधु संप्राप्य स नरो बालिशो भवेत् २
ईश्वरस्येश्वरः कोऽस्ति तव शत्रुनिबर्हण ।
रमस्व सह वैदेह्या शत्रूनाक्रम्य मूर्धसु ३
बलात्कुक्कुटवृत्तेन प्रवर्तस्व महाबल ।
आक्रम्याक्रम्य सीतां वै तां भुङ्क्ष्व च रमस्व च ४
लब्धकामस्य ते पश्चादागमिष्यति किं भयम् ।
प्राप्तमप्राप्तकालं वा सर्वं प्रतिविधास्यसे ५
कुम्भकर्णः सहास्माभिरिन्द्रजिच्च महाबलः ।
प्रतिषेधयितुं शक्तौ सवज्रमपि वज्रिणम् ६
उपप्रदानं सान्त्वं वा भेदं वा कुशलैः कृतम् ।
समतिक्रम्य दण्डेन सिद्धिमर्थेषु रोचये ७
इह प्राप्तान्वयं सर्वाञ्छत्रूंस्तव महाबल ।
वशं शस्त्रप्रतापेन करिष्यामो न संशयः ८
एवमुक्तस्तदा राजा महापार्श्वेन रावणः ।
तस्य संपूजयन्वाक्यमिदं वचनमब्रवीत् ९
महापार्श्व प्रवदतो रहस्यं किंचिदात्मनः ।
चिरवृत्तं तदाख्यास्ये यदवाप्तं पुरा मया १०

करता वह मूर्ख होता है ॥ २ ॥ हे शत्रुनाशक ईश्वर तो तुम हो फि[र] तुम्हारा ईश्वर कौन है इससे शत्रुओंके शिरपर पैर रख सीताके साथ विहा[र] करो ॥ ३ ॥ जैसे मुरगा बलपूर्वक रति करता है वैसे तुम भी वैदेहीको पक[ड] विहार करो ॥ ४ ॥ काम सिद्ध हो जानेपर तुमको कौन भय होगा, फि[र] प्राप्त व अप्राप्त काल सब सहलोगे ॥ ५ ॥ कुम्भकर्ण और मेघनाद तो ह[म] लोगोंके साथ इन्द्रको भी रोक सकते हैं ॥ ६ ॥ यदि राम आये भी तो य[ा] तो साम, दाम, भेदादिसे समझा देंगे या फिर दण्ड ही देंगे ॥ ७ ॥
हे महाबल ! यहां आये हुए तुम्हारे सब वैरियोंको हम लोग निःसन्दे[ह] वशमें कर लेंगे ॥ ८ ॥ जब महापार्श्वने रावणसे ऐसा कहा तो वह बोल[ा] ॥ ९ ॥ हे महापार्श्व पूर्वकालमें जो वृत्तान्त हुआ है वह हितवादी तुम[से]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पितामहस्य भवनं गच्छन्तीं पुञ्जिकस्थलाम्।
चञ्चूर्यमाणामद्राक्षमाकाशेऽग्निशिखामिव ११
सा प्रसह्य मया भुक्ता कृता विवसना ततः।
स्वयंभूभवनं प्राप्ता लोलिता नलिनी यथा १२
तच्च तस्य तथा मन्ये ज्ञातमासीन्महात्मनः।
अथ संकुपितो वेधा मामिदं वाक्यमब्रवीत् १३
अद्यप्रभृति यामन्यां बलान्नारीं गमिष्यसि।
तदा ते शतधा मूर्धा फलिष्यति न संशयः १४
इत्यहं तस्य शापस्य भीतः प्रसभमेव ताम्।
नारोहये बलात्सीतां वैदेहीं शयने शुभे १५
सागरस्येव मे वेगो मारुतस्येव मे गतिः।
नैतद्दाशरथिर्वेद ह्यासादयति तेन माम् १६
को हि सिंहमिवासीनं सुप्तं गिरिगुहाशये।
क्रुद्धं मृत्युमिवासीनं संबोधयितुमिच्छति १७
न मत्तो निर्गतान्बाणान्द्विजिह्वान्पन्नगानिव।
रामः पश्यति सङ्ग्रामे तेन मामभिगच्छति १८

आज कहता हूं ॥ १० ॥ कि पुंजिकस्थली नाम अप्सरा ब्रह्माके स्थानको आकाशमें चली जारही थी उसे मैंने देखा ॥ ११ ॥ बलपूर्वक उसके संग भोग किया और उसे वस्त्रहीन कर दिया इससे कांपती हुई वह ब्रह्माके स्थानपर पहुंची ॥ १२ ॥ ब्रह्माने उसकी जो दशा सब जानली इससे मेरे ऊपर कोपकर बोले कि ॥ १३ ॥ आजसे जब कभी किसी स्त्रीके साथ भोग करोगे तो तुम्हारा शिर फटकर सौ टुकडे हो जावेगा॥ १४ ॥ इसी ब्रह्माके शापसे डरकर सीताको अपनी शय्यापर नहीं चढाता ॥ १५ ॥

समुद्रतुल्य वेगवान् वायुके समान बली मुझको राम नहीं जानते हैं इसीसे चढे आते हैं ॥ १६ ॥ पर कन्दरामें स्थित सोये सिंह तथा क्रोधित मृत्युको कौन जगाना व बतलाना चाहे ॥ १७ ॥ रामने दोमुंहे सर्पोंके समान मेरे बाणोंको चलते नहीं देखा है, इसीसे युद्धमें सम्मुख आते हैं ॥१८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

क्षिप्रं वज्रसमैर्बाणैः शतधा कार्मुकच्युतैः ।
राममादीपयिष्यामि उल्काभिरिव कुञ्जरम् १९
तच्चास्य बलमादास्ये बलेन महता वृतः ।
उदितः सविता काले नक्षत्राणां प्रभामिव २०
न वासवेनापि सहस्रचक्षुषा युधास्मि शक्यो वरुणेन वा पुनः ।
मया त्वियं बाहुबलेन निर्जिता पुरा पुरी वैश्रवणेन पालिता २१

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे त्रयोदशः सर्गः॥१३॥[४३१]

॥ चतुर्दशः सर्गः ॥

निशाचरेन्द्रस्य निशम्य वाक्यं स कुम्भकर्णस्य च गर्जितानि ।
विभीषणो राक्षसराजमुख्यमुवाच वाक्यं हितमर्थयुक्तम्
वृतो हि बाह्वन्तरभोगराशिश्चिन्ताविषः सुस्मिततीक्ष्णदंष्ट्रः ।
पञ्चाङ्गुलीपञ्चशिरोऽतिकायः सीतामहाहिस्तव केन राजन्
यावन्न लङ्कां समभिद्रवन्ति वलीमुखाः पर्वतकूटमात्राः ।
दंष्ट्रायुधाश्चैव नखायुधाश्च प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली
यावन्न गृह्णन्ति शिरांसि बाणा रामेरिता राक्षसपुङ्गवानाम् ।

शीघ्र ही धनुषसे छूटे हुए बाणोंसे रामको सौ प्रकारसे संदीपित करूं ॥ १९ ॥ इससे बडी सेना साथ ले रामकी सेनाका नाश कर दूंगा जैसे सू नक्षत्रोंकी प्रभाको नाशता है ॥ २० ॥ सहस्राक्ष इन्द्र, वरुण भी मुझे जीत नहीं सकते मैं पहले स्वबाहुबलसे यह कुवेरपालित पुरी कुवेरसे छीं ली थी ॥ २१ ॥

॥ यहाँ १३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रावणकी बात और कुम्भकर्णका गर्जन सुन बिभीषण अर्थयुक्त वच रावणसे बोला ॥ १ ॥ राजन् वक्षस्थल ही सर्प शरीरचिन्ता ही विष तुम्हा अनुचित कार्य देखकर किञ्चिन्मात्र हंसना ही तीखे दांत पांचों अङ्गुलियों ही पांच शिर किये ऐसा सीता रूपी सर्प तुम किस लिये यहां लाये ॥ २ ॥ जबतक वानर लङ्कामें इधर उधर दौड दौडकर सबको न का उसके पहिले ही रामको सीता दे दो ॥ ३ ॥ जबतक रामके बाणोंसे रा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वज्रोपमा वायुसमानवेगाः प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली ४
न कुम्भकर्णेन्द्रजितौ च राजंस्तथा महापार्श्वमहोदरौ वा।
निकुम्भकुम्भौ च तथातिकायः स्थातुं समर्थां युधि राघवस्य ५
जीवंस्तु रामस्य न मोक्ष्यसे त्वं गुप्तः सवित्राप्यथवा मरुद्भिः।
न वासवस्याङ्कगतो न मृत्योर्नभो न पातालमनुप्रविष्टः ६
निशम्य वाक्यं तु बिभीषणस्य ततः प्रहस्तो वचनं बभाषे।
न नो भयं विद्म न दैवतेभ्यो न दानवेभ्योऽप्यथवा कदाचित् ७
न यक्षगन्धर्वमहोरगेभ्यो भयं न सङ्ख्ये पतगोरगेभ्यः।
कथं तु रामाद्भविता भयं नो नरेन्द्रपुत्रात्समरे कदाचित् ८
प्रहस्तवाक्यं त्वहितं निशम्य विभीषणो राजहितानुकाङ्क्षी।
ततो महार्थं वचनं बभाषे धर्मार्थकामेषु निविष्टबुद्धिः ९
प्रहस्त राजा च महोदरश्च त्वं कुम्भकर्णश्च यथार्थजातम्।
ब्रवीत रामं प्रति तन्न शक्यं यथा गतिः स्वर्गमधर्मबुद्धेः १०
वधस्तु रामस्य मया त्वया च प्रहस्त सर्वैरपि राक्षसैर्वा।
कथं भवेदर्थविशारदस्य महार्णवं तर्तुमिवाप्लवस्य ११

सोंके शिर न फटें उसके पूर्व ही रामको वैदेही देदो ॥४॥ राजन् कुम्भकर्ण, मेघनाद, महापार्श्व, महोदर तथा अतिकाय रामके सामने युद्धमें कोई न खडे हो सकेंगे ॥ ५ ॥

तुम्हारी रक्षा सूर्य पवन भी करें तौ भी तुम रामसे जीते न बचोगे साक्षात् मृत्युके पास जा या आकाश पाताल कहीं जा छिपो तौ भी बच नहीं सकते ॥ ६ ॥ बिभीषणके ऐसे वचन सुन प्रहस्त बोला कि हम लोगोंको देवता दानवों ॥ ७ ॥ यक्षगन्धर्व तथा सर्पोंसे भय नहीं है फिर नर रामसे क्या भय हो सकता है ॥ ८ ॥ प्रहस्तके ऐसे अहित वचन सुन बिभीषण राजाके हितयुक्त वचन बोला ॥ ९ ॥ प्रहस्त! राजा महोदर तुम कुम्भकर्ण अपना प्रयोजन जैसा रामचन्द्रके प्रति कहते हो वह नहीं कर सकते ॥ १० ॥

हे प्रहस्त! सब अर्थवित् रामका बध हमसे तुमसे तथा सब राक्षसोंसे भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धर्मप्रधानस्य महारथस्य इक्ष्वाकुवंशप्रभवस्य राज्ञः ।
पुरोस्य देवाश्च तथाविधस्य कृत्येषु शक्तस्य भवन्ति मूढाः
तीक्ष्णा न तावत्तव कङ्कपत्रा दुरासदा राघवविप्रमुक्ताः ।
भित्त्वा शरीरं प्रविशन्ति बाणाः प्रहस्त तेनैव विकत्थसे त्वम्
भित्त्वा न तावत्प्रविशन्ति कायं प्राणान्तिकास्तेशनितुल्यवेगाः।
शिताः शरा राघवविप्रमुक्ताः प्रहस्त तेनैव विकत्थसे त्वम्
न रावणो नातिबलस्त्रिशीर्षो न कुम्भकर्णस्य सुतो निकुम्भः।
न चेन्द्रजिद्दाशरथिं प्रवोढुं त्वं वा रणे शक्रसमं समर्थः
देवान्तको वापि नरान्तको वा तथातिकायोतिरथो महात्मा।
अकम्पनश्चापि समानसारः स्थातुं न शक्ता युधि राघवस्य
अयं च राजा व्यसनाभिभूतो मित्रैरमित्रप्रतिमैर्भवद्भिः ।
अन्वास्यते राक्षसनाशनार्थे तीक्ष्णः प्रकृत्या ह्यसमीक्ष्यकारी
अनन्तभोगेन सहस्रमूर्ध्ना नागेन भीमेन महाबलेन ।
बलात्परिक्षिप्तमिमं भवन्तो राजानमुत्क्षिप्य विमोचयन्तु

कैसे हो सकता है ॥ ११ ॥ क्योंकि धर्ममें प्रधान महारथी इक्ष्वाकुवंशी और सब कार्य करनेमें इक्ष्वाकु ही के तुल्य रामके आगे देवता भी मूढ जाते हैं ॥ १२ ॥ तीक्ष्ण रामके हाथसे छूटे हुए बाण तुम्हारे शरीर विदीर्ण कर उस पार अभी नहीं निकल गये हैं इसीसे तुम ऐसा कहते ॥ १३ ॥ जबतक वेगवान् प्राणान्तक रामके हाथसे छूटे बाण तुम्हारे शरीर भेदन कर बाहर नहीं निकल जाते तभीतक ऐसी बकवाद करते हो ॥ १४ रावण त्रिशिरा कुम्भकर्णका पुत्र निकुम्भ तथा इन्द्रजीत पराक्रमी रामको युद्ध नहीं लौटा सकते ॥१५॥ देवान्तक नरान्तक अतिरथ तथा अतिकाय अकम्पन आदि कोई भी युद्धमें रामके आगे नहीं ठहर सकते ॥ १६ व्यसनानुरक्त राजा रावणकी सेवा शत्रुतुल्य तुम मित्र बनकर जो करते इससे राक्षसोंका नाश अवश्य होगा ॥ १७ ॥

सहस्र शिरके महाबलवान् रामरूपी सर्पके मुखमें बलात फँके रावणको तुम सब लोग किसी तरह निकालो ॥ १८ ॥ अब तुम इकट्ठे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यावद्धि केशग्रहणात्सुहृद्भिः समेत्य सर्वैः परिपूर्णकामैः।
निगृह्य राजा परिरक्षितव्यो भूतैर्यथा भीमबलैर्गृहीतः १९
सुवारिणा राघवसागरेण प्रच्छाद्यमानस्तरसा भवद्भिः।
युक्तस्त्वयं तारयितुं समेत्यकाकुत्स्थपातालमुखे पतन्सः २०
इदं पुरस्यास्य सराक्षसस्य राज्ञश्च पथ्यं ससुहृज्जनस्य।
सम्यग्घि वाक्यं स्वमतं ब्रवीमि नरेन्द्रपुत्राय ददातु मैथिलीम् २१
परस्य वीर्यं स्वबलं च बुद्ध्वा स्थानं क्षयं चैव तथैव वृद्धिम्।
तथा स्वपक्षेप्यनुमृश्य बुद्धया वदेत्क्षमं स्वामिहितं स मन्त्री २२
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदि० युद्धकांडे चतुर्दशः सर्गः ॥१४॥ [४६१]

॥ पञ्चदशः सर्गः ॥

बृहस्पतेस्तुल्यमतेर्वचस्तन्निशम्य यत्नेन विभीषणस्य।
ततो महात्मा वचनं बभाषे तत्रेन्द्रजिन्नैर्ऋतयूथमुख्यः १
किं नाम ते तातकनिष्ठ वाक्यमनर्थकं वै बहुभीतवच्च।
अस्मिन्कुले योपि भवेन्न जातः सोपीदृशं नैव वदेन्न कुर्यात् २
सत्त्वेन वीर्येण पराक्रमेण धैर्येण शौर्येण च तेजसा च।
एकः कुलेऽस्मिन्पुरुषो विमुक्तो विभीषणस्तातकनिष्ठ एषः ३

राजाकी रक्षा करो रामरूपी समुद्रमें डूबते हुए व पातालरूपी काकुत्स्थमुखमें गिरते रावणकी रक्षा करो॥ १९-२०॥ रामको सीता दे दो मेरा यही मत है इस लङ्का, राक्षसगण, राजा तथा सब सुहृज्जनोंका हित इसीमें है कि रामको सीता देदो ॥ २१ ॥ जो शत्रुवीर्य स्वबलक्षय वृद्धि तथा स्वपक्ष बुद्धिसे विचार स्वामीके हितकी बात कहता है वही मन्त्री कहता है ॥ २२ ॥

॥ यहाँ १४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

विभीषणके ऐसे वचन सुन राक्षसोंके यूथमें प्रधान मेघनाद बोला॥ १ ॥ हे कनिष्ठतात ! यह अनर्थ तथा अतिभययुक्त वाक्य क्या कहते हो, इस राक्षस वंशमें उत्पन्न हो वा न हो तो भी ऐसी बात कोई न कहेगा ॥ २ ॥ इस कुलमें तो सत्त्व वीर्य धैर्य शौर्य तथा तेजसे हीन पिताके लघुभ्राता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

किं नाम तौ मानुषराजपुत्रावस्माकमेकेन हि राक्षसेन ।
सुप्राकृतेनापि निहन्तुमेतौ शक्यौ कुतो भीषयसे स्म भीरो ४
त्रिलोकनाथो ननु देवराजः शक्रोमया भूमितले निविष्टः ।
भयार्पिताश्चापिदिशः प्रपन्नाः सर्वे तदा देवगणाः समग्राः ५
ऐरावतो निःस्वनमुन्नदन्स निपातितो भूमितले मया तु ।
विकृष्य दन्तौ तु मया प्रसह्य वित्रासिता देवगणाः समग्राः ६
सोऽहं सुराणामपि दर्पहन्ता दैत्योत्तमानामपि शोककर्ता ।
कथं नरेन्द्रात्मजयोर्न शक्तो मनुष्ययोः प्राकृतयोः सुवीर्यः ७
अथेन्द्रकल्पस्य दुरासदस्य महौजसस्तद्वचनं निशम्य ।
ततो महार्थं वचनं बभाषे विभीषणः शस्त्रभृतां वरिष्ठः ८
न तात मन्त्रे तव निश्चयोऽस्ति बालस्त्वमद्याप्यविपक्वबुद्धिः ।
तस्मात्त्वयाप्यात्मविनाशनाय वचोऽर्थहीनं बहु विप्रलप्तम् ९
पुत्रप्रवादेन तु रावणस्य त्वमिन्द्रजिन्मित्रमुखोसि शत्रुः ।
यस्येदृशं राघवतो विनाशं निशम्य मोहादनुमन्यसे त्वम् १०

बिभीषण हैं ॥ ३ ॥ हम लोगोंके सामने मानुष वे दोनों भाई क्या हैं उनको तो मैं ही मार सकता हूं हमे क्यों डराते हो ॥ ४ ॥ इन्द्रको हराके मैंने नीचे कर दिया और सब देवता डरसे भाग गये ॥ ५ ॥

मैंने ऐरावतको भी मारा वह ऊर्ध्वश्वासें लेता पृथ्वीमें गिर पडा और उसके दांत निकाल सब देवताओंको मारा ॥ ६ ॥ मैं देवताओंका घमण्ड तोड डालता हूं उत्तम दैत्योंके शोकको दूर करता हूं फिर इनको क्यों नहीं हटा सकता ॥ ७ ॥ तेजस्वी मेघनादके वचन सुन बिभीषण महार्थ युक्त वचन बोला ॥ ८ ॥ हे तात ! तुम अभी बालक हो इसीसे सला करनेमें तुमको निश्चय नहीं है और इसीसे तुमने भी ऐसे अनर्थ वचन क हैं ॥ ९ ॥ जिससे तुम रावणका रामसे विनाश सुनकर भी मोहसे ऐसा कहते हो इससे तुम मित्र नहीं वरन शत्रु हो ॥ १० ॥ बालक तुमको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमेव वध्यश्च सुदुर्मतिश्च स चापि वध्यो य इहानयत्त्वाम् ।
बालं दृढं साहजिकं च योऽद्य प्रावेशयन्मन्त्रकृतां समीपम् ११
मूढोऽप्रगल्भोऽविनयोपपन्नस्तीक्ष्णस्वभावोल्पमतिर्दुरात्मा ।
मूर्खस्त्वमत्यन्तसुदुर्मतिश्च त्वमिन्द्रजिद्बालतया ब्रवीषि १२
को ब्रह्मदण्डप्रतिमप्रकाशानर्चिष्मतः कालनिकाशरूपान् ।
सहेत बाणान्यमदण्डकल्पान्समक्षमुक्तान्युधि राघवेण १३
धनानि रत्नानि सुभूषणानि वासांसि दिव्यानि मणींश्च चित्रान् ।
सीतां च रामाय निवेद्य देवीं वसेम राजन्निह वीतशोकाः १४

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे पञ्चदशः सर्गः ॥१५॥[४७५]

॥ षोडशः सर्गः ॥

सुनिविष्टं हितं वाक्यमुक्तवन्तं विभीषणम् ।
अब्रवीत्परुषं वाक्यं रावणः कालचोदितः १
वसेत्सह सपत्नेन क्रुद्धेनाशीविषेण च ।
न तु मित्रप्रवादेन संवसेच्छत्रुसेविना २
जानामि शीलं ज्ञातीनां सर्वलोकेषु राक्षस ।

मन्त्रियोंके बीचमें मन्त्रणाके लिये लाया है वह और दुष्ट मति तुम मार डालने योग्य हो ॥ ११ ॥

मेघनाद ! तुम बडे अविचारी तीक्ष्ण स्वभाव अल्पमति मूर्ख तथा अत्यन्त दुष्टमति हो क्योंकि तुम लडकपन हीं की बातें कहते हो ॥ १२ ॥ समरमें ब्रह्मदण्डके तुल्य प्रकाशित रामके बाणके सामने युद्धमें कौन ठहर सकेगा ॥ १३ ॥ हे राजन् ! जानकीको रामको दे दीजिये और शोकरहित हो अपनी इस लङ्कामें निवास कीजिये ॥ १४ ॥

॥ यहाँ १५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

बिभीषणके हित वचन सुन रावण बडे कठोर वचन बोला ॥ १ ॥ कि चाहे क्रोधित शत्रु तथा विषधर सर्पके साथ रहे पर मित्रवत् आचरण करनेवाले शत्रु सेवी भाईके साथ न रहे ॥ २ ॥ मैं ज्ञातियोंका स्वभाव जानता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हृष्यन्ति व्यसनेष्वेते ज्ञातीनां ज्ञातयः सदा ३
प्रधानं साधकं वैद्यं धर्मशीलं च राक्षस ।
ज्ञातयोऽप्यवमन्यन्ते शूरं परिभवन्ति च ४
नित्यमन्योन्यसंहृष्टा व्यसनेष्वाततायिनः ।
प्रच्छन्नहृदया घोरा ज्ञातयस्तु भयावहाः ५
श्रूयन्ते हस्तिभिर्गीताः श्लोकाः पद्मवने पुरा ।
पाशहस्तान्नरान्दृष्ट्वा शृणुष्व गदतो मम । ६
नाग्निर्नान्यानि शस्त्राणि न नः पाशा भयावहाः ।
घोराः स्वार्थप्रयुक्तास्तु ज्ञातयो नो भयावहाः ७
उपायमेते वक्ष्यन्ति ग्रहणे नात्र संशयः ।
कृत्स्नाद्भयाज्ज्ञातिभयं सुकष्टं विदितं च नः ८
विद्यते गोषु संपन्नं विद्यते ज्ञातितो भयम् ।
विद्यते स्त्रीषु चापल्यं विद्यते ब्राह्मणे तपः ९
ततो नेष्टमिदं सौम्य यदहं लोकसत्कृतः ।
ऐश्वर्यमभिजातश्च रिपूणां मूर्ध्नि च स्थितः १०

हूं कि वे लोग जातिवालोंपर दुःख पडनेपर हर्षित होते हैं ॥ ३ ॥ राक्षस ! राज्यादि पानेसे सर्व प्रधान राज्य कार्य निबाहनेका साधक विद्वान् धर्मात्मा तथा शूरवीर इन लोगोंका ज्ञातीय जन अनादर करते ॥ ४ ॥ कपटी ज्ञातिजन आपत्तवालेको सङ्कटमें देख बहुत हर्षित हो इसीसे वे आततायी होते हैं ॥ ५ ॥ पद्म बनमें फांसी हाथोंसें लिये हु नरोंको देख जो हाथियोंने श्लोक गाये थे वे सुने हैं ॥ ६ ॥

हाथियोंने कहा कि हमको अग्नि शस्त्र व फांसियोंसे भय नहीं किन्त स्वार्थी स्वज्ञातिवाले ही हमको भयप्रद हैं ॥ ७ ॥ क्योंकि पकडनेका साधन येही बताते हैं सो जातिवालोंसे बडा भय रहता है ॥ ८ ॥ जि तरह गायोंमें हव्यकव्यादिके लिये दुग्ध स्त्रियोंमें चञ्चलता तथा ब्राह्मणोंम तपस्या होती है इसी तरह जातिवाले लोगोंसे भय होता है ॥ ९ ॥ तुमको भी मेरा सत्कार ऐश्वर्य तथा शत्रुओंके शिरपर स्थित होना नहीं भाता ॥१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा पुष्करपत्रेषु पतितास्तोयबिन्दवः ।
न श्लेषमभिगच्छन्ति तथानार्येषु सौहृदम् ११
यथा शरदि मेघानां सिञ्चतामपि गर्जताम् ।
न भवत्यम्बुसंक्लेदस्तथानार्येषु सौहृदम् १२
यथा मधुकरस्तर्षाद्रसं विन्दन्न तिष्ठति ।
तथा त्वमपि तत्रैव तथानार्येषु सौहृदम् १३
यथा मधुकरस्तर्षात्काशपुष्पं पिबन्नपि ।
रसमत्र न विन्देत तथानार्येषु सौहृदम् १४
यथा पूर्वं गजः स्नात्वा गृह्य हस्तेन वै रजः ।
दूषयत्यात्मनो देहं तथानार्येषु सौहृदम् १५
योऽन्यस्त्वेवंविधं ब्रूयाद्वाक्यमेतन्निशाचर ।
अस्मिन्मुहूर्ते न भवेत्त्वां तु धिक्कुलपांसन १६
इत्युक्तः परुषं वाक्यं न्यायवादी विभीषणः ।
उत्पपात गदापाणिश्चतुर्भिः सह राक्षसैः १७

जिस तरह पानीकी बूंद कमल पत्रपर नहीं ठहर सकती इसी तरह क्रूर पुरुषोंमें सौहृदता नहीं ठहरती जैसे ॥ ११ ॥ वर्षामें बरसनेवाले बादलोंसे शरद् ऋतुमें भूमि नहीं भीगती वैसे अनार्योंमें नहीं ठहरता ॥ १२ ॥ जैसे भ्रमर पुष्पोंका रस ले फिर उसपर बैठा नहीं रहता वैसी ही तुम्हारी दशा है ॥ १३ ॥

जैसे भ्रमरकाशके पुष्पोंको पीकर भी पुष्परस नहीं पाता वैसे ही अनार्योंसे मित्रता करनेमें भी सुख नहीं मिलता ॥ १४ ॥ जैसे हाथी स्नान करके फिर शूंडसे धूलि अपने ऊपर डालकर शरीरको दूषित करता है वैसे ही अनार्यकी मित्रता ॥ १५ ॥ हे निशाचर ! जो और कोई ऐसा कहता तो तत्कालक उसे मार डालता पर तुझको धिक्कार है ॥ १६ ॥ विभीषण ऐसा कठोर वचन सुन हाथमें गदा ले चारों राक्षसोंको साथ ले वहांसे ऊपरको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अब्रवीच्च तदा वाक्यं जातक्रोधो विभीषणः।
अन्तरिक्षगतः श्रीमान्भ्राता वै राक्षसाधिपम् १८
स त्वं भ्रान्तोसि मे राजन्ब्रूहि मां यद्यदिच्छसि।
ज्येष्ठो मान्यः पितृसमो न च धर्मपथे स्थितः॥
इदं हि परुषं वाक्यं न क्षमाम्यग्रजस्य ते १९
सुनीतं हितकामेन वाक्यमुक्तं दशानन।
न गृह्णन्त्यकृतात्मानः कालस्य वशमागताः २०
सुलभाः पुरुषा राजन्सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः २१
बद्धं कालस्य पाशेन सर्वभूतापहारिणः।
न नश्यन्तमुपेक्षे त्वां प्रदीप्तं शरणं यथा २२
दीप्तपावकसंकाशैः शितैः काञ्चनभूषणैः।
न त्वामिच्छाम्यहं द्रष्टुं रामेण निहतं शरैः २३
शूराश्च बलवन्तश्च कृतास्त्राश्च नरा रणे।
कालाभिपन्नाः सीदन्ति यथा वालुकसेतवः २४
तन्मर्षयतु यच्चोक्तं गुरुत्वाद्धितमिच्छता।

उछला॥ १७॥ और बडा क्रोधकर राक्षसराजसे बोला॥ १८॥ राजन्! तुम हमारे बडे भाई हो इससे पिताके समान हो जो चाहे कहो पर धर्ममें स्थित न रहनेसे तुम्हारा यह कठोर वचन नहीं सह सकता॥ १९॥ कालके वशमें हुए जन हितकारीके हित वचन नहीं मानते॥ २०॥

राजन्! संसारमें प्रियवादी तो बहुत मनुष्य हैं परन्तु अप्रिय व पथ्य वचन कहने सुननेवाले लोग दुर्लभ हैं॥ २१॥ कालपाशसे बँधे हुए तुम्हारे नाशकी मैं उपेक्षा नहीं करता इससे हितवचन कहे॥ २२॥ बलती हुई अग्निके समान मैंने सुवर्ण बाणोंसे रामके हाथोंसे मारा हुआ तुमको देखना नहीं चाहता था॥ २३॥ शूर बली लोग भी कालके वशमें हो बालुके पुलके समान नष्ट हो जाते हैं॥ २४॥ मैंने जो कुछ कहा उसे क्षमा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्मानं सर्वथा रक्ष पुरीं चेमां सराक्षसाम् २५
स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि सुखी भव मया विना २६
निवार्यमाणस्य मया हितैषिणा न रोचते ते वचनं निशाचर।
परान्तकाले हि गतायुषो नरा हितं न गृह्णन्ति सुहृद्भिरीरितम् २७
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे षोडशः सर्गः ॥१६॥ [५०२]

॥ सप्तदशः सर्गः ॥

इत्युक्त्वा परुषं वाक्यं रावणं रावणानुजः।
आजगाम मुहूर्तेन यत्र रामः सलक्ष्मणः १
तं मेरुशिखराकारं दीप्तामिव शतह्रदाम्।
गगनस्थं महीस्थास्ते ददृशुर्वानराधिपाः २
ते चाप्यनुचरास्तस्य चत्वारो भीमविक्रमाः।
तेऽपि वर्मायुधोपेता भूषणोत्तमभूषिताः ३
स च मेघाचलप्रख्यो वज्रायुधसमप्रभः।
वरायुधधरो वीरो दिव्याभरणभूषितः ४
तमात्मपञ्चमं दृष्ट्वा सुग्रीवो वानराधिपः।
वानरैः सह दुर्धर्षश्चिन्तयामास बुद्धिमान् ५

कीजिये, क्योंकि आप बडे हैं, पर अपनी व इस पुरीकी रक्षा करो॥ २५॥ तेरा कल्याण हो मैं जाता हूं मेरे विना तू सुखसे रह ॥ २६ ॥ तुम्हारे हितेच्छु मैंने तुमको रोका, तुमको हमारे वचन अच्छे नहीं लगते, गतायुष मनुष्य मित्रोंकी बात नहीं माना करते ॥ २७ ॥

॥ यहाँ १६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

बिभीषण इस तरह रावणसे कह एक मुहूर्तमें राम व लक्ष्मणके समीप आ-पहुंचा ॥ १ ॥ बिजुलीके समान उनको गगनमें स्थित पृथ्वीपर बैठे हुए वानरोंने देखा ॥ २ ॥ उनके चारों सेवक दिव्य आभूषण धारण किये हुए ॥ ३ ॥ और बिभीषण भी श्रेष्ठ आयुध धारे दिव्य भूषणसे भूषित था ४ ॥ उन पांचों राक्षसोंको देख सुग्रीव वानरोंके सङ्ग बडी बुद्धिमानीसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

चिन्तयित्वा मुहूर्तं तु वानरांस्तानुवाच ह।
हनुमत्प्रमुखान्सर्वानिदं वचनमुत्तमम् ६
एष सर्वायुधोपेतश्चतुर्भिः सह राक्षसैः।
राक्षसोऽभ्येति पश्यध्वमस्मान्हन्तुं न संशयः ७
सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा सर्वे ते वानरोत्तमाः।
शालानुद्यम्य शैलांश्च इदं वचनमब्रुवन् ८
शीघ्रं व्यादिश नो राजन्वधायैषां दुरात्मनाम्।
निपतन्ति हता यावद्धरण्यामल्पचेतनाः ९
तेषां संभाषमाणानामन्योन्यं स विभीषणः।
उत्तरं तीरमासाद्य खस्थ एव व्यतिष्ठत १०
स उवाच महाप्राज्ञः स्वरेण महता महान्।
सुग्रीवं तांश्च संप्रेक्ष्य खस्थ एव विभीषणः ११
रावणो नाम दुर्वृत्तो राक्षसो राक्षसेश्वरः।
तस्याहमनुजो भ्राता विभीषण इति श्रुतः १२
तेन सीता जनस्थानाद्धृता हत्वा जटायुषम्।
रुद्धा च विवशा दीना राक्षसीभिः सुरक्षिता १३

विचार करने लगे ॥ ५ ॥ एक मुहूर्ततक विचारकर हनुमानादि स वा
वानरोंसे बोला ॥ ६ ॥ कि सब आयुध लिये चार राक्षसों समेत यह निश
चर हम लोगोंके मारनेके लिये आता है तुम लोग भी देखो ॥ ७ ॥ सुग्रीव क
ऐसे वचन सुन सब वानर साखू व शिलायें हाथोंमें ले बोले ॥ ८ ॥ छो
राजन्! जिससे कि ये मरकर भूमिपर गिर पडें सो इन राक्षसोंके मारने की
हमें आज्ञा दीजिये ॥ ९ ॥ वानरोंके इस प्रकार बातें करते करते विभीषण
समुद्रके उत्तर तीरपर आ आकाशमें स्थित हुआ ॥ १० ॥ आकाशस्थ विभी
षण सुग्रीव व अन्य वानरोंको देख बडे ऊंचे स्वरसे बोला ॥ ११ ॥ दुरा
चारी राक्षसराज रावणका मैं छोटा भाई विभीषण हूं ॥ १२ ॥ रावण
जटायुको मार जनस्थानसे सीताको हर लङ्कामें राक्षसियोंकी रखवाली
कर दिया है इससे विवश हो वह बडा दुःखित है ॥ १३ ॥ मैंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तमहं हेतुभिर्वाक्यैर्विविधैश्च न्यदर्शयम्।
साधु निर्यात्यतां सीता रामायेति पुनः पुनः १४
स च न प्रतिजग्राह रावणः कालचोदितः।
उच्यमानं हितं वाक्यं विपरीत इवौषधम् १५
सोऽहं परुषितस्तेन दासवच्चावमानितः।
त्यक्त्वा पुत्रांश्च दारांश्च राघवं शरणं गतः १६
निवेदयत मां क्षिप्रं राघवाय महात्मने।
सर्वलोकशरण्याय विभीषणमुपस्थितम् १७
एतत्तु वचनं श्रुत्वा सुग्रीवो लघुविक्रमः।
लक्ष्मणस्याग्रतो रामं संरब्धमिदमब्रवीत् १८
प्रविष्टः शत्रुसैन्यं हि प्राप्तः शत्रुरतर्कितः।
निहन्यादन्तरं लब्ध्वा उलूको वायसानिव १९
मन्त्रे व्यूहे नये चारे युक्तो भवितुमर्हसि।
वानराणां च भद्रं ते परेषां च परन्तप २०
अन्तर्धानगता ह्येते राक्षसाः कामरूपिणः।

वचनोंसे उसे बहुत समझाया कि सीता रामको दे दीजिये ॥ १४ ॥ मेरे हित वचन उस काल प्रेरित रावणने न माने ॥ १५ ॥ और मुझे कठोर वचन कह दासोंके समान अनादृत किया सो मैं अपने पुत्र व स्त्रियां छोड रामकी शरण आया हूं ॥ १६ ॥ सो आप महात्मा रामसे निवेदन कीजिये कि विभीषण आया है ॥ १७ ॥ यह सुन सुग्रीव शीघ्र रामके पास गया और लक्ष्मणके आगे ही क्रुद्ध हो बोला ॥ १८ ॥ कि यह विभीषण पहिले तो आपके वैरी रावणकी सेनामें रहता रहा अब हम लोगोंके समीप आया है इससे यह अवसर पा हमलोगोंको मारेगा ॥ १९ ॥ इससे आप वानरोंपर अनुग्रह और शत्रुओंके निग्रहमें सावधानतः तत्पर होवें ॥ २० ॥

ये राक्षस लोग स्वेच्छाचारी हैं जब चाहते हैं अन्तरध्यान हो जाते हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शूराश्च निकृतिज्ञाश्च तेषां जातु न विश्वसेत् २१
प्रणिधी राक्षसेन्द्रस्य रावणस्य भवेदयम् ।
अनुप्रविश्य सोऽस्मासु भेदं कुर्यान्न संशयः २२
अथ वा स्वयमेवैषच्छिद्रमासाद्य बुद्धिमान् ।
अनुप्रविश्य विश्वस्ते कदाचित्प्रहरेदपि २३
मित्राटविबलं चैव मौलभृत्यबलं तथा ।
सर्वमेतद्बलं ग्राह्यं वर्जयित्वा द्विषद्बलम् २४
प्रकृत्या राक्षसो ह्येष भ्राताऽमित्रस्य वै प्रभो ।
आगतश्च रिपुः साक्षात्कथमस्मिंश्च विश्वसेत् २५
रावणस्यानुजो भ्राता विभीषण इति श्रुतः ।
चतुर्भिः सह रक्षोभिर्भवन्तं शरणं गतः २६
रावणेन प्रणीतं हि तमवेहि विभीषणम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये क्षमं क्षमवतां वर २७
राक्षसो जिह्मया बुद्ध्या संदिष्टोऽयमिहागतः ।
प्रहर्तुं मायया छन्नो विश्वस्ते त्वयि चानघ २८
वध्यतामेष तीव्रेण दण्डेन सचिवैः सह ।

इनका आशा भी गूढ रहता है सो इनका विश्वास कभी न करना चाहि
॥ २१ ॥ यह रावणका दूत होगा सो हममें प्रवेश कर निस्सन्देह भेद करे
॥२२॥ यह बुद्धिमान् विश्वास पैदाकर अवसर पा हमें मारेगा ॥२३॥ मि
वनवासियों अपने अधीन राजाओंकी तथा नौकर रखी हुई सेना ग्रहण कर
योग्य है, पर शत्रु सैन्य त्याज्य है ॥ २४ ॥ यह प्रकृति राक्षस आपके शत्रु
भाई है सो इसका विश्वास करना उचित नहीं ॥ २५ ॥ यह रावणका छो
भाई विभीषण नाम है तथा चार राक्षस संग लिये आपकी शरणमें आ
है ॥ २६ ॥

यही जान पडता है कि यह रावण ही का भेजा हुआ आया है, इस
इसे दण्ड ही दीजिये ॥ २७ ॥ आपको विश्वासमें डाल यह रावणका प्रे
आपको मारनेके लिये यहां आया है ॥ २८ ॥ सो इस बिभीषणको चा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावणस्य नृशंसस्य भ्राता ह्येष विभीषणः २९
एवमुक्त्वा तु तं रामं संरब्धो वाहिनीपतिः ।
वाक्यज्ञो वाक्यकुशलं ततो मौनमुपागमत् ३०
सुग्रीवस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वा रामो महाबलः ।
समीपस्थानुवाचेदं हनुमत्प्रमुखान्कपीन् ३१
यदुक्तं कपिराजेन रावणावरजं प्रति ।
वाक्यं हेतुमदत्यर्थं भवद्भिरपि च श्रुतम् ३२
सुहृदामर्थकृच्छ्रेषु युक्तं बुद्धिमता सदा ।
समर्थेनोपसंदेष्टुं शाश्वतीं भूतिमिच्छता ३३
इत्येवं परिपृष्टास्ते स्वं स्वं मतमतन्द्रिताः ।
सोपचारं तदा राममूचुः प्रियचिकीर्षवः ३४
अज्ञातं नास्ति ते किंचित्त्रिषु लोकेषु राघव ।
आत्मानं पूजयन्राम पृच्छस्यस्मान्सुहृत्तया ३५
त्वं हि सत्यव्रतः शूरो धार्मिको दृढविक्रमः ।
परीक्ष्यकारी स्मृतिमान्निसृष्टात्मा सुहृत्सु च ३६

मन्त्रियों सहित मार डालिये अथवा कोई कठोर दण्ड दीजिये ॥ २९ ॥ सेना नायक सुग्रीव कोपित हो रामसे ऐसा कह चुप होगया ॥ ३० ॥ राम सुग्रीवके ऐसे वचन सुन समीप ही बैठे हुए हनुमानादि वानरोंसे बोले ॥ ३१ ॥ कि विभीषणके विषयमें सुग्रीवने जो अत्यर्थ युक्त वचन कहा वह तुम सबने भी सुना ॥ ३२ ॥ पर जहां अर्थ करनेके विषयमें सन्देह हो वहां समर्थ बुद्धिमान्को चाहिये कि सबसे सम्मति ले ॥ ३३ ॥

जब रामने ऐसा कहा तो वे लोगका प्रिय जाननेकी इच्छासे स्वमत प्रकट करने लगे ॥ ३४ ॥ हे राम, लोकोंमें आपसे कुछ अविदित नहीं, पर हमसे सौहृदके कारण जो कुछ आप पूंछते हैं वह हमलोगोंकी बडाई करते हैं ॥ ३५ ॥ आप सत्यव्रत धर्मात्मा दृढ विक्रम तथा सलाह सहित कार्य करते हैं इससे सब मित्रोंको अपने आधीन कर लिया है ॥ ३६ ॥ इससे आपके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तस्मादेकैकशस्तावद्ब्रुवन्तु सचिवास्तव ।
हेतुतो मतिसंपन्नाः समर्थाश्च पुनस्तथा ३७
इत्युक्ते राघवायाथ मतिमानङ्गदोऽग्रतः ।
विभीषणपरीक्षार्थमुवाच वचनं हरिः ३८
शत्रोः सकाशात्संप्राप्तः सर्वथातर्क्य एव हि ।
विश्वासनीयः सहसा न कर्तव्यो विभीषणः ३९
छादयित्वात्मभावं हि चरन्ति शठबुद्धयः ।
प्रहरन्ति च रन्ध्रेषु सोऽनर्थः सुमहान्भवेत् ४०
अर्थानर्थौ विनिश्चित्य व्यवसायं भजेत ह ।
गुणतः संग्रहं कुर्याद्दोषतस्तु विसर्जयेत् ४१
यदि दोषो महांस्तस्मिंस्त्यज्यतामविशङ्कितम् ।
गुणान्वापि बहूञ्ज्ञात्वा सङ्ग्रहः क्रियतां नृप ४२
शरभस्त्वथ निश्चित्य सार्थं वचनमब्रवीत् ।
क्षिप्रमस्मिन्नरव्याघ्र चारः प्रतिविधीयताम् ४३
प्रणिधाय हि चारेण यथावत्सूक्ष्मबुद्धिना ।
परीक्ष्य च ततः कार्यो यथान्यायं परिग्रहः ४४

सब मन्त्री एक एक अपना अपना मत कहें ॥ ३७ ॥

जब इस तरह रामसे सबोंने कहा तो अङ्गद विभीषणकी परीक्षा लेनेके लिये सबसे पहिले बोले ॥ ३८ ॥ कि ये विभीषण आपके बैरी रावणके समीपसे आये हैं इससे तर्क ही करनेके योग्य हैं जल्दी विश्वास नहीं करना चाहिये ॥ ३९ ॥ क्योंकि दुष्ट लोग अपना अभिप्राय छिपाये घूमा करते हैं छिद्र पाते ही घातकर अनर्थ कर डालते हैं ॥ ४० ॥ इससे अच्छी तरह विचारकर काम करना चाहिये ॥ ४१ ॥ महाराज ! यदि विभीषणमें दोष अधिक हों तो निश्शंक परित्याग कीजिये और यदि गुण बहुत हों तो ग्रहण कीजिये ॥ ४२ ॥ शरभ भी बोला हे नरव्याघ्र ! विभीषणके पास प्रथम एक दूत भेजिये ॥ ४३ ॥ और उसके द्वारा सब अभिप्राय जान आप अपनी सूक्ष्म बुद्धिसे विचार कीजिये ॥ ४४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाम्बवांस्त्वथ संप्रेक्ष्य शास्त्रबुद्ध्या विचक्षणः ।
वाक्यं विज्ञापयामास गुणवद्दोषवर्जितम् ४५
बद्धवैराच्च पापाच्च राक्षसेन्द्राद्विभीषणः ।
अदेशकाले संप्राप्तः सर्वथा शङ्क्यतामयम् ४६
ततो मैन्दस्तु संप्रेक्ष्य नयापनयकोविदः ।
वाक्यं वचनसंपन्नो बभाषे हेतुमत्तरम् ४७
अनुजो नाम तस्यैष रावणस्य विभीषणः ।
पृच्छ्यतां मधुरेणायं शनैर्नरपतीश्वर ४८
भावमस्य तु विज्ञाय तत्त्वतस्त्वं करिष्यसि ।
यदि दुष्टो न दुष्टो वा बुद्धिपूर्वं नरर्षभ ४९
अथ संस्कारसंपन्नो हनूमान्सचिवोत्तमः ।
उवाच वचनं श्लक्ष्णमर्थवन्मधुरं लघु ५०
न भवन्तं मतिश्रेष्ठं समर्थं वदतां वरम् ।
अतिशाययितुं शक्तो बृहस्पतिरपि ब्रुवन् ५१
न वादान्नापि संघर्षान्नाधिक्यान्न च कामतः ।
वक्ष्यामि वचनं राजन्यथार्थं राम गौरवात् ५२

जाम्बवान् शास्त्र बुद्धिसे सब बात सोच गुणयुक्त वचन बोला ॥ ४५ ॥ आपके वैरी रावणके यहांसे कुसमय तथा कुदेशमें आये विभीषणसे शंकित ही रहना चाहिये ॥ ४६ ॥ इसके अनन्तर मैन्द नाम मन्त्री बडी युक्तिसे हेतुयुक्त वचन बोला ॥४७॥ हे महाराजाधिराज! इस बिभीषणसे मधुरवाणीसे पूंछना चाहिये ॥ ४८ ॥ इसका अभिप्राय अच्छी तरह जान वैसा कीजियेगा यदि दुष्ट हो तो त्याग सज्जन हो तो ग्रहण कीजिये ॥ ४९ ॥ तदनु सब मन्त्रियोंमें उत्तम हनुमान् मधुर वचन बोले ॥ ५० ॥ कि सब कुछ जानने करनेमें समर्थ आपके सामने बृहस्पति भी बोलकर वचनसे आपको अनादर नहीं कर सकते ॥ ५१ ॥

हे राजन्! तर्क कुशलता बुद्धिमत्ता वा किसी प्रकारकी कामनासे मैं कुछ नहीं कहता केवल आपके गौरवसे कुछ कहता हूं ॥ ५२ ॥ आपके आगे जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अर्थानर्थनिमित्तं हि यदुक्तं सचिवैस्तव।
तत्र दोषं प्रपश्यामि क्रिया नह्युपपद्यते ५३
ऋते नियोगात्सामर्थ्यमवबोद्धुं न शक्यते।
सहसा विनियोगोऽपि दोषवान्प्रतिभाति मे ५४
चारप्रणिहितं युक्तं यदुक्तं सचिवैस्तव।
अर्थस्यासंभवात्तत्र कारणं नोपपद्यते ५५
अदेशकाले संप्राप्त इत्ययं यद्विभीषणः।
विवक्षा तत्र मेस्तीयं तां निबोध यथामति ५६
एष देशश्च कालश्च भवतीह यथा तथा।
पुरुषात्पुरुषं प्राप्य तथा दोषगुणावपि ५७
दौरात्म्यं रावणे दृष्ट्वा विक्रमं च तथा त्वयि।
युक्तमागमनं ह्यत्र सदृशं तस्य बुद्धितः ५८
आज्ञातरूपैः पुरुषैः स राजन्पृच्छ्यतामिति।
यदुक्तमत्र मे प्रेक्षा काचिदस्ति समीक्षिता ५९
पृच्छ्यमानो विशङ्केत सहसा बुद्धिमान्वचः।

मंत्रियोंने अर्थ अनर्थ विचारनेके विषयमें कहा उसमें मैं दोष देखता [...] क्योंकि इस समय परीक्षा करनेका कोई भी प्रयोजन नहीं है ॥ ५३ [...] किसी कार्यमें विना नियोजना किये हित अहित जाननेकी सामर्थ्य नहीं [...] सकती पर शीघ्र नियोग करनेमें भी दोष ही है ॥ ५४ ॥ दूत भेजनेमें [...] कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता दीखता और विभीषणके कुसमय आने[...] बातके विषयमें भी कुछ कथनीय है ॥ ५६ ॥ रावण व आपके दोष गु[...] विचार जो विभीषण रावणके समीपसे आपके पास आये वह सुकाल ही [...] ॥ ५७ ॥ रावणकी दुष्टता और आपका विक्रम देख उसका आना विभीषण[...] बुद्धिके अनुसार ही हुआ है ॥ ५८ ॥

जो मैन्दने कहा कि किसी अज्ञात पुरुषको विभीषणके पास भेज उन[...] हृदयकी बात जानकर वैसा कीजिए इस विषयमें भी कुछ कहना है ॥५९ [...] जब कोई पुरुष आकर पूंछेगा कि तुम कौन हो कहांसे आये हो विभी[...]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र मित्रं प्रदुष्येत मिथ्या पृष्टं सुखागतम् ६०
अशक्यं सहसा राजन्भावो वोद्धुं परस्य वै।
अन्तरेण स्वरैर्भिन्नैर्नैपुण्यं पश्यतां भृशम् ६१
न त्वस्य ब्रुवतो जातु लक्ष्यते दुष्टभावता।
प्रसन्नं वदनं चापि तस्मान्मे नास्ति संशयः ६२
अशङ्कितमतिः स्वस्थो न शठः परिसर्पति।
न चास्य दुष्टवागस्ति तस्मान्मे नास्ति संशयः ६३
आकारश्छाद्यमानोऽपि न शक्यो विनिगूहितुम्।
बलाद्धि विवृणोत्येव भावमन्तर्गतं नृणाम् ६४
देशकालोपपन्नं च कार्यं कार्यविदां वर।
सफलं कुरुते क्षिप्रं प्रयोगेणाभिसंहितम् ६५
उद्योगं तव संप्रेक्ष्य मिथ्यावृत्तं च रावणम्।
वालिनं च हतं श्रुत्वा सुग्रीवं चाभिषेचितम्। ६६
राज्यं प्रार्थयमानस्तु बुद्धिपूर्वमिहागतः।
एतावत्तु पुरस्कृत्य विद्यते तस्य संग्रहः ६७

उसमें शंका करेंगे और सुखके लिये आए हुए विभीषणसे इस प्रकार पूंछनेसे मित्रतामें भी भेद पडेगा ॥ ६० ॥ हे राजन्! शत्रुका अभिप्राय एकाएकी विदित नहीं हो सकता। इससे वार्त्ता करके उनके भावको समझ लीजिये ॥ ६१ ॥ उसके कथनमें किसी प्रकारकी दुष्टता न थी उस समय उसका मुख प्रसन्न था ॥ ६२ ॥ अशंकित स्वस्थ चित्त तथा शठतारहित है दुष्ट वाणी भी नहीं है ॥ ६३ ॥

आकार किसीके छिपायेसे छिप नहीं सकता वह बलात् प्रकट हो जाता है ॥ ६४ ॥ देशकालसे सिद्ध तथा सुन्दर विचारसे किया हुआ कार्य शीघ्र सफल होता है ॥ ६५ ॥ ये आपको उद्योगी और रावणको मिथ्या उद्योगमें लगा देख तथा वालीको मरा हुआ व सुग्रीवको अभिषिक्त सुन ॥ ६६ ॥ रावणके मारे जानेपर राज्य पानेकी इच्छासे यहां आये हैं इन बातोंसे इनका संग्रह करना ही उचित है ॥ ६७ ॥ विभीषणकी श्रेष्ठताके विषयमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यथाशक्ति मयोक्तं तु राक्षसस्यार्जवं प्रति।
प्रमाणं त्वं हि शेषस्य श्रुत्वा बुद्धिमतां वर ॥ ६८
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे सप्तदशः सर्गः ॥ १७ ॥ [५७०]

अष्टादशः सर्गः।

अथ रामः प्रसन्नात्मा श्रुत्वा वायुसुतस्य ह।
प्रत्यभाषत दुर्धर्षः श्रुतवानात्मनि स्थितम् ॥ १
ममापि च विवक्षास्ति काचित्प्रति विभीषणम्।
श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं भवद्भिः श्रेयसि स्थितैः ॥ २
मित्रभावेन संप्राप्तं न त्यजेयं कथंचन।
दोषो यद्यपि तस्य स्यात्सतामेतदगर्हितम् ॥ ३
सुग्रीवस्त्वथ तद्वाक्यमाभाष्य च विमृश्य च।
ततः शुभतरं वाक्यमुवाच हरिपुङ्गवः ॥ ४
स दुष्टो वाप्यदुष्टो वा किमेष रजनीचरः।
ईदृशं व्यसनं प्राप्तं भ्रातरं यः परित्यजेत् ॥ ५
को नाम स भवेत्तस्य यमेष न परित्यजेत्।
वानराधिपतेर्वाक्यं श्रुत्वा सर्वानुदीक्ष्य तु ॥ ६

मैंने अपनी विद्यानुसार कहा परन्तु अब शेष कार्य करनेके लिये आप प्रमाण है ॥ ६८ ॥

॥ यहाँ १७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

हनुमानके वचन सुन सर्व शास्त्रविशारद राम प्रसन्न हो अपने मनकी बात कहने लगे ॥ १ ॥ कि विभीषणके विषयमें भी कुछ कहना चाहता हूं ॥ २ ॥ मित्रभावसे आये हुए विभीषणको अब मैं न त्यागूंगा चाहे उसमें दोष हो क्योंकि शरण आये हुएकी रक्षा न करना निन्दित बात है ॥ ३ ॥ रामका वचन व विचार सुन सुग्रीव बोला ॥ ४ ॥ कि यह राक्षस विभीषण चाहे अच्छा हो पर त्याज्य है क्योंकि ऐसे कुसमयमें जब आपके ऐसे शत्रु शिरपर आगये हैं यह भाईको छोड आया है ॥ ५ ॥ यह कृतघ्न किसको न छोड देगा इससे यह सब तरहसे त्याग ही करनेके योग्य है वानरराजका वचन सुन तथा सबकी ओर देख ॥ ६ ॥ सत्य पराक्रमी श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईषदुत्स्मयमानस्तु लक्ष्मणं पुण्यलक्षणम्।
इति होवाच काकुत्स्थो वाक्यं सत्यपराक्रमः ७
अनधीत्य च शास्त्राणि वृद्धाननुपसेव्य च।
न शक्यमीदृशं वक्तुं यदुवाच हरीश्वरः ८
अस्ति सूक्ष्मतरं किंचिद्यथात्र प्रतिभाति मा।
प्रत्यक्षं लौकिकं चापि वर्तते सर्वराजसु ९
अमित्रास्तत्कुलीनाश्च प्रातिदेश्याश्च कीर्तिताः।
व्यसनेषु प्रहर्तारस्तस्मादयमिहागतः १०
अपापास्तत्कुलीनाश्च मानयन्ति स्वकान्हितान्।
एष प्रायो नरेन्द्राणां शङ्कनीयस्तु शोभनः ११
यस्तु दोषस्त्वया प्रोक्तो ह्यादानेऽरिबलस्य च।
तत्र ते कीर्तयिष्यामि यथाशास्त्रमिदं शृणु १२
न वयं तत्कुलीनाश्च राज्यकाङ्क्षी च राक्षसः।
पण्डिता हि भविष्यन्ति तस्माद्ग्राह्यो विभीषणः १३
अव्यग्राश्च प्रहृष्टाश्च ते भविष्यन्ति संगताः।
प्रणादश्च महानेषोऽन्योन्यस्य भयमागतम्॥
इति भेदं गमिष्यन्ति तस्मात्प्राप्तो विभीषणः १४

मुस्कुराकर पुण्य लक्षण लक्ष्मणसे बोले ॥ ७ ॥

जो कुछ सुग्रीवने कहा है वैसा बिना शास्त्र पढे वृद्धोंकी सेवा किये कोई नहीं कह सकता ॥ ८ ॥ पर इस विषयमें जैसा मुझको विदित होता है वह बहुत सूक्ष्मतर है ॥ ९ ॥ ज्ञाति व समीपमें रहनेवाले लोग समय पा शत्रु होजाते हैं और कष्ट आनेपर ये स्वामीको भी मार डालते हैं इसीसे विभीषण यहां आया है ॥ १० ॥ जो पाप रहित अपने कुलवाले होते हैं राजा लोग उनसे भी शंकित रहते हैं ॥ ११ ॥ हे सुग्रीव! जो दोष तुमने बताया इस विषयमें जो शास्त्रकी आज्ञा है सुनो ॥ १२ ॥

विभीषण हमारे राज्यकी इच्छा न करेगा क्योंकि हम उसके कुलके नहीं व राक्षसोंमें भी विवेकी लोग होते हैं इससे विभीषण ग्राह्य है ॥ १३ ॥ इस सम्मिलनसे उनके सहित हर्ष होगा व राक्षसोंको भय होगा ॥ १४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

न सर्वे भ्रातरस्तात भवन्ति भरतोपमाः ।
मद्विधा वा पितुः पुत्राः सुहृदो वा भवद्विधाः १५
एवमुक्तस्तु रामेण सुग्रीवः सहलक्ष्मणः ।
उत्थायेदं महाप्राज्ञः प्रणतो वाक्यमब्रवीत् १६
रावणेन प्रणिहितं तमवेहि निशाचरम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये क्षमं क्षमवतां वर १७
राक्षसो जिह्मया बुद्ध्या संदिष्टोऽयमिहागतः ।
प्रहर्तुं त्वयि विश्वस्ते विश्वस्ते मयि वानघ १८
लक्ष्मणे वा महाबाहो स वध्यः सचिवैः सह ।
रावणस्य नृशंसस्य भ्राता ह्येष विभीषणः १९
एवमुक्त्वा रघुश्रेष्ठं सुग्रीवो वाहिनीपतिः ।
वाक्यज्ञो वाक्यकुशलं ततो मौनमुपागमत् २०
स सुग्रीवस्य तद्वाक्यं रामः श्रुत्वा विमृश्य च ।
ततः शुभतरं वाक्यमुवाच हरिपुङ्गवम् २१
स दुष्टो वाप्यदुष्टो वा किमेष रजनीचरः ।
सूक्ष्ममप्यहितं कर्तुं मम शक्तः कथंचन २२
पिशाचान्दानवान्यक्षान्पृथिव्यां चैव राक्षसान् ।

सब भाई भरतके समान नहीं होते मेरे तुल्य पिताका आज्ञाकारी पुत्र आपके समान मित्र भी नहीं होते हैं ॥ १५ ॥ रामके ऐसे कहनेपर लक्ष्मण सहित सुग्रीव उठकर नम्र हो यह बोले ॥ १६ ॥ हे क्षमा करनेवालों श्रेष्ठ ! इस राक्षसको रावणका भेजा हुआ समझिए इससे मैं उसका निग्रह ही योग्य समझता हूं ॥ १७ ॥ राक्षस कुटिल बुद्धि होते हैं सो यह रावणकी आज्ञासे यहां आया है विश्वास दिलाकर अवश्य प्रहार करेगा ॥ १८ ॥ से हे महाबाहो ! रावणका भाई यह विभीषण मार ही डालनेके योग्य है ॥ १९ ॥ सुग्रीव वाक्यविशारद ऐसा कह चुप होगया ॥ २० ॥

सुग्रीवकी बात सुन विचार कर राम उससे बोले ॥ २१ ॥ कि चाहे विभीषण दुष्ट हो वा अदुष्ट क्या वह कुछ अहित कर सकता है ॥ २२ ॥ हे हरीश्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अङ्गुल्यग्रेण तान्हन्यामिच्छन्हरिगणेश्वर २३
श्रूयते हि कपोतेन शत्रुः शरणमागतः।
अर्चितश्च यथान्यायं स्वैश्च मांसैर्निमन्त्रितः २४
स हि तं प्रतिजग्राह भार्याहर्तारमागतम्।
कपोतो वानरश्रेष्ठ किं पुनर्मद्विधो जनः २५
ऋषेः कण्वस्य पुत्रेण कण्डुना परमर्षिणा।
शृणु गाथा पुरा गीता धर्मिष्ठा सत्यवादिना २६
बद्धाञ्जलिपुटं दीनं याचन्तं शरणागतम्।
न हन्यादानृशंस्यार्थमपि शत्रुं परन्तप २७
आर्तो वा यदि वा दृप्तः परेषां शरणं गतः।
अरिः प्राणान्परित्यज्य रक्षितव्यः कृतात्मना २८
स चेद्भयाद्वा मोहाद्वा कामाद्वापि न रक्षति।
स्वया शक्त्या यथान्यायं तत्पापं लोकगर्हितम् २९
विनष्टः पश्यतस्तस्य रक्षिणः शरणं गतः।
आदाय सुकृतं तस्य सर्वं गच्छेदरक्षितः ३०
एवं दोषो महानत्र प्रपन्नानामरक्षणे।
अस्वर्ग्यं चायशस्यं च बलवीर्यविनाशनम् ३१

जो चाहूं तो सम्पूर्ण पिशाच दानव यक्ष तथा राक्षसादिकोंको अंगुली घुमा देनेहीसे मार डालूं॥ २३॥ सुना है कि कपोतने शरणागत व्याधोंको अपना मांस दे पूजा की थी॥ २४॥ कबूतरने अपने स्त्रीनाशक शत्रुका रक्षा की तो मेरे समान पुरुष कैसे न रक्षा करें?॥ २५॥

कण्व ऋषिके धर्मिष्ठ कण्डुने एक कथा कही थी वह सुनो॥ २६॥ कि चाहे वैरी भी हो पर दीन हो घरमें आकर प्रार्थना करे तो उसे न मारे॥ २७॥ अन्य शत्रुओंके भयसे व्याकुल हो जो वैरी भी शरणमें आवे तो अपने प्राण देकर भी उसकी रक्षा करनी चाहिये॥ २८॥ कदाचित् उसकी रक्षा अपनी शक्तिभर नहीं करता तो उसे पाप लगता है व निन्दा होती है॥ २९॥ शरणमें आनेपर यदि रक्षा न हुई तो वह अरक्षित वैरी उसका पुण्य लेकर चला जाता है॥ ३०॥ एवं दुःखितोंकी रक्षा न करनेसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

करिष्यामि यथार्थं तु कण्डोर्वचनमुत्तमम् ।
धर्मिष्ठं च यशस्यं च स्वर्ग्यं स्यात्तु फलोदये ३२
सकृदेव प्रपन्नाय तवाऽस्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ३३
आनयैनं हरिश्रेष्ठ दत्तमस्याभयं मया ।
विभीषणो वा सुग्रीव यदि वा रावणः स्वयम् ३४
रामस्य तु वचः श्रुत्वा सुग्रीवः प्लवगेश्वरः ।
प्रत्यभाषत काकुत्स्थं सौहार्देनाभिपूरितः ३५
किमत्र चित्रं धर्मज्ञ लोकनाथशिखामणे ।
यत्त्वमार्यं प्रभाषेथाः सत्त्ववान्सत्पथे स्थितः ३६
ममचाप्यन्तरात्मायं शुद्धं वेत्ति विभीषणम् ।
अनुमानाच्च भावाच्च सर्वतः सुपरीक्षितः ३७
तस्मात्क्षिप्रं सहास्माभिस्तुल्यो भवतु राघव ।
विभीषणो महाप्राज्ञः सखित्वं चाभ्युपैतु नः ३८
ततस्तु सुग्रीववचो निशम्य तद्धरीश्वरेणाभिहितं नरेश्वरः ।
विभीषणेनाशु जगाम संगमं पतत्रिराजेन यथा पुरन्दरः ३९
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डेऽष्टादशः सर्गः ॥१८॥ [६०१

दोष होता है ॥ ३१ ॥ सो मैं धर्मिष्ठ कण्डुका वचन मानूंगा ॥ ३२ ॥ जो एक वार भी दुःखित हो कहे कि मैं तुम्हारा हूं तो सब प्राणियोंसे उसे अभयदान देता हूं ॥ ३३ ॥ सो हे सुग्रीव ! मैंने अभयदान दिया चाहे विभीषण हो या स्वयं रावण हो मेरे समीप ले आओ ॥ ३४ ॥

रामके वचन सुन मित्रभावसे पूर्ण हो सुग्रीव रामसे बोले ॥ ३५ ॥ आपने ऐसे उत्तम वचन कहे तो आश्चर्यकी कुछ बात नहीं क्योंकि आप सन्मार्गमें स्थित हैं ॥३६॥ मेरी आत्मा भी यही कहती है कि अनुमान और तथा हनुमानके परीक्षा लेनेसे विभीषणका चित्त शुद्ध है ॥ ३७ ॥ सो हे राघव ! विभीषण भी हमलोगोंके समान व हमलोगोंके सखा हों ॥ ३८ ॥ सुग्रीवके ऐसे वचन सुनकर राम विभीषणसे ऐसे मिले जैसे इन्द्रपक्षिराज मिलते हैं ॥ ३९ ॥ ॥ यहाँ १८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ एकोनविंशतिः सर्गः ॥

राघवेणाभये दत्ते संनतो रावणानुजः ।
बिभीषणो महाप्राज्ञो भूमिं समवलोकयत् १
खात्पपातावनिं हृष्टो भक्तैरनुचरैः सह ।
स तु रामस्य धर्मात्मा निपपात बिभीषणः २
पादयोर्निपपाताथ चतुर्भिः सह राक्षसैः ।
अब्रवीच्च तदा वाक्यं रामं प्रति बिभीषणः ३
धर्मयुक्तं च युक्तं च सांप्रतं संप्रहर्षणम् ।
अनुजो रावणस्याहं तेन चास्म्यवमानितः ४
भवन्तं सर्वभूतानां शरण्यं शरणं गतः ।
परित्यक्ता मया लङ्का मित्राणि च धनानि च ५
भवद्गतं हि मे राज्यं जीवितं च सुखानि च ।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रामो वचनमब्रवीत् ६
वचसा सान्त्वयित्वैनं लोचनाभ्यां पिबन्निव ।
अख्याहि मम तत्त्वेन राक्षसानां बलाबलम् ७
एवमुक्तं तदा रक्षो रामेणाक्लिष्टकर्मणा ।
रावणस्य बलं सर्वमाख्यातुमुपचक्रमे ८

रामके अभय देनेपर बिभीषण पृथ्वी की ओर देखते हुए ॥ १ ॥ गगनसे अपने साथियों सहित प्रसन्न हो पृथ्वीपर उतरे और बिभीषण रामके पैरों पर गिरे ॥ २ ॥ चारों राक्षसों सहित पैरोंपर गिर रामसे ॥ ३ ॥ धर्मयुक्त हर्ष करानेके योग्य वचन बोला कि मैं राक्षसराजका छोटा भाई हूं उसने मेरा अनादर किया ॥ ४ ॥ इससे मैं आपकी शरणमें आया हूं मैंने लङ्का मित्रवृन्द व सब धन छोड दिया ॥ ५ ॥ अब मेरा राज्य प्राण व सुख सब आपहीके अधीन है यह सुन राम बोले ॥ ६ ॥ कि बिभीषण प्रथम राक्षसोंका बलाबल बताओ ॥ ७ ॥

जब रामने यह पूछा तो बिभीषण रावणका सब बल कहने लगा ॥ ८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अवध्यः सर्वभूतानां गन्धर्वोरगपक्षिणाम् ।
राजपुत्र दशग्रीवो वरदानात्स्वयंभुवः ९
रावणानन्तरो भ्राता मम ज्येष्ठश्च वीर्यवान् ।
कुम्भकर्णो महातेजाः शक्रप्रतिबलो युधि १०
राम सेनापतिस्तस्य प्रहस्तो यदि ते श्रुतः ।
कैलासे येन समरे मणिभद्रः पराजितः ११
बद्धगोधाङ्गुलित्रश्च अवध्यकवचो युधि ।
धनुरादाय यस्तिष्ठन्नदृश्यो भवतीन्द्रजित् १२
सङ्ग्रामे समुदव्यूहे तर्पयित्वा हुताशनम् ।
अन्तर्धानगतः श्रीमानिन्द्रजिद्धन्ति राघव १३
महोदरमहापार्श्वौ राक्षसश्चाप्यकम्पनः ।
अनीकपास्तु तस्यैते लोकपालसमा युधि १४
दश कोटिसहस्राणि रक्षसां कामरूपिणाम् ।
मांसशोणितभक्ष्याणां लङ्कापुरनिवासिनाम् १५
स तैस्तु सहितो राजा लोकपालानयोधयत् ।

महाराज ब्रह्माके वरदानसे रावणको गन्धर्व, सर्प, पक्षी, आदि कोई —
नहीं मार सकता ॥ ९ ॥ रावणसे छोटा तथा मुझसे बडा महावीर्यवा
कुम्भकर्ण जो लडनेमें इन्द्रके समान बली है ॥ १० ॥ उस रावणके
सेनापति प्रहस्त है जिसने कैलासपर युद्धमें मणिभद्रनाम महादेवके गणको
हरा दिया था ॥ ११ ॥ अभेद्य कवच धारण किये युद्धमें जब खडा होता
तो अदृश्य होजाता है ऐसा मेघनाद नामक रावणका बडा पुत्र है ॥ १२
इसने युद्धमें अग्निको प्रसन्न कर अन्तर्ध्यान हो बहुतसे वैरियोंको मा
डाला ॥ १३ ॥

महोदर, महापार्श्व व अकम्पन ये भी रावणके सेनानी हैं ये सब लो
पालोंके तुल्य ही हैं ॥ १४ ॥ इनके अतिरिक्त कामरूपी एक अर्व महा
बली राक्षस लङ्कामें बसते हैं ॥ १५ ॥ उनको साथ ले रावणने लो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सह देवैस्तु ते भग्ना रावणेन दुरात्मना १६
विभीषणस्य तु वचस्तच्छ्रुत्वा रघुसत्तमः ।
अन्वीक्ष्य मनसा सर्वमिदं वचनमब्रवीत् १७
यानि कर्मापदानानि रावणस्य विभीषण ।
आख्यातानि च तत्त्वेन ह्यवगच्छामि तान्यहम् १८
अहं हत्वा दशग्रीवं सप्रहस्तं सहात्मजम् ।
राजानं त्वां करिष्यामि सत्यमेतच्छृणोतु मे १९
रसातलं वा प्रविशेत्पातालं वापि रावणः ।
पितामहसकाशं वा न मे जीवन्विमोक्ष्यते २०
अहत्वा रावणं सङ्ख्ये सपुत्रजनबान्धवम् ।
अयोध्यां न प्रवेक्ष्यामि त्रिभिस्तैर्भ्रातृभिः शपे २१
श्रुत्वा तु वचनं तस्य रामस्याक्लिष्टकर्मणः ।
शिरसा वन्द्य धर्मात्मा वक्तुमेव प्रचक्रमे २२
राक्षसानां वधे साह्यं लङ्कायाश्च प्रधर्षणे ।
करिष्यामि यथाप्राणं प्रवेक्ष्यामि च वाहिनीम् २३
इति ब्रुवाणं रामस्तु परिष्वज्य विभीषणम् ।

पालोंसे युद्ध किया और देवताओं सहित उन्हें भगा दिया ॥ १६ ॥ श्रीराम उसके ऐसे वचन सुन यह बोले ॥ १७ ॥ हे विभीषण ! संग्राममें रावणके जितने कर्म तुने बताये मुझे वे ज्ञात हैं ॥ १८ ॥ इससे पुत्र तथा प्रहस्त सहित रावणको मार तुमको लङ्केश्वर बनाऊंगा ॥ १९ ॥ चाहे वह रसातलमें चला जावे या पातालमें वा ब्रह्माके पास चला जावे अब वह जीता न बचेगा ॥ २० ॥ मैं भाइयोंकी शपथपूर्वक कहता हूं कि परिजन सहित रावणको युद्धमें विना मारे अयोध्याको न जाऊंगा ॥ २१ ॥

रामके वचन सुन धर्मात्मा विभीषण कहने लगे ॥२२॥ कि जबतक जीता रहूंगा राक्षसोंके वध करने तथा लङ्काके विध्वंस करनेमें आपकी सहायता करूंगा ॥ २३ ॥ ऐसा कहते हुए विभीषणकी छातीसे लगा रामलक्ष्मणसे

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अब्रवील्लक्ष्मणं प्रीतः समुद्राज्जलमानय २४
तेन चेमं महाप्राज्ञमभिषिञ्च विभीषणम् ।
राजानं रक्षसां क्षिप्रं प्रसन्ने मयि मानद २५
एवमुक्तस्तु सौमित्रिरभ्यषिञ्चद्विभीषणम् ।
मध्ये वानरमुख्यानां राजानं राजशासनात् २६
तं प्रसादं तु रामस्य दृष्ट्वा सद्यः प्लवङ्गमाः ।
प्रचुक्रुशुर्महात्मानं साधु साध्विति चाब्रुवन् २७
अब्रवीच्च हनूमांश्च सुग्रीवश्च विभीषणम् ।
कथं सागरमक्षोभ्यं तराम वरुणालयम् ॥
सैन्यैः परिवृताः सर्वे वानराणां महौजसाम् २८
उपायैरभिगच्छाम यथा नदनदीपतिम् ।
तराम तरसा सर्वे ससैन्या वरुणालयम् २९
एवमुक्तस्तु धर्मात्मा प्रत्युवाच विभीषणः ।
समुद्रं राघवो राजा शरणं गन्तुमर्हति ३०
खानितः सगरेणायमप्रमेयो महोदधिः ।
कर्तुमर्हति रामस्य ज्ञातेः कार्यं महोदधिः ३१
एवं विभीषणेनोक्तं राक्षसेन विपश्चिता ।
आजगामाथ सुग्रीवो यत्र रामः सलक्ष्मणः ३२

बोले कि सागरका जल लाओ ॥ २४ ॥ और उससे इन विभीषणका राज्या-भिषेक करादो ॥ २५ ॥ रामकी ऐसी आज्ञा पा लक्ष्मणने विभीषणको सबसोंके राज्यपर अभिषिक्त कर दिया रामकी ऐसी प्रसन्नता देख सब प्रसन्न हो किलकिलाने लगे तथा रामकी बडाई करने लगे ॥ २७ ॥ हनु तथा सुग्रीव विभीषणसे बोले कि यह अगाध समुद्र कैसे उतरें इसका कोई साधन बताओ ॥ २८ ॥ ऐसा उपाय बताओ जिसमें सब वानर सागरके पार हो जाय ॥ २९ ॥

जब ऐसा कहा तो विभीषण बोले कि राम समुद्रकी शरण जावें ॥ ३० तो यह जातिवाले रामका कार्य अवश्य पूरा करेगा क्योंकि सगरपुत्रका खनित है ॥ ३१ ॥ विभीषणके ऐसा कहनेपर सुग्रीव व राम लक्ष्मणके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततश्चाख्यातुमारेभे विभीषणवचः शुभम्।
सुग्रीवो विपुलग्रीवः सागरस्योपवेशनम् ३३
प्रकृत्या धर्मशीलस्य रामस्यास्याप्यरोचत।
सलक्ष्मणं महातेजाः सुग्रीवं च हरीश्वरम् ३४
सत्क्रियार्थं क्रियादक्षं स्मितपूर्वमभाषत।
विभीषणस्य मन्त्रोऽयं मम लक्ष्मण रोचते ३५
सुग्रीवः पण्डितो नित्यं भवान्मन्त्रविचक्षणः।
उभाभ्यां संप्रधार्यार्थं रोचते यत्तदुच्यताम् ३६
एवमुक्तौ ततो वीरावुभौ सुग्रीवलक्ष्मणौ।
समुदाचारसंयुक्तमिदं वचनमूचतुः ३७
किमर्थं नौ नरव्याघ्र न रोचिष्यति राघव।
विभीषणेन यत्तूक्तमस्मिन्काले सुखावहम् ३८
अबद्ध्वा सागरे सेतुं घोरेऽस्मिन्वरुणालये।
लङ्का नासादितुं शक्या सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ३९
विभीषणस्य शूरस्य यथार्थं क्रियतां वचः।
अलं कालात्ययं कृत्वा सागराय नियुज्यताम् ४०

आये ॥ ३२ ॥ और विभीषणके कहे हुए वचन सागरके समीप बैठनेके लिए कहने लगे ॥ ३३ ॥ रामको यह बात अच्छी लगी और लक्ष्मणसे ॥ ३४ ॥ समुद्रको सत्क्रिया करनेके योग्य समझ बोले हे लक्ष्मण! विभीषणकी सलाह मुझे भी भाती है ॥ ३५ ॥ सुग्रीव भी बड़े विज्ञ हैं और तुम भी चतुर हो इससे दोनों जिस बातके लिये विचार कर कहो वही करें ॥ ३६ ॥ जब सुग्रीव व लक्ष्मणसे रामने ऐसा कहा तो वे दोनों बोले ॥ ३७ ॥ इस समय जो बात विभीषणने कही वह हमलोगोंको कैसे न अच्छी लगेगी? ॥ ३८ ॥ क्योंकि इस घोर समुद्रमें बिना सेतु बांधे कोई भी लङ्कांको नहीं जा सकता ॥ ३९ ॥ विभीषणके वचन अवश्य कीजिये जिस तरह सेना लङ्कामें जावे, वही समुद्रसे कहा जावे ॥ ४० ॥ रावणसे रक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यथा सैन्येन गच्छाम पुरीं रावणपालिताम् ४१
एवमुक्तः कुशास्तीर्णे तीरे नदनदीपतेः।
संविवेश तदा रामो वेद्यामिव हुताशनः ४२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥१९॥[६५१

विंशः सर्गः।

ततो निविष्टां ध्वजिनीं सुग्रीवेणाभिपालिताम्।
ददर्श राक्षसोऽभ्येत्य शार्दूलो नाम वीर्यवान् १
चारो राक्षसराजस्य रावणस्य दुरात्मनः।
तां दृष्ट्वा सर्वतोव्यग्रां प्रतिगम्य स राक्षसः २
आविश्य लङ्कां वेगेन राजानमिदमब्रवीत्।
एष वै वानरक्षौघो लङ्कां समभिवर्तते ३
अगाधश्चाप्रमेयश्च द्वितीय इव सागरः।
पुत्रौ दशरथस्येमौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ४
उत्तमौ रूपसंपन्नौ सीतायाः पदमागतौ।
एतौ सागरमासाद्य संनिविष्टौ महाद्युते ५
बलं चाकाशमावृत्य सर्वतो दशयोजनम्।
तत्त्वभूतं महाराज क्षिप्रं वेदितुमर्हसि ६

लङ्कापुरीमें हम सेनाके साथ जा सकें ऐसा कोई विचार कीजिये ॥ ४१ ॥ यह सुन समुद्रके तीर कुश बिछाकर राम वेदीके बीचमें स्थापित अग्नि तुल्यास्थित हुए ॥ ४२ ॥

॥ यहाँ १९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः सुग्रीव पालित वाहिनीको रावणके भेजे दूत शार्दूल नामक निरीक्षण किया ॥ १ ॥ और भलीभांति देख भाल लङ्कामें जा रावण बोला ॥ २ ॥ यह जो वानर सेनाका वृन्द लङ्काके सामने पडा है ॥ ३ ॥ वह दूसरे समुद्रके समान ही है रामलक्ष्मण दोनों भाई ॥ ४ ॥ बडे स्वरूप वान् हैं व सीताके लिये आये हैं जो किनारे पर स्थित हैं ॥ ५ ॥ सब सें पडी है उसका वृत्तान्त आप बहुत ही जल्द लें ॥ ६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तव दूता महाराज क्षिप्रमर्हन्ति वेदितुम्।
उपप्रदानं सान्त्वं वा भेदो वात्र प्रयुज्यताम् ७
शार्दूलस्य वचः श्रुत्वा रावणो राक्षसेश्वरः।
उवाच सहसा व्यग्रः संप्रधार्यार्थमात्मनः॥
शुकं साधु तदा रक्षो वाक्यमर्थविदां वरम् ८
सुग्रीवं ब्रूहि गत्वाशु राजानं वचनान्मम।
यथासंदेशमक्लीबं श्लक्ष्णया परया गिरा ९
त्वं वै महाराजकुलप्रसूतो महाबलश्चर्क्षरजःसुतश्च।
न कश्चनार्थस्तव नास्त्यनर्थस्तथापि मे भ्रातृसमो हरीश १०
अहं यद्यहरं भार्यां राजपुत्रस्य धीमतः।
किं तत्र तव सुग्रीव किष्किन्धां प्रति गम्यताम् ११
न हीयं हरिभिर्लङ्का प्राप्तुं शक्या कथंचन।
देवैरपि सगन्धर्वैः किं पुनर्नरवानरैः १२
स तदा राक्षसेन्द्रेण संदिष्टो रजनीचरः।
शुको विहङ्गमो भूत्वा तूर्णमाप्लुत्य चाम्बरम् १३
स गत्वा दूरमध्वानमुपर्युपरि सागरम्।
संस्थितो ह्यम्बरे वाक्यं सुग्रीवमिदमब्रवीत् १४

महाराज! आपके दूत शीघ्र वहां जा बिचारे कि दाम, साम, भेद किस प्रकार कार्य सिद्ध होगा॥ ७॥ शार्दूलका कथन सुन रावण अच्छी तरह विचार शुक नामक राक्षससे बोला॥ ८॥ कि हमारी ओरसे हरीश्वर सुग्रीवसे मधुरवाणीसे जाकर कहो॥ ९॥ कि हे सुग्रीव! तुम राजकुलमें उत्पन्न अतिपराक्रमी हो व ऋक्षरजसनाम वानरराजके पुत्र हो, तुम हमारे भाईके समान हो॥ १०॥ हे सुग्रीव जो मैं रामकी भार्या हरलाया इसमें तुम्हारा क्या बिगडा सो अपनी पुरीको लौट जाओ॥ ११॥ इस लङ्कामें मनुष्य तो क्या देवता गन्धर्वादि भी प्राप्त नहीं हो सकते॥ १२॥

रावणके ऐसा कहनेपर वह शुक पक्षी रूप धार गगनको शीघ्र उडा॥ १३॥ समुद्रके ऊपर ऊपर दूरतक जा उत्तर तीरपर पहुंच आकाशमें स्थित हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सर्वमुक्तं यथोदिष्टं रावणेन दुरात्मना ।
तत्प्रापयन्तं वचनं तूर्णमाप्लुत्य वानराः १५
प्रापद्यन्त तदा क्षिप्रं लोप्तुं हन्तुं च मुष्टिभिः ।
सर्वैः प्लवङ्गैः प्रसभं निगृहीतो निशाचरः १६
गगनाद्भूतलं चाशु प्रतिगृह्यावतारितः ।
वानरैः पीड्यमानस्तु शुको वचनमब्रवीत् १७
न दूतान्घ्नन्ति काकुत्स्थ वार्यन्तां साधु वानराः १८
यस्तु हित्वा मतं भर्तुः स्वमतं संप्रधारयेत् ।
अनुक्तवादी दूतः सन्स दूतो वधमर्हति १९
शुकस्य वचनं रामः श्रुत्वा तु परिदेवितम् ।
उवाच मावधिष्टेति घ्नतः शाखामृगर्षभान् २०
स च पत्रलघुर्भूत्वा हरिभिर्दर्शितेऽभये ।
अन्तरिक्षे स्थितो भूत्वा पुनर्वचनमब्रवीत् २१
सुग्रीव सत्त्वसंपन्न महाबलपराक्रम ।
किं मया खलु वक्तव्यो रावणो लोकरावणः २२
स एवमुक्तः प्लवगाधिपस्तदा प्लवङ्गमानामृषभो महाबलः

सुग्रीवसे बोला ॥ १४ ॥ जो कुछ रावणने कहा था वह उसने निवेदन कि
वानरोंने उछल उसे गगनमें ही पकड लिया ॥ १५ ॥ और उसे मारने
पङ्ख उखाडने लगे जब बलात् वानरोंने उसको पकड लिया ॥ १६ ॥
आकाशसे पृथ्वीपर उसे उतारा तब पीडित शुक बोला ॥ १७ ॥

राम दूत अवध्य है इससे आप इन वानरोंको रोक कीजिये ॥ १८
स्वामीके मतके परवाह न करके जो दूत अपना मत कहने लगता है
वधका पात्र है क्योंकि वह स्वामीका मत प्रगट नहीं करता ॥ १९
शुकके वचन सुन वानरोंसे रामने कहा कि इसे मत मारो ॥ २० ॥ वानरों
छूट वह पङ्ख उखड जानेसे हलका होगया और फिर आकाशमें जा सुग्रीव
बोला ॥ २१ ॥ हे महाबल ! यह बतलाओ किं रावणसे हम आपका
सन्देशा कहें ॥ २२ ॥ सुग्रीव ऐसा कहनेपर शुकसे बोला कि रावणसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उवाच वाक्यं रजनीचरस्य चार शुकं शुद्धमदीनसत्त्वः २३
न मेऽसि मित्रं न तथानुकम्प्यो न चोपकर्तासि न मे प्रियोऽसि ।
अरिश्च रामस्य सहानुबन्धस्ततोऽसि वालीव वधार्ह वध्यः २४
निहन्म्यहं त्वां ससुतं सबन्धुं सज्ञातिवर्गं रजनीचरेश ।
लङ्कां च सर्वां महता बलेन सर्वैः करिष्यामि समेत्य भस्म ॥
न मोक्ष्यसे रावण राघवस्य सर्वैः सहेन्द्रैरपि मूढ गुप्तः २५
अन्तर्हितः सूर्यपथं गतोऽपि तथैव पातालमनुप्रविष्टः ।
गिरीशपादाम्बुजसंगतो वा हतोऽसि रामेण सहानुजस्त्वम् २६
तस्य ते त्रिषु लोकेषु न पिशाचं न राक्षसम् ।
त्रातारं नानुपश्यामि न गन्धर्वं न चासुरम् २७
अवधीस्त्वं जरावृद्धं गृध्रराजं जटायुषम् २८
किं नु ते रामसांनिध्ये सकाशे लक्ष्मणस्य च ।
हृता सीता विशालाक्षी यां त्वं गृह्य न बुध्यसे । २९
महाबल महात्मानं दुराधर्षं सुरैरपि ।
न बुध्यसे रघुश्रेष्ठं यस्ते प्राणान्हरिष्यति ३०

कहना कि तुम हमारे मित्र अनुकम्प्य, उपकर्ता और प्रिय कुछ भी नहीं हो किन्तु तुम रामके शत्रु होनेसे बालीके तुल्य वध्य हो ॥ २३-२४ ॥

हे रावण मैं तुमको परिजन सहित मार डालूंगा और लङ्काको भसकर दूंगा ॥ २५ ॥ हे रावण चाहे देवता भी तुम्हारी रक्षा करें चाहे अन्तर्ध्यान होजाओ वा पातालको चले जाओ वा शंकरके चरणकमलमें लीन हो जावो पर अपने भाई सहित तुमरामसे अवश्य मारे जाओगे ॥ २६ ॥ तीनों लोकोंमें किसीको मैं नहीं देखता जो रामसे तुमको बचाले ॥ २७ ॥ तुमने वृद्ध जटायुको मारा है ॥ २८ ॥ और राम लक्ष्मणके सामने तुमने सीताको हरण किया है ॥ २९ ॥ महाबल महात्मा कुल श्रेष्ठ रामको नहीं जानते वह तुम्हारे प्राण हर लेंगे ॥ ३० ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ततोऽब्रवीद्वालिसुतोऽप्यङ्गदो हरिसत्तमः ।
नायं दूतो महाप्राज्ञ चारकः प्रतिभाति मे ३१
तुलितं हि बलं सर्वमनेन तव तिष्ठता ।
गृह्यतां मागमल्लङ्कामेतद्धि मम रोचते ३२
ततो राज्ञा समादिष्टाः समुत्पत्य वलीमुखाः ।
जगृहुश्च बबन्धुश्च विलपन्तमनाथवत् ३३
शुकस्तु वानरैश्चण्डैस्तत्र तैः संप्रपीडितः ।
व्याचुक्रोश महात्मानं रामं दशरथात्मजम् ३४
लुप्येते मे बलात्पक्षौ भिद्येते मे तथाक्षिणी ।
यां च रात्रिं मरिष्यामि जाये रात्रिं च यामहम् ३५
एतस्मिन्नन्तरे काले यन्मया ह्यशुभं कृतम् ।
सर्वं तदुपपद्येथा जह्यां चेद्यदि जीवितम् ३६
नाघातयत्तदा रामः श्रुत्वा तत्परिदेवितम् ।
वानरानब्रवीद्रामो मुच्यतां दूत आगतः ३७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे विंशः सर्गः ॥ २० ॥ [६८

॥ एकविंशः सर्गः ॥

ततः सागरवेलायां दर्भानास्तीर्य राघवः ।
अञ्जलिं प्राङ्मुखः कृत्वा प्रतिशिश्ये महोदधेः १

ततः अङ्गद बोला कि हे सुग्रीव ! यह केवल दूत ही नहीं है वरन् बलका परीक्षक भी ज्ञात होता है ॥ ३१ ॥ इससे यह अच्छा लगता है इसे पकड लीजिये ॥ ३२ ॥ तब सुग्रीवकी आज्ञासे उस राक्षसको वान पकड बांध दिया ॥ ३३ ॥ जब वानरोंने शुकको पीडित किया तो उ श्रीरामको जोरसे पुकारा ॥ ३४ ॥ कि देखिये बलात् मेरे सब पङ्ख व नष्ट कर डाले ॥ ३५ ॥ इससे जितना पाप मैंने किया है वह सब आपको प्राप्त हो ॥ ३६ ॥ उसका ऐसा रोदन सुन रामने कहा कि यह है इसे छोड दो ॥ ३७ ॥

॥ यहाँ २० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः श्री राम सागर तीरपर कुश बिछा पूर्वाभिमुख हो हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बाहुं भुजङ्गभोगाभमुपधायारिसूदनः।
जातरूपमयैश्चैव भूषणैर्भूषितं सदा २
मणिकाञ्चनकेयूरमुक्ताप्रवरभूषणैः।
भुजैः परमनारीणामभिमृष्टमनेकधा ३
चन्दनागुरुभिश्चैव पुरस्तादभिसेवितम्।
बालसूर्यप्रकाशैश्च चन्दनैरुपशोभितम् ४
शयने चोत्तमाङ्गेन सीतायाः शोभितं पुरा।
तक्षकस्येव संभोगं गङ्गाजलनिषेवितम् ५
संयुगे युगसंकाशं शत्रूणां शोकवर्धनम्।
सुहृदां नन्दनं दीर्घं सागरान्तव्यपाश्रयम् ६
अस्यता च पुनः सव्यं ज्याघातविहतत्वचम्।
दक्षिणो दक्षिणं बाहुं महापरिघसंनिभम् ७
गोसहस्रप्रदातारं ह्युपधाय भुजं महत्।
अद्य मे तरणं वाथ मरणं सागरस्य वा ८
इति रामो धृतिं कृत्वा महाबाहुर्महोदधिम्।
अधिशिश्ये च विधिवत्प्रयतोऽत्र स्थितो मुनिः ९

बैठे ॥ १ ॥ और फिर अपनी भुजा शिरके नीचे रख शयन करने लगे ॥ २ ॥ वह भुजा मोतियोंके बडे बडे भूषणोंसे भूषित तथा नारी संसर्गसे बारंबार भीजी हुई ॥ ३ ॥ तथा जिसमें पहिले चंदन अगरु आदि लगाया जाता था जो अरुण चन्दनसे शोभित होती थी ॥ ४ ॥ जो पहले शयनके समय सीताके शिरके नीचे रक्खी जातीथी तक्षकके शरीरके समान लम्बी ॥ ५ ॥ शत्रुओंको शोक बढाने वाली मित्रोंको आनन्दित करनेवाली तटपर फैली हुई ॥ ६ ॥ बांई भुजापर प्रत्यंचाका दाग बनानेवाली महापरिघके समान मोटे ॥ ७ ॥ बाहूको शिरके नीचे रख राम सोने लगे और कहने लगे कि या तो समुद्रको उतरना होगा वा उसका मरण ही होगा ॥ ८ ॥

राम इस तरहकी धारणा कर बिना भोजन किये ही लेटे ॥ ९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तस्य रामस्य सुप्तस्य कुशास्तीर्णे महीतले।
नियमादप्रमत्तस्य निशास्तिस्रोऽभिजग्मतुः १०
स त्रिरात्रोषितस्तत्र न यज्ञो धर्मवत्सलः।
उपासत तदा रामः सागरं सरितां पतिम् ११
न च दर्शयते रूपं मन्दो रामस्य सागरः।
प्रयतेनापि रामेण यथार्हमभिपूजितः १२
समुद्रस्य ततः क्रुद्धो रामो रक्तान्तलोचनः।
समीपस्थमुवाचेदं लक्ष्मणं शुभलक्षणम् १३
अवलेपः समुद्रस्य न दर्शयति यः स्वयम्।
प्रशमश्च क्षमा चैव आर्जवं प्रियवादिता १४
असामर्थ्यफला ह्येते निर्गुणेषु सतां गुणाः।
आत्मप्रशंसिनं दुष्टं धृष्टं विपरिधावकम् १५
सर्वत्रोत्सृष्टदण्डं च लोकः सत्कुरुते नरम्।
न साम्ना शक्यते कीर्तिर्न साम्ना शक्यते यशः १६
प्राप्तुं लक्ष्मण लोकेऽस्मिञ्जयो वा रणमूर्धनि।
अद्य मद्बाणनिर्भिन्नैर्मकरैर्मकरालयम् १७

इस प्रकार पृथ्वीपर लेटे नियमसे रहते रामको तीन रात्रि व्यतीत गईं ॥ १० ॥ इस भांति श्रीरामने समुद्रकी तीन दिनतक उपासना की ॥ ११ ॥ यथार्थ रूपसे रामके पूजा करनेपर भी सागरने उनको दर्शन न दिया ॥ १२ ॥ तब राम बडा क्रोध कर समीपस्थ लक्ष्मणसे बोले ॥ १३ ॥

सागर जो दर्शन नहीं देता यह उसका अहङ्कार है शान्ति क्षमा... वचन ॥१४॥ सज्जनोंके गुण हैं दुर्जनोंके सामने इन गुणोंके करनेसे कर्ता... असामर्थ्य प्रकट होती है जो पुरुष दुष्ट तथा अपना कहनेके लिये इधर उधर दौ... करता ॥ १५ ॥ जहां दण्ड देनेका प्रयोजन नहीं वहां दण्ड देता है अधि... कारी लोग ऐसे राजाका आदर करते हैं हे लक्ष्मण! समझानेसे यश न... मिलता ॥ १६ ॥ आजही बाणोंसे मरी हुई मछलियोंसे जल रुका हु...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

निरुद्धतोयं सौमित्रे प्लवाद्भिः पश्य सर्वतः ।
भोगिनां पश्य भोगानि मया भिन्नानि लक्ष्मण १८
महाभोगानि मत्स्यानां करिणां च करानिह ।
स शङ्खशुक्तिकाजालं समीनमकरं तथा १९
अद्य युद्धेन महता समुद्रं परिशोषये ।
क्षमया हि समायुक्तं मामयं मकरालयः २०
असमर्थं विजानाति धिक्क्षमामीदृशे जने ।
न दर्शयति साम्ना मे सागरो रूपमात्मनः २१
चापमानय सौमित्रे शरांश्चाशीविषोपमान् ।
समुद्रं शोषयिष्यामि पद्भ्यां यान्तु प्लवङ्गमाः २२
अद्याक्षोभ्यमपि क्रुद्धः क्षोभयिष्यामि सागरम् ।
वेलासु कृतमर्यादं सहस्रोर्मिसमाकुलम् २३
निर्मर्यादं करिष्यामि सायकैर्वरुणालयम् ।
महार्णवं क्षोभयिष्ये महादानवसंकुलम् २४

सागर देखो ॥ १७ ॥ वाणोंसे नागों मछलियोंके दीर्घ शरीर तथा जल हाथियोंकी शूडें कटी हुई देखो ॥ १८ ॥

इसी प्रकार मत्स्योंके बडे बडे शरीर और जलगजोंकी सूडें मेरे वाणोंसे भिन्न हुई तू आज देख । शंख और सीपोंके जालको तथा मगरमच्छोंको भी नष्ट होता देख ॥ १९ ॥ समुद्रको आज ही युद्ध कर शोषे लेता हूं यह मुझको क्षमा युक्त देख असमर्थ समझता है ॥ २० ॥ असमर्थ समझनेवाले जनके ऊपर क्षमा करनेको धिक्कार है सामोपचार समुद्र मुझे दर्शन नहीं दे सकता ॥ २१ ॥ सो हे लक्ष्मण! हमारा धनुष व विषधर सर्पोंके समान बाण लाओ हम समुद्रको शोष लेंगे उतर जावेंगे ॥ २२ ॥ क्रोध युक्त हो आज अक्षोभ समुद्रको क्षुभित करेंगे तीरोंका उल्लङ्घन करके कोई न जावे, ऐसा नियम इसने बना रखा है ॥ २३ ॥ बडे बडे दानवोंसे युक्त इस महासागरको मैं आज क्षुब्ध करूंगा । परन्तु अपने बाणोंसे इसे मर्यादाहीन कर देंगे ॥ २४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एवमुक्त्वा धनुष्पाणिः क्रोधविस्फारितेक्षणः ।
बभूव रामो दुर्धर्षो युगान्ताग्निरिव ज्वलन् २५
संपीड्य च धनुर्घोरं कम्पयित्वा शनैर्जगत् ।
मुमोच विशिखानुग्रान्वज्रानिव शतक्रतुः २६
ते ज्वलन्तो महावेगास्तेजसा सायकोत्तमाः ।
प्रविशन्ति समुद्रस्य जलं वित्रस्तपन्नगम् २७
तोयवेगः समुद्रस्य समानमकरो महान् ।
स बभूव महाघोरः समारुतरवस्तथा २८
महोर्मिजालचरितः शङ्खजालसमावृतः ।
सधूमः परिवृत्तोर्मिः सहसासीन्महोदधिः २९
व्यथिताः पन्नगाश्चासन्दीप्तास्या दीप्तलोचनाः ।
दानवाश्च महावीर्याः पातालतलवासिनः ३०
ऊर्मयः सिन्धुराजस्य सनक्रमकरास्तथा ।
विन्ध्यमन्दरसंकाशाः समुत्पेतुः सहस्रशः ३१
आघूर्णिततरङ्गौघः संभ्रान्तोरगराक्षसः ।
उद्वर्तितमहाग्राहः सघोषो वरुणालयः ३२

यह कह राम धनुष हाथमें ले रोषसे नेत्र फैला युगान्ताग्निके समा दुर्द्धर्ष होगये ॥ २५ ॥ महाघोर धनुष बलसे खींच संसारको कंपाता हु इन्द्रके समान बडे उग्रबाण छोडे ॥ २६ ॥ वे रामके ऊत्तम बाण बडे वेग चले और सर्पोंसे युक्त सागरके जलमें घुस गये ॥ २७ ॥ मगरादि जी सहित सागरका बडा वेग प्रचण्ड पवनके लगनेसे भयंकर शब्द क लगा ॥ २८ ॥ बडी बडी लहरोंके समूहशंखोंके सहित समुद्रसे धुआं उ लगा ॥ २९ ॥ सागरमें रहनेवाले सब सर्प व्याकुल होगये उनके मुखों विषानिकलने लगा तथा पातालस्थ दानव भी व्यथित हुए ॥ ३० ॥ साग हजारों लहरें ऊंची उठने लगीं ॥ ३१ ॥

बडी तरंगोंके उठने व गिरने नाग राक्षसादिकोंके सम्भ्रान्त होने त बडे बडे घडियालोंके छलनेसे सागरमें घोर शब्द होने लगा ॥ ३२ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ततस्तु तं राघवमुग्रवेगं प्रकर्षमाणं धनुरप्रमेयम्।
सौमित्रिरुत्पत्य विनिःश्वसन्तं मामेति चोक्त्वा धनुरालम्बे ३३
एतद्विनापि ह्युदधेस्तवाद्य संपत्स्यते वीरतमस्य कार्यम्।
भवद्विधाः क्रोधवशं न यान्ति दीर्घं भवान्पश्यतु साधुवृत्तम् ३४
अन्तर्हितैश्चापि तथान्तरिक्षे ब्रह्मर्षिभिश्चैव सुरर्षिभिश्च।
शब्दः कृतः कष्टमिति ब्रुवाद्भिर्मामेति चोक्त्वा महता स्वरेण ३५
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे एकविंशः सर्गः ॥ २१ ॥ [७२३]

॥ द्वाविंशः सर्गः ॥

अथोवाच रघुश्रेष्ठः सागरं दारुणं वचः।
अद्याहं शोषयिष्यामि सपातालं महार्णवम् १
शरनिर्दग्धतोयस्य परिशुष्कस्य सागर।
मया निहतसत्त्वस्य पांसुरुत्पद्यते महान् २
मत्कार्मुकनिसृष्टेन शरवर्षेण सागर।
परं तीरं गमिष्यन्ति पद्भिरेव प्लवङ्गमाः ३
विचिन्वन्नाभिजानासि पौरुषं नापि विक्रमम्।
दानवालय संतापं मत्तो नाम गमिष्यसि ४

लक्ष्मणने बहुत निकट आकर उग्रतेजस्वी शीघ्र सांसें लेते हुए फिर धनुषको खींचते हुए रामसे ऐसा न करिये यह कह धनुष पकड लिया ॥ ३३ ॥ हे वीरतम समुद्रका यह विनाश बिना किये ही आपका कार्य सिद्ध हो जावेगा आप सरीखे पुरुष क्रोधके वशीभूत नहीं होते ॥ ३४ ॥ अन्तरिक्षमें गुप्त रूपसे स्थित एवं ' यह क्या ' अनर्थ है ? ऐसा न कर, ऐसा न कर ! ऐसा उच्च स्वरसे बोलते हुए ब्रह्मर्षि व देवर्षियोंमें हाहाकार मच गया ॥ ३५ ॥

॥ यहाँ २१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रघुश्रेष्ठ राम सागरसे अति कठोर वचन बोले कि आज मैं पातालसहित बडे समुद्रको शोष लूंगा ॥ १ ॥ हे सागर ! मेरे बाणोंसे जलकर जब तेरा जल सूख जावेगा तो तुम में धूली उडने लगेगी ॥ २ ॥ हे सागर ! मेरे धनुषसे निकली बाण वृष्टिसे सब वानर पैदल ही उसपार पहुंचेंगे ॥ ३ ॥ तुम मेरा पौरुष नहीं जानते इससे हे दानवालय ! दुःखको प्राप्त हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ब्राह्मेणास्त्रेण संयोज्य ब्रह्मदण्डनिभं शरम् ।
संयोज्य धनुषि श्रेष्ठे विचकर्ष महाबलः ५
तस्मिन्विकृष्टे सहसा राघवेण शरासने ।
रोदसी संपफालेव पर्वताश्च चकम्पिरे ६
तमश्च लोकमाववे दिशश्च न चकाशिरे ।
प्रतिचक्षुभिरे चाशु सरांसि सरितस्तदा ७
तिर्यक्क सह नक्षत्रैः संगतौ चन्द्रभास्करौ ।
भास्करांशुभिरादीप्तं तमसा च समावृतम् ८
प्रचकाशे तदाकाशमुल्काशतविदीपितम् ।
अन्तरिक्षाच्च निर्घाता निर्जग्मुरतुलस्वनाः ९
वपुःप्रकर्षेण ववुर्दिव्यमारुतपङ्क्तयः ।
बभञ्ज च तदा वृक्षाञ्जलदानुद्वहन्मुहुः १०
आरुजंश्चैव शैलाग्राञ्शिखराणि बभञ्ज च ।
दिवि च स्म महावेगाः संहताः समहास्वनाः ११
मुमुचुर्वैद्युतानग्नींस्ते महाशनयस्तदा ।
यानि भूतानि दृश्यानि चुक्रुशुश्चाशनैः समम् १२

ओगे ॥ ४ ॥ इतना कह बाणोंको ब्रह्मास्त्र चलानेवाले मंत्रसे संयुक्त धनुषपर चढा ॥५॥ रामने धनुष खेंचा तो पृथ्वी व अन्तरिक्ष क्षुभित हो पर्वत तक कांप उठे ॥ ६ ॥ सब लोकोंमें अन्धकार छागया इससे दिशा अन्धकारमय होगई नदी व सरोवर सब उस समय क्षुब्ध हो गयी ॥ ७ ॥ नक्षत्र सहित सूर्य चन्द्र टेढे चलने लगे आकाश अन्धकारसे युक्त होगया ॥

आकाश उल्कापातोंसे प्रकाशित होगया अन्तरिक्षमें वज्रपात लगे ॥ ९ ॥ प्रचण्ड पवन चलने लगी जिससे बादल इधरसे उधर बार उडने लगे ॥ १० ॥ बडे बडे पर्वतोंसे टक्कर मार मार वायु शृङ्गोंको लगी ॥ ११ ॥ आकाशसे गिरे वज्रोंसे अग्नि निकलने लगी उस दृश्यको सब प्राणी जो दिखाई देवे थे वज्रके शब्दके साथ साथ चिंघाड उठे ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अदृश्यानि च भूतानि मुमुचुर्भैरवस्वनम्।
शिशिरे चाभिभूतानि संत्रस्तान्युद्विजन्ति च १३
संप्रविव्यथिरे चापि न च पस्पन्दिरे भयात्।
सह भूतैः सतोयोर्मिः सनागः सहराक्षसः १४
सहसा भूत्ततो वेगाद्भीमवेगो महोदधिः।
योजनं व्यतिचक्राम वेलामन्यत्र संप्लवात् १५
तं तथा समतिक्रान्तं नातिचक्राम राघव।
तमुद्धतममित्रघ्नो रामो नदनदीपतिम् १६
ततो मध्यात्समुद्रस्य सागरः स्वयमुत्थितः।
उदयाद्रिमहाशैलान्मेरोरिव दिवाकरः १७
पन्नगैः सह दीप्तास्यैः समुद्रः प्रत्यदृश्यत।
स्निग्धवैदूर्यसंकाशो जाम्बूनदविभूषणः १८
रक्तमाल्याम्बरधरः पद्मपत्रनिभेक्षणः।
सर्वपुष्पमयीं दिव्यां शिरसा धारयन्स्रजम् १९
जातरूपमयैश्चैव तपनीयविभूषणैः।
आत्मजानां च रत्नानां भूषितो भूषणोत्तमैः २०

जो प्राणी दिखाई भी न देते थे वे भी सब भयंकर शब्द करने लगे कुछ प्राणी अत्यन्त संत्रस्त हो गये; कुछ उद्विग्न और कुछ मोहसे ग्रस्त हो भूमिपर गिर गये ॥ १३ ॥ अति व्यथित हुए तब सब प्राणियों अपनी लहरों तथा सर्प और राक्षसों सहित ॥ १४ ॥ समुद्र रामके बाणके वेगसे महावेगवान होगया और किनारेसे चार कोस आगतक चला गया ॥ १५ ॥

. पर उस उफलाते हुए समुद्रसे शत्रुनाशक राम कुछ भी न हटे ॥ १६ ॥ ब सागरके बीचमेंसे स्वयं समुद्र उदयाचलसे सूर्यके समान प्रकट था ॥ १७ ॥ वह वैदूर्यमणिके समान प्रकाशमान था और सब भूषण नेहीके धारण किये था ॥ १८ ॥ उसके नेत्र कमलदलके तुल्य थे वह सब रहके पुष्पोंसे बनी माला शिरमें धारण कर रहा था ॥ १९ ॥ सब भूषण वर्णके थे उन भूषणोंमें समुद्रसे ही उत्पन्न मणि जडे थे ॥ २० ॥ उस समय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धातुभिर्मण्डितः शैलो विविधैर्हिमवानिव ।
आघूर्णिततरङ्गौघः कालिकानिलसंकुलः २१
गङ्गासिन्धुप्रधानाभिरापगाभिः समावृतः ।
सागरः समुपक्रम्य पूर्वमामन्त्र्य वीर्यवान् ॥
अब्रवीत्प्राञ्जलिर्वाक्यं राघवं शरपाणिनम् २२
पृथिवी वायुराकाशमापो ज्योतिश्च राघव ।
स्वभावे सौम्य तिष्ठन्ति शाश्वतं मार्गमाश्रिताः २३
तत्स्वभावो ममाप्येष यदगाधोहमप्लवः ।
विकारस्तु भवेद्गाध एतत्ते प्रवदाम्यहम् २४
न कामान्न च लोभाद्वा न भयात्पार्थिवात्मज ।
रागान्नक्राकुलजलं स्तम्भयेयं कथंचन २५
विधास्ये येन गन्तासि विषहिष्येप्यहं तथा २६
न ग्राहा विधमिष्यन्ति यावत्सेना तरिष्यति ।
हरीणां तरणे राम करिष्यामि यथा स्थलम् २७
तमब्रवीत्तदा रामः शृणु मे वरुणालय ।

हिमालयके समान समुद्र शोभित हुआ ॥ २१ ॥ गंगा सिंधु आदि नदि चारों ओरसे घिरा समुद्र रामके निकट आ हाथ जोड बोला ॥ २२ ॥ राम! पृथ्वी वायु आकाश जल अग्नि ये सब अपने अपने स्वभावमें स्थि उसके प्रतिकूल कोई नहीं चलते ॥ २३ ॥ अगाध रहना मेरा स्वभा यदि मैं थाहवाला होजाऊं तो मुझमें यह विकार होजावे ॥ २४ ॥ हे काम लोभ भय तथा अनुरागसे मैं अपना जल मगर आदि जल जी भरे होनेके कारण कैसे रोक सकूं ॥ २५ ॥ मैं वही उपाय करूंगा जि आप पार उतर जायेंगे ॥ २६ ॥

हे राम वानरोंके उतरनेके लिये उत्तम स्थान कर दूंगा और सेनाको कर पार जानेतक मकर प्रभृति जलचर प्राणी वानरोंपर प्रहार करेगा ॥ २७ ॥ यह सुन रामने कहा कि हे सागर यह सुफल बा

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अमोघोऽयं महाबाणः कस्मिन्देशे निपात्यताम् २८
रामस्य वचनं श्रुत्वा तं च दृष्ट्वा महाशरम्।
महोदधिर्महातेजा राघवं वाक्यमब्रवीत् २९
उत्तरेणावकाशोऽस्ति कश्चित्पुण्यतरो मम।
द्रुमकुल्य इति ख्यातो लोके ख्यातो यथा भवान् ३०
उग्रदर्शनकर्माणो बहवस्तत्र दस्यवः।
आभीरप्रमुखाः पापाः पिबन्ति सलिलं मम ३१
तैर्न तत्स्पर्शनं पापं सहेयं पापकर्मभिः।
अमोघः क्रियतां राम अयं तत्र शरोत्तमः ३२
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सागरस्य महात्मनः।
मुमोच तं शरं दीप्तं परं सागरदर्शनात् ३३
तेन तन्मरुकान्तारं पृथिव्यां किल विश्रुतम्।
निपातितः शरो यत्र वज्राशनिसमप्रभः ३४
ननाद च तदा तत्र वसुधा शल्यपीडिता।
तस्माद्व्रणमुखात्तोयमुत्पपात रसातलात् ३५
स बभूव तदा कूपो व्रण इत्येव विश्रुतः।
सततं चोत्थितं तोयं समुद्रस्येव दृश्यते ३६

चढाया गया वह किस स्थानपर छोडूं ॥ २८ ॥ यह सुन और उसको देख सागर रामसे बोला ॥ २९ ॥ हे राम आपके समान प्रसिद्ध उत्तर देशमें एक द्रुम कुल्यनामका मेरा स्थान है ॥ ३० ॥ वहां बडे पापी अभीरादि चोर रहते हैं वे मेरा नीर पीते हैं ॥ ३१ ॥ पर मैं उनका स्पर्श नहीं सह सकता इससे यह अपना बाण वहीं छोडो ॥ ३२ ॥ सागरके वचन सुन उसके बताये स्थानपर रामने वह बाण छोड दिया ॥ ३३ ॥ वह बाण रामने जहां छोडा वह देश पृथ्वीमें मरुकान्तार कहलाने लगा ॥ ३४ ॥ बाणसे पीडित वहांकी भूमिमें बडा शब्द हुआ और रसातलसे बडा जल निकला ॥ ३५ ॥ वह स्थान व्रण कूपके नामसे विख्यात हुआ ॥ ३६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अवदारणशब्दश्च दारुणः समपद्यत।
तस्मात्तद्व्राणपातेन अपः कुक्षिष्वशोषयत् ॥
विख्यातं त्रिषु लोकेषु मरुकान्तारमेव च ३७
शोषयित्वा तु तं कुक्षिं रामो दशरथात्मजः।
वरं तस्मै ददौ विद्वान्मरवेमरविक्रमः ३८
पशव्यश्चाल्परोगश्च फलमूलरसायुतः।
बहुस्नेहो बहुक्षीरः सुगन्धिर्विविधौषधिः ३९
एवमेतैश्च संयुक्तो बहुभिः संयुतो मरुः।
रामस्य वरदानाच्च शिवः पन्था बभूव ह ४०
तस्मिन्दग्धे तदा कुक्षौ समुद्रः सरितां पतिः।
राघवं सर्वशास्त्रज्ञमिदं वचनमब्रवीत् ४१
अयं सौम्य नलो नाम तनयो विश्वकर्मणः।
पित्रा दत्तवरः श्रीमान्प्रीतिमान्विश्वकर्मणः ४२
एष सेतुं महोत्साहः करोतु मयि वानरः।
तमहं धारयिष्यामि यथा ह्येष पिता तथा ४३
एवमुक्त्वोदधिर्नष्टः समुत्थाय नलस्ततः।

बाण लगनेसे वहां बडा भयङ्कर शब्द हुआ और जो जल वे चोर... थे रामने उसी बाणसे सोख लिया वह स्थान मरुकान्तार नामसे विख्... होगया ॥ ३७ ॥ रामने उस मरुकान्तार देशको वरदान दिया कि उ... देशमें घास बहुत हो तथा रोग यहां कम हो फल मूल तेल व दुग्ध ... हों तथा औषधियां हों ॥ ३९ ॥ ये तथा अन्य बहुत पदार्थ इस देशमें... रामके वरदानसे वह देश कल्याणयुक्त होगया ॥ ४० ॥ उस देशके ... पदार्थ जल जानेपर रामसे सागर बोला ॥ ४१ ॥

हे सौम्य ! यह नल बडे श्रीमान व प्रीतिमान हैं इनको विश्वक... वरदान दिया है ॥ ४२ ॥ बडे उत्साहको धारण करनेवाले ये नल ना... वानर मेरे ऊपर सेतु बनावें, ये अपने पिताके समान कुशल हैं इनका ब... सेतु मैं धारण करूंगा ॥ ४३ ॥ यह कह समुद्र अन्तर्हित होगया तब...

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अब्रवीद्वानरश्रेष्ठो वाक्यं रामं महाबलम् ४४
अहं सेतुं करिष्यामि विस्तीर्णे मकरालये ।
पितुः सामर्थ्यमासाद्य तत्त्वमाह महोदधिः ४५
दण्ड एव परो लोके पुरुषस्येति मे मतिः ।
धिक्क्षमामकृतज्ञेषु सान्त्वं दानमथापि वा ४६
अयं हि सागरो भीमः सेतुकर्मदिदृक्षया ।
ददौ दण्डभयाद्गाधं राघवाय महोदधिः ४७
मम मातुर्वरो दत्तो मन्दरे विश्वकर्मणा ।
मया तु सदृशः पुत्रस्तव देवि भविष्यति ४८
औरसस्तस्य पुत्रोऽहं सदृशो विश्वकर्मणा ।
न चाप्यहमनुक्तो वः प्रब्रूयामात्मनो गुणान् ४९
समर्थश्चाप्यहं सेतुं कर्तुं वै वरुणालये ।
तस्मादद्यैव बध्नन्तु सेतुं वानरपुङ्गवाः ५०
ततो निसृष्टा रामेण सर्वतो हरिपुङ्गवाः ।
उत्पेततुर्महारण्यं हृष्टाः शतसहस्रशः ५१
ते नगान्नगसंकाशाः शाखामृगगणर्षभाः ।

उठ रामसे बोला ॥ ४४ ॥ कि समुद्र सत्य कहता है मैं इस बडे चौडे सागरमें पुल बाधूंगा ॥ ४५ ॥ कृतघ्न मनुष्यको दण्ड देना ही उचित है उसको समझाना तथा प्रसन्न करना ठीक नहीं ॥ ४६ ॥ इस सागरने रामके समझानेपर ध्यान न दिया, पर दण्ड देनेको उद्यत होनेपर पुल बंधवाकर मार्ग दिया ॥ ४७ ॥

विश्वकर्माने मेरी माताको वर दिया था कि तेरे मेरे ही समान पुत्र गा ॥ ४८ ॥ सो मैं विश्वकर्माका औरसपुत्र हूं पर विना पूंछे मैं अपने ण अपने मुखसे क्यों कहूं ॥ ४९ ॥ मैं अवश्य समुद्रमें पुल बांध सकता सो हे वानरों ! आज ही पुल बांधो ॥ ५० ॥ तब रामकी आज्ञासे संख्य वानर सब ओरको दौडें ॥ ५१ ॥ और पर्वतोंपरसे बडे बडे पेड

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बभञ्जुः पादपांस्तत्र प्रचकर्षुश्च सागरम् ५२
ते सालैश्चाश्वकर्णैश्च धवैर्वंशैश्च वानराः ।
कुटजैरर्जुनैस्तालैस्तिलकैस्तिनिशैरपि ५३
बिल्वकैः सप्तपर्णैश्च कर्णिकारैश्च पुष्पितैः ।
चूतैश्चाशोकवृक्षैश्च सागरं समपूरयन् ५४
समूलांश्च विमूलांश्च पादपान्हरिसत्तमाः ।
इन्द्रकेतूनिवोद्यम्य प्रजह्रुर्वानरास्तरून् ५५
तालान्दाडिमगुल्मांश्च नारिकेलविभीतकान् ।
करीरान्बकुलान्निम्बान्समाजह्रुरितस्ततः ५६
हस्तिमात्रान्महाकायाः पाषाणांश्च महाबलाः ।
पर्वतांश्च समुत्पाट्य यन्त्रैः परिवहन्ति च ५७
प्रक्षिप्यमाणैरचलैः सहसा जलमुद्धृतम् ।
समुत्ससर्प चाकाशमवासर्पत्ततः पुनः ५८
समुद्रं क्षोभयामासुर्निपतन्तः समन्ततः ।
सूत्राण्यन्ते प्रगृह्णन्ति ह्यायतं शतयोजनम् ५९
नलश्चक्रे महासेतुं मध्ये नदनदीपतेः ।
स तदा क्रियते सेतुर्वानरैर्घोरकर्मभिः ६०

उखाड उखाड सागरके किनारेपर खींच लाये ॥ ५२ ॥ साखू, अश्वक
धवई, बांस अर्जुन, तिलक, तिनिश ॥ ५३ ॥ बेल, सप्तपर्णी, आम्र अ
पेडोंसे सागरको पाट दिया ॥ ५४ ॥

कोई जड सहित ही वृक्ष उखाड लाये कोई ऊपरहीसे तोड लाये इ
ध्वजाके समान ऊँचे करकरके लाने लगे ॥ ५५ ॥ ताल, अनार, नारि
करील, बकुल आदि पेड चारों ओरसे तोड लाये ॥ ५६ ॥ हाथियोंके तु
पाषाण भी उठा लाये कलोंके सहारेसे बहुतसे पहाड भी उठाकर
लाये ॥ ५७ ॥ बडे जोरसे पहाडोंके सागरमें गिरनेसे उसका जल
ऊंचा उठ नीचेको गिरा ॥ ५८ ॥ वानरोंके समुद्रमें कूदनेसे वह चलाय
होगया वानरोंने १०० योजनका लम्बा सूत सीधा कर पकडा ॥ ५९ ॥

नल सागर मध्यमें पुल बनाने लगे ॥ ६० ॥ कोई दण्ड धारण

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दण्डानन्ये प्रगृह्णन्ति विचिन्वन्ति तथापरे ।
वानरैः शतशस्तत्र रामस्याज्ञापुरःसरैः　६१
मेघाभैः पर्वताभैश्च तृणैः काष्ठैर्बबन्धिरे ।
पुष्पिताग्रैश्च तरुभिः सेतुं बध्नन्ति वानराः　६२
पाषाणांश्च गिरिप्रख्यान्गिरीणां शिखराणि च ।
दृश्यन्ते परिधावन्तो गृह्य दानवसंनिभाः　६३
शिलानां क्षिप्यमाणानां शैलानां तत्र पात्यताम् ।
बभूव तुमुलः शब्दस्तदा तस्मिन्महोदधौ　६४
कृतानि प्रथमेनाह्ना योजनानि चतुर्दश ।
प्रहृष्टैर्गजसंकाशैस्त्वरमाणैः प्लवङ्गमैः　६५
द्वितीयेन तथैवाह्ना योजनानि तु विंशतिः ।
कृतानि प्लवगैस्तूर्णं भीमकायैर्महाबलैः　६६
अह्ना तृतीयेन तथा योजनानि तु सागरे ।
त्वरमाणैर्महाकायैरेकविंशतिरेव च　६७
चतुर्थेन तथा चाह्ना द्वाविंशतिरथापि वा ।
योजनानि महावेगैः कृतानि त्वरितैस्ततः　६८

कोई अन्य वस्तु ढूंढते एवं रामकी आज्ञाके अनुवर्ती सैकडों वानर ॥ ६१ ॥ काष्ठ पर्वत पत्थरोंसे सब वानरोंने सेतु बांधने लगे ॥ ६२ ॥ पत्थर और पर्वतोंके कँगूरे लिये हुए वानर लोग दानवोंके समान प्रतीत होते थे ॥ ६३ ॥ पर्वत तथा पत्थरोंके गिरनेसे समुद्रमें भयंकर शब्द होने लगा ॥ ६४ ॥ हर्षित वानरोंने पहिले दिन चौदह योजन सेतु बनाया ॥ ६५ ॥ महाबलवान और बडे शरीरवाले वानरोंने दूसरे दिन २० योजन पुल बनाया ॥ ६६ ॥ तीसरे दिन २१ योजन और ॥ ६७ ॥ चौथे दिन वानरोंने २२ योजन और अधिक बनाया ॥ ६८ ॥ पांचवें दिन २३ योजन पुल बनाकर समुद्रके उस· पार तक पूरा कर दिया ॥ ६९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पञ्चमेन तथा चाह्ना प्लवगैः क्षिप्रकारिभिः।
योजनानि त्रयोविंशत्सुवेलमधिकृत्य वै ६९
स वानरवरः श्रीमान्विश्वकर्मात्मजो बली।
बबन्ध सागरे सेतुं यथा चास्य पिता तथा ७०
स नलेन कृतः सेतुः सागरे मकरालये।
शुशुभे सुभगः श्रीमान्स्वातीपथ इवाम्बरे ७१
ततो देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः।
आगम्य गगने तस्थुर्द्रष्टुकामास्तदद्भुतम् ७२
दशयोजनविस्तीर्णं शतयोजनमायतम्।
ददृशुर्देवगन्धर्वा नलसेतुं सुदुष्करम् ७३
आप्लवन्तः प्लवन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवङ्गमाः।
तमचिन्त्यमसह्यं च ह्यद्भुतं लोमहर्षणम् ७४
ददृशुः सर्वभूतानि सागरे सेतुबन्धनम्।
तानि कोटिसहस्राणि वानराणां महौजसाम् ७५
बध्नन्तः सागरे सेतुं जग्मुः पारं महोदधेः।
विशालः सुकृतः श्रीमान्सुभूमिः सुसमाहितः ७६
अशोभत महान्सेतुः सीमन्त इव सागरे।
ततः पारे समुद्रस्य गदापाणिर्विभीषणः ७७

इस प्रकार नलने समुद्रमें पुल बांध दिया जैसा उसका पिता है वैसे ज वह भी है ॥ ७० ॥ सागरमें नलका बनाया सेतु गगन स्वातिपथके समा शोभा देने लगा ॥ ७१ ॥ उस सेतुके देखनेको देवता गन्धर्व ऋषि आक आकाशमें स्थित हुए ॥ ७२ ॥ दशयोजन चौडे तथा सौ योजन लम्बा सेतुको देखके कहने लगे कि नलने बडा दुष्कर कर्म किया ॥ ७३ ॥

समुद्रमें अद्भुत अचिंत्य पुल कूदते तथा गर्जते हुए वानरों व ॥ ७४ ॥ अन्य प्राणियोंने भी देखा है महाबली करोडों सहस्रों वानर ॥ ७५ ॥ सेतु बांधते हुए सागरके उस पार चले गये अति विशाल सुन्दर समान भूमि युक्त ॥ ७६ ॥ सेतु स्त्रियोंके शिर बंधे चिकने बालोंकेसी शोभा देने लगी समुद्रके किनारे उस पार विभीषण गदा ले ॥ ७७ ॥ शत्रुओंको भय देने

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

परेषामभियानार्थमतिष्ठत्सचिवैः सह।
सुग्रीवस्तु ततः प्राह रामं सत्यपराक्रमम् ७८
हनूमन्तं त्वमारोह अङ्गदं त्वथ लक्ष्मणः।
अयं हि विपुलो वीर सागरो मकरालयः ७९
वैहायसौ युवामेतौ वानरौ धारयिष्यतः।
अग्रतस्तस्य सैन्यस्य श्रीमान्रामः सलक्ष्मणः ८०
जगाम धन्वी धर्मात्मा सुग्रीवेण समन्वितः।
अन्ये मध्येन गच्छन्ति पार्श्वतोऽन्ये प्लवङ्गमाः ८१
सलिलं प्रपतन्त्यन्ये मार्गमन्ये प्रपेदिरे।
केचिद्वैहायसगताः सुपर्णा इव पुप्लुवुः ८२
घोषेण महता घोषं सागरस्य समुच्छ्रितम्।
भीममन्तर्दधे भीमा तरन्ती हरिवाहिनी ८३
वानराणां हि सा तीर्णा वाहिनी नलसेतुना।
तीरे निविविशे राज्ञा बहुमूलफलोदके ८४
तदद्भुतं राघवकर्म दुष्करं समीक्ष्य देवाः सह सिद्धचारणैः।

लिये जाकर खडा हुआ तब सुग्रीव रामसे बोला॥ ७८॥ कि आप हनुमानकी कमरपर व लक्ष्मण अङ्गदके ऊपर सवार हों क्योंकि यह समुद्र बडा भारी है॥ ७९॥ वे आप दोनों भाइयोंको लेकर गगन मार्गसे ही चले जावेंगे तब राम व लक्ष्मण॥ ८०॥ हनुमान् व अङ्गदके ऊपर चढ तथा उन्हींके संग सुग्रीव भी आकाश मार्गसे सेनाके आगे चले॥ ८१॥ कोई जलमें तैरते हुए कोई सेतुके ऊपर होकर तथा कोई गरुडके समान गगन मार्गसे चले॥ ८२॥

वानरोंके नादसे सागरमें बडा शब्द हुआ जिससे समुद्र उतरती हुई बडी वानरोंकी सेना रुक गई॥ ८३॥ नलके बनाये हुए सेतु द्वारा सब वानरोंकी सेना उतर गई और दक्षिण तीरपर रामके संग पडी॥ ८४॥ राघवके उस दुष्कर एवं अद्भुत कर्मको देखकर सिद्ध, चारण एवं महर्षिगणोंके साथ वर्तमान देव एकदम उसके समीप आये और अतिपवित्र

CC-0. RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उपेत्य रामं सहसा महर्षिभिस्तमभ्यषिञ्चन्सुशुभैर्जलैः पृथक् ८
जयस्व शत्रूनरदेव मेदिनीं ससागरां पालय शाश्वतीः समाः।
इतीव रामं नरदेवसत्कृतं शुभैर्वचोभिर्विविधैरपूजयन् ८

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे द्वाविंशः सर्गः ॥२२॥[८०

॥ त्रयोविंशः सर्गः ॥

निमित्तानि निमित्तज्ञो दृष्ट्वा लक्ष्मणपूर्वजः।
सौमित्रिं संपरिष्वज्य इदं वचनमब्रवीत् १
परिगृह्योदकं शीतं वनानि फलवन्ति च।
बलौघं संविभज्येमं व्यूह्य तिष्ठेम लक्ष्मण २
लोकक्षयकरं भीमं भयं पश्याम्युपस्थितम्।
प्रवर्हणं प्रवीराणामृक्षवानररक्षसाम् ३
वाताश्च कलुषा वान्ति कम्पते च वसुन्धरा।
पर्वताग्राणि वेपन्ते पतन्ति च महीरुहाः ४
मेघाः क्रव्यादसंकाशाः परुषाः परुषस्वनाः।
क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ति मिश्रं शोणितबिन्दुभिः ५

जलोंके योगसे उन्होंने पृथक् पृथक् रूपेण रामका अभिषेक किया ॥ ८५
इतना ही नहीं अपितु 'हे प्रजाधिपते, तेरी जय हो, समुद्रवलयाङ्कि
पृथ्वीका तू चिरकालतक पालन कर' ऐसे अनेक आशीर्वाद दिये
देव, मानवोंके सत्कार योग्य उस रामकी प्रशंसा की ॥ ८६ ॥

॥ यहाँ २२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

राम बहुतसे खराब शकुन देख लक्ष्मणको आलिङ्गन कर बोले ॥ १
जहां अच्छा जल व फल युक्त वन हो वहां व्यूह बना सेना सहित प
डालो भयङ्कर भय निकट दिखाई देता है वानर और राक्षसोंका सं
होना ही चाहता है ॥ २-३ ॥ क्योंकि पवन मलिन चलती है पृ
कांपती है, पर्वत कांपते हैं, वृक्ष टूटटूट गिर रहे हैं ॥ ४ ॥ मांस
जीवोंके रंगके बादल बडे कठोर शब्द कर रक्त मिश्रित जलकी वर्षा

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रक्तचन्दनसंकाशा संध्या परमदारुणा।
ज्वलतः प्रपतत्येतदादित्यादग्निमण्डलम् ६
दीना दीनस्वराः क्रूराः सर्वतो मृगपक्षिणः।
प्रत्यादित्यं विनर्दन्ति जनयन्तो महद्भयम् ७
रजन्यामप्रकाशस्तु संतापयति चन्द्रमाः।
कृष्णरक्तांशुपर्यन्तो लोकक्षय इवोदितः ८
ह्रस्वो रूक्षोऽप्रशस्तश्च परिवेषस्तु लोहितः।
आदित्ये विमले नीलं लक्ष्म लक्ष्मण दृश्यते ९
रजसा महता चापि नक्षत्राणि हतानि च।
युगान्तमिव लोकानां पश्य शंसन्ति लक्ष्मण १०
काकाः श्येनास्तथा नीचा गृध्राः परिपतन्ति च।
शिवाश्चाप्यशुभान्नादान्नदन्ति सुमहाभयान् ११
शैलैः शूलैश्च खड्गैश्च विमुक्तैः कपिराक्षसैः।
भविष्यत्यावृता भूमिर्मांसशोणितकर्दमा १२
क्षिप्रमद्यैव दुर्धर्षां पुरीं रावणपालिताम्।
अभियाम जवेनैव सर्वैर्हरिभिरावृताः १३

है॥ ५॥ सन्ध्या लाल होनेसे भयंकर होगई है, सूर्यसे आग निकलती है॥ ६॥

मृग पक्षिगण दुःखित हो रोदन करते हैं॥ ७॥ रात्रिमें चन्द्रमाका प्रकाश नहीं होता है उसके सब किरण काले लाल होगये हैं॥ ८॥ हे लक्ष्मण! सूर्यमें छोटा रूखा लाल घेरा बन गया सूर्यमें काला चिन्ह दिखाई पडता है॥ ९॥ नक्षत्र बडी धूलि उडनेसे छिप गये हैं॥ १०॥ कौवा बाज तथा नीच गीध अकस्मात् घोंसलासे घिर पडते हैं, गीदडियां अशुभ शब्द करती हैं॥ ११॥

इन सब निमित्तोंसे यही ज्ञात होता है कि वानरों और राक्षसोंके हाथोंसे छूटे हुए शूल व खड्गोंसे तथा मांस रक्तकी कीचडसे यह भूमि भर जायगी॥ १२॥ सो शीघ्र ही लङ्काके सन्मुख सब वानरोंको ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इत्येवमुक्त्वा धन्वी स रामः सङ्ग्रामधर्षणः।
प्रतस्थे पुरतो रामो लङ्कामभिमुखो विभुः १४
सविभीषणसुग्रीवाः सर्वे ते वानरर्षभाः।
प्रतस्थिरे विनर्दन्तो धृतानां द्विषतां वधे १५
राघवस्य प्रियार्थं तु सुतरां वीर्यचालिनाम्।
हरीणां कर्मचेष्टाभिस्तुतोष रघुनन्दनः १६

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे त्रयोविंशः सर्ग.॥२३॥[८२

॥ चतुर्विंशः सर्गः ॥

सा वीरसमिती राज्ञा विरराज व्यवस्थिता।
शशिना शुभनक्षत्रा पौर्णमासीव शारदी १
प्रचचाल च वेगेन त्रस्ता चैव वसुन्धरा।
पीड्यमाना बलौघेन तेन सागरवर्चसा २
ततः शुश्रुवुराकृष्टं लङ्कायां काननौकसः।
भेरीमृदङ्गसंघुष्टं तुमुलं लोमहर्षणम् ३
बभूवुस्तेन घोषेण संहृष्टा हरियूथपाः।
अमृष्यमाणास्तद्घोषं विनेदुर्घोषवत्तरम् ४
राक्षसास्तत्प्लवङ्गानां शुश्रुवुस्तेऽपि गर्जितम्।

चलना चाहिये ॥ १३ ॥ ऐसा कह धनुष हाथमें ले श्रीराम लङ्काकी ओर सबसे आगे चले ॥ १४ ॥ विभीषण सुग्रीव सहित सब वानर गर्जते हुए चले ॥ १५ ॥ रामके प्रियके निमित्त निरन्तर पराक्रम करनेवाले वानरोंके कर्मोंसे राम बहुत प्रसन्न हुए ॥ १६ ॥

॥ यहाँ २३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

सुग्रीवकी स्थापित वीर समिति शरद्ऋतुके पूर्ण चन्द्रके समान शोभा देने लगी ॥ १ ॥ सागरवत् प्रकाशित सैन्य समूहसे पीड्यमान हो पृथ्वी चल उठी ॥ २ ॥ उस समय वानरोंको लङ्कामें बजते हुए बाजोंका रोमहर्षण शब्द सुनाई देने लगा ॥ ३ ॥ उस शब्दको सुन वानर बहुत प्रसन्न हुए और गर्जन करने लगे ॥ ४ ॥ राक्षसोंने भी गर्जते हुए वानरोंके

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नर्दतामिव दृप्तानां मेघानामवरे स्वनम् ५
दृष्ट्वा दाशरथिर्लङ्कां चित्रध्वजपताकिनीम्।
जगाम मनसा सीतां दूयमानेन चेतसा ६
अत्र सा मृगशावाक्षी रावणेनोपरुध्यते।
अभिभूता ग्रहेणेव लोहिताङ्गेन रोहिणी ७
दीर्घमुष्णं च निःश्वस्य समुद्वीक्ष्य च लक्ष्मणम्।
उवाच वचनं वीरस्तत्कालहितमात्मनः ८
आलिखन्तीमिवाकाशमुत्थितां पश्य लक्ष्मण।
मनसेव कृतां लङ्कां नगाग्रे विश्वकर्मणा ९
विमानैर्बहुभिर्लङ्का संकीर्णा रचिता पुरा।
विष्णोः पदमिवाकाशं छादितं पाण्डुभिर्घनैः १०
पुष्पितैः शोभिता लङ्का वनैश्चित्ररथोपमैः।
नानापतगसंघुष्टफलपुष्पोपगैः शुभैः ११
पश्य मत्तविहंगानि प्रलीनभ्रमराणि च।
कोकिलाकुलखण्डानि दोधवीति शिवोऽनिलः १२
इति दाशरथी रामो लक्ष्मणं समभाषत।
बलं च तत्र विभजच्छास्त्रदृष्टेन कर्मणा १३

गर्जना सुना ॥ ५ ॥ रामने ध्वजापताका युक्त लंका देख दुखित मनसे सीताकी याद की कि ॥ ६ ॥ इसी लङ्कामें सीताको रावणने रोक रक्खा है ॥ ७ ॥ इस तरह कह लम्बी सांस ले तथा लक्ष्मणजीको देख उस कालके योग्य वचन श्रीराम बोले ॥ ८ ॥

हे लक्ष्मण ! इस लङ्काको तो देखो जैसे विश्वकर्माने इसे अपने मनसे ही निकट पर्वतपर बनाया हो ॥ ९ ॥ पहलेके बने हुए बिमान लङ्कापूरीमें भरे पड़े हैं यह लङ्का नाना प्रकारके पुष्पों तथा पक्षियोंके शब्दोंसे शब्दित वनोंसे शोभित होरही है ॥ १०-११ ॥ हे लक्ष्मण ! देखो मतवाले पक्षि भ्रमरों व कोकिला युक्त वृक्षों सहित वनोंको पवन बार बार कंपा रहा है ॥ १२ ॥ एवं श्रीराम लक्ष्मणसे कह शास्त्रदृष्टिसे सब सेना यथायोग्य स्थानोंमें नियत करने लगे ॥ १३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शशाग्र कपिसेनां तां बलादादाय वीर्यवान्।
अङ्गदः सह नीलेन तिष्ठदुरसि दुर्जयः १४
तिष्ठेद्वानरवाहिन्याः वानरौघसमावृतः।
आश्रितो दक्षिणं पार्श्वमृषभो नाम वानरः १५
गन्धहस्तीव दुर्धर्षस्तरस्वी गन्धमादनः।
तिष्ठेद्वानरवाहिन्याः सव्यं पक्षमधिष्ठितः १६
मूर्ध्निस्थास्याम्यहं यत्तो लक्ष्मणेन समन्वितः।
जाम्बवांश्च सुषेणश्च वेगदर्शी च वानरः १७
ऋक्षमुख्या महात्मानः कुक्षिं रक्षन्तु ते त्रयः।
जघनं कपिसेनायाः कपिराजोऽभिरक्षतु १८
पश्चार्धमिव लोकस्य प्रचेतास्तेजसा वृतः १९
सुविभक्तमहाव्यूहा महावानररक्षिता।
अनीकिनी सा विबभौ यथा द्यौः साभ्रसंप्लवा २०
प्रगृह्य गिरिशृङ्गाणि महतश्च महीरुहान्।
आसेदुर्वानरां लङ्कां मिमर्दयिषवो रणे २१
शिखरैर्विकिरामैनां लङ्कां मुष्टिभिरेव वा।
इति स्म दध्रिरे सर्वे मनांसि हरिपुङ्गवाः २२

व्यूहके मध्यमें नीलको अङ्गद सहित ससैन्य स्थित होनेको कहा॥ १४॥ और दक्षिण पार्श्वमें वानर समूह ले ऋषभ वानरको ठहरनेकी आ[ज्ञा] दी ॥ १५ ॥ दुर्द्धर्ष गन्धमादन सेनाके वाम पार्श्वकी रक्षा कर ॥ १६॥ और लक्ष्मण तथा मैं सावधान हो सेनाके शिर स्थानपर स्थित होंगे जाम्ब[वान], सुषेण-तथा वेगदर्शी ॥ १७ ॥ सेनाकी कुक्षिकी रक्षा करें सेन[ाके] जघनदेशकी सुग्रीव रक्षा करें ॥ १८-१९ ॥

जब सेनाके जुदे जुदे मार्गोंकी बडे बडे वानरोंने रक्षा की तब वह मेघमय गगनके समान शोभा देने लगी ॥ २० ॥ पर्वतोंके शृंग तथा बडे पेड लेले वानर लोग लङ्काको ध्वस्त करनेको लडनेके लिये यु[द्ध] पहुंचे ॥ २१ ॥ वानरोंने विचारा कि पर्वतोंके शृंगों या मूकोंसे लङ्का

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ततो रामो महातेजाः सुग्रीवमिदमब्रवीत्।
सुविभक्तानि सैन्यानि शुक एष विमुच्यताम् २३
रामस्य तु वचः श्रुत्वा वानरेन्द्रो महाबलः।
मोचयामास तं दूतं शुकं रामस्य शासनात् २४
मोचितो रामवाक्येन वानरैश्च निपीडितः।
शुकः परमसंत्रस्तो रक्षोधिपमुपागमत् २५
रावणः प्रहसन्नेव शुकं वाक्यमुवाच ह।
किमिमौ ते सितौ पक्षौ लूनपक्षश्च दृश्यसे॥
कच्चिन्नानेकचित्तानां तेषां त्वं वशमागतः २६
ततः स भयसंविग्नस्तेन राज्ञाभिचोदितः।
वचनं प्रत्युवाचेदं राक्षसाधिपमुत्तमम् २७
सागरस्योत्तरे तीरेऽब्रुवं ते वचनं तथा।
यथा संदेशमक्लिष्टं सान्त्वयञ्श्लक्ष्णया गिरा २८
क्रुद्धैस्तैरहमुत्प्लुत्य दृष्टमात्रः प्लवङ्गमैः।
गृहीतोस्म्यपि चारब्धो हन्तुं लोप्तुं च मुष्टिभिः २९
न ते संभाषितुं शक्याः संप्रश्नोऽत्र न विद्यते।
प्रकृत्या कोपनास्तीक्ष्णा वानरा राक्षसाधिप ३०

चूर्णभूवकर डालेंगे ॥ २२ ॥ ततः तेजस्वी श्रीराम सुग्रीवसे बोले कि उचित उचित स्थानोंपर सेना तो स्थित कर दी गई अब रावणके दूतको छोड दो ॥ २३ ॥ सुग्रीवने यह सुन शुकको छोड दिया ॥ २४ ॥

राम आज्ञासे छूटा तथा वानरोंसे कष्टित शुक भयभीत हो रावणके समीप पहुंचा ॥ २५ ॥ रावण शुकसे बोला कि तुम्हारे ये पंख कटे हुए क्यों हैं तुम वानरोंके वशमें तो नहीं पड गये ॥ २६ ॥ इसके बाद भयसे उद्विग्न हुआ वह शुक उस राक्षसराज रावणसे यह बोला ॥ २७ ॥ कि मैं सागरके उत्तर किनारे पहुंच जैसे ही आपका सन्देशा कहने लगा कि ॥ २८ ॥ वानरोंने मुझे आकाशहीमें पकड लिया और पंख उखाडने मूकोंसे मारने लगे ॥ २९ ॥ वे वानर तो स्वभावहीसे क्रोधी हैं सो उनके सामने न कोई बात ही कर सकता न कुछ पूंछ ही सकता है ॥ ३० ॥ विराध कबन्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स च हन्ता विराधस्य कबन्धस्य खरस्य च।
सुग्रीवसहितो रामः सीतायाः पदमागतः ३१
स कृत्वा सागरे सेतुं तीर्त्वा च लवणोदधिम्।
एष रक्षांसि निर्धूय धन्वी तिष्ठति राघवः ३२
ऋक्षवानरसङ्घानामनीकानि सहस्रशः।
गिरिमेघनिकाशानां छादयन्ति वसुन्धराम् ३३
राक्षसानां बलौघस्य वानरेन्द्रबलस्य च।
नैतयोर्विद्यते संधिर्देवदानवयोरिव ३४
पुरा प्राकारमायान्ति क्षिप्रमेकतरं कुरु।
सीतां चास्मै प्रयच्छाशु युद्धं वापि प्रदीयताम् ३५
शुकस्य वचनं श्रुत्वा रावणो वाक्यमब्रवीत्।
रोषसंरक्तनयनो निर्दहन्निव चक्षुषा ३६
यदि मां प्रतियुद्ध्येरन्देवगन्धर्वदानवाः।
नैव सीतां प्रदास्यामि सर्वलोकभयादपि ३७
कदा समभिधावन्ति मामका राघवं शराः।
वसन्ते पुष्पितं मत्ता भ्रमरा इव पादपम् ३८
कदा शोणितदिग्धाङ्गं दीप्तैः कार्मुकविच्युतैः।

खरके घातक राम सुग्रीव सहित सीताको लेनेके लिये आगए हैं ॥ ३१
वे समुद्रका पुल बांध पार उतर आये अब राक्षसोंका मानमर्दन करके
लङ्काके तट ठहरे हैं ॥ ३२ ॥

ऋक्ष वानरोंकी सेना लङ्काके तटकी सब भूमि घेरे पडी है ॥ ३३
राक्षसों तथा वानरोंकी सेना देवासुर संग्राममें देवता दैत्योंकी सेनाके सम
युद्धार्थ उद्यत है ॥ ३४ ॥ रामकी सेनाके प्राकारके भीतर आनेसे पूर्व
या तो सीता उनको दे दीजिये या युद्ध करिये ॥ ३५ ॥ यह वचन
रावण बोला उसके रोषसे नेत्र लाल होगये थे ॥ ३६ ॥

यदि देवता दानव गन्धर्व भी युद्ध करें तौ भी सीताको मैं नहीं
सकता ॥ ३७ ॥ जैसे वसन्तमें पुष्पित पेडके ऊपर भौंरे दौडते हैं वैसे
मेरे बाण रामके ऊपर कब छूटेंगे ॥ ३८ ॥ अङ्गोंमें रुधिर लगा हुए राम

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शरैरादीपयिष्यामि उल्काभिरिव कुञ्जरम् ३९
तच्चास्य बलमादास्ये बलेन महता वृतः ।
ज्योतिषामिव सर्वेषां प्रभामुद्यन्दिवाकरः ४०
सागरस्येव मे वेगो मारुतस्येव मे बलम् ।
न च दाशरथिर्वेद तेन मां योद्धुमिच्छति ४१
न मे तूणीशयान्बाणान्स विषानिव पन्नगान् ।
रामः पश्यति सङ्ग्रामे तेन मां योद्धुमिच्छति ४२
न जानाति पुरा वीर्यं मम युद्धे स राघवः ।
मम चापमयीं वीणां शरकोणैः प्रवादिताम् ४३
ज्याशब्दतुमुलां घोरामार्तगीतमहास्वनाम् ।
नाराचतलसंनादां नदीमहितवाहिनीम् ४४
अवगाह्य महारङ्गं वादयिष्याम्यहं रणे ४५
न वासवेनापि सहस्रचक्षुषा युद्धेऽस्मि शक्यो वरुणेन वा स्वयम् ।
यमेन वा धर्षयितुं शराग्निना महाहवे वैश्रवणेन वा स्वयम् ४६

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे चतुर्विंशः सर्गः॥२४॥ [८७१]

बाणोंको छोडकर कब मैं भयभीत करूंगा ॥ ३९ ॥ मैं बडी सेना लेकर रामकी सेना ध्वस्त कर दूंगा ॥ ४० ॥ मेरा बेग समुद्रसा तथा बल वायु कासा है इस बातको राम नहीं जानते ॥ ४१ ॥

मेरे तरकसमें विषैले सर्पोंके समान बैठे हुए बाणोंको युद्धमें कभी रामने नहीं देखा इसीसे वह युद्ध करना चाहता है ॥ ४२ ॥ राम मेरा युद्ध भी नहीं जानते न उन्होंने मेरी धनुषरूपी बीणाहीका शब्द कभी सुना है ॥ ४३ ॥ उस वीणाको मैं प्रत्यञ्चा शब्दरूप रणसंकुल शब्दयुक्त दुःखित लोगोंके गान सहित बाण शब्दका नाद होती हुई सेना रूप नदीमें स्नान बजाऊंगा ॥ ४४-४५ ॥ युद्धमें बाणरूपी अग्निसे मुझपर सहस्रनयन इन्द्रको, प्रत्यक्ष वरुणको, यमको अथवा प्रत्यक्ष कुबेरके लिये भी आक्रमण करना सम्भव नहीं है ॥ ४६ ॥

॥ यहाँ २४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon:

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

॥ पञ्चविंशः सर्गः ॥

सबले सागरं तीर्णे रामे दशरथात्मजे ।
अमात्यौ रावणः श्रीमानब्रवीच्छुकसारणौ १
समग्रं सागरं तीर्णं दुस्तरं वानरं बलम् ।
अभूतपूर्वं रामेण सागरे सेतुबन्धनम् २
सागरे सेतुबन्धं तं न श्रद्दध्यां कथंचन ।
अवश्यं चापि संख्येयं तन्मया वानरं बलम् ३
भवन्तौ वानरं सैन्यं प्रविश्यानुपलक्षितौ ।
परिमाणं च वीर्यं च ये च मुख्याः प्लवङ्गमाः ४
मन्त्रिणो ये च रामस्य सुग्रीवस्य च संगताः ।
ये पूर्वमभिवर्तन्ते ये च शूराः प्लवङ्गमाः ५
स च सेतुर्यथा बद्धः सागरे सलिलार्णवे ।
निवेशं च यथा तेषां वानराणां महात्मनाम् ६
रामस्य व्यवसायं च वीर्यं प्रहरणानि च ।
लक्ष्मणस्य च वीरस्य तत्त्वतो ज्ञातुमर्हथः ७
कश्च सेनापतिस्तेषां वानराणां महात्मनाम् ।
तच्च ज्ञात्वा यथातत्त्वं शीघ्रमागन्तुमर्हथः ८

जब सेनासहित राम समुद्र पार उतर आये तब रावण शुकसारण ना
अपने अमात्योंसे बोला ॥ १ ॥ दुस्तर समुद्रको वानर सेना पार उतर आ
रामने समुद्रमें जो पुल बांध दिया यह बात नवीन हुई ॥ २ ॥ पर साग
पुल बांधनेका विश्वास मुझे नहीं होता वानर सेनाकी गणना अव
करनी चाहिये ॥३॥ सो तुम दोनों गुप्तरूपसे वानर सेनामें प्रवेश कर उन
प्रमाण बल मुख्य मुख्य ॥ ४ ॥ मन्त्री चाहे वे रामके हों व सुग्रीवके वा
रोंके नेताओंका वृत्तान्त ॥ ५ ॥ समुद्रमें जिस प्रकार पुल बांधा हो उ
वानरोंकी सेना पडी हो ॥ ६ ॥ रामका विचार, वीर्य तथा लक्ष्मणकी
बातें निश्चयात्मक जान आओ ॥ ७ ॥ वानरोंका सेनापति कौन है यह
भलीभांति जान शीघ्र चले आओ ॥ ८ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

इति प्रतिसमादिष्टौ राक्षसौ शुकसारणौ ।
हरिरूपधरौ वीरौ प्रविष्टौ वानरं बलम् ९
ततस्तद्वानरं सैन्यमचिन्त्यं लोमहर्षणम् ।
संख्यातुं नाध्यगच्छेतां तदा तौ शुकसारणौ १०
तत्स्थितं पर्वताग्रेषु निर्झरेषु गुहासु च ।
तरमाणं च तीर्णं च ततुंकामं च सर्वशः ११
निविष्टं निविशच्चैव भीमनादं महाबलम् ।
तद्बलार्णवमक्षोभ्यं ददृशाते निशाचरौ १२
तौ ददर्श महातेजाः प्रतिच्छन्नौ विभीषणः ।
आचचक्षे स रामाय गृहीत्वा शुकसारणौ १३
तस्यैतौ राक्षसेन्द्रस्य मन्त्रिणौ शुकसारणौ ।
लङ्कायाः समनुप्राप्तौ चारौ परपुरंजय १४
तौ दृष्ट्वा व्यथितौ रामं निराशौ जीविते तथा ।
कृताञ्जलिपुटौ भीतौ वचनं चेदमूचतुः १५
आवामिहागतौ सौम्य रावणप्रहितावुभौ ।

रावणकी आज्ञा पाकर शुक सारण वानर वेष बना वानर सेनामें प्रविष्ट हुए ॥ ९ ॥ पर वे अचिन्त्य लोमहर्षण वानर सेनाकी गिनती न कर सके ॥ १० ॥ क्योंकि वह कुछ तो पहाड झरनों व गुफाओंमें पडी थी कुछ समुद्र उतर रही थी कुछ उतरनेको उद्यत थी ॥ ११ ॥ कुछ व्यूहमें आगई थी कुछ आती थी ऐसी भयानक शब्द करती हुई उस सेनाको उन दोनों राक्षसोंने देखा ॥ १२ ॥ ये दोनों राक्षस गुप्तरूपसे निरीक्षण कर ही रहे थे कि विभीषण उन्हें पकड रामके पास लाया और बोला कि ॥ १३ ॥ हे पर-पुरंजय राम ! ये दोनों शुक सारण रावणके मन्त्री यहां गुप्तचर बनकर आये हैं ॥ १४ ॥

वे दोनों रामको देख बहुत व्यथित हो जीवनसे निराश हो हाथ जोड बोले ॥ १५ ॥ कि आपकी सेनाका वृत्तान्त जाननेके लिये रावण प्रेरित हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

परिज्ञातुं बलं सर्वं तदिदं रघुनन्दन १६
तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा रामो दशरथात्मजः ।
अब्रवीत्प्रहसन्वाक्यं सर्वभूतहिते रतः १७
यदि दृष्टं बलं सर्वं वयं वा सुसमाहिताः ।
यथोक्तं वा कृतं कार्यं छन्दतः प्रतिगम्यताम् १८
अथ किंचिददृष्टं वा भूयस्तद्द्रष्टुमर्हथः ।
बिभीषणो वा कार्त्स्न्येन पुनः संदर्शयिष्यति १९
न चेदं ग्रहणं प्राप्य भेतव्यं जीवितं प्रति ।
न्यस्तशस्त्रौ गृहीतौ च न दूतौ वधमर्हतः २०
प्रच्छन्नौ च विमुञ्चेमौ चारौ रात्रिंचरावुभौ ।
शत्रुपक्षस्य सततं बिभीषण विकर्षिणौ २१
प्रविश्य महतीं लङ्कां भवद्भ्यां धनदानुजः ।
वक्तव्यो रक्षसां राजा यथोक्तं वचनं मम २२
यद्बलं त्वं समाश्रित्य सीतां मे हृतवानसि ।
तद्दर्शय यथाकामं ससैन्यैश्च सबान्धवः २३
श्वः काल्ये नगरीं लङ्कां सप्राकारां सतोरणाम् ।
रक्षसां च बलं पश्य शरैर्विध्वंसितं मया २४

दोनों यहां आये हैं ॥ १६ ॥ उन दोनोंकी बात सुन राम हँसकर बोले ॥१७॥ यदि तुमने सब सैन्य तथा हमको देखभाल लिया हो वा जैसी आज्ञा दी वैसा कर लिया हो तो इच्छानुसार चले जाओ ॥ १८ ॥ यदि कुछ देखने शेष रह गया हो तो फिर बिभीषण सब दिखा देंगे ॥ १९ ॥ मरण व कैदका भय न करो क्योंकि शस्त्ररहित मनुष्य और दूत मरने योग्य नहीं होता ॥ २० ॥

हे बिभीषण ! इन निशाचरोंको मारने योग्य होनेपर भी छोड़ दीजिये ॥ २१ ॥ हे दूतों ! लङ्कामें जाकर रावणसे हमारी ओरसे जैसा कहता हूं वैसा ही कह देना ॥ २२ ॥ कि जिस बलको पाकर तुमने सीताको हरण किया है अब वह बल दिखाओ ॥ २३ ॥ प्रातः ही लङ्कापुरी व राक्षसोंकी समस्त सेना मेरे बाणोंसे नष्ट हुई देखोगे ॥ २४ ॥ हे रावण

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

क्रोधं भीममहं मोक्ष्ये ससैन्ये त्वयि रावण ।
श्वः काल्ये वज्रवान्वज्रं दानवेष्विव वासवः २५
इति प्रतिसमादिष्टौ राक्षसौ शुकसारणौ ।
जयेति प्रतिनन्द्यैनं राघवं धर्मवत्सलम् २६
आगम्य नगरीं लङ्कामब्रूतां राक्षसाधिपम् ।
विभीषणगृहीतौ तु वधार्थं राक्षसेश्वर २७
दृष्ट्वा धर्मात्मना मुक्तौ रामेणामिततेजसा ।
एकस्थानगता यत्र चत्वारः पुरुषर्षभाः २८
लोकपालसमाः शूराः कृतास्त्रा दृढविक्रमाः ।
रामो दाशरथिः श्रीमाल्लक्ष्मणश्च विभीषणः २९
सुग्रीवश्च महातेजा महेन्द्रसमविक्रमः ।
एते शक्ताः पुरीं लङ्कां सप्राकारां सतोरणाम् ३०
उत्पाट्य संक्रामयितुं सर्वे तिष्ठन्तु वानराः ।
यादृशं तद्धि रामस्य रूपं प्रहरणानि च ३१
वधिष्यति पुरीं लङ्कामेकस्तिष्ठन्तु ते त्रयः ।
रामलक्ष्मणगुप्ता सा सुग्रीवेण च वाहिनी ॥

सेना सहित तुम्हारे ऊपर मैं अपना क्रोध प्रातः छोड़ूंगा जैसे इन्द्र दानवोंपर अपना वज्र छोड़े ॥ २५ ॥ शुक सारणसे रामके यह कहनेपर वे दोनों आपकी जय हो यह धर्मवत्सल रामसे कहा ॥ २६ ॥ लंकामें आ रावणसे बोले कि विभीषणने तो हमको वधार्थ पकड लिया था ॥ २७ ॥

पर अमिततेजस्वी रामने हमें छुडा दिया जहां एक ही स्थानपर चार पुरुष श्रेष्ठ ॥ २८ ॥ महाशूर सब अस्त्र शस्त्र चलानेमें कुशल बैठे थे वहीं वे हमें लेगये थे वे श्रीराम लक्ष्मण, विभीषण, ॥ २९ ॥ और सुग्रीव थे ये चारों इस लंकाको ॥ ३० ॥ उखाडकर अकेले बहा सकते हैं जिस प्रकार रामका रूप व जैसे उनके शस्त्रास्त्र हैं ॥ ३१ ॥ उनसे यही ज्ञात होता हैं कि वे एकाकी ही लंका भरको नष्ट कर डालेंगे रामलक्ष्मण व सुग्रीवसे रक्षित वह वानर सैन्य ऐसा दुर्द्धर्ष हो गया है कि देवता दैत्यादि भी उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बभूव दुर्धर्षतरा सर्वैरपि सुरासुरैः ३२
प्रहृष्टयोधा ध्वजिनी महात्मनां वनौकसां संप्रति योद्धुमिच्छताम्
अलं विरोधेन शमो विधीयतां प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली ३३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे पञ्चविंशः सर्गः ॥ २५ ॥ [९०

षड्विंशः सर्गः ।

तद्वचः सत्यमक्लीवं सारणेनाभिभाषितम् ।
निशम्य रावणो राजा पर्यभाषत सारणम् १
यदि मामभियुञ्जीरन्देवगन्धर्वदानवाः ।
नैव सीतामहं दद्यां सर्वलोकभयादपि २
त्वं तु सौम्य परित्रस्तो हरिभिः पीडितो भृशम् ।
प्रतिप्रदानमद्यैव सीतायाः साधु मन्यसे ३
को हि नाम सपत्नो मां समरे जेतुमर्हति ४
इत्युक्त्वा परुषं वाक्यं रावणो राक्षसाधिप ।
आरुरोह ततः श्रीमान्प्रासादं हिमपाण्डुरम् ५
बहुतालसमुत्सेधं रावणोऽथ दिदृक्षया ।
ताभ्यां चराभ्यां सहितो रावणः क्रोधमूर्च्छितः ६

प्रतिरोध नहीं कर सकते ॥ ३२ ॥ युद्धकी इच्छा धारण करनेवाले महात्मा वानरोंकी सेना इस समय आनन्दित योद्धाओंसे युक्त होगई है; अतः विरोध भाव छोडकर रामसे सख्य करना चाहिये और मैथिलीको देना चाहिये ॥ ३३ ॥

॥ यहाँ २५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

सारणका वचन सुन रावण उससे बोला ॥ १ ॥ यदि देवता गन्धर्व दानव भी कहें तौ भी मैं सीताको वापिस न दूंगा ॥ २ ॥ तुम वानरोंसे अति दुःख पानेके कारण डर गये हो इससे तुम सीताका देना अच्छा समझते हो ॥ ३ ॥ ऐसा कौन है जो युद्धमें मुझे जीत सके ॥ ४ ॥ रावण ऐसा कठोर वचन कह ऊंचे श्वेत प्रसादपर चढा ॥ ५ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पश्यमानः समुद्रं तं पर्वतांश्च वनानि च ।
ददर्श पृथिवीदेशं सुसंपूर्णं प्लवङ्गमैः ७
तदपारमसह्यं च वानराणां महाबलम् ।
आलोक्य रावणो राजा परिपप्रच्छ सारणम् ८
एषां के वानरा मुख्याः के शूराः के महाबलाः ।
के पूर्वमभिवर्तन्ते महोत्साहाः समन्वतः ९
केषां शृणोति सुग्रीवः के वा यूथपयूथपाः ।
सारणाचक्ष्व मे सर्वं किंप्रभावाः प्लवङ्गमाः १०
सारणो राक्षसेन्द्रस्य वचनं परिपृच्छतः ।
आवभाषेथ मुख्यज्ञो मुख्यांस्तत्र वनौकसः ११
एष योऽभिमुखो लङ्कां नर्दंस्तिष्ठति वानरः ।
यूथपानां सहस्रेण शतेन परिवारितः १२
यस्य घोषेण महता सप्राकारा सतोरणा ।
लङ्का प्रतिहता सर्वा सशैलवनकानना १३

जो कहं ताड ऊंचा था वानरसैन्य देखनेको उन दूतों सहित चढा ॥६॥ और दोनों दूतोंके साथ सागर पर्वत वन देखने लगा पृथ्वीका बहुतसा भाग वानरोंसे व्याप्त ॥ ७ ॥ तथा अपार वानरोंकी महासेना देख रावण सारणसे पूंछने लगा ॥ ८ ॥ कि इनमें कौन कौन वानर मुख्य हैं कौन कौन शूर कौन कौन महाबली कौन कौन बडे उत्साहके साथ सबसे प्रथम सब कार्य करनेको उद्यत रहते हैं ॥ ९ ॥ सुग्रीव किसकी बात बहुत सुनते हैं यूथपोंके पति कौन कौन हैं हे सारण हमसे सब कहो किस किस प्रभावके वानर इस वाहिनीमें हैं ॥ १० ॥ रावणके ऐसा पूंछनेपर सारण सब मुख्य मुख्य वानरोंको दिखा दिखाकर बताने लगा ॥११॥ कि यह जो वानर लंकाकी ओरको सन्मुख किये गर्जता हुआ बैठा है जिसको चारों ओरसे लाखों यूथप वानर घेरे हुए हैं ॥ १२ ॥ व जिसके नादसे प्राकार खाई फाटक युक्त सब लङ्का प्रतिहत हुई जाती है ॥ १३ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सर्वशाखामृगेन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
बलाग्रे तिष्ठते वीरो नीलो नामैष यूथपः १४
बाहू प्रगृह्य यः पद्भ्यां महीं गच्छति वीर्यवान् ।
लङ्कामभिमुखः कोपादभीक्ष्णं च विजृम्भते १५
गिरिशृङ्गप्रतीकाशः पद्मकिंजल्कसंनिभः ।
स्फोटयत्यतिसंरब्धो लाङ्गूलं च पुनः पुनः १६
यस्य लाङ्गूलशब्देन स्वनान्ति प्रदिशो दश ।
एष वानरराजेन सुग्रीवेणाभिषेचितः १७
युवराजोऽङ्गदो नाम त्वामाह्वयति संयुगे ।
वालिनः सदृशः पुत्रः सुग्रीवस्य सदा प्रियः १८
राघवार्थे पराक्रान्तः शक्रार्थे वरुणो यथा ।
एतस्य सा मतिः सर्वा यद्दृष्टा जनकात्मजा १९
हनूमता वेगवता राघवस्य हितैषिणा ।
बहूनि वानरेन्द्राणामेष यूथानि वीर्यवान् २०

जो सुग्रीवकी सेनाके आगे बैठा है वह वीर नील नामक वानर यूथपों
स्वामी है ॥ १४ ॥ यह जो अपनी बाहें पकड पृथ्वीमें चला आता है
कोपसे लङ्काकी ओर मुंहकर बार बार जम्भा रहा है ॥ १५ ॥ आकाहै
पर्वत शिखरके समान है और कमल केसरके समान कान्ति है ऐसा
अत्यन्त क्षुब्ध होकर वार वार अपनी पुच्छकी ध्वनि कर रहा है ॥ १६
जिसके शब्दसे चारों ओर शब्द हो रहा है ऐसे अङ्गद नामके वान
वानरराज सुग्रीवने यौवराज्यका अभिषेक किया है ॥ १७ ॥ जो तुम्हे
युद्धमें लडनेको आहूत कर रहा है इसका अङ्गद नाम है यह वालिका
है सुग्रीवको यह बडा प्रिय है ॥ १८ ॥ जैसे इन्द्रके लिये वरुण परा
किया था उसी प्रकार यह रामके लिये बडा पराक्रम कर रहा है इसी
मन्त्रणासे हनुमानने जानकीको यहां आकर देखा था ॥ १९ ॥ यह
सेना तथा वानरोंके बहुत यूथ के सामने चला आता है ॥ २० ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

परिगृह्याभियाति त्वां स्वेनानीकेन मर्दितुम् ।
अनुवालिसुतस्यापि बलेन महता वृतः २१
वीरस्तिष्ठति सङ्ग्रामे सेतुहेतुरयं नलः ।
ये तु विष्टभ्य गात्राणि क्ष्वेडयन्ति नदन्ति च २२
य एनमनुगच्छन्ति वीराश्चन्दनवासिनः ।
एषैवाशंसते लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् २३
श्वेतो रजतसंकाशश्चपलो भीमविक्रमः ।
बुद्धिमान्वानरः शूरस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः २४
तूर्णं सुग्रीवमागम्य पुनर्गच्छति वानरः ।
विभजन्वानरीं सेनामनीकानि प्रहर्षयन् २५
यः पुरा गोमतीतीरे रम्यं पर्येति पर्वतम् ।
नाम्ना संरोचनो नाम नानानगयुतो गिरिः २६
तत्र राज्यं प्रशास्त्येष कुमुदो नाम यूथपः ।
योऽसौ शतसहस्राणि सहर्षं परिकर्षति २७
यस्य वाला बहुव्यामा दीर्घलाङ्गूलमाश्रिताः ।
ताम्राः पीताः सिताः श्वेताः प्रकीर्णा घोरदर्शनाः २८

अङ्गदके पीछे जो भारी सेना लिये स्थित है ॥२१॥ वह वीर नल नामक वानर है जिसने समुद्रमें पुल बांधा है ॥२२॥ अङ्ग थाम थाम प्रसन्न होते हैं तथा अङ्गोंमें चन्दन लगाये इसी नलके पीछे ये वानर चलते हैं ॥२३॥ यह जो चांदीके समान श्वेत रंगका श्वेत नाम वानर है इसका स्वभाव बडा चंचल है और बडा पराक्रमी है ॥ २४ ॥ यह वानर बडा बुद्धिमान् तीनों लोकोंमें विख्यात है जो जल्दीसे सुग्रीवके पास जाता है और लौट आता है ॥ २५ ॥ हर्षके साथ वानरोंकी सेनाका विभाग करता है गोमती नदीके किनारे नाना प्रकारके पर्वतों सहित संरोचन नाम पर्वतोंपर बहुत दिनोंसे राज्य करता है इसका कुमुद नाम है यह जो लाख सेनाओंको हर्ष सहित अलगा रहा है ॥ २६-२७ ॥

जिसके बडे लम्बेबाल बडी भारी पूंछके इधर उधर लटकते हैं वे ताम्र पीले उजले तथा कुछ बहुत ही उजलेसे बडे होनेके कारण भयंकर लगते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अदीनो वानरश्चण्डः सङ्ग्राममभिकाङ्क्षति ।
एषैवाशंसते लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् २९
यस्त्वेष सिंहसंकाशः कपिलो दीर्घकेसरः ।
निभृतः प्रेक्षते लङ्कां दिधक्षन्निव चक्षुषा ३०
विन्ध्यं कृष्णगिरिं सह्यं पर्वतं च सुदर्शनम् ।
राजन्सततमध्यास्ते स रम्भो नाम यूथपः ॥
शतं शतसहस्राणां त्रिंशच्च हरिपुङ्गवाः ३१
यं यान्तं वानरा घोराश्चण्डाश्चण्डपराक्रमाः ।
परिवार्यानुगच्छन्ति लङ्कां मर्दितुमोजसा ३२
यस्तु कर्णौ विवृणुते जृम्भते च पुनः पुनः ।
न तु संविजते मृत्योर्न च सेनां प्रधावति ३३
प्रकम्पते च रोषेण तिर्यक् पुनरीक्षते ।
पश्य लाङ्गूलविक्षेपं क्ष्वेडत्येष महाबलः ३४
महौजसा वीतभयो रम्यं साल्वेयपर्वतम् ।
राजन्सततमध्यास्ते शरभो नाम यूथपः ३५
एतस्य बलिनः सर्वे विहारा नाम यूथपाः ।

हैं ॥ २८ ॥ इस वानरका चण्ड नाम है वह संग्रामकी इच्छा करता है इ
ही नहीं किन्तु अपने सैन्यके साथ लंका विध्वंसकी भी इच्छा कर
है ॥ २९ ॥ यह जो कपिल रंगका वानर है जो बार बार लङ्काकी
देख रहा है ॥ ३० ॥ वह विन्ध्या नीलगिरिसह्य पहाडोंपर रहता है यह
नामक यूथप है जब यह चलता है तो इसके पीछे पीछे एक करोड
प्रचण्ड वानर ॥ ३१ ॥ इसको घेर कर चलते हैं यह भी अपने ही वान
लङ्का मर्द्दन किया चाहता है ॥ ३२ ॥

यह जो वानर कान सिकोडना बार बार जम्भाता है जो न मृत्युसे
सेनाहीको देखकर डरता है ॥ ३३ ॥ रोषसे कांप रहा है देखो यह
वानर अतिरम्य साल्वेय नाम पर्वतपर रहता है इसका शरभ नाम है
यूथप है ॥ ३५ ॥ हे राजन्! इस बलवान् शरभके एक लाख चा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

राजञ्छतसहस्राणि चत्वारिंशत्तथैव च ३६
यस्तु मेघ इवाकाशं महानावृत्य तिष्ठति।
मध्ये वानरवीराणां सुराणामिव वासवः ३७
भेरीणामिव संनादो यस्यैष श्रूयते महान्।
घोषः शाखामृगेन्द्राणां सङ्ग्राममभिकाङ्क्षताम् ३८
एष पर्वतमध्यास्ते पारियात्रमनुत्तमम्।
युद्धे दुष्प्रसहो नित्यं पनसो नाम यूथपः ३९
एनं शतसहस्राणां शतार्धं पर्युपासते।
यूथपा यूथपश्रेष्ठं येषां यूथानि भागशः ४०
यस्तु भीमां प्रवल्गन्तीं चमूं तिष्ठति शोभयन्।
स्थितां तीरे समुद्रस्य द्वितीय इव सागरः ४१
एष दर्दुरसंकाशो विनतो नाम यूथपः।
पिबंश्चरति यो वेणां नदीनामुत्तमां नदीम् ४२
षष्टिः शतसहस्राणि बलमस्य प्लवङ्गमाः।
त्वामाह्वयति युद्धाय क्रथनो नाम वानरः ४३
विक्रान्ता बलवन्तश्च यथा यूथानि भागशः।
यस्तु गैरिकवर्णाभं वपुः पुष्यति वानरः ४४

...हारानाम यूथप है ॥ ३६ ॥ यह जो आकाशको मेघके समान घेरे ...ए वानरोंके मध्यमें विराजित है ॥ ३७ ॥ जिसका नगारोंकासा शब्द सुनाई ... रहा है युद्धकी इच्छा किये हुए सब वानरोंके बीचमें गर्ज रहा है ॥ ३८ ॥ ...ह पारियात्र नाम पर्वतपर रहा करता है इस यूथप श्रेष्ठकी सेनामें एक ...लाख पचास हजार यूथप वानर रहते हैं ॥ ४० ॥

यह सागरहीके समान पडी हुई सेनाको शोभित करता हुआ ठहरा ...से ॥ ४१ ॥ सो विनत नाम यूथप है उत्तम वेणा नदीपर रहता है ॥ ४२ ॥ ...इसके पास एक लाख साठ हजार वानरोंकी सेना है यह जो तुमको युद्ध ...करनेके लिये पुकार रहा है ॥ ४३ ॥

...वाले जिसके यूथ बडे बलवान् हैं उसका क्रथन नाम है जो यह वानर अहं-...कारसे सब वानरोंका निरादर कर गेरुके रंगकी अपनी देह पुष्ट करता है ॥ ४४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अवमत्य सदा सर्वान्वानरान्बलदर्पितः ।
गवयो नाम तेजस्वी त्वां क्रोधादभिवर्तते ४५
एनं शतसहस्राणि सप्ततिः पर्युपासते ।
एषैवाशंसते लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् ४६
एते दुष्प्रसहा वीरा येषां सङ्ख्या न विद्यते ।
यूथपा यूथपश्रेष्ठास्तेषां यूथानि भागशः ४७

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे षड्विंशः सर्गः ॥२६॥

॥ सप्तविंशः सर्गः ॥

तांस्तु ते संप्रवक्ष्यामि प्रेक्षमाणस्य यूथपान् ।
राघवार्थे पराक्रान्ता ये न रक्षन्ति जीवितम् १
स्निग्धा यस्य बहुव्यामा दीर्घलाङ्गूलमाश्रिताः ।
ताम्राः पीताः सिताः श्वेताः प्रकीर्णा घोरकर्मणः २
प्रगृहीताः प्रकाशन्ते सूर्यस्येव मरीचयः ।
पृथिव्यां चानुकृष्यन्ते हरो नामैष वानरः ३
यं पृष्ठतोऽनुगच्छन्ति शतशोऽथ सहस्रशः ।
वृक्षानुद्यम्य सहसा लङ्कारोहणतत्परः ४

इसका गवय नाम है यह बडा तेजस्वी है बार बार तुम्हारी ओर दे... है ॥४५॥ इसकी सेवामें एक लाख सत्तर हजार यूथप वानर रहते हैं यह... अपनी ही सेनासे लंका मर्दन किया चाहता है ॥ ४६ ॥ ये बडे दुःसह... यूथप श्रेष्ठ हैं जिसकी संख्या ही नहीं है उनके यूथ तो अलग अलग वि... करके बहुत हैं ॥ ४७ ॥

॥ यहाँ २६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

यूथपोंको देखते हुए अब तुमको उन वानरोंको दिखाता हूं जो ... लिये अपने प्राणोंकी भी रक्षा नहीं करते ॥ १ ॥ जिनके बडे चिकने ... लम्बे पूंछपरके बाल इधर उधर फैले हुए हैं ॥ २ ॥ जो सूर्यकी कि... समान प्रकाशित होते हैं भूमिमें लोटते चलते हैं इस वानरका हर ... है ॥ ३ ॥ जिसके पीछे पीछे सुग्रीवके असंख्य सेवक लङ्कापर च...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यूथपा हरिराजस्य किङ्कराः समुपस्थिताः।
नीलानिव महामेघांस्तिष्ठतो यांस्तु पश्यसि ५
असिताञ्जनसंकाशान्युद्धे सत्यपराक्रमान्।
असंख्येयाननिर्देशान्परं पारमिवोदधेः ६
पर्वतेषु च ये केचिद्विषयेषु नदीषु च।
एते त्वामभिवर्तन्ते राजन्नृक्षाः सुदारुणाः ७
एषां मध्ये स्थितो राजा भीमाक्षो भीमदर्शनः।
पर्जन्य इव जीमूतैः समन्तात्परिवारितः ८
ऋक्षवन्तं गिरिश्रेष्ठमध्यास्ते नर्मदां पिबन्।
सर्वर्क्षाणामधिपतिर्धूम्रो नामैष यूथपः ९
यवीयानस्य तु भ्राता पश्यैनं पर्वतोपमम्।
भ्रात्रा समानो रूपेण विशिष्टश्च पराक्रमे १०
स एष जाम्बवान्नाम महायूथपयूथपः।
प्रशान्तो गुरुवर्ती च संप्रहारेष्वमर्षणः ११
एतेन साह्यं तु महत्कृतं शक्रस्य धीमता।
देवासुरे जाम्बवता लब्धाश्च बहवो वराः १२

तैयारी किये चल रहे हैं ॥ ४ ॥ जिनको धूमरंगका देखते हो ॥ ५ ॥ जो युद्धमें सत्य पराक्रम दिखाते हैं ये सब गणनाके अयोग्य हैं ॥ ६ ॥ ये पर्वतों दिशाओं तथा नदियोंमें रहते हैं ये सब ऋक्ष तुम्हारे सामने जो दीख पडते हैं ॥ ७ ॥ इनके मध्यमें इनका राजा बडे भयंकर नेत्र तथा अतिभयङ्कर रूप है ॥ ८ ॥

यह ऋक्षवान् नाम पर्वत श्रेष्ठपर रहता है यही सब ऋक्षोंका राजा है इसका धूम्र नाम है ॥ ९ ॥ इसके छोटे भाईका जाम्बवान् नाम है देखो यह खडा है यह रूपमें तो अपने भाईके तुल्य है परन्तु बलमें उससे बहुत अधिक है ॥ १० ॥ यह जाम्बवान् महा यूथपति हैं इसका चित्त शान्त है युद्धमें बडा असहनशील है ॥ ११ ॥ देवासुर युद्धमें इन्द्रकी बडी भारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सारुह्य पर्वताग्रेभ्यो महाभ्रविपुलाः शिलाः ।
मुञ्चन्ति विपुलाकारा न मृत्योरुद्विजन्ति च १३
राक्षसानां च सदृशाः पिशाचानां च रोमशाः ।
एतस्य सैन्या वहवो विचरन्त्यमितौजसः १४
य एनमभिसंरब्धं प्लवमानमवस्थितम् ।
प्रेक्षन्ते वानराः सर्वे स्थितं यूथपयूथपम् १५
एष राजन्सहस्राक्षं पर्युपास्ते हरीश्वरः ।
वलेन वलसंयुक्तो दम्भो नामैष यूथपः १६
यः स्थितं योजने शैलं गच्छन्पार्श्वेन सेवते ।
ऊर्ध्वं तथैव कायेन गतः प्राप्नोति योजनम् १७
यस्मात्तु परमं रूपं चतुष्पात्सु न विद्यते ।
श्रुतः संनादनो नाम वानराणां पितामहः १८
येन युद्धं तदा दत्तं रणे शक्रस्य धीमता ।
पराजयश्च न प्राप्तः सोऽयं यूथपयूथपः १९
यस्य विक्रममाणस्य शक्रस्येव पराक्रमः ।
एष गन्धर्वकन्यायामुत्पन्नः कृष्णवर्त्मना २०
तदा देवासुरे युद्धे साह्यार्थं त्रिदिवौकसाम् ।

सहायता की थी ॥ १२ ॥ ये ऋक्षलोग बडे बडे पर्वतोंपरसे बडे बडे
नीचे फेंकते हैं ये मृत्युसे भी नहीं डरते ॥ १३ ॥ लम्बे बालोंके
राक्षसोंके तुल्य दिखाई देते हैं ये सब जाम्बवान् ही की सेनाके हैं ॥
यह जिसको कूदते तथा स्थित होते यूथपोंके यूथपति देख रहे हैं
यह दम्भनामक है इसने अपनी बडी भारी सेना इन्द्रकी सहायताके
भेजी थी ॥ १६ ॥ यह जो एक योजन दूर पर्वतको निज पार्श्वसे छू
जिसका शरीर योजनभर ऊंचा है ॥ १७ ॥ जिससे बढकर चौपायोंमें
रूप नहीं है यह वानरोंका पितामह सन्नादन नाम यूथप है ॥१८॥
इन्द्रके साथ युद्ध किया परन्तु हारा नहीं यह भी यूथपोंका यूथप है॥
यह युद्ध करनेके समय इन्द्रके समान बली दीख पडता है यह
कन्यामें अग्निसे उत्पन्न हुआ है ॥ २० ॥ इसके उत्पन्न होनेका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यत्र वैश्रवणो राजा जम्बूमुपनिषेवते २१
यो राजा पर्वतेन्द्राणां बहुकिंनरसेविनाम्।
विहारसुखदो नित्यं भ्रातुस्ते राक्षसाधिप २२
तत्रैष रमते श्रीमान्बलवान्वानरोत्तमः।
युद्धेष्वकत्थनो नित्यं क्रथनो नाम यूथपः २३
वृतः कोटिसहस्रेण हरीणां समवस्थितः।
एषैवाशंसते लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् २४
यो गङ्गामनुपर्यैति त्रासयन्गजयूथपान्।
हस्तिनां वानराणां च पूर्ववैरमनुस्मरन् २५
एष यूथपतिर्नेता गर्जन्गिरिगुहाशयः।
गजान्रोधयते वन्यानारुजंश्च महीरुहान् २६
हरीणां वाहिनीमुख्यो नदीं हैमवतीमनु।
उशीरबीजमाश्रित्य मन्दरं पर्वतोत्तमम् २७
रमते वानरश्रेष्ठो दिवि शक्र इव स्वयम्।
एनं शतसहस्राणां सहस्रमभिवर्तते २८

...वासुर संग्राममें देवताओंकी मदद करना था जहां राजाकुवेर जामुनके ...डके नीचे बैठते हैं ॥ २१ ॥ उनकी सेवामें वहुतसे किन्नर रहते हैं वह ...र्वतके यज्ञाधिपके विहार करनेमें बडा सुख देता है ॥ २२ ॥ उसी पहाड ...र यह वानरोत्तम विहार करता है यह क्रथन नाम यूथप है ॥ २३ ॥ यह ...थन वानर असंख्य वानर संग लिये अपनी ही सेनासे लङ्का मर्दन करना ...हता है ॥ २४ ॥

यह हाथियों व वानरोंका पूर्व समयका वैर यादकर गङ्गानदीके किनारे ...नारे घूमा करता है ॥ २५ ॥ यह यूथपति सब वानरोंका प्रेरक है जो ...ता हुआ वनके हाथियोंको वृक्षोंको तोड तोड घेरा करता है ॥ २६ ॥ ... वानरोंकी सेनाका मुख्य है इससे गङ्गाके किनारे किनारे उशीर बीजनाम ...त तथा उत्तम मन्दराचलपर ॥ २७ ॥ विहार करता है इसके संग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वीर्यविक्रमदृप्तानां नर्दतां बाहुशालिनाम् ।
स एष नेता चैतेषां वानराणां महात्मनाम् २९
स एष दुर्धरो राजन्प्रमाथी नाम यूथपः ।
वातेनेवोद्धतं मेघं यमेनमनुपश्यसि ३०
अनीकमपि संरब्धं वानराणां तरस्विनाम् ।
उद्धूतमरुणाभासं पवनेन समन्ततः ३१
विवर्तमानं बहुशो यत्रैतद्बहुलं रजः ।
एते सितमुखा घोरा गोलाङ्गूला महाबलाः ३२
शतं शतसहस्राणि दृष्ट्वा वै सेतुबन्धनम् ।
गोलाङ्गूलं महाराज गवाक्षं नाम यूथपम् ३३
परिवार्याभिनर्दन्ते लङ्कां मर्दितुमोजसा ३४
भ्रमराचरिता यत्र सर्वकालफलद्रुमाः ।
यं सूर्यस्तुल्यवर्णाभमनुपर्यैति पर्वतम् ३५
यस्य भासा सदा भान्ति तद्वर्णा मृगपक्षिणः ।
यस्य प्रस्थं महात्मानो न त्यजन्ति महर्षयः ३६

विक्रमसे अहङ्कारित एक करोड वानर रहते हैं यही इन सब वानरोंके वाहक है ॥२८–२९ ॥

हे राजन् ! इस यूथपका प्रमाथी नाम है जिसको पवनसे उद्धत मेघके समान चलते देखते हो ॥ ३० ॥ जिसकी सेना क्रोधयुक्त वेगसे चलती पवनसे कंपाती हुई देखते हो ॥ ३१ ॥ चारों ओरसे जिस सेनाके वानरोंकी उडाई धूलि देखते हो इन उज्ज्वल मुखके समान महाबली गोपुच्छ वानरोंको देखते हो ॥ ३२ ॥ जो करोडों सेतुबन्धके स्थानपर दिखाई देते हैं हे महाराज इन गोपुच्छोंका स्वामी गवाक्षनाम यूथप है ॥३३॥ उसीको घेरकर गोपुच्छ वानर अपने पराक्रमसे लङ्कामर्दन किया चाहते हैं ॥३४॥ जिसपर वृक्ष सब समयमें अभीष्ट फल दिया करते हैं तथा फल फूलोंसे भ्रमरसे युक्त रहते हैं अपने समान अरुणरंग होनेके कारण जिस पर्वतकी सूर्य प्रदक्षिणा करते हैं ॥ ३५ ॥ जिसके कंगूरोंको महात्मा महर्षि लोग नहीं छोडते जिसके तेज योगसे वहांके पशु पक्षी भी उसी वर्णसे युक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सर्वकामफला वृक्षाः सर्वे फलसमन्विताः ।
मधूनि च महार्हाणि यस्मिन्पर्वतसत्तमे ३७
तत्रैष रमते राजन्रम्ये काञ्चनपर्वते ।
मुख्यो वानरमुख्यानां केसरी नाम यूथपः ३८
षष्टिर्गिरिसहस्राणि रम्याः काञ्चनपर्वताः ।
तेषां मध्ये गिरिवरस्त्वमिवानघ रक्षसाम् ३९
तत्रैके कपिलाः श्वेतास्ताम्रास्या मधुपिङ्गलाः ।
निवसन्त्यन्तिमगिरौ तीक्ष्णदंष्ट्रा नखायुधाः ४०
सिंहा इव चतुर्दंष्ट्रा व्याघ्रा इव दुरासदाः ।
सर्वे वैश्वानरसमा ज्वलदाशीविषोपमाः ४१
सुदीर्घाञ्चितलाङ्गूला मत्तमातङ्गसंनिभाः ।
महापर्वतसंकाशा महाजीमूतनिःस्वनाः ४२
वृत्तपिङ्गलनेत्रा हि महाभीमगतिस्वनाः ।
मर्दयन्तीव ते सर्वे तस्थुर्लङ्कां समीक्ष्य ते ४३
एष चैषामधिपतिर्मध्ये तिष्ठति वीर्यवान् ।

...रहते हैं ॥३६॥ जिसपर बहुमूल्य मधु आदि मीठी चीजें होती हैं जिसपर ...वृक्ष सब समयमें अभीष्ट फल दिया करते हैं ॥३७॥ हे राजन् उस रम्य ...सुवर्णके पहाडपर जयकेशरी नाम यूथपोंका यूथपति रहता है ॥ ३८ ॥ ...रमणीय सुवर्ण युक्त पर्वत ६० हजार हैं व जिस तरह राक्षसोंके मध्यमें ...निष्पाप तू श्रेष्ठ है उसी तरह उसमें सावर्णि मेरु करके एक पर्वत ...॥ ३९ ॥ वहां श्वेत ताम्र अरुण तथा मधु रंगके बहुतसे वानर रहते हैं ...तीक्ष्ण दांत व नख ही आयुध हैं ॥ ४० ॥ सब चौदन्ते सिंहोंके समान तथा ...व्याघ्रोंके समान दुरासद सब अग्नि समान देदीप्यमान विषधर सर्पोंके समान ...भयङ्कर ॥ ४१ ॥ तथा बडी लम्बी चौडी पूंछ रखते हैं सब पर्वताकार तथा ...बादलोंके शब्दके समान गर्जनेवाले ॥ ४२ ॥ नेत्र तथा सबकी चाल व ...पद भयानक हैं ये सब ऐसे देख पडते हैं मानो लंकाका मर्दन ही करनेको ...होते हैं ॥ ४३ ॥ इनमें जो बडा वीर्यवान् बीचमें स्थित है जयके लिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जयार्थी नित्यमादित्यमुपातिष्ठति वीर्यवान् ४४
नाम्ना पृथिव्यां विख्यातो राजञ्शतबलीति यः।
एषैवाशंसते लङ्कां स्वेनानीकेन मर्दितुम् ४५
विक्रान्तो बलवाञ्छूरः पौरुषे स्वे व्यवस्थितः।
रामप्रियार्थं प्राणानां दयां न कुरुते हरिः ४६
गजो गवाक्षो गवयो नलो नीलश्च वानरः।
एकैकमेव योधानां कोटिभिर्दशभिर्वृतः ४७
तथान्ये वानरश्रेष्ठा विंध्यपर्वतवासिनः।
न शक्यन्ते बहुत्वात्तु संख्यातुं लघुविक्रमाः ४८
सर्वे महाराज महाप्रभावाः सर्वे महाशैलनिकाशकायाः।
सर्वे समर्थाः पृथिवीं क्षणेन कर्तुं प्रविध्वस्तविकीर्णशैलाम्

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकांडे सप्तविंशः सर्गः ॥२७॥[१००

॥ अष्टाविंशः सर्गः ॥

सारणस्य वचः श्रुत्वा रावणं राक्षसाधिपम्।
बलमादिश्य तत्सर्वं शुको वाक्यमथाब्रवीत् १

सूर्यका उपस्थान करता है ॥ ४४ ॥ पृथ्वीमें इसका शतबलि नाम है अपनी ही सेनासे लंकाको मर्दन किया चाहता है ॥ ४५ ॥ ये वानर परा बलाढ्य व शूर होते हुए अपने पराक्रमपर अवलम्बन रहनेवाले हैं रामका प्रिय करनेके लिये प्राणपर दया नहीं करते ॥ ४६ ॥ गवाक्ष गवय नल नील इनमें एक वानर वीरके साथ दश करोड रहते हैं ॥ ४७ ॥ इनके अतिरिक्त और भी बहुत वानर हैं जो विन्ध्या पर्वतपर रहते हैं बहुत होनेके कारण इन लघुपराक्रमी सब वानरोंकी नहीं हो सकती ॥ ४८ ॥ हे महाराज! सभी महापराक्रमी सभीकी शरीर बडे पर्वतके समान हैं और सभी ऐसे हैं कि एक क्षणमें सम्पूर्ण पृथ्वी पर्वतोंको तोडनेमें समर्थ हैं ॥ ४९ ॥

॥ यहाँ २७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

सारणकी बात सुन शुक रावणसे राम बलका वृत्तान्त कहने लगा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स्थितान्पश्यसि यानेतान्मत्तानिव महाद्विपान् ।
न्यग्रोधानिव गाङ्गेयान्सालान्हैमवतानिव २
एते दुष्प्रसहा राजन्बलिनः कामरूपिणः ।
दैत्यदानवसंकाशा युद्धे देवपराक्रमाः ३
एषां कोटिसहस्राणि नव पञ्च च सप्त च ।
तथा शङ्कुसहस्राणि तथा वृन्दशतानि च ४
एते सुग्रीवसचिवाः किष्किन्धानिलयाः सदा ।
हरयो देवगन्धर्वैरुत्पन्नाः कामरूपिणः ५
यौ तौ पश्यसि तिष्ठन्तौ समानौ देवरूपिणौ ।
मैन्दश्च द्विविदश्चैव ताभ्यां नास्ति समो युधि ६
ब्रह्मणा समनुज्ञाता अमृतप्राशिनावुभौ ।
आशंसेते यथा लङ्कामेतौ मर्दितुमोजसा ७
यं तु पश्यसि तिष्ठन्तं प्रभिन्नमिव कुञ्जरम् ।
यो बलात्क्षोभयेत्क्रुद्धः समुद्रमपि वानरः ८
एषोऽभिगन्ता लङ्कायां वैदेह्यास्तव च प्रभो ।
एनं पश्य पुरा दृष्टं वानरं पुनरागतम् ९
ज्येष्ठः केसरिणः पुत्रो वातात्मज इति श्रुतः ।

राजन् ! जिसको मत्त गज और हिमालयके साखूके पेडोंके समान स्थित देखते हो ॥ २ ॥ ये बडे दुःख सहनके योग्य युद्धमें देवता दैत्य व दानवोंके सा बल रखते हैं ॥ ३ ॥ इन वानरोंकी तादाद पचास संख नव्वे अर्ब सात लाख हैं ॥ ४ ॥ इतने सुग्रीवके मन्त्री देवता व गन्धर्व ही वानरोंकी जातिमें उत्पन्न हुए हैं सो वे सब यथेच्छरूपधारी हैं ॥ ५ ॥ और ये जो दो वानर एक ही से दिखाई पडते हैं ये द्विविद मैंद हैं ॥ ६ ॥ यें भी अपने पराक्रमसे लङ्का मर्दन करनेको तय्यार हैं ॥ ७ ॥ वह जिसे मदान्ध हस्तीके तुल्य देखते हो वह सागरको भी क्षुभित कर सकता है ॥ ८ ॥ यह लङ्कामें जानकीके व तुम्हारे पास आया था इसको देख चुके हो, इसे देखिये ॥ ९ ॥ यह केसरीका पुत्र हनुमान् है और इसीने समुद्रका

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हनूमानिति विख्यातो लङ्घितो येन सागरः १०
कामरूपो हरिश्रेष्ठो बलरूपसमन्वितः।
अनिवार्यगतिश्चैव यथा सततगः प्रभुः ११
उद्यन्तं भास्करं दृष्ट्वा बालः किल बुभुक्षितः।
त्रियोजनसहस्रं तु अध्वानमवतीर्य हि १२
आदित्यमाहरिष्यामि न मे क्षुत्प्रतियास्यति।
इति निश्चित्य मनसा पुप्लुवे बलदर्पितः १३
अनाधृष्यतमं देवमपि देवर्षिराक्षसैः।
अनासाद्यैव पतितो भास्करोदयने गिरौ १४
पतितस्य कपेरस्य हनुरेका शिलातले।
किंचिद्भिन्ना दृढहनुर्हनूमानेष तेन वै १५
सत्यमागमयोगेन ममैष विदितो हरिः।
नास्य शक्यं बलं रूपं प्रभावो वानुभाषितुम् ॥
एष आशंसते लङ्कामेको मथितुमोजसा १६
येन जाज्वल्यतेऽसौ वै धूमकेतुस्तवाद्य वै।
लङ्कायां निहितश्चापि कथं विस्मरसे कपिम् १७
यस्यैषोऽनन्तरः शूरः श्यामः पद्मनिभेक्षणः।
इक्ष्वाकूणामतिरथो लोके विश्रुतपौरुषः १८

उल्लंघन किया है ॥ १० ॥ यह वानरश्रेष्ठ यथेच्छ रूपधारी बल रूप
है ॥ ११ ॥ यह जब बालक ही था तो प्रातः उदित सूर्यको देख तीन ह
योजन ऊपरको कूद गया यह विचार कि सूर्यको खींच लावें यह ब
घमण्डसे उछला ॥ १२-१३ ॥ परन्तु सूर्यको तो न पकड सका
जिस गिरिपर सूर्योदय होता है उसीपर गिर पडा ॥ १४ ॥

गिरनेसे इसकी ठूड्डी कुछ टूट गई इसीले हनूमान् कहलाया ॥ १५ ॥ इ
बल, रूप तथा प्रभावका कौन वर्णन कर सकता, यह अकेला ही
सामर्थ्यसे लंकाको विध्वंस करना चाहता है ॥ १६ ॥ मुझे इसीका
हाल ज्ञात हुआ है पर इसका बल व प्रभाव नहीं कह सकते ॥ १७ ॥
अकेला ही लङ्काको उन्मथित करनेको कहता है ॥ १८ ॥ यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यस्मिन्न चलते धर्मो यो धर्मं नातिवर्तते ।
यो ब्राह्ममस्त्रं वेदांश्च वेद वेदविदां वरः १९
यो भिन्द्याद्गगनं बाणैर्मेदिनीं वापि धारयेत् ।
यस्य मृत्योरिव क्रोधः शक्रस्येव पराक्रमः २०
यस्य भार्या जनस्थानात्सीता चापि हृता त्वया ।
स एष रामस्त्वां राजन्योद्धुं समभिवर्तते २१
यस्यैष दक्षिणे पार्श्वे शुद्धजाम्बूनदप्रभः ।
विशालवक्षास्ताम्राक्षो नीलकुञ्चितमूर्धजः २२
एषो हि लक्ष्मणो नाम भ्रातुः प्रियहिते रतः ।
नये युद्धे च कुशलः सर्वशस्त्रभृतां वरः २३
अमर्षी दुर्जयो जेता विक्रान्तश्च जयी बली ।
रामस्य दक्षिणो बाहुर्नित्यं प्राणो बहिश्चरः २४
न ह्येष राघवस्यार्थे जीवितं परिरक्षति ।
एषैवाशंसते युद्धे निहन्तुं सर्वराक्षसान् २५
यस्य सव्यमसौ पक्षं रामस्याश्रित्य तिष्ठति ।
रक्षोगणपरिक्षिप्तो राजा ह्येष विभीषणः २६
श्रीमता राजराजेन लङ्कायामभिषेचितः ।
त्वामसौ प्रतिसंरब्धो युद्धायैषोऽभिवर्तते २७

हनुमान्के समीप बैठे हैं जोकि श्याम स्वरूप इक्ष्वाकुवंशियोंमें बडे शूर हैं ॥ १९ ॥ धर्म सदा उनमें स्थित रहता है वे धर्मका उल्लंघन कभी नहीं करते तथा वेद वेदाङ्ग जाननेवालोंके शिरोमणि हैं ॥ २० ॥ जिनका क्रोध मृत्युके समान है पराक्रम इन्द्रके तुल्य है ॥ २१ ॥ जिनकी भार्या जनस्थानसे तुम हरलाये हो यही राम युद्ध करनेके लिये आए हैं ॥ २२ ॥ जिनका रङ्ग तप्त सुवर्णके रङ्गका है ॥ २३ ॥

रामकी दाहिनी ओर बैठे हैं इनका लक्ष्मण नाम है ये अपने भाईका हित करनेमें निरत रहते हैं ॥ २४ ॥ ये अमर्षी, दुर्जय विजयी रामका मानो दक्षिण हस्त है ॥ २५ ॥ ये रामके कार्यके लिये अपने प्राणोंकी भी रक्षा नहीं करते ॥ २६ ॥ जो रामकी बाईं ओर बैठे हैं वे राजा बिभीषण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

यं तु पश्यसि तिष्ठन्तं मध्ये गिरिमिवाचलम् ।
सर्वशाखामृगेन्द्राणां भर्तारममितौजसम् २८
तेजसा यशसा बुद्ध्या बलेनाभिजनेन च ।
यः कपीनतिबभ्राज हिमवानिव पर्वतः २९
किष्किन्धां यः समध्यास्ते दुर्गां सगहनद्रुमाम् ।
दुर्गां पर्वतदुर्गस्थां प्रधानैः सह यूथपैः ३०
यस्यैषा काञ्चनी माला शोभते शतपुष्करा ।
कान्ता देवमनुष्याणां यस्यां लक्ष्मीः प्रतिष्ठिता ३१
एतां मालां च तारां च कपिराज्यं च शाश्वतम् ।
सुग्रीवो वालिनं हत्वा रामेण प्रतिपादितः ३२
शतं शतसहस्राणां कोटिमाहुर्मनीषिणः ।
शतं कोटिसहस्राणां शङ्कुरित्यभिधीयते ३३
शतं शङ्कुसहस्राणां महाशङ्कुरिति स्मृतः ।
महाशङ्कुसहस्राणां शतं वृन्दमिहोच्यते ३४
शतं वृन्दसहस्राणां महावृन्दमिति स्मृतम् ।
महावृन्दसहस्राणां शतं पद्ममिहोच्यते ३५
शतं पद्मसहस्राणां महापद्ममिति स्मृतम् ।
महापद्मसहस्राणां शतं खर्वमिहोच्यते ३६

हैं ॥ २७ ॥ श्रीरामने इनको लङ्केश्वर बनाया है ॥ २८ ॥ जिन्हें [सं]
मध्यमें अचल बैठे देखते हो वे सब वानर सेनाके स्वामी हैं ॥ २९ ॥ ते[ज]
यश, बुद्धि बल आदिसे सबसे अधिक शोभित होते हैं ॥ ३० ॥ किष्कि[न्]
धामें मुख्य मुख्य वानरोंके यूथपोंके संग सदा रहते हैं ॥ ३१ ॥ जो श[त]
पुष्पोंके पुष्पोंकी तथा सुवर्णकी माला धारे हैं ॥ ३२ ॥ यह माला [ता]
तथा वानरराज्य वालीको मार रामने सुग्रीवको दिया है ॥ ३३ ॥
सौ लाखका एक करोड होता है हजार करोडको सौसे गुणा करनेसे [ए]
शंकु होता है ॥ ३४ ॥ हजार शंकुको सौसे गुणा करनेसे महाशंकु होता
हजार महाशंकुको सौसे गुणा करनेसे वृन्द होता है हजार वृन्दको सौ[से]
गुणा करनेसे महावृन्द होता है हजार महावृन्दको सौसे गुणा करनेसे प[द्म]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शतं खर्वसहस्राणां समुद्रमभिधीयते।
शतं समुद्रसाहस्रं महौघमिति विश्रुतम् ३७
एवं कोटिसहस्रेण शङ्कूनां च शतेन च।
महाशङ्कुसहस्रेण तथा वृन्दशतेन च ३८
महावृन्दसहस्रेण तथा पद्मशतेन च।
महापद्मसहस्रेण तथा खर्वशतेन च ३९
समुद्रेण च तेनैव महौघेन तथैव च।
एष कोटीमहौघेन समुद्रसदृशेन च ४०
विभीषणेन वीरेण सचिवैः परिवारितः।
सुग्रीवो वानरेन्द्रस्त्वां युद्धार्थमनुवर्तते ४१
महाबलवृतो नित्यं महाबलपराक्रमः ४२
इमां महाराज समीक्ष्य वाहिनीमुपस्थितां प्रज्वलितग्रहोपमाम्।
ततः प्रयत्नः परमो विधीयतां यथा जयः स्यान्न परैः पराभवः ४३

इत्यार्षे श्रीमद्रा०वाल्मी०आदिकाव्ये युद्धकाण्डे अष्टाविंशः सर्गः ॥ २८ ॥ [१०४३]

होता है ॥ ३५-३६ ॥ हजार पद्मको सौसे गुणनेसे महापद्म होता है हजार महापद्मोंको सौसे गुणनेसे खर्व होता है ॥ ३७ ॥ हजार खर्वको सौसे गुणनेसे समुद्र होता है हजार समुद्रको सौसे गुणनेसे महौघ कहलाता है ॥ ३८ ॥

इस हिसाबसे हजार करोड सौ शङ्कु हजार महाशङ्कु सौ वृन्द ॥ ३९ ॥ हजार महावृन्द सौ पद्म हजार महापद्म सौ खर्व ॥ ४० ॥ सौ समुद्र सौ महौघ करोड महौघ तथा करोड समुद्र इतनी सेना और विभीषण तथा अपने मन्त्री साथ लिये वानरोंके इन्द्र सुग्रीव तुमको युद्ध करनेके लिये आह्वान करते हैं ॥ ४१-४२ ॥ हे महाराज ! मानो प्रज्वलित ग्रहके समान यह प्राप्त हुई सेना देखकर आप शत्रुके हाथों पराभूत न होकर जय प्राप्त्यर्थ उत्कृष्ट यत्न करें ॥ ४३ ॥

॥ यहाँ २८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

॥ एकोनात्रिंशः सर्गः ॥

शुकेन तु समादिष्टान्दृष्ट्वा स हरियूथपान्।
लक्ष्मणं च महावीर्यं भुजं रामस्य दक्षिणम् १
समीपस्थं च रामस्य भ्रातरं च विभीषणम्।
सर्ववानरराजं च सुग्रीवं भीमविक्रमम् २
अङ्गदं चापि बलिनं वज्रहस्तात्मजात्मजम्।
हनूमन्तं च विक्रान्तं जाम्बवन्तं च दुर्जयम् ३
सुषेणं कुमुदं नीलं नलं च प्लवगर्षभम्।
गजं गवाक्षं शरभं मैन्दं च द्विविदं तथा ४
किंचिदाविग्नहृदयो जातक्रोधश्च रावणः।
भर्त्सयामास तौ वीरौ कथान्ते शुकसारणौ ५
अधोमुखौ तौ प्रणतावब्रवीच्छुकसारणौ।
रोषगद्गदया वाचा संरब्धं परुषं तथा ६
न तावत्सदृशं नाम सचिवैरुपजीविभिः।
विप्रियं नृपतेर्वक्तुं निग्रहे प्रग्रहे प्रभोः ७
रिपूणां प्रतिकूलानां युद्धार्थमभिवर्तताम्।
उभाभ्यां सदृशं नाम वक्तुमप्रस्तवे स्तवम् ८
आचार्या गुरवो वृद्धा वृथा वां पर्युपासिताः।
सारं यद्राजशास्त्राणामनुजीव्यं न गृह्यते ९

उन वानरयूथपों व महापराक्रमी लक्ष्मणको ॥ १ ॥ रामके समीप विभीषणको वानरराजको ॥ २ ॥ महाबली अङ्गद महाविक्रान्त हनुमा जाम्बवान्को ॥ ३ ॥ तथा सुषेण कुमुद नील नल गज गवाक्ष शरभ द्विविदको ॥ ४ ॥ देख कुछ उद्विग्न हो रावणने वृत्तान्त सुननेके पीछे सारणका बड़ा अपमान किया ॥ ५ ॥ नीचेको मुख किये शुक सा क्रोधसे कठोर वाणी बोला कि ॥ ६ ॥ उपजीवी मन्त्रियोंको ऐसा वच कहना चाहिये जो राजाको अप्रिय लगे ॥ ७ ॥ हमारे शत्रुओंकी प्र बिना प्रसंगके की, यह तुमको उचित न था ॥ ८ ॥

राजनीतिके सारांशके अनुसार तुम लोगोंको जीवनोपाय नहीं आता ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गृहीतो वा न विज्ञातो भारोऽज्ञानस्य वाह्यते।
ईदृशैः सचिवैर्युक्तो मूर्खैर्दिष्ट्या धराम्यहम् १०
किं तु मृत्योर्भयं नास्ति मां वक्तुं परुषं वचः।
यस्य मे शासतो जिह्वा प्रयच्छति शुभाशुभम् ११
अप्येव दहनं स्पृष्ट्वा वने तिष्ठन्ति पादपाः।
राजदण्डपरामृष्टास्तिष्ठन्ते नापराधिनः १२
हन्यामहं त्विमौ पापौ शत्रुपक्षप्रशंसिनौ।
यदि पूर्वोपकारैर्मे क्रोधो न मृदुतां व्रजेत् १३
अपध्वंसत नश्यध्वं संनिकर्षादितो मम।
न हि वां हन्तुमिच्छामि स्मराम्युपकृतानि वाम्॥
हतावेव कृतघ्नौ द्वौ मयि स्नेहपराङ्मुखौ १४
एवमुक्त्वा तु सव्रीडौ तौ दृष्ट्वा शुकसारणौ।
रावणं जयशब्देन प्रतिनन्द्याभिनिःसृतौ १५
अब्रवीच्च दशग्रीवः समीपस्थं महोदरम्।
उपस्थापय मे शीघ्रं चारानिति निशाचरः १६
महोदरस्तथोक्तस्तु शीघ्रमाज्ञापयच्चरान् १७

कदाचित् तुम लोगोंने राजनीति पढी भी हो पर इस समय बिलकुल भूल गये हो यही बहुत अच्छा है कि ऐसे मूर्ख मन्त्रियोंसे युक्त होकर भी मैं जीता हूं॥ १० ॥ क्या कठोर वचन कहते हुए तुम दोनोंको मृत्युका डर नहीं है॥ ११ ॥ जो अपराधी राजदण्डके योग्य काम करते हैं वे किसी तरह नहीं बच सकते॥ १२ ॥ यदि तुम्हारे पूर्व उपकार मेरे क्रोधको ठण्डा न कर देते तो अभी तुमको मार डालता॥ १३ ॥ इससे अब मेरे पाससे चले जाओ फिर मुंह न दिखाओ॥ १४ ॥ ऐसा कहनेपर शुक सारण दोनों लज्जित हो आपकी जय हो यह कह वहांसे चले गये॥ १५ ॥ निकटस्थ महोदर राक्षससे रावण बोला कि दूतोंको शीघ्र बुलाओ॥ १६॥ राजाज्ञासे सब दूत शीघ्र ही वहां प्राप्त हो॥ १७ ॥ राजाकी आज्ञानुसार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ततश्चाराः संत्वरिताः प्राप्ताः पार्थिवशासनात्।
उपस्थिताः प्राञ्जलयो वर्धयित्वा जयाशिषः ॥ १८
तानब्रवीत्ततो वाक्यं रावणो राक्षसाधिपः।
चरान्प्रत्यायिकाञ्शूरान्धीरान्विगतसाध्वसान् ॥ १९
इतो गच्छत रामस्य व्यवसायं परीक्षितुम्।
मन्त्रेष्वभ्यन्तरायेस्य प्रीत्या तेन समागताः ॥ २०
कथं स्वपिति जागर्ति किमद्य च करिष्यति।
विज्ञाय निपुणं सर्वमागन्तव्यमशेषतः ॥ २१
चारेण विदितः शत्रुः पण्डितैर्वसुधाधिपैः।
युद्धे स्वल्पेन यत्नेन समासाद्य निरस्यते ॥ २२
चारास्तु ते तथेत्युक्त्वा प्रहृष्टा राक्षसेश्वरम्।
शार्दूलमग्रतः कृत्वा ततश्चक्रुः प्रदक्षिणम् ॥ २३
ततस्तं तु महात्मानं चारा राक्षससत्तमम्।
कृत्वा प्रदक्षिणं जग्मुर्यत्र रामः सलक्ष्मणः ॥ २४
ते सुवेलस्य शैलस्य समीपे रामलक्ष्मणौ।
प्रच्छन्ना ददृशुर्गत्वा ससुग्रीवविभीषणौ ॥ २५

सब गुप्तचर शीघ्र वहां आये और हाथ जोड जय कह खडे हुए ॥ १८ ॥ तब रावण उन दूतोंसे बोला कि राम उनके मन्त्रियों तथा अन्योंका वि... उनके संग आये हों अभिप्राय जाननेके लिये यहांसे जाओ ॥ १९ ॥ रामयह उद्योग चल रहा है ये देखनेके लिये तुम सब यहांसे जाओ, प्रेमसे उनके साथ विचारकर गुप्तरूपसे उसे कौन सलाह देता है ॥ २० ॥ वे किस तरह सोते हैं, किस तरह जागते हैं, अब क्या करेंगे इत्यादि सब जानके शीघ्र ही चले आओ ॥ २१ ॥

चतुर राजा दूतों द्वारा वैरीके आचरण जान थोडे ही यत्नसे वैरीको मार देते हैं ॥ २२ ॥ यह सुन वे सब बहुत 'अच्छा' कह हर्षित हो रावण... प्रदक्षिणा करने लगे ॥ २३ ॥ तदनु वे सब दूत जहां लक्ष्मण व राम... वहां पहुंचे ॥ २४ ॥ उन्होंने सुग्रीव, बिभीषण, राम व लक्ष्मणको छिपके देखा ॥ २५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

प्रेक्षमाणाश्चमूं तां च बभूवुर्भयविह्वलाः।
ते तु धर्मात्मना दृष्टा राक्षसेन्द्रेण राक्षसाः २६
विभीषणेन तत्रस्था निगृहीता यदृच्छया।
शार्दूलो ग्राहितस्त्वेकः पापोऽयमिति राक्षसः २७
मोक्षितः सोऽपि रामेण वध्यमानः प्लवङ्गमैः।
अनृशंसेन रामेण मोक्षिता राक्षसाः परे २८
वानरैरर्दितास्ते तु विक्रान्तैर्लघुविक्रमैः।
पुनर्लङ्कामनुप्राप्ताः श्वसन्तो नष्टचेतसः २९
ततो दशग्रीवमुपस्थितास्ते चारा बहिर्नित्यचरा निशाचराः।
गिरेः सुवेलस्य समीपवासि तं न्यवेदयन्भामबलं महाबलाः ३०

इत्यार्षे श्रीमद्वा० वाल्मिकीय आदि० युद्धकाण्डे एकोनविंशः सर्गः ॥२९॥ [१०७३]

॥ त्रिंशः सर्गः ॥

ततस्तमक्षोभ्यबलं लङ्काधिपतये चराः।
सुवेले राघवं शैले निविष्टं प्रत्यवेदयन् १
चाराणां रावणः श्रुत्वा प्राप्तं रामं महाबलम्।
जातोद्वेगोऽभवत्किंचिच्छार्दूलं वाक्यमब्रवीत् २

उस बडी सेनाको देख वे भयसे व्याकुल हुए उसी समय उन राक्षसोंको विभीषणने देख लिया ॥ २६ ॥ और उनमेंसे केवलशार्दूलको पकड कहा कि यह बडा पापी है ॥ २७ ॥ यह सुन वानरोंने उसको बांध लिया पर रामने उसे भी छुडा दिया तथा अन्य भी राक्षस छुडा दिये गये ॥ २८ ॥ पराक्रमी वानरोंसे पीडित हो वे ऊर्ध्वश्वास लेते हुए लङ्काको चले गये ॥ २९ ॥ तदनंतर सदैव परदेशमें संचार करनेवाले व महाबलाढ्य राक्षस गुप्तचर रावणके पास आये और सुबेल पर्वतके पास रामसेनाके ठहरनेकी सूचना दी ॥ ३० ॥

॥ यहाँ २९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः वे दूत सुवेल पर्वतके पास ठहरे हुए रामका रावणसे वृत्त कहने लगे ॥ १ ॥ रामका आना दूतोंसे सुन रावण कुछ व्याकुल हो शार्दूलसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अयथावच्च ते वर्णो दीनश्चासि निशाचर ।
नासि कच्चिदमित्राणां क्रुद्धानां वशमागतः ३
इति तेनानुशिष्टस्तु वाचं मन्दमुदीरयन् ।
तदा राक्षसशार्दूलं शार्दूलो भयविक्लवः ४
न ते चारयितुं शक्या राजन्वानरपुङ्गवाः ।
विक्रान्ता बलवन्तश्च राघवेण च रक्षिताः ५
नापि संभाषितुं शक्याः संप्रश्नोऽत्र न लभ्यते ।
सर्वतो रक्ष्यते पन्था वानरैः पर्वतोपमैः ६
प्रविष्टमात्रे ज्ञातोऽहं बले तस्मिन्विचारिते ।
बलाद्गृहीतो रक्षोभिर्बहुधाऽस्मि विचारितः ७
जानुभिर्मुष्टिभिर्दन्तैस्तलैश्चाभिहतो भृशम् ।
परिणीतोऽस्मि हरिभिर्बलमध्ये अमर्षणैः ८
परिणीय च सर्वत्र नीतोऽहं रामसंसदि ।
रुधिरस्राविदीनाङ्गो विह्वलश्चलितेन्द्रियः ९
हरिभिर्वध्यमानश्च याचमानः कृताञ्जलिः ।
राघवेण परित्रातो मामेति च यदृच्छया १०
एष शैलशिलाभिस्तु पूरयित्वा महार्णवम् ।

बोला ॥ २ ॥ हे राक्षस तुम कुछ दुःखी विदित होते हो क्या शत्रु[...]
वशमें पड गये थे ॥ ३ ॥ रावणके पूछनेपर शार्दूल धीरे धीरे रा[...]
बोला ॥ ४ ॥ राजन् ! उन पराक्रमी राम रक्षित वानरोंका वृत्त [...]
नहीं मिल सकता ॥ ५ ॥ क्योंकि उनसे कोई बोल नहीं सकता फिर [...]
कैसा वे मार्ग अवरुद्ध किये हैं ॥ ६ ॥

वहां पहुंचतेही मुझे विभीषणके अनुचरोंने पकडा और इधर [...]
घुमाकर ॥ ७ ॥ वानरोंने मुझे ताडित किया ॥ ८ ॥ और फिर रामके [...]
ले गये उस समय अङ्गोंसे रक्त बहनेके कारण मैं व्यथित होरहा था ॥ [...]
पीटे जानेपर हाथ जोडं रामसे प्रार्थना की तब उन्होंने मत मारो यह [...]
मुझे बचा लिया ॥ १० ॥ राम समुद्रमें पुल बांध उतर कर लङ्काके [...]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

द्वारमाश्रित्य लङ्काया रामस्तिष्ठति सायुधः ११
गरुडव्यूहमास्थाय सर्वतो हरिभिर्वृतः ।
मां विसृज्य महातेजा लङ्कामेवातिवर्तते १२
पुरा प्राकारमायाति क्षिप्रमेकतरं कुरु ।
सीतां वापि प्रयच्छाशु युद्धं वापि प्रदीयताम् १३
मनसा तत्तदा प्रेक्ष्य तच्छ्रुत्वा राक्षसाधिपः ।
शार्दूलं सुमहद्वाक्यमथोवाच स रावणः १४
यदि मां प्रतियुध्यन्ते देवगन्धर्वदानवाः ।
नैव सीतां प्रदास्यामि सर्वलोकभयादपि १५
एवमुक्त्वा महातेजा रावणः पुनरब्रवीत् ।
चरिता भवता सेना केऽत्र शूराः प्लवङ्गमाः १६
किंप्रभाः कीदृशाः सौम्य वानरा ये दुरासदाः ।
कस्य पुत्राश्च पौत्राश्च तत्त्वमाख्याहि सुव्रत १७
तथात्र प्रतिपत्स्यामि ज्ञात्वा तेषां बलाबलम् ।
अवश्यं खलु संख्यानं कर्तव्यं युद्धमिच्छता १८
अथैवमुक्तः शार्दूलो रावणेनोत्तमश्चरः ।
इदं वचनमारेभे वक्तुं रावणसंनिधौ १९

...र सशस्त्र बैठे हैं ॥ ११ ॥ वानरोंको संग लिये श्री राम मुझको छुडा ...लङ्काको घेर रहे हैं ॥ १२ ॥ इससे या तो सीता वापिस दे दीजिये या ...युद्ध कीजिये ॥ १३ ॥

... दूतका वचन सुन रावण शार्दूलसे यह बोला ॥ १३ ॥ यदि समस्त ...संसारकी ओरसे भय हो तौ भी सीता वापिस न दूंगा ॥ १५ ॥ रावण ...उससे फिर बोला कि सेनाको तो अच्छी तरहसे देखा ही है बताओ कौन ...न वानर महाशूर हैं ॥ १७ ॥ हे सुव्रत ! जो वानर दुरासद हैं वे कैसे ... कैसी प्रभावाले हैं उन लोगोंका बलाबल जान मैं भी वैसी ही तैयारी ... उनके पास पहुंचूं ॥ १८ ॥ तब शार्दूल रावणसे कहने लगा ॥ १९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अथर्क्षरजसः पुत्रो युधि राजन्सुदुर्जयः।
गद्गदस्याथ पुत्रोऽत्र जाम्बवानिति विश्रुतः २०
गद्गदस्याथ पुत्रोऽन्यो गुरुपुत्रः शतक्रतोः।
कदनं यस्य पुत्रेण कृतमेकेन रक्षसाम् २१
सुषेणश्चात्र धर्मात्मा पुत्रो धर्मस्य वीर्यवान्।
सौम्यः सोमात्मजश्चात्र राजन्दधिमुखः कपिः २२
सुमुखो दुर्मुखश्चात्र वेगदर्शी च वानरः।
मृत्युर्वानररूपेण नूनं सृष्टः स्वयंभुवा २३
पुत्रो हुतवहस्यात्र नीलः सेनापतिः स्वयम्।
अनिलस्य तु पुत्रोऽत्र हनूमानिति विश्रुतः २४
नप्ता शक्रस्य दुर्धर्षो बलवानङ्गदो युवा।
मैन्दश्च द्विविदश्चोभौ बलिनावश्विसंभवौ २५
पुत्रा वैवस्वतस्याथ पञ्च कालान्तकोपमाः।
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः २६
दश वानरकोट्यश्च शूराणां युद्धकाङ्क्षिणाम्।
श्रीमतां देवपुत्राणां शेषं नाख्यातुमुत्सहे २७

राजन् जाम्बवान् नाम वानर युद्धमें अतिदुर्जय है ॥ २० ॥

धूम्र तथा बृहस्पतिका पुत्र भी है जो केसरी नामसे प्रसिद्ध है जि
पुत्र हनुमानके अकेले ही राक्षसोंका अपमान किया था ॥ २१ ॥ ध
पुत्र सुषेण तथा चन्द्रमाका पुत्र दधिमुख भी आया है ॥ २२ ॥ सु
दुर्मुखको तो वानरके रूपमें ब्रह्माने मानो मृत्यु ही को उत्पन्न कि
है ॥ २३ ॥ अग्निका पुत्र नील सेनापति है, हनुमान भी आया है ॥ २
इन्द्रका पौत्र तथा महाबली मैन्द और द्विविद भी हैं ॥ २५ ॥ गज
गवय शरभ तथा गन्ध मादन ये पांच वैवस्वतके पुत्र हैं ॥ २६ ॥

दशकरोड़ वानर युद्धकी इच्छासे यहां आये हैं ॥ २७ ॥ जिन्होंने शेष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पुत्रो दशरथस्यैष सिंहसंहननो युवा।
दूषणो निहतो येन खरश्च त्रिशिरास्तथा २८
नास्ति रामस्य सदृशो विक्रमे भुवि कश्चन।
विराधो निहतो येन कबन्धश्चान्तकोपमः २९
वक्तुं न शक्तो रामस्य गुणान्कश्चिन्नरः क्षितौ।
जनस्थानगता येन तावन्तो राक्षसा हताः ३०
लक्ष्मणश्चात्र धर्मात्मा मातङ्गानामिवर्षभः।
यस्य बाणपथं प्राप्य न जीवेदपि वासवः ३१
श्वेतो ज्योतिर्मुखश्चात्र भास्करस्यात्मसंभवौ।
वरुणस्याऽथ पुत्रोऽथ हेमकूटः प्लवङ्गमः ३२
विश्वकर्मसुतो वीरो नलः प्लवगसत्तमः।
विक्रान्तो वेगवानत्र वसुपुत्रः स दुर्धरः ३३
राक्षसानां वरिष्ठश्च तव भ्राता विभीषणः।
प्रतिगृह्य पुरीं लङ्कां राघवस्य हिते रतः ३४
इति सर्वं समाख्यातं तथा वै वानरं बलम्।
सुवेलेऽधिष्ठितं शैले शेषकार्ये भवान्गतिः ३५

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे त्रिंशः सर्गः ॥ ३० ॥ [११०८]

खर त्रिशिराको मारा है वे सिंहके पराक्रमको भी नाश करनेवाले राम दशरथके पुत्र हैं ॥ २८ ॥ विराध व कबन्धके घातक रामके तुल्य पराक्रमी कोई भी नहीं है ॥ २९ ॥ जनस्थानमें रहनेवाले राक्षसोंके हन्ता रामके गुण कोई नहीं कह सकता ॥ ३० ॥

धर्मात्मा लक्ष्मण भी यहीं है जिनके सामने इन्द्र भी नहीं जीत सकता ॥ ३१ ॥ सूर्यके पुत्र श्वेत व ज्योतिर्मुख हेमकूट नाम वानर ॥ ३२ ॥ भी वहां है विश्वकर्माका पुत्र नल तथा दुर्धरनाम वसवोंका पुत्र भी है ॥ ३३ ॥ और भाई बिभीषण भी राम द्वारा लङ्का राज्यको पाकर उन्हींके हितमें संलग्न है ॥ ३४ ॥ यह सेना सुवेल पर्वतपर पडी है अब शेष जो करना सो आप ही निश्चय करें ॥ ३५ ॥

॥ यहाँ ३० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एकत्रिंशः सर्गः ।

ततस्तमक्षोभ्यबलं लङ्कायां नृपतेश्चराः ।
सुवेले राघवं शैले निविष्टं प्रत्यवेदयन् १
चाराणां रावणः श्रुत्वा प्राप्तं रामं महाबलम् ।
जातोद्वेगोऽभवत्किंचित्सचिवानिदमब्रवीत् २
मन्त्रिणः शीघ्रमायान्तु सर्वे वै सुसमाहिताः ।
अयं नो मन्त्रकालो हि संप्राप्त इति राक्षसाः ३
तस्य तच्छासनं श्रुत्वा मन्त्रिणोऽभ्यागमन्द्रुतम् ।
ततः स मन्त्रयामास राक्षसैः सचिवैः सह ४
मन्त्रयित्वा तु दुर्धर्षः क्षमं यत्तदनन्तरम् ।
विसर्जयित्वा सचिवान्प्रविवेश स्वमालयम् ५
ततो राक्षसमादाय विद्युज्जिह्वं महाबलम् ।
मायाविनं महामायं प्राविशद्यत्र मैथिली ६
विद्युज्जिह्वं च मायाज्ञमब्रवीद्राक्षसाधिपः ।
मोहयिष्यावहे सीतां मायया जनकात्मजाम् ७
शिरो मायामयं गृह्य राघवस्य निशाचर ।
मां त्वं समुपातिष्ठस्व महच्च सशरं धनुः ८

ततः रावणसे दूतोंने राम व उनकी सेनाका हाल कहा ॥ १ ॥ राम लंकाके पास आया सुन रावण उद्विग्न हो मन्त्रियोंसे बोला ॥ २ ॥ कि मंत्रणा करनेका समय आया है शीघ्र ही यहां आओ ॥ ३ ॥ ऐसी आज्ञा पाकर मन्त्रीगण शीघ्र ही वहां आये तब रावण मान्त्रियोंके साथ मन्त्रणा करने लगा ॥ ४ ॥ जो कुछ योग्य था उसका विचार कर अमात्योंको विदाकर रावण स्वस्थानको चला गया ॥ ५ ॥

ततः विद्युज्जिह्व नामक राक्षसको साथले रावण सीताके पास पहुंचा ॥ विद्युज्जिह्वसे रावण बोला कि हम दोनों मायासे सीताको मोहित करें ॥ हे राक्षस ! तुम रामका मायामय शिर ला तथा सुन्दर धनुषबाण बना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एवमुक्तस्तथेत्याह विद्युज्जिह्वो निशाचरः ।
दर्शयामास तां मायां सुप्रयुक्तां स रावणे ९
तस्य तुष्टोऽभवद्राजा प्रददौ च विभूषणम् ।
अशोकवनिकायां च सीतादर्शनलालसः ॥
नैर्ऋतानामधिपतिः संविवेश महाबलः १०
ततो दीनामदीनार्हां ददर्श धनदानुजः ।
अधोमुखीं शोकपरामुपविष्टां महीतले ११
भर्तारं समनुध्यान्तीमशोकवनिकां गताम् ।
उपास्यमानां घोराभी राक्षसीभिरदूरतः १२
उपसृत्य ततः सीतां प्रहर्षं नाम कीर्तयन् ।
इदं च वचनं धृष्टमुवाच जनकात्मजाम् १३
सान्त्व्यमाना मया भद्रे यमाश्रित्य विमन्यसे ।
खरहन्ता स ते भर्ता राघवः समरे हतः १४
छिन्नं ते सर्वथा मूलं दर्पश्च निहतो मया ।
व्यसनेनात्मनः सीते मम भार्या भविष्यसि १५

पास लावो ॥ ८ ॥ रावणकी बात सुन विद्युज्जिह्वने रावणको स्वमायासे शिरादि बनाकर दिखाया ॥ ९ ॥

रावण उससे बडा प्रसन्न हुआ और उसे कुछ भूषण दे सीताके देखनेकी इच्छासे अशोकवाटिकामें राक्षसाधिपति महाबलाढ्य रावण प्रवेश किया ॥ १० ॥ और दुःखित जानकीको रावणने देखा जो नीचेको मुख किये पृथ्वीपर बैठी ॥ ११ ॥ श्रीरामका ध्यान कर रही थी पास ही राक्षसियां बैठी थीं ॥ १२ ॥ तब रावण वहां जा अपना नाम कह बडी ढिठाईसे बोला ॥ १३ ॥ हे सीते ! जिसके आश्रित हो तुम मेरी प्रार्थना नहीं मानती हो, वह तुम्हारा पति राम युद्धमें मारा गया ॥ १४ ॥ अब तुम्हारी सब आशाओंकी जड नष्ट हो गयी और तुम्हारा अभिमान भी मैंने नष्ट कर दिया अब तुम स्वयं दुःखके मारे मेरी भार्या बनोगी ॥ १५ ॥ हे मूढे ! अब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विसृजैतां मतिं मूढे किं मृतेन करिष्यसि।
भवस्व भद्रे भार्याणां सर्वासामीश्वरी मम १६
अल्पपुण्ये निवृत्तार्थे मूढे पण्डितमानिनि।
शृणु भर्तृवधं सीते घोरं वृत्रवधं यथा १७
समायातः समुद्रान्तं हन्तुं मां किल राघवः।
वानरेन्द्रप्रणीतेन बलेन महता वृतः १८
संनिविष्टः समुद्रस्य पीड्यतीरमथोत्तरम्।
बलेन महता रामो व्रजत्यस्तं दिवाकरे १९
अथाध्वनि परिश्रान्तमर्धरात्रे स्थितं बलम्।
सुखसुप्तं समासाद्य चरितं प्रथमं चरैः २०
तत्प्रहस्तप्रणीतेन बलेन महता मम।
बलमस्य हतं रात्रौ यत्र रामः सलक्ष्मणः २१
पट्टिशान्परिघांश्चक्रानृष्टीन्दण्डान्महायुधान्।
बाणजालानि शूलानि भास्वरान्कूटमुद्गरान् २२
यष्टीश्च तोमरान्प्रासांश्चक्राणि मुसलानि च।
उद्यम्योद्यम्य रक्षोभिर्वानरेषु निपातिताः २३
अथ सुप्तस्य रामस्य प्रहस्तेन प्रमाथिना।
असक्तं कृतहस्तेन शिरश्छिन्नं महासिना २४

इस मतिको छोडो, मरे हुए रामको क्या करोगी ? अब मेरी पटरानी
॥१६॥ हे मूढे! हे पण्डितमानिनि! हे पुण्यहीन, हे मनोरथ नष्ट हुई
वृत्रवधके समान तुम अपने भर्ताका घोर वध सुनो ॥ १७ ॥ राम मु
मार डालनेके लिये सुग्रीवकी बडी सेना सागरके उत्तर तटपर ले आये॥
सागरके उत्तर तटपर रामके पहुंचते ही सूर्य अस्त होगया ॥१९॥ सेना
ठहरते अर्द्ध रात्रितक सोगई, उस समय मेरे दूत जाकर देख आये ॥
तब सेनापति प्रहस्तने बडी सेना भेजी उसने रामसेनाको रात्रिहीमें
डाला ॥ २१ ॥ पटा, परिघ, दुधारा, बाण, बडे बडे मुगदरों ॥
लट्ठ, प्रास, आदि शस्त्रोंसे राक्षसोंने वानरोंका हनन कर डाला ॥
तब प्रहस्तने सोता हुआ रामचन्द्रका शिर काट लिया ॥ २४ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

विभीषणः समुत्पात्य निगृहीतो यदृच्छया।
दिशं प्रव्राजितः सैन्यैर्लक्ष्मणः प्लवगैः सह २५
सुग्रीवो ग्रीवया सीते भग्नया प्लवगाधिपः।
निरस्तहनुकः सीते हनूमान्राक्षसैर्हतः २६
जाम्बवानथ जानुभ्यामुत्पतन्निहतो युधि।
पट्टिशैर्बहुभिश्छिन्नो निकृत्तः पादपो यथा २७
मैन्दश्च द्विविदश्चोभौ तौ वानरवर्षभौ।
निःश्वसन्तौ रुदन्तौ च रुधिरेण परीवृतौ २८
असिना व्यायतौ छिन्नौ मध्ये ह्यरिनिषूदनौ।
अनुष्टनाति मेदिन्यां पनसः पनसो यथा २९
नाराचैर्बहुभिश्छिन्नः शेते दर्यां दरीमुखः।
कुमुदस्तु महातेजा निष्कूजन्सायकैर्हतः ३०
अङ्गदो बहुभिश्छिन्नः शरैरासाद्य राक्षसैः।
पतितो रुधिरोद्गारी क्षितौ निपतितोऽङ्गदः ३१
हरयो मथिता नागै रथजालैस्तथापरे।
शयाना मृदितास्तत्र वायुवेगैरिवाम्बुदाः ३२

विभीषणको पकड़ लिया, यह देख बची हुई सेना भाग निकली ॥ २५ ॥ हे जानकि! सुग्रीवका गला काट तथा हनुमानकी दाढी पाड़ राक्षसोंने मार डाला ॥ २६ ॥ जाम्बवान् भी संग्राममें मारे गये ॥ २७ ॥ मैन्द द्विविद दोनों देरतक ऊर्ध्व श्वासें ले ले रोते रहे ॥ २८ ॥ ये दोनों खड्गसे काट डाले गये और पनस भी मरे हुए भूमिपर पड़े हैं ॥ २९ ॥ बाणोंसे कटा हुआ दरीमुख वानर पर्वतकी कन्दरामें सोता है और कुमुद बाणोंसे मार डाला गया ॥ ३० ॥

राक्षसोंने अंगदको भी छिन्न भिन्न कर डाला सो वह भी पृथ्वीमें पड़ा ॥ ३१ ॥ हाथियों और रथोंके नीचे अनेक वानर पिस गये ॥ ३२ ॥ राक्ष-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रसृताश्च परे त्रस्ता हन्यमाना जघन्यतः।
अनुद्रुतास्तु रक्षोभिः सिंहैरिव महाद्विपाः ३३
सागरे पतिताः केचित्केचिद्गगनमाश्रिताः।
ऋक्षा वृक्षानुपारूढा वानरैर्व्यतिमिश्रिताः ३४
सागरस्य च तीरेषु शैलेषु च वनेषु च।
पिङ्गलास्ते विरूपाक्षै राक्षसैर्बहवो हताः ३५
एवं तव हतो भर्ता ससैन्यो मम सेनया।
क्षतजार्द्रं रजोध्वस्तमिदं चास्याहृतं शिरः ३६
ततः परमदुर्धर्षो रावणो राक्षसेश्वरः।
सीतायामुपशृण्वत्यां राक्षसीमिदमब्रवीत् ३७
राक्षसं क्रूरकर्माणं विद्युज्जिह्वं समानय।
येन तद्राघवशिरः सङ्ग्रामात्स्वयमाहृतम् ३८
विद्युज्जिह्वस्तदागृह्य शिरस्तत्सशरासनम्।
प्रणामं शिरसा कृत्वा रावणस्याग्रतः स्थितः ३९
तमब्रवीत्ततो राजा रावणो राक्षसं स्थितम्।
विद्युज्जिह्वं महाजिह्वं समीपपरिवर्तिनम् ४०
अग्रतः कुरु सीतायाः शीघ्रं दाशरथेः शिरः।
अवस्थां पश्चिमां भर्तुः कृपणां साधु पश्यतु ४१

सोंके भयसे अनेक वानर ऐसे भागे जैसे सिंहके भयसे हाथी भागें ॥ कोई समुद्रमें गिरा कोई आकाशको उडा, अनेक वृक्षोंपर चढ गये ॥ पर्वतों तथा वृक्षोंपर भी जो मिले वे राक्षसों द्वारा मारे गये ॥ ३५ ॥ हमारी सेनाने सेनासहित तुम्हारे भर्ताको मार डाला, यह देखो धूलि लगा हुआ उनका कटा हुआ शिर है॥ ३६ ॥

यह कह रावण राक्षसियोंसे बोला ॥ ३७ ॥ कि विद्युज्जिह्वको जो रामका सिर लाया है ॥ ३८ ॥ बुला लाओ, तब विद्युज्जिह्व रामका रावणके आगे खडा हुआ ॥ ३९ ॥ तब रावण विद्युज्जिह्वसे बोला ॥ कि रामका सिर सीताके आगे करो जिससे यह अच्छी तरह देखे ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एवमुक्तं तु तद्रक्षः शिरस्तत्प्रियदर्शनम् ।
उपनिक्षिप्य सीतायाः क्षिप्रमन्तरधीयत ४२
रावणश्चापि चिक्षेप भास्वरं कार्मुकं महत् ।
त्रिषु लोकेषु विख्यातं रामस्यैतदिति ब्रुवन् ४३
इदं तत्तव रामस्य कार्मुकं ज्यासमावृतम् ।
इह प्रहस्तेनानीतं तं हत्वा निशि मानुषम् ४४
स विद्युज्जिह्वेन सहैव तच्छिरो धनुश्च भूमौ विनिकीर्यमाणः ।
विदेहराजस्य सुतां यशस्विनीं ततोऽब्रवीत्तां भव मे वशानुगा ४५

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे एकत्रिंशः सर्गः॥३१॥[११५३]

॥ द्वात्रिंशः सर्गः ॥

सा सीता तच्छिरो दृष्ट्वा तच्च कार्मुकमुत्तमम् ।
सुग्रीवप्रतिसंसर्गमाख्यातं च हनूमता १
नयने मुखवर्णं च भर्तुस्तत्सदृशं मुखम् ।
केशान्केशान्तदेशं च तं च चूडामणिं शुभम् २
एतैः सर्वैरभिज्ञानैरभिज्ञाय सुदुःखिता ।
विजगर्हेऽत्र कैकेयीं क्रोशन्ती कुररी यथा ३
सकामा भव कैकेयि हतोऽयं कुलनन्दनः ।
कुलमुत्सादितं सर्वं त्वया कलहशीलया ४

ऐसा सुन सीताके आगे वह सिर रख विद्युज्जिह्व स्वयं शीघ्र ही गायब हो गया ॥ ४२ ॥ रावणने रामका सुवर्णका धनुष सीताके आगे फेंककर कहा ॥ ४३ ॥ यह रामका धनुष है, प्रहस्त रामको रात्रिमें मार इसे लाया है ॥४४॥ विद्युद्जिह्व राक्षस द्वारा लाया गया वह मस्तक और धनुष भूमिपर एक साथ फेंककर वह रावण सीतासे बोला 'तू मेरे आधीन होजा' ॥४५॥

॥ यहाँ ३१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

सीता वह शिर व धनुष् देख हनुमानके कहनेसे सुग्रीव सम्बन्धकी भी स्मरण कर ॥ १ ॥ राम ही केसे नयन मूछ, चूडामणि आदि देख ॥ २ ॥ और इनसे रामका ही शिर जान दुःखित हुई और रोकर कैकेयीकी निन्दा करने लगी ॥ ३ ॥ हे कैकेयि ! राम मारे गये, इससे सकाम हो तुमने सब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आर्येण किं नु कैकेय्याः कृतं रामेण विप्रियम्।
यन्मया चीरवसनं दत्त्वा प्रव्राजितो वनम् ५
एवमुक्त्वा तु वैदेही वेपमाना तपस्विनी।
जगाम जगतीं बाला छिन्ना तु कदली यथा ६
सा मुहूर्तात्समाश्वस्य परिलभ्याथ चेतनाम्।
तच्छिरः समुपास्थाय विललापायतेक्षणा ७
हा हताऽस्मि महाबाहो वीरव्रतमनुव्रत।
इमां ते पश्चिमावस्थां गताऽस्मि विधवा कृता ८
प्रथमं मरणं नार्या भर्तुर्वैगुण्यमुच्यते।
सुव्रतः साधुवृत्तायाः संवृत्तस्त्वं ममाग्रतः ९
महद्दुःखं प्रपन्नाया मग्नायाः शोकसागरे।
यो हि मामुद्यतस्त्रातुं सोऽपि त्वं विनिपातितः १०
सा श्वश्रूर्मम कौसल्या त्वया पुत्रेण राघव।
वत्सला ते यथा धेनुर्विवत्सा वत्सला कृता ११
उद्दिष्टं दीर्घमायुस्ते दैवज्ञैरपि राघव।
अनृतं वचनं तेषामल्पायुरसि राघव १२

कुलका नाश किया ॥ ४ ॥ नहीं जानती कि श्रीरामने कैकेयीका कौन अपकार किया था जिससे उनको वनवास दिया ॥ ५ ॥ ऐसा कह सी भूमिपर गिर पडीं ॥ ६ ॥

एक मुहूर्त बाद चैतन्य होनेपर वह शिर हाथसें ले विलाप क लगीं ॥ ७ ॥ हा महाबाहु हा हन्त इस तुम्हारी पिछली अवस्थाने मु विधवा कर डाला ॥ ८ ॥ स्त्रीसे पहिले ही पतिका मरण स्त्रीके लिये अ मूलक है सो यह बडा अनर्थ हुआ ॥ ९ ॥ बडे दुःखको प्राप्त मेरी रक्षा करनेको आप तत्पर हुए थे सो मारे गये ॥ १० ॥ हे राघव ! आपकी कौशल्याकों कृपावती धेनुके समान विवत्सा कर दिया ॥ ११ ॥

हे राघव ! ज्योतिषियोंने तो तुम्हारी आयु बडी बताई थी पर तुम

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अथवा नश्यति प्रज्ञा प्राज्ञस्यापि सतस्तव।
पचत्येनं तथा कालो भूतानां प्रभवो ह्ययम् १३
अदृष्टं मृत्युमापन्नः कस्मात्त्वं नयशास्त्रवित्।
व्यसनानामुपायज्ञः कुशलो ह्यसि वर्जने १४
तथा त्वं संपरिष्वज्य रौद्रयाऽतिनृशंसया।
कालरात्र्या मयाच्छिद्य हृतः कमललोचनः १५
इह शेषे महाबाहो मां विहाय तपस्विनीम्।
प्रियामिव यथा नारीं पृथिवीं पुरुषर्षभ १६
अर्चितं सततं यत्नाद्गन्धमाल्यैर्मया तव।
इदं ते मत्प्रियं वीर धनुः काञ्चनभूषितम् १७
पित्रा दशरथेन त्वं श्वशुरेण ममानघ।
सर्वैश्च पितृभिः सार्धं नूनं स्वर्गं समागतः १८
दिवि नक्षत्रभूतं च महत्कर्म कृतं तथा।
पुण्यं राजर्षिवंशं त्वमात्मनः समुपेक्षसे १९
किं मां न प्रेक्षसे राजन्किं वा न प्रतिभाषसे।
बालां बालेन संप्राप्तां भार्यां मां सहचारिणीम् २०
संश्रुतं गृह्णता पाणिं चरिष्यामीति यत्त्वया।

अल्पायु हुए ॥ १२ ॥ अथवा ज्योतिषियोंके वचन झूठे न होंगे तो आप अभी विद्यमान ही होंगे ॥ १३ ॥ आप तो नीतिशास्त्रके ज्ञाता थे, दुःखोंके निवारणका उपाय जानते थे फिर अदृष्ट मृत्युको कैसे प्राप्त होगये ? ॥ १४॥ हा रात्रिरूप मैंने ही कमलाक्ष तुमको मार डाला ॥ १५ ॥ हे महाबाहो! मुझ तपस्विनीको छोड इस पृथ्वीपर सोते हो ॥ १६ ॥

हे वीर! यह सुवर्ण भूषित धनुष मुझे बडा प्रिय था ॥ १७ ॥ आप अपने पिता तथा सब पितरोंके समीप स्वर्गको गये ॥ १८ ॥ आप पिताकी आज्ञाका पालन कर महान् पुण्यको प्राप्त हो उपेक्षा क्यों करते हैं ॥ १९ ॥ महाराज! क्या मुझे नहीं देखते ? मुझसे बोलते क्यों नहीं मैं तो आपकी सहचारिणी भार्या हूं ॥ २० ॥ पाणिग्रहणके समय आपने जो प्रतिज्ञा की थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्मर तन्नाम काकुत्स्थ नय मामपि दुःखिताम् २१
कस्मान्मामपहाय त्वं गतो गतिमतां वर।
अस्माल्लोकादमुं लोकं त्यक्त्वा मामपि दुःखिताम् २२
कल्याणै रुचिरं गात्रं परिष्वक्तं मयैव तु।
क्रव्यादैस्तच्छरीरं ते नूनं विपरिकृष्यते २३
अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्टवानाप्तदक्षिणैः।
अग्निहोत्रेण संस्कारं केन त्वं न तु लप्स्यसे २४
प्रव्रज्यमुपपन्नानां त्रयाणामेकमागतम्।
परिप्रेक्ष्यति कौसल्या लक्ष्मणं शोकलालसा २५
स तस्याः परिपृच्छन्त्याः वधं मित्रबलस्य ते।
तव चाख्यास्यते नूनं निशायां राक्षसैर्वधम् २६
सा त्वां सुप्तं हतं ज्ञात्वा मां च रक्षोगृहं गताम्।
हृदयेनावदीर्णेन न भविष्यति राघव २७
मम हेतोरनार्याया अनघः पार्थिवात्मजः।
रामः सागरमुत्तीर्य वीर्यवान्गोष्पदे हतः २८
अहं दाशरथेनोढा मोहात्स्वकुलपांसनी।

हे काकुत्स्थ उसकी याद कीजिये और साथ ही मुझे लेते चलिये ॥ २१ ॥ हे मेरी ही तरह दुःखित मुझको छोड कहां चले गये ? ॥ २२ ॥

हा जिस शरीरमें मैं सुगन्धित वस्तु लगाती थी अब उसे गृध्र नोचते होंगे ॥ २३ ॥ आपने तो अग्निष्टोमादि यज्ञ किये थे फिर म... वस्थामें संस्कारयुक्त अग्नि क्यों न मिली ? ॥ २४ ॥ अकेले लक्ष्मणको वनसे लौटे कौशल्या कैसे देखेंगी ? ॥ २५ ॥ जब लक्ष्मणसे पूछेंगी तो बता देंगे कि तुमको राक्षसोंने मार डाला ॥ २६ ॥ हे राघव ! कौश... जब तुमको मेरा व मुझे राक्षस वशमें पडी सुनेंगी तो वह मर जायेगी ॥ २७ ॥ मुझ अनार्याके लिये श्रीराम समुद्र उतर इस गायके खुरभर जलमें ... गये ॥ २८ ॥

श्रीरामने अज्ञानसे कुलनाशनी मेरे साथ विवाह किया क्योंकि मैं

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आर्यपुत्रस्य रामस्य भार्या मृत्युरजायत २९
नूनमन्यां मया जाति वारितं दानमुत्तमम् ।
याहमद्यैव शोचामि भार्या सर्वातिथेरिह ३०
साधु घातय मां क्षिप्रं रामस्योपरि रावण ।
समानय पतिं पत्न्या कुरु कल्याणमुत्तमम् ३१
शिरसा मे शिरश्चास्य कायं कायेन योजय ।
रावणानुगमिष्यामि गतिं भर्तुर्महात्मनः ३२
इतीव दुःखसंतप्ता विललापायतेक्षणा ।
भर्तुः शिरो धनुश्चैव ददर्श जनकात्मजा ३३
एवं लालप्यमानायां सीतायां तत्र राक्षसः ।
अभिचक्राम भर्तारमनीकस्थः कृताञ्जलिः ३४
विजयस्वार्यपुत्रेति सोऽभिवाद्य प्रसाद्य च ।
न्यवेदयदनुप्राप्तं प्रहस्तं वाहिनीपतिम् ३५
अमात्यैः सहितः सर्वैः प्रहस्तस्त्वामुपस्थितः ।
तेन दर्शनकामेन अहं प्रस्थापितः प्रभो ३६
नूनमस्ति महाराज राजभावात्क्षमान्वित ।
किंचिदात्ययिकं कार्यं तेषां त्वं दर्शनं कुरु ३७

उनकी मृत्यु हुई ॥ २९ ॥ निश्चय ही पूर्व जन्ममें मैंने दान नहीं किया जिससे अब आज मैं शोकाकुल हूं ॥ ३० ॥ हे रावण ! रामके पीछे मुझको भी मार डालो इससे तुम्हारा कल्याण होगा ॥ ३१ ॥ हे रावण ! इनके सिरमें मेरा शिर अन्य सब अङ्गोंमें मेरे सब अङ्ग मिलादो ॥ ३२ ॥ एवं विलाप करती सीताने पतिका शिर व धनुष देखा ॥३३॥ एवं सीताके रोदन करते करते ही अनीकस्थ राक्षस रावणके पास आ बोला ॥ ३४ ॥ कहा कि प्रहस्त नाम सेनापति आया है ॥ ३५ ॥ वह सब मन्त्रियोंसहित आपका दर्शन करनेके लिये आपको बुलाता है सो मुझे यहां भेजा है ॥ ३६ ॥ कुछ आवश्यक राज्यकार्य है, आप उन लोगोंको देखिये ॥ ३७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एतच्छ्रुत्वा दशग्रीवो राक्षसप्रतिवेदितम्।
अशोकवनिकां त्यक्त्वा मन्त्रिणां दर्शनं ययौ ३८
स तु सर्वं समर्थ्यैव मन्त्रिभिः कृत्यमात्मनः।
सभां प्रविश्य विदधे विदित्वा रामविक्रमम् ३९
अन्तर्धानं तु तच्छीर्षं तच्च कार्मुकमुत्तमम्।
जगाम रावणस्यैव निर्याणसमनन्तरम् ४०
राक्षसेन्द्रस्तु तैः सार्धं मन्त्रिभिर्भीमविक्रमैः।
समर्थयामास तदा रामकार्यविनिश्चयम् ४१
अविदूरस्थितान्सर्वान्बलाध्यक्षान्हितैषिणः।
अब्रवीत्कालसदृशो रावणो राक्षसाधिपः ४२
शीघ्रं भेरीनिनादेन स्फुटं कोणाहतेन मे।
समानयध्वं सैन्यानि वक्तव्यं च न कारणम् ४३
ततस्तथेति प्रतिगृह्य तद्वचस्तदैव दूताः सहसा महद्बलम्।
समानयंश्चैव समागतं च न्यवेदयन्भर्तरि युद्धकाङ्क्षिणि

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे द्वात्रिंशः सर्गः॥३२॥[११

यह सुन रावण वहांसे उन लोगोंको देखने गया ॥ ३८ ॥ अम... सहित एकान्त सभामें बैठ दूतोंके मुखोंसे रामका बल सुन विचार ... लगा ॥ ३९ ॥ रावणके जाते ही वह मायाका शिर व धनुष गायब ... गया ॥ ४० ॥ रावण मन्त्रियोंकी सलाहसे रामके साथ जो करणीय विच... हुआ करने लगा ॥ ४१ ॥ अपने सब हितैषी सेनापतियोंसे समया... वचन बोला ॥ ४२ ॥ बहुत ही जल्दी बिगुल बजवाकर सेना यहां ... लाओ ॥ ४३ ॥ इसके बाद ' सब ठीक है ' ऐसा कहकर दूतोंने शीघ्र... प्रचंड सेना एकत्रित की और उसकी सूचना युद्धकी इच्छा करनेवाले ... अधिपतिसे निवेदन की ॥ ४४ ॥

॥ यहाँ ३२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

॥ त्रयस्त्रिंशः सर्गः ॥

सीतां तु मोहितां दृष्ट्वा सरमा नाम राक्षसी ।
आससादाथ वैदेहीं प्रियां प्रणयिनी सखी १
मोहितां राक्षसेन्द्रेण सीतां परमदुःखिताम् ।
आश्वासयामास तदा सरमा मृदुभाषिणी २
सा हि तत्र कृता मित्रं सीतया रक्ष्यमाणया ।
रक्षन्ती रावणादिष्टा सानुक्रोशा दृढव्रता ३
सा ददर्श सखी सीतां सरमा नष्टचेतनाम् ।
उपावृत्त्योत्थितां ध्वस्तां वडवामिव पांसुषु ४
तां समाश्वासयामास सखी स्नेहेन सुव्रताम् ।
उक्ता यद्रावणेन त्वं प्रयुक्तश्च स्वयं त्वया ५
लीनया गहने शून्ये भयमुत्सृज्य रावणात् ।
तव हेतोर्विशालाक्षि न हि मे रावणाद्भयम् ६
स संभ्रान्तश्च निष्क्रान्तो यत्कृते राक्षसेश्वरः ।
तत्र मे विदितं सर्वमभिनिष्क्रम्य मैथिलि ७
न शक्यं सौप्तिकं कर्तुं रामस्य विदितात्मनः ।
वधश्च पुरुषव्याघ्रे तस्मिन्नैवोपपद्यते ८

सरमा नाम सीताकी सखी पास आ रावणसे मोहित सीताको समझाने लगी ॥ १ ॥ रावणने इस सरमाको राक्षसियोंसहित सीताजीकी रक्षार्थ नियत किया था सो सीताकी इससे मित्रता होगई थी ॥ २-३ ॥ सरमाने दुःखसे भूमिमें लोटती सीताको देखा ॥ ४ ॥ वह सीताको समझाने लगी कि रावणने जो तुमसे कहा व जो तुमने फिर रावणसे कहा ॥ ५ ॥ मैंने यह सब घनेवनमें खडी हो सुन लिया ॥ ६ ॥ रावण जिस लिये यहां आया मैंने वह सब जान लिया है ॥ ७ ॥ श्रीरामके संग सोनेपर भी कोई युद्ध नहीं कर सकता, श्रीरामका वध नहीं हो सकता ॥ ८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न त्वेवं वानरा हन्तुं शक्याः पादपयोधिनः ।
सुरा देवर्षभेणेव रामेण हि सुरक्षिताः ९
दीर्घवृत्तभुजः श्रीमान्महोरस्कः प्रतापवान् ।
धन्वी संनहनोपेतो धर्मात्मा भुवि विश्रुतः १०
विक्रान्तो रक्षिता नित्यमात्मनश्च परस्य च ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा कुलीनो नयशास्त्रवित् ११
हन्ता परबलौघानामचिन्त्यबलपौरुषः ।
न हतो राघवः श्रीमान्सीते शत्रुनिबर्हणः १२
अयुक्तबुद्धिकृत्येन सर्वभूतविरोधिना ।
इयं प्रयुक्ता रौद्रेण माया मायाविना त्वयि १३
शोकस्ते विगतः सर्वकल्याणं त्वामुपस्थितम् ।
ध्रुवं त्वां भजते लक्ष्मीः प्रियं ते भवति शृणु १४
उत्तीर्य सागरं रामः सह वानरसेनया ।
संनिविष्टः समुद्रस्य तीरमासाद्य दक्षिणम् १५
दृष्टो मे परिपूर्णार्थः काकुत्स्थः सहलक्ष्मणः ।
सहितैः सागरान्तस्थैर्बलैस्तिष्ठति रक्षितः १६
अनेन प्रेषिता ये च राक्षसा लघुविक्रमाः ।
राघवस्तीर्ण इत्येवं प्रवृत्तिस्तैरिहाहृता १७

वानरोंको भी इस प्रकार कोई नहीं मार सकता ॥ ९ ॥ लम्बी व ... भुजावाले महाप्रतापी अतिपुष्टाङ्ग धर्मात्मा त्रिलोकीमें विख्यात ॥ १० ... अपनी व अन्यकी भी रक्षा करनेवाले परमकुलीन लक्ष्मणसहित ॥ ११ ... शत्रुओंके विध्वंसक राम हे सीते ! मारे नहीं गये ॥ १२ ॥ दुष्टस्वभाव रा... तुम्हारे लिये यह सब कपट किया है ॥ १३ ॥ तुम्हारा सब शोक ... निश्चय अब तुमको लक्ष्मी मिलेगी ॥ १४ ॥ क्योंकि राम वानरसेना ... सागर उतर आये ॥ १५ ॥ मैंने स्वयं वहां जा लक्ष्मण व श्रीरामको ... है ॥ १६ ॥

रावणने भी बहुतसे दूत भेजे थे वे भी यही समाचार लाये हैं कि ...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स तां श्रुत्वा विशालाक्षि प्रवृत्तिं राक्षसाधिपः ।
एष मन्त्रयते सर्वैः सचिवैः सह रावणः १८
इति ब्रुवाणा सरमा राक्षसी सीतया सह ।
सर्वोद्योगेन सैन्यानां शब्दं शुश्राव भैरवम् १९
दण्डनिर्घातवादिन्याः श्रुत्वा भेर्या महास्वनम् ।
उवाच सरमा सीतामिदं मधुरभाषिणी २०
संनाहजननी ह्येषा भैरवा भीरु भेरिका ।
भेरीनादं च गम्भीरं शृणु तोयदनिस्वनम् २१
कल्प्यन्ते मत्तमातङ्गा युज्यन्ते रथवाजिनः ।
दृश्यन्ते तुरगारूढाः प्रासहस्ताः सहस्रशः २२
तत्र तत्र च संनद्धाः संपतन्ति सहस्रशः ।
आपूर्यन्ते राजमार्गाः सैन्यैरद्भुतदर्शनैः ॥
वेगवद्भिर्नदद्भिश्च तोयौघैरिव सागरः २३
शस्त्राणां च प्रसन्नानां चर्मणां वर्मणां तथा २४
रथवाजिगजानां च राक्षसेन्द्रानुयायिनाम् ।
संभ्रमो रक्षसामेष हृषितानां तरस्विनाम् ॥
प्रभां विसृजतां पश्य नानावर्णां समुत्थिताम् २५

सागर उतर आये ॥ १७ ॥ यह समाचार सुन रावण मन्त्रियोंसे सलाह कर रहा है कि अब क्या करना उचित है ॥ १८ ॥ इस तरह सरमा सीतासे कह रही थी कि रावणकी सेनाका अब युद्धार्थ उद्योग करनेसे बडा शब्द सुनाई दिया ॥ १९ ॥ नगारा व भेरीकी ध्वनि सुन सरमा बोली ॥ २० ॥ सीते ! यह तैयारीका नगारा तथा भेरी बजती है उसे सुनो ॥ २१ ॥ हाथी तैयार होरहे हैं, रथोंमें घोडे जोते जारहे हैं हजारों सवार भाला लिये जाते दिखाई देते हैं ॥ २२ ॥

समुद्रके वेगके समान तथा नदीके प्रवाहके समान सडकोंपर असंख्य सेना सजी चली जाती हैं कहीं मार्ग नहीं मिलता ॥ २३ ॥ शब्द करते हुए सिपाहियोंके शस्त्र व कवचों ॥ २४ ॥ रथ, घोडे, हाथियों व रावणके अनुचर राक्षसोंका शब्द सुनाई देता है नाना प्रकारकी प्रभा जो उठ रही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

संभ्रमो रक्षसामेष तुमुलं रोमहर्षणम् ।
श्रीस्त्वां भजति शोकघ्नी रक्षसां भयमागतम् २६
रामः कमलपत्राक्षो दैत्यानामिव वासवः ।
अवजित्य जितक्रोधस्तमचिन्त्यपराक्रमः २७
रावणं समरे हत्वा भर्ता त्वाधिगमिष्यति २८
विक्रमिष्यति रक्षःसु भर्ता ते सहलक्ष्मणः ।
यथा शत्रुषु शत्रुघ्नो विष्णुना सह वासवः २९
आगतस्य हि रामस्य क्षिप्रमङ्कगतां सतीम् ।
अहं द्रक्ष्यामि सिद्धार्थां त्वां शत्रौ विनिपातिते ३०
अस्राण्यानन्दजानि त्वं वर्तयिष्यसि जानकि ।
समागम्य परिष्वक्ता तस्योरसि महोरसः ३१
अचिरान्मोक्ष्यते सीते देवि ते जघनं गताम् ।
धृतामेकां बहून्मासान्वेणीं रामो महाबलः ३२
तस्य दृष्ट्वा मुखं देवि पूर्णचन्द्रमिवोदितम् ।
मोक्ष्यसे शोकजं वारि निर्मोकमिव पन्नगी ३३

हैं उसे देखो ॥ २५ ॥ राक्षसोंकी भीड़को देखते ही रोम खड़े होते
परन्तु शोभा तुम्हारे ऊपर आई तथा राक्षसोंको भय आया ॥ २
दैत्योंके पास रही हुई लक्ष्मी जिस प्रकार इन्द्रने हरण किया उसी प्र
अचिंत्य पराक्रमी व क्रोधको जितनेवाला राम रणमें रावणको मार तुमको
मिलेंगे ॥ २७-२८ ॥ लक्ष्मणसहित ऐसा विक्रम करेंगे जैसे विष्णुके
इन्द्रने दैत्योंपर किया था ॥ २९ ॥

हे सीते ! राक्षसोंको मार आये हुए श्रीरामकी गोदमें बैठी तुमको
देखेंगी ॥ ३० ॥ हे जानकि ! विशाल वक्षस्थलसे युक्त हुआ उस रा
मिलते समय तुम आनन्दाश्रु छोड़ोगी ॥ ३१ ॥ बहुत दिनोंसे मिले
हुए तुम्हारे बाल राम शीघ्रही अपने हाथोंसे सुलझावेंगे ॥ ३२ ॥ हे दे
उन रामका पूर्ण चन्द्रके समान उदित मुखदेख शोकसे उत्पन्न जल

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रावणं समरे हत्वा न चिरादेव मैथिलि ।
त्वया समग्रः प्रियया सुखार्हो लप्स्यते सुखम् ३४
सभाजिता त्वं रामेण मोदिष्यसि महात्मना ।
सुवर्षेण समायुक्ता यथा सस्येन मेदिनी ३५
गिरिवरमभितो विवर्तमानो हय इव मण्डलाशु यः करोति ।
तमिह शरणमभ्युपैहि देवि दिवसकरं प्रभवो ह्ययं प्रजानाम् ३६
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे त्रयस्त्रिंशः सर्गः ॥३३॥[१२३३]

॥ चतुस्त्रिंशः सर्गः ॥

अथ तां जातसंतापां तेन वाक्येन मोदिताम् ।
सरमाह्लादयामास महीं दग्धामिवाम्भसा १
ततस्तस्या हितं सख्याश्चिकीर्षन्ती सखी वचः ।
उवाच काले कालज्ञा स्मितपूर्वाभिभाषिणी २
उत्सहेयमहं गत्वा त्वद्वाक्यमसितेक्षणे ।
निवेद्य कुशलं रामे प्रतिच्छन्ना निवर्तितुम् ३
न हि मे क्रममाणाया निरालम्बे विहायसि ।
समर्थो गतिमन्वेतुं पवनो गरुडोऽपि वा ४

होओगी ॥ ३३ ॥ हे सीते ! रावणको युद्धमें मार प्रसन्नचित्त हो तुम्हारे सहित श्रीराम बहुत ही शीघ्रसुख पावेंगे ॥ ३४ ॥ सुवृष्टिसे युक्त हुई पृथ्वी जिस प्रकार धान्यके योगसे आनन्दित होती है उसी प्रकार रामसे सभाजित-हो तुम हर्षित होओगी ॥ ३५ ॥ इसीलिये पर्वतश्रेष्ठ मेरुके चारोंतरफ घोडोंके समान घूमनेवाले सूर्यके शरण जा; क्योंकि सब प्रजाजनोंके सुख-दुःखके मूल वही हैं ॥ ३६ ॥

॥ यहाँ ३३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रावणके वाक्योंसे मोहित सीताको सरमाने मीठे वचनोंसे प्रसन्न किया ॥ १ ॥ समयको जाननेवाली सरमा हंसकर मधुर वचन बोली ॥२॥ हे सीते ! मैं रामके पास जा तुम्हारा कुशल मंगल उनसे कह फिर लौट सकती हूं ॥ ३ ॥ जब मैं आकाशसें उडती हूं तो मेरे पीछे गरुड व पवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एवं ब्रुवाणां तां सीता सरमामिदमब्रवीत्।
मधुरं श्लक्ष्णया वाचा पूर्वशोकाभिपन्नया ५
समर्था गगनं गन्तुमपि च त्वं रसातलम्।
अवगच्छाद्य कर्तव्यं कर्तव्यं ते मदन्तरे ६
मत्प्रियं यदि कर्तव्यं यदि बुद्धिः स्थिरा तव।
ज्ञातुमिच्छामि तं गत्वा किं करोतीति रावणः ७
स हि मायाबलः क्रूरो रावणः शत्रुरावणः।
मां मोहयति दुष्टात्मा पीतमात्रेव वारुणी ८
तर्जापयति मां नित्यं भर्त्सापयति चासकृत्।
राक्षसीभिः सुघोराभिर्यो मां रक्षति नित्यशः ९
उद्विग्ना शङ्किता चास्मि न स्वस्थं च मनो मम।
तद्भयाच्चाहमुद्विग्ना अशोकवनिकां गता १०
यदि नाम कथा तस्य निश्चितं वापि यद्भवेत्।
निवेदयेथाः सर्वं तद्परो मे स्यादनुग्रहः ११
साप्येवं ब्रुवती सीतां सरमा मृदुभाषिणी।
उवाच वचनं तस्याः स्पृशन्ती बाष्पविक्लवम् १२
एष ते यद्यभिप्रायस्तस्माद्गच्छामि जानकि।
गृह्य शत्रोरभिप्रायमुपावर्तामि मैथिलि १३

भी नहीं जा सकता॥४॥ सीता तब मधुर साफ बचनसे सरमासे बोली। मैं जानती हूं कि तुम गगन व पातालको जा सकती हो ॥ ६ ॥ और लिये जो कोई न कर सकें वह तुम कर सकती हो सो जाकर देख आओ रावण क्या कर रहा है ॥ ७ ॥ क्योंकि वह मायावी व क्रूर स्वभाव मुझको मोहित किया करता है ॥ ८ ॥ इसीसे मुझको राक्षसियोंसे डरा व मेरा निरादर करता है ॥ ९ ॥

जिससे मैं शंकित तथा अस्वस्थचित्त बैठी रहती हूं ॥१०॥ हमारे छोड़ने छोडनेके विषयमें रावणका जो भाव हो वह जानकर मुझसे कहो ॥११॥ कहती सीताका आंसुओंसे भीगा मुख अपने हाथोंसे पोंछ सरमा बोली। हे सीते ! जो तुम्हारा यह अभिप्राय है तो मैं अभी जाती हूं ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

एवमुक्त्वा ततो गत्वा समीपं तस्य रक्षसः ।
शुश्राव कथितं तस्य रावणस्य समन्त्रिणः १४
सा श्रुत्वा निश्चयं तस्य निश्चयज्ञा दुरात्मनः ।
पुनरेवागमत्क्षिप्रमशोकवनिकां शुभाम् १५
सा प्रविष्टा ततस्तत्र ददर्श जनकात्मजाम् ।
प्रतीक्षमाणां स्वामेव भ्रष्टपद्मामिव श्रियम् १६
तां तु सीता पुनः प्राप्तां सरमां प्रियभाषिणीम् ।
परिष्वज्य च सुस्निग्धं ददौ च स्वयमासनम् १७
इहासीना सुखं सर्वमाख्याहि मम तत्त्वतः ।
क्रूरस्य निश्चयं तस्य रावणस्य दुरात्मनः १८
एवमुक्ता तु सरमा सीतया वेपमानया ।
कथितं सर्वमाचष्ट रावणस्य समन्त्रिणः १९
जनन्या राक्षसेन्द्रो वै त्वन्मोक्षार्थं बृहद्वचः ।
अतिस्निग्धेन वैदेहि मन्त्रिवृद्धेन चोदितः २०
दीयतामभिसत्कृत्य मनुजेन्द्राय मैथिली ।
निदर्शनं ते पर्याप्तं जनस्थाने यदद्भुतम् २१
लङ्घनं च समुद्रस्य दर्शनं च हनूमतः ।

यह कह सरमा रावणकी जो वार्त्ता मन्त्रियोंसे हो रही थी सुननेको गई ॥१४॥ सरमा रावणके मनका अभिप्राय जान शीघ्र ही लौट आई ॥ १५ ॥ उसने आ सीताको बाट जोहते देखा ॥ १६ ॥ जब सरमा लौट आई तो सीता उठकर मिलीं और ॥ १७ ॥ बोली कि रावणका निश्चितार्थ मुझसे कहो ॥ १८ ॥ जब सीताने यह कहा तो सरमा कहने लगी ॥ १९ ॥ हे सीते ! रावणकी माता व मान्त्रियोंने तुम्हारे छोड देनेके विषयमें रावणसे निवेदन किया ॥ २० ॥ कि रामका विक्रम तुम जनस्थानमें जान चुके हो इससे सीताको वापिस देदो ॥ २१ ॥ क्योंकि समुद्रको लांघकर आये हनुमानका दर्शन तुमने किया है तथा उसके द्वारा राक्षसोंका वध देखा है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वधं स रक्षसां युद्धे कः कुर्यान्मानुषो युधि २२
एवं स मन्त्रिवृद्धैश्च मात्रा च बहु बोधितः।
न त्वामुत्सहते मोक्तुमर्थमर्थपरो यथा २३
नोत्सहत्यमृतो मोक्तुं युद्धे त्वामिति मैथिलि।
सामात्यस्य नृशंसस्य निश्चयो ह्येष वर्तते॥
तदेषां सुस्थिरा बुद्धिर्मृत्युलोभादुपस्थिता २४
भयान्न शक्तस्त्वां मोक्तुमनिरस्तः स संयुगे।
राक्षसानां च सर्वेषामात्मनश्च वधेन हि २५
निहत्य रावणं सङ्ख्ये सर्वथा निशितैः शरैः।
प्रतिनेष्यति रामस्त्वामयोध्यामसितेक्षणे २६
एतस्मिन्नन्तरे शब्दो भेरीशङ्खसमाकुलः।
श्रुतो वै सर्वसैन्यानां कम्पयन्धरणीतलम् २७
श्रुत्वा तु तं वानरसैन्यनादं लङ्कागता राक्षसराजभृत्याः
हतौजसो दैन्यपरीतचेष्टाः श्रेयो न पश्यन्ति नृपस्य दोषात्
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकाण्डे चतुस्त्रिंशः सर्गः॥३४॥[१

क्या मनुष्य ऐसा कर्म कर सकेगा॥ २२॥

एवं उसकी माता व मन्त्रियोंने बहुत तरहसे कहा पर वह तुमको नहीं चाहता॥ २३॥ हे सीते! जबतक वह समरमें मारा नहीं जाता तक वह तुमको छोडना नहीं चाहता उनकी यह बुद्धि मृत्युके लोभसे उपस्थित हुई है॥ २४॥ क्योंकि वह रामचन्द्रजीके भयसे भी तु छोडना नहीं चाहता हे श्यामनयनी सब राक्षसोंका रावणसहित होगा॥ २५॥ रामचन्द्रजी तीक्ष्ण बाणोंसे समरमें रावणको मार तु अयोध्याजीको ले जावेंगे॥२६॥ सरमा यह कहती ही थी कि भेरी शंखा तथा धरणीतल कंपाती हुई सेनाका शब्द सुनाई दिया॥ २७॥ तब सैन्योंकी वैसी गर्जना सुनकर लंकामें राक्षसराज रावणकी सेना निस्ते गया और वे हतोत्साह होगये; उनको अपने जीनेकी भी आशा रही॥ २८॥

॥ यहाँ ३४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

॥ पञ्चत्रिंशः सर्गः ॥

तेन शङ्खविमिश्रेण भेरीशब्देन नादिना।
उपयाति महाबाहू रामः परपुरंजयः १
तं निनादं निशम्याथ रावणो राक्षसेश्वरः।
मुहूर्तं ध्यानमास्थाय सचिवानभ्युदैक्षत २
अथ तान्सचिवांस्तत्र सर्वानाभाष्य रावणः।
सभां संनादयन्सर्वानित्युवाच महाबलः ३
जगत्संतापनः क्रूरो गर्हयन्राक्षसेश्वरः ४
तरणं सागरस्यास्य विक्रमं बलपौरुषम्।
यदुक्तवन्तो रामस्य भवन्तस्तन्मया श्रुतम् ५
भवतश्चाप्यहं वेद्मि युद्धे सत्यपराक्रमान्।
तूष्णीकानीक्षतोऽन्योऽन्यं विदित्वा रामविक्रमम् ६
ततस्तु सुमहाप्राज्ञो माल्यवान्नाम राक्षसः।
रावणस्य वचः श्रुत्वा इति मातामहोऽब्रवीत् ७
विद्यास्वभिविनीतो यो राजा राजन्नयानुगः।

भेरी और शंखोंका शब्द सुनते ही महाबाहु राम युद्धार्थ उद्यत हुए ॥१॥ उस निनादको सुन रावण दो घडी विचार अमात्योंकी ओर देखने लगा ॥२॥ सब अमात्योंको बुला कर सभाको गुञ्जायमान करता हुआ और मन्त्रियोंकी स्तुति तथा रामकी निन्दा करता हुआ सम्पूर्ण जगतको सतानेवाला क्रूर स्वभाव रावण बोला ॥ ३-४ ॥ रामके विक्रम व उनके समुद्र पार करनेकी आप लोगों द्वारा कथित रामका पराक्रम मैंने सुना ॥ ५ ॥ संग्राममें सत्य-पराक्रम आपजनोंको भी मैं जानता हूं परन्तु रामका पराक्रम सुननेपर आप लोग चुप क्यों हैं ॥ ६ ॥

यह सुन बुद्धिमान् माल्यवान् रावणसे बोला ॥ ७ ॥ हे राजन्! जो राजा सब विद्याओंमें निष्णात हो नीतिके अनुकूल शासन करता है वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स शास्ति चिरमैश्वर्यमरींश्च कुरुते वशे ८
संदधानो हि कालेन विगृह्णंश्चारिभिः सह।
स्वपक्षे वर्धनं कुर्वन्महदैश्वर्यमश्नुते ९
हीयमानेन कर्तव्यो राज्ञा संधिः समेन च।
न शत्रुमवमन्येत ज्यायान्कुर्वीत विग्रहम् १०
तन्मह्यं रोचते संधिः सह रामेण रावण।
यदर्थमभियुक्तोऽसि सीता तस्मै प्रदीयताम् ११
तस्य देवर्षयः सर्वे गन्धर्वाश्च जयैषिणः।
विरोधं मा गमस्तेन संधिस्ते तेन रोचताम् १२
असृजद्भगवान्पक्षौ द्वावेव हि पितामहः।
सुराणामसुराणां च धर्माधर्मौ तदाश्रयौ १३
धर्मो हि श्रूयते पक्ष अमराणां महात्मनाम्।
अधर्मो रक्षसां पक्षो ह्यसुराणां च राक्षस १४
धर्मो वै ग्रसतेऽधर्मं यदा कृतमभूद्युगम्।
अधर्मो ग्रसते धर्मं तदा तिष्यः प्रवर्तते १५
तत्त्वया चरता लोकान्धर्मोऽपि निहतो महान्।
अधर्मः प्रगृहीतश्च तेनास्मद्बलिनः परे १६

दीर्घकाल तक ऐश्वर्य भोगता है ॥ ८ ॥ जैसा अवसर हो उसके अनु वैरियोंसे संधि वा युद्धकर स्वपक्षकी वृद्धिको प्राप्त हुआ बडे ऐश्वर्यको भो है ॥ ९ ॥ राजाको उचित है कि बराबरवालों व बढे हुए शत्रुओंसे सं करे छोटेसे युद्ध करे पर शत्रुको तुच्छ न समझे ॥ १० ॥ सो मुझे रा साथ तुम्हारी सन्धि अच्छी लगती है सीता रामको वापिस दे दीजिये ॥ देवता, आदि· रामकी विजय चाहते हैं सो उनके साथ विग्रह न कर स ही उचित है ॥ १२ ॥

भगवान् ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न देवता दैत्यों दोनोंके आश्रयमें धर्माधर्म है ॥ १३ ॥ देवताओंके पक्षमें धर्म व दैत्योंके पक्षमें अधर्म सुनाई है ॥ १४ ॥ सत्ययुगमें धर्म अधर्मको ग्रस लेता है कलियुगमें अधर्म ध ग्रस लेता है ॥ १५ ॥ तुमने धर्मका नाश कर दिया तथा अधर्म

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

स प्रमादात्प्रवृद्धस्तेऽधर्मोऽहिर्ग्रसते हि नः ।
विवर्धयति पक्षं च सुराणां सुरभावनः १७
विषयेषु प्रसक्तेन यत्किंचित्कारिणा त्वया ।
ऋषीणामग्निकल्पानामुद्वेगो जनितो महान् १८
तेषां प्रभावो दुर्धर्षः प्रदीप्त इव पावकः ।
तपसा भावितात्मानो धर्मस्यानुग्रहे रताः १९
मुख्यैर्यज्ञैर्यजन्त्येते तैस्तैर्यत्ते द्विजातयः ।
जुह्वत्यग्नींश्च विधिवद्वेदांश्चोच्चैरधीयते ॥
अभिभूय च रक्षांसि ब्रह्मघोषानुदीरयन् २०
दिशो विप्रद्रुताः सर्वे स्तनयित्नुरिवोष्णगे ।
ऋषीणामग्निकल्पानामग्निहोत्रसमुत्थितः २१
आवृत्य रक्षसां तेजो धूमो व्याप्य दिशो दिश ।
तेषु तेषु च देशेषु पुण्येष्वथवधृतव्रतैः २२
चर्यमाणं तपस्तीव्रं संतापयति राक्षसान् ।
देवदानवयक्षेभ्यो गृहीतश्च वरस्त्वया २३
मनुष्या वानरा ऋक्षा गोलाङ्गूला महाबलाः ।
बलवन्त इहागम्य गर्जन्ति दृढविक्रमाः २४
उत्पातान्विविधान्दृष्ट्वा घोरान्बहुविधान्बहून् ।

किया ॥ १६ ॥ तुम्हारे प्रमादसे बढा अधर्मरूप सांप तुम्हें ग्रसे लेता है और देवताओंके पक्षकी वृद्धि करता है ॥ १७ ॥ तुमने ऋषियोंको बडे कष्ट दिये यह अनर्थ हुआ ॥ १८ ॥ कारण कि उनका प्रभाव दुर्द्धर्ष है वे लोग तपहीसे अपना समय बिताते हैं ॥ १९ ॥

यज्ञोंसे वे लोग सदा ईशपूजन करते हैं । वेद पढते हैं राक्षसोंने उन लोगोंका अपमान किया ॥ २० ॥ तब वे चारों ओर भाग गये हैं उन तेजस्वी ऋषियोंके अग्निहोत्रसे उठा हुआ ॥ २१ ॥ धूम राक्षसोंके तेजको घेरे दशो दिशाओंमें स्थित है ॥ २२ ॥ उनकी तीव्र तपस्यासे राक्षस लोग जले जाते हैं तुमने देवता यज्ञोंसे अमर्त्य होनेका वर पाया है ॥ २३ ॥ पर यहां तो मनुष्य वानर ऋक्ष आये हैं ॥ २४ ॥ घोर उत्पात जो दिखाई देते

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Gra

विनाशमनुपश्यामि सर्वेषां रक्षसामहम् २५
खराभिस्तनिता घोरा मेघाः प्रतिभयंकराः ।
शोणितेनाभिवर्षन्ति लङ्कामुष्णेन सर्वतः २६
रुदतां वाहनानां च प्रपतन्त्यश्रुबिन्दवः ।
रजोध्वस्ता विवर्णाश्च न प्रभान्ति यथा पुरम् २७
व्याला गोमायवो गृध्रा वाश्यन्ति च सुभैरवम् ।
प्रविश्य लङ्कामारामे समवायांश्च कुर्वते २८
कालिकाः पाण्डुरैर्दन्तैः प्रहसन्त्यग्रतः स्थिताः ।
स्त्रियः स्वप्नेषु मुष्णन्त्यो गृहाणि प्रतिभाष्य च २९
गृहाणां बलिकर्माणि श्वानः पर्युपसेवते ।
खरा गोषु प्रजायन्ते मूषका नकुलेषु च ३०
मार्जारा द्वीपिभिः सार्धं सूकराः शुनकैः सह ।
किंनरा राक्षसैश्चापि समेयुर्मानुषैः सह ३१
पाण्डुरा रक्तपादाश्च विहगाः कालचोदिताः ।
राक्षसानां विनाशाय कपोता विचरन्ति च ३२
चीचीकूचीति वाशन्तः शारिका वेश्मसु स्थिताः ।
पतन्ति ग्रथिताश्चापि निर्जिताः कलहैषिभिः ३३

हैं राक्षसोंका विनाश ही दीख पडता है ॥ २५ ॥ प्रचंड गर्जना करनेवा घोर व अतिभयंकर बादल रुधिरकी वर्षा लङ्काके चारों ओर करते हैं ॥२ सब वाहन रोते हैं सब ओरसे धूलि उडती है जिससे पूर्ववत् लङ् प्रकाशित नहीं रहती है ॥ २७ ॥ सर्प श्रृगाल गीध चारों ओर भयङ्कर श करते हैं ॥ २८ ॥

स्वप्नोंमें पीले दांतवाली स्त्रियां गृहस्थित वस्तुओंसे हंस हंस करती हैं ॥ २९ ॥ घरोंकी बलिसामग्रीको कुत्ते खा जाते हैं, गायोंसे ग और न्योरोंसे मूषक पैदा होते हैं ॥ ३० ॥ व्याघ्रोंके साथ बिलार शू कुत्तोंके साथ किन्नर लोग राक्षसों व मनुष्योंके सङ्ग मैथुन करते हैं ॥ ३ लाल चरणवाले पीले कबूतर राक्षसोंके नाशके लिये गृहोंमें घूमते हैं ॥३ घरोंमें रहनेवाली सारिका अन्य पक्षियोंसे लडाईमें हार नीचे गिर प

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पक्षिणश्च मृगाः सर्वे प्रात्यादित्यं रुदन्ति ते ३४
करालो विकलो मुण्डः पुरुषः कृष्णपिङ्गलः।
कालो गृहाणि सर्वेषां काले कालेऽन्ववेक्षते ३५
एतान्यन्यानि दुष्टानि निमित्तान्युत्पतन्ति च।
ज्ञात्वावधार्य कर्माणि क्रियतामायतिक्षमम् ३६
इदं वचस्तस्य निगद्य माल्यवान्परीक्ष्य रक्षोऽधिपतेर्मनः पुनः।
अनुत्तमेषूत्तमपौरुषो बली बभूव तूर्ष्णीं समवेक्ष्य रावणम् ३७
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकांडे पञ्चत्रिंशः सर्गः॥३५॥[१२९८]

॥ षट्त्रिंशः सर्गः ॥

तत्तु माल्यवतो वाक्यं हितमुक्तं दशाननः।
न मर्षयति दुष्टात्मा कालस्य वशमागतः १
स बद्ध्वा भ्रुकुटिं वक्त्रे क्रोधस्य वशमागतः।
अमर्षात्परिवृत्ताक्षो माल्यवन्तमथाब्रवीत् २
हितबुद्ध्या यदहितं वचः परुषमुच्यते।
परपक्षं प्रविश्यैव नैतच्छ्रोत्रगतं मम ३

है॥३३॥ सब मृग पक्षी सूरजकी ओर मुंहकर रोते हैं ॥ ३४ ॥ महा कराल नकटा मूंडमूडाये काला पुरुष समय समय पर घूमता है सबोंको वह काल दिखाई देता है ॥ ३५ ॥ एवं अनेक अशकुन होते हैं अथवा रामके सब कृत्य जान जो सुखदाई समझो वही करो ॥ ३६ ॥ माल्यवान् राक्षसने राक्षसाधिपति रावणसे ऐसा कहा और उसकी मनःप्रवृत्ति कैसी है यह समझकर अतुल सामर्थ्यवान् राक्षसोंके बीच मौन होकर बैठ गया ॥३७॥

॥ यहाँ ३५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

माल्यवान्‌के हित वचन कालके वशीभूत रावणको असह्य हुए ॥ १ ॥ और क्रोधित हो नेत्र घुमा रावण माल्यवान्‌से बोला ॥ २ ॥ कि जो अहित और कठोर बातें तुमने कहीं वे मैंने नहीं ग्रहण की ॥ ३ ॥ मनुष्य पिताके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मानुषं कृपणं राममेकं शाखामृगाश्रयम् ।
समर्थं मन्यसे केन त्यक्तं पित्रा वनाश्रयम् ४

रक्षसामीश्वरं मां च देवानां च भयंकरम् ।
हीनं मां मन्यसे केन अहीनं सर्वविक्रमैः ५

वीरद्वेषेण वा शङ्के पक्षपातेन वा रिपोः ।
त्वयाहं परुषाण्युक्तो मम प्रोत्साहनेन वा ६

प्रभवन्तं पदस्थं हि परुषं कोऽभिभाषते ।
पण्डितः शास्त्रतत्त्वज्ञो विना प्रोत्साहनेन वा ७

आनीय च वनात्सीतां पद्महीनामिव श्रियम् ।
किमर्थं प्रतिदास्यामि राघवस्य भयादहम् ८

वृतं वानरकोटीभिः ससुग्रीवं सलक्ष्मणम् ।
पश्य कैश्चिदहोभिश्च राघवं निहतं मया ९

द्वन्द्वे यस्य न तिष्ठन्ति दैवतान्यपि संयुगे ।
स कस्माद्रावणो युद्धे भयमाहारयिष्यति १०

द्विधा भज्येयमप्येवं न नमेयं तु कस्यचित् ।
एष मे सहजो दोषः स्वभावो दुरतिक्रमः ११

निकालनेपर वानरोंकी शरणागत अकेले रामका कैसे तुमने स[...] समझा ? ॥ ४ ॥ राक्षसोंके स्वामी देवताओंको भयदायक मुझको तुमने [...] हीन समझा ? ॥५॥ तुमने जो मुझसे कठोर वचन कहे वे वैरसे शत्रुके पक्षपा[...] वा मुझे उत्साह दिलानेको कहे हैं ॥ ६ ॥ मैं समझता हूं कि मुझ[...] उत्साहित करने ही को तुमने यह कहा है ॥ ७ ॥

सीताको वनसे लाके भयसे अब मैं कैसे दे दूं ॥ ८ ॥ इन असंख्य वा[...] सहित सुग्रीव व लक्ष्मण व रामको मेरे द्वारा मरा देखोगे ॥ ९ ॥ जि[...] द्वंद्वयुद्धमें देवता भी नहीं ठहर सकें उस रावणको किससे डर है ? ॥१[...] चाहे मेरे दो खण्ड हो जावें, पर मैं किसीसे झुककर न चलूंगा ॥ ११

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

यदि तावत्समुद्रे तु सेतुर्बद्धो यदृच्छया ।
रामेण विस्मयः कोऽत्र येन ते भयमागतम् १२
स तु तीर्त्वार्णवं रामः सह वानरसेनया ।
प्रतिजानामि ते सत्यं न जीवन्प्रतियास्यति १३
एवं ब्रुवाणं संरब्धं रुष्टं विज्ञाय रावणम् ।
व्रीडितो माल्यवान्वाक्यं नोत्तरं प्रत्यपद्यत १४
जयाशिषा तु राजानं वर्धयित्वा यथोचितम् ।
माल्यवानभ्यनुज्ञातो जगाम स्वं निवेशनम् १५
रावणस्तु सहामात्यो मन्त्रयित्वा विमृश्य च ।
लङ्कायास्तु तदा गुप्तिं कारयामास राक्षसः १६
व्यादिदेश च पूर्वस्यां प्रहस्तं द्वारि राक्षसम् ।
दक्षिणस्यां महावीर्यौ महापार्श्वमहोदरौ १७
पश्चिमायामथ द्वारि पुत्रमिन्द्रजितं तदा ।
व्यादिदेश महामायं राक्षसैर्बहुभिर्वृतम् १८
उत्तरस्यां पुरद्वारि व्यादिश्य शुकसारणौ ।
स्वयं चात्र गमिष्यामि मन्त्रिणस्तानुवाच ह १९
राक्षसं तु विरूपाक्षं महावीर्यपराक्रमम् ।

जिसके देखनेसे तुम लोग डर गये वह पुल रामने पहिले बांधा तो कौन आश्चर्यकी बात है ? ॥ १२ ॥
राम सागरको तो पार कर आये पर अब यहांसे जीते न लौट सकेंगे ॥ १३ ॥
रावणको क्रोधित जान माल्यवान् लज्जित हो कुछ उत्तर न दे सका ॥ १४ ॥
आपकी जय हो ऐसा कह रावणकी आज्ञा पा वह घरको चला गया ॥ १५ ॥
रावण अपने अमात्योंसे सलाह ले लङ्काकी रक्षा सब ओरसे करने लगा ॥ १६ ॥
पूर्व द्वारपर प्रहस्तको दक्षिणके दरवाजेपर महापार्श्व व महोदरको ॥ १७ ॥ पश्चिमके दरवाजेपर अपने पुत्र मेघनादको रहनेकी आज्ञा दी ॥ १८ ॥ और उत्तर द्वारपर शुक व सारण नाम मन्त्रियोंको आज्ञा दी और उनसे कहा कि इसी ओर मैं रहूंगा ॥ १९ ॥ और विरूपाक्षको बहुत राक्षसोंसहित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मध्यमेऽस्थापयद्गुल्मे बहुभिः सह राक्षसैः २०
एवं विधानं लङ्कायां कृत्वा राक्षसपुङ्गवः।
कृतकृत्यमिवात्मानं मन्यते कालचोदितः २१
विसर्जयामास ततः स मन्त्रिणो विधानमाज्ञाप्य पुरस्य पुष्कल
जयाशिषा मन्त्रिगणेन पूजितो विवेश सोऽन्तः पुरमृद्धिमन्महत्
इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीय आदि० युद्धकांडे षट्त्रिंशः सर्गः ॥३६॥[१

॥ सप्तत्रिंशः सर्गः ॥

नरवानरराजानौ स तु वायुसुतः कपिः।
जाम्बवानृक्षराजश्च राक्षसश्च विभीषणः १
अङ्गदो वालिपुत्रश्च सौमित्रिः शरभः कपिः।
सुषेणः सहदायादो मैन्दो द्विविद एव च २
गजो गवाक्षः कुमुदो नलोऽथ पनसस्तथा।
अमित्रविषयं प्राप्ताः समवेताः समर्थयन् ३
इयं सा लक्ष्यते लङ्का पुरी रावणपालिता।
सासुरोरगगन्धर्वैः सर्वैरपि सुदुर्जया ४
कार्यसिद्धिं पुरस्कृत्य मन्त्रयध्वं विनिर्णये।
नित्यं संनिहितो यत्र रावणो राक्षसाधिपः ५

बीच लङ्कामें जहां सब सेना थी स्थापित किया ॥ २० ॥ एवं लङ्का रक्षा कर रावणने अपनेको कृतार्थ समझा ॥ २१ ॥ इसके बाद नगरसं णकी आज्ञा देकर और मन्त्रियोंके आशिर्वाद सूचक जयनाद अभिनन्दन करनेपर वे राक्षसाधिपति रावण सब प्रकारसे समृद्ध सुरक्षित अन्तःपुरमें प्रवेश किया ॥ २२ ॥

॥ यहाँ ३६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

श्रीराम सुग्रीव हनुमान् व जाम्बवान् विभीषण ॥ १ ॥ अङ्गद शरभ व सुषेण मैन्द द्विविद ॥ २ ॥ गय गवाक्ष कुमुद नल पनस ये एकत्र हो सलाह करने लगे ॥ ३ ॥ कि रावण पालित लङ्का यहाँ जिसमें सब लोगोंसे दुर्जय ॥ ४ ॥ राक्षसोंका राजा रावण बडी सावधा निवास करता है इससे कार्यसिद्धिके लिये सब मन्त्रणा करो ॥ ५ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अथ तेषु ब्रुवाणेषु रावणावरजोऽब्रवीत् ।
वाक्यमग्राम्यपदवत्पुष्कलार्थं विभीषणः ६
अनलः पनसश्चैव संपातिः प्रमतिस्तथा ।
गत्वा लङ्कां ममामात्याः पुरीं पुनरिहागताः ७
भूत्वा शकुनयः सर्वे प्रविष्टाश्च रिपोर्बलम् ।
विधानं विहितं यच्च तद्दृष्ट्वा समुपस्थिताः ८
संविधानं यथाहुस्ते रावणस्य दुरात्मनः ।
राम तद्ब्रुवतः सर्वं याथातथ्येन मे शृणु ९
पूर्वं प्रहस्तः सबलो द्वारमासाद्य तिष्ठति ।
दक्षिणं च महावीर्यौ महापार्श्वमहोदरौ १०
इन्द्रजित्पश्चिमं द्वारं राक्षसैर्बहुभिर्वृतः ।
पट्टिशासिधनुष्मद्भिः शूलमुद्गरपाणिभिः ११
नानाप्रहरणैः शूरैरावृतो रावणात्मजः ।
राक्षसानां सहस्रैस्तु बहुभिः शस्त्रपाणिभिः १२
युक्तः परमसंविग्नो राक्षसैः सह मन्त्रवित् ।
उत्तरं नगरद्वारं रावणः स्वयमास्थितः १३

...हते ही विभीषण अर्थयुक्त तथा शुद्ध वचन बोले ॥ ६ ॥ कि अनल पनस ...संपाति व प्रभाति ये चारों हमारे साथी इस समय लंकामें हो फिर यहां ...आये हैं ॥ ७ ॥

... ये यहांसे पक्षियोंका रूपधारणकर गये थे, रावणने युद्धार्थ जो विधान ...या है वह सब उन्होंने देख लिया है ॥८॥ रावणका किया विधान मैं आपसे ...हता हूं सुनिये ॥ ९ ॥ पुर्व द्वारपर प्रहस्त और दक्षिण द्वारपर महापार्श्व व ...होदर नामक राक्षस स्थित है ॥ १० ॥ इन्द्रजित पश्चिमके फाटकपर ...ये ॥ ११ ॥ नाना प्रकारके शस्त्रास्त्र धारण किये शूर वीर रावणके पुत्रके ...साथ हैं ॥ १२ ॥

...स्वयं रावण नगरके उत्तर फाटकपर स्थित है ॥ १३ ॥ बडी भारी सेना ...॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विरूपाक्षस्तु महता शूलमुद्गधनुष्मता।
बलेन राक्षसैः सार्धं मध्यमं गुल्ममाश्रितः १४
एतानेवंविधान्गुल्माँल्लङ्कायाः समुदीक्ष्य ते।
मामका मन्त्रिणः सर्वे शीघ्रं पुनरिहागताः १५
गजानां दशसाहस्रं रथानामयुतं तथा।
हयानामयुते द्वे च साग्रां कोटिं च रक्षसाम् १६
विक्रान्ता बलवन्तश्च संयुगेष्वाततायिनः।
इष्टा राक्षसराजस्य नित्यमेते निशाचराः १७
एकैकस्यात्र युद्धार्थं राक्षसस्य विशाम्पते।
परीवारः सहस्राणां सहस्रमुपतिष्ठति १८
एतां प्रवृत्तिं लङ्कायां मन्त्रिप्रोक्तां विभीषणः।
एवमुक्त्वा महाबाहू राक्षसांस्तानदर्शयत् १९
लङ्कायां सचिवैः सर्वं रामाय प्रत्यवेदयत्।
रामं कमलपत्राक्षमिदमुत्तरमब्रवीत्॥
रावणावरजः श्रीमान्रामप्रियाचिकीर्षया २०
कुबेरं तु यदा राम रावणः प्रतियुध्यति।
षष्टिः शतसहस्राणि तदा निर्यान्ति राक्षसाः २१

लिये विरूपाक्ष सेनाके मध्यमें स्थित है ॥ १४ ॥ इस तरहके विधान लङ्... देख हमारे साथी यहां फिर लौट आये हैं ॥ १५ ॥ दश हजार ... दश हजार रथ, बीस हजार घोडे, व कोट्याधिक राक्षस ॥ १६ ॥ जो ... बलवान् व आततायी हैं रावणके साथ नित्य बने रहते हैं ॥१७॥ रा... इन राक्षसोंका परिवार लाखों करोडों राक्षसोंका है वह युद्धके समय ... हो जाता है ॥१८॥ बिभीषणने यह समाचार रामादिकोंसे बता ... मन्त्रियोंको रामको दिखा दिया ॥ १९ ॥

लङ्काका समाचार जान श्रीरामकी प्रसन्नताके लिये निवेदन किया ... बिभीषण पुनः रामसे बोले ॥ २० ॥ कि जब रावण कुबेरसे ... था तब साठ लाख निशाचर जो पराक्रम आदिमें रावण ही के तुल्...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पराक्रमेण वीर्येण तेजसा सत्त्वगौरवात् ।
सदृशा ह्यत्र दर्पेण रावणस्य दुरात्मनः २१
अत्र मन्युर्न कर्तव्यः कोपये त्वां न भीषये ।
समर्थो ह्यसि वीर्येण सुराणामपि निग्रहे २३
तद्भवांश्चतुरङ्गेण बलेन महता वृतम् ।
व्यूह्येदं वानरानीकं निर्मथिष्यसि रावणम् २४
रावणावरजे वाक्यमेवं ब्रुवति राघवः ।
शत्रूणां प्रतिघातार्थमिदं वचनमब्रवीत् २५
पूर्वद्वारं तु लङ्काया नीलो वानरपुङ्गवः ।
प्रहस्तं प्रतियोद्धा स्याद्वानरैर्बहुभिर्वृतः २६
अङ्गदो वालिपुत्रस्तु बलेन महता वृतः ।
दक्षिणे बाधतां द्वारे महापार्श्वमहोदरौ २७
हनूमान्पश्चिमद्वारं निष्पीड्य पवनात्मजः ।
प्रविशत्वप्रमेयात्मा बहुभिः कपिभिर्वृतः २८
दैत्यदानवसङ्घानामृषीणां च महात्मनाम् ।
विप्रकारप्रियः क्षुद्रो वरदानबलान्वितः २९

निकले थे॥ २१ ॥ पराक्रम, वीर्य, तेज, अतिशय धैर्य, और गर्वके योगसे वे राक्षस दुराचारी रावण बराबरी करनेवाला है ॥ २२ ॥ इस बातको सुन आप कोप न कीजिये, क्योंकि मैं आपको डराता नहीं हूं आप तो देवताओंको भी दण्ड दे सकते हैं ॥ २३ ॥ सो आप सेनाका व्यूह बना रावणको अच्छी तरह मथेंगे ॥ २४ ॥

विभीषणके ऐसा कहनेपर राम यह बोले कि ॥ २५ ॥ बहुतसे वानर साथ ले नील लङ्काके पूर्व द्वारपर जावें और प्रहस्तसे युद्ध करें ॥ २६ ॥ अङ्गद बडी सेना ले दक्षिण द्वारपर जा महापार्श्व व महोदरका नाश करें ॥ २७ ॥ और पवनपुत्र हनुमान् पश्चिम द्वारपर स्थित हों ॥ २८ ॥ दैत्य दानवों ऋषियोंका अपकार करनेवाला नीच स्वभाव मदान्ध ॥ २९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परिक्रमति यः सर्वाँल्लोकान्संतापयन्प्रजाः।
तस्याहं राक्षसेन्द्रस्य स्वयमेव वधे धृतः ३०
उत्तरं नगरद्वारमहं सौमित्रिणा सह।
निपीड्याभिप्रवेक्ष्यामि सबलो यत्र रावणः ३१
वानरेन्द्रश्च बलवानृक्षराजश्च वीर्यवान्।
राक्षसेन्द्रानुजश्चैव गुल्मे भवतु मध्यमे ३२
न चैव मानुषं रूपं कार्यं हरिभिराहवे।
एषा भवतु नः संज्ञा युद्धेऽस्मिन्वानरे बले ३३
वानरा एव वश्चिह्नं स्वजनेऽस्मिन्भविष्यति।
वयं तु मानुषेणैव सप्त योत्स्यामहे परान् ३४
अहमेव सह भ्रात्रा लक्ष्मणेन महौजसा।
आत्मना पञ्चमश्चायं सखा मम विभीषणः ३५
स रामः कृत्यसिद्ध्यर्थमेवमुक्त्वा विभीषणम् ३६
सुवेलारोहणे बुद्धिं चकार मतिमान्प्रभुः।
रमणीयतरं दृष्ट्वा सुवेलस्य गिरेस्तटम् ३७

सब लोकोंको पीडित करनेको जो रावण घूमता है उसका वध करनेके
उत्तर द्वारपर मैं स्वयं जाऊंगा ॥ ३० ॥

लक्ष्मणको साथ ले जहां सेनासहित रावण खडा होगा ॥ ३१ ॥
सामने जायेंग सुग्रीव जांबवान तथा बिभीषण ये तीनों सेना व्यूहकी
करें ॥ ३२ ॥ युद्धमें कोई भी वानर मनुष्यका रूप न धारे ऐसा
अपने और परायेका ज्ञान न हो सकेगा ॥ ३३ ॥

हे वानरो ! तुम लोगोंका चिन्ह वानर ही रहेगा हम सात जने
का रूप धारे शत्रुओंसे युद्ध करेंगे ॥ ३४ ॥ लक्ष्मणसहित मैं तथा मेरे
बिभीषण चारों मन्त्रियों सहित मनुष्य रूपसे युद्ध करेंगे ॥ ३५ ॥
विभीषण ऐसा कह सुवेल पर्वतपर चढनेका विचार करने लगे ॥३६॥
समय सुवेल पर्वतका तट बहुत सुन्दर दिखाई दिया ॥ ३७ ॥ इसके

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ततस्तु रामो महता बलेन प्रच्छाद्य सर्वां पृथिवीं महात्मा ।
प्रहृष्टरूपोऽभिजगाम लङ्कां कृत्वा मतिं सोऽरिवधे महात्मा ३८

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे सप्तत्रिंशः सर्गः ॥३७॥[१३५८]

॥ अष्टत्रिंशः सर्गः ॥

स तु कृत्वा सुवेलस्य मतिमारोहणं प्रति ।
लक्ष्मणानुगतो रामः सुग्रीवमिदमब्रवीत् १
बिभीषणं च धर्मज्ञमनुरक्तं निशाचरम् ।
मन्त्रज्ञं च विधिज्ञं च श्लक्ष्णया परया गिरा २
सुवेलं साधुशैलेन्द्रमिमं धातुशतैश्चितम् ।
अध्यारोहामहे सर्वे वत्स्यामोऽत्र निशामिमाम् ३
लङ्कां चालोकयिष्यामो निलयं तस्य राक्षसः ।
येन मे मरणान्ताय हृता भार्या दुरात्मना ४
येन धर्मो न विज्ञातो न वृत्तं न कुलं तथा ।
राक्षस्या नीचया बुद्ध्या येन तद्गर्हितं कृतम् ५
एवं संमन्त्रयन्नेव सक्रोधो रावणं प्रति ।
रामः सुवेलमासाद्य चित्रसानुमुपारुहत् ६

प्रचंड सैन्यसे सम्पूर्ण पृथ्वीको आच्छादित करके और शत्रुका वध करना यह मनमें लक्ष्यकर आनन्दित हुआ वह महात्मा राम लंकापर चढाई किया ॥ ३८ ॥

॥ यहां ३७ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

सुवेल पहाडपर चढनेकी मति कर लक्ष्मणको साथ ले राम सुग्रीव ॥ १ ॥ धर्मज्ञ व अनुरक्त बिभीषणसे बोले ॥ २ ॥ कि आओ इस सुवेलपर चढ आज रात्रि भर हम सब वहीं रहें ॥ ३ ॥ जिस दुष्टात्माने अपनी मृत्युरूप मेरी भार्या हरण की है उसका स्थान भी इसपर चढ देखेंगे ॥ ४ ॥ जिस रावणने धर्मकुलका ज्ञान छोड केवल नीच राक्षसी बुद्धिसे ही ऐसा जुगुप्सित कर्म किया है ॥ ५ ॥ इस प्रकार सलाह करते सुवेलपर चढ अति सुन्दर एक शिखरपर चढे ॥ ६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पृष्ठतो लक्ष्मणश्चैनमन्वगच्छत्समाहितः ।
सशरं चापमुद्यम्य सुमहद्विक्रमे रतः ॥
तमन्वारोहत्सुग्रीवः सामात्यः सविभीषणः ७
ते वायुवेगप्रवणास्तं गिरिं गिरिचारिणः ।
अध्यारोहन्त शतशः सुवेलं यत्र राघवः ८
ते त्वदीर्घेण कालेन गिरिमारुह्य सर्वतः ।
ददृशुः शिखरे तस्य विषक्तामिव खे पुरीम् ९
तां शुभां प्रवरद्वारां प्राकारवरशोभिताम् ।
लङ्कां राक्षससंपूर्णां ददृशुर्हरियूथपाः १०
प्राकारवरसंस्थैश्च तथा नीलैश्च राक्षसैः ।
ददृशुस्ते हरिश्रेष्ठाः प्राकारमपरं कृतम् ११
तान्दृष्ट्वा वानराः सर्वे राक्षसान्युद्धकाङ्क्षिणः ।
मुमुचुर्विविधान्नादांस्तस्य रामस्य पश्यतः १२
ततोऽस्तमगमत्सूर्यः संध्यया प्रतिरञ्जितः ।
पूर्णचन्द्रप्रदीप्ता च क्षपा समतिवर्तत १३
ततः स रामो हरिवाहिनीपतिर्विभीषणेन प्रतिनन्द्य सत्कृतः
सलक्ष्मणो यूथपयूथसंयुतः सुवेलपृष्ठे न्यवसद्यथासुखम्
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डेऽष्टत्रिंशः सर्गः ॥ ३८ ॥ [१

उनके पीछे पीछे धनुषबाण हाथमें लिये लक्ष्मण व अमात्यके साथ सु फिर विभीषण भी चले ॥ ७ ॥ तत्पश्चात् वायुवत् वेगवाले वानर सुवेल पर्वतपर जहां राम थे सब चढ गये ॥ ८ ॥ पहाडपर चढ उन त्रिकूटकी चोटीपर स्थित दो फाटक प्राकारयुक्त सुन्दर लंका देखा ॥ ९ ॥ प्राकारपर चढके राक्षसोंसे घिरी लंकाको सब वा देखा ॥ १० ॥ और उत्कृष्ट प्राकारपर नील राक्षसके योगसे लंका दूसरा प्राकार है ऐसा वानरश्रेष्ठोंने देखा ॥ ११ ॥ वानरोंने राक्ष युद्धाकांक्षी देख रामके देखते ही शब्द किया ॥ १२ ॥ इतनेमें सन्ध्य गई चन्द्रयुक्त प्रकाशित रात आई ॥ १३ ॥ राम विभीषण यूथ लक्ष्मणके साथ सुवेल नाम पर्वतपर सुखसें रहे ॥ १४ ॥

॥ यहां ३८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एकत्रिंशः सर्गः ।

तां रात्रिमुषितास्तत्र सुवेले हरियूथपाः ।
लङ्कायां ददृशुर्वीरा वनान्युपवनानि च ॥ १

समसौम्यानि रम्याणि विशालान्यायतानि च ।
दृष्टिरम्याणि ते दृष्ट्वा बभूवुर्जातविस्मयाः ॥ २

चम्पकाशोकबकुलशालतालसमाकुला ।
तमालपनसच्छन्ना नागमालासमावृता ॥ ३

हिन्तालैरर्जुनैर्नीपैः सप्तपर्णैः सुपुष्पितैः ।
तिलकैः कर्णिकारैश्च पाटलैश्च समन्ततः ॥ ४

शुशुभे पुष्पिताग्रैश्च लतापरिगतद्रुमैः ।
लङ्का बहुविधैर्दिव्यैर्यथेन्द्रस्यामरावती ॥ ५

विचित्रकुसुमोपेतै रक्तकोमलपल्लवैः ।
शाद्वलैश्च तथा नीलैश्चित्राभिर्वनराजिभिः ॥ ६

गन्धाढ्यान्यतिरम्याणि पुष्पाणि च फलानि च ।
धारयन्त्यागमास्तत्र भूषणानीव मानवाः ॥ ७

तच्चैत्ररथसंकाशं मनोज्ञं नन्दनोपमम् ।
वनं सर्वर्तुकं रम्यं शुशुभे षट्पदायुतम् ॥ ८

रातभरमें वानर यूथप सुवेलपर रहे और लंकाके वन–उपवनोंको देखा ॥ १ ॥ वहांके वन-उपवनोंको सुखदाई रम्य विस्तृत व सुहावने देख वानर बडा आश्चर्य करने लगे ॥ २ ॥ चम्पा, अशोक, साखू, तमाल, नाग आदि ॥ ३ ॥ हिंताल, कदम्ब, तिलक, कार, पाटल आदि वृक्षोंसे युक्त शोभित फूले फले वृक्षोंसे लंका अमरावतीके तुल्य शोभा देती थी ॥ ४-५ ॥ पुष्पयुक्त कोमल पल्लवोंसे बनी हरी घासों व श्याम बन पंक्तियोंसे शोभायमान थी ॥ ६ ॥ वहां सुगन्धिमय पुष्प फल सब पेड धारण किये ॥ ७ ॥ नन्दनवनके तुल्य मनोहर व रमणीय लंकाका वन भ्रमरयुक्त होनेसे शोभायमान था ॥ ८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दात्यूहक्रौयष्टिबकैर्नृत्यमानैश्च बर्हिणैः।
रुतं परभृतानां च शुश्रुवे वननिर्झरे ९
नित्यमत्तविहङ्गानि भ्रमराचरितानि च।
कोकिलाकुलखण्डानि विहङ्गाभिरुतानि च १०
भृङ्गराजाधिगीतानि कुररस्वनितानि च।
विविशुस्ते ततस्तानि वनान्युपवनानि च ११
हृष्टाः प्रमुदिता वीरा हरयः कामरूपिणः १२
तेषां प्रविशतां तत्र वानराणां महौजसाम्।
पुष्पसंसर्गसुरभिर्ववौ प्राणसमोऽनिलः १३
अन्ये तु हरिवीराणां यूथान्निष्क्रम्य यूथपाः।
सुग्रीवेणाभ्यनुज्ञाता लङ्कां जग्मुः पताकिनीम् १४
वित्रासयन्तो विहगान्ग्लापयन्तो मृगद्विपान्।
कम्पयन्तश्च तां लङ्कां नादैः स्वैर्नदतां वराः १५
कुर्वन्तस्ते महावेगा महीं चरणपीडिताम्।
रजश्च सहसैवोर्ध्वं जगाम चरणोत्थितम् १६
ऋक्षाः सिंहाश्च महिषा वारणाश्च मृगाः खगाः।

वनके झरनोंके किनारे किनारे चकवा कुक्कुट बगुला मयूर व आदि पक्षियोंका शब्द सुनाई देता था॥ ९॥ मतवाले पक्षियोंसे भौंरोसे व्याप्त कोकिल सेवित वृक्ष तथा पक्षियोंके शब्दसे शब्दायमान भ्रमरोंके गुंजारसे भरे व क्रौंचोंकी बोलीसे सुहावने ॥ ११॥ उपवनोंमें आनन्दित हो शूर वीर वानर लोग प्रवेश कर गये॥ उन महापराक्रमी वानरोंके प्रवेश करने तथा पुष्पोंका संसर्ग होनेसे न्धित पवन प्रिय चलने लगा॥ १३॥ और यूथप गण वानर झुण्डोंसे निकल सुग्रीव पताकायुक्त लंकाको गये॥ १४॥

वे वानर वीर गर्जनेसे पक्षियोंको भयाकुल करते हाथियोंको तथा उस लंकाको कंपाते॥ १५॥ महावेगसे जाते थे। पृथ्वीको पीडित करनेसे धूल उठी॥ १६॥ वानरोंके उस शब्दसे डरकर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तेन शब्देन वित्रस्ता जग्मुर्भीता दिशो दश १७
शिखरं तु त्रिकूटस्य प्रांशु चैकं दिविस्पृशम्।
समन्तात्पुष्पसंछन्नं महारजतसंनिभम् १८
शतयोजनविस्तीर्णं विमलं चारुदर्शनम्।
श्लक्ष्णं श्रीमन्महच्चैव दुष्प्रापं शकुनैरपि॥
मनसापि दुरारोहं किं पुनः कर्मणा जनैः १९
निविष्टा तस्य शिखरे लङ्का रावणपालिता।
शतयोजनविस्तीर्णा विंशद्योजनमायता २०
सा पुरी गोपुरैरुच्चैः पाण्डुराम्बुदसंनिभैः।
काञ्चनेन च शालेन राजतेन च शोभते २१
प्रासादैश्च विमानैश्च लङ्का परमभूषिता।
घनैरिवातपापाये मध्यमं वैष्णवं पदम् २२
यस्यां स्तम्भसहस्रेण प्रासादः समलंकृतः।
कैलासशिखराकारो दृश्यते खमिवोल्लिखन् २३
चैत्यः स राक्षसेन्द्रस्य बभूव पुरभूषणम्।
शतेन रक्षसां नित्यं यः समग्रेण रक्ष्यते २४

...नेवाले मृग पक्षी सब ओरको भाग गये ॥ १७ ॥ निकट पहुंच बडा ...ा पुष्पोंसे संयुक्त त्रिकूटाचलका शिखर देखा ॥ १८ ॥ वह सौ योजनका ...स्तृत था देखनेमें बडा सुन्दर व स्वच्छ था उसकी जिस चिकनी चोटी ...लङ्का स्थित थी वहां मनुष्य नहीं पहुंच सकते थे ॥ १९ ॥ ...वह पुरी योजनकी चौडाई और योजनकी लम्बाईमें बसी थी ॥ २० ॥ ...के समान श्वेतवर्णके ऊंचे ऊंचे नगर द्वार व सुवर्ण तथा चांदीके ...बडे कोट इस सबसे लंका सुशोभित थी ॥ २१ ॥ प्रासादों विमानोंसे ...भांति भूषित हो रही थी ॥ २२ ॥ राजमन्दिर जो सहस्र खम्भोंसे ...था आकाशसे बातें करता था ॥ २३ ॥ रावणका चैत्य प्रासाद नगरका ...रूप था इसकी रक्षा सैकडों राक्षस नित्य किया करते थे ॥ २४ ॥

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मनोज्ञां काञ्चनवतीं पर्वतैरुपशोभिताम्।
नानाधातुविचित्रैश्च उद्यानैरुपशोभिताम् १५
नानाविहगसंघुष्टां नानामृगनिषेविताम्।
नानाकुसुमसंपन्नां नानाराक्षससेविताम् १६
तां समृद्धां समृद्धार्थीं लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणाग्रजः।
नगरीं त्रिदिवप्रख्यां विस्मयं प्राप वीर्यवान् १७
तां रत्नपूर्णां बहुसंविधानां प्रासादमालाभिरलंकृतां च।
पुरीं महायन्त्रकवाटमुख्यां ददर्श रामो महता बलेन।

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्ड एकोनचत्वारिंशः सर्गः ॥३९॥

॥ चत्वारिंशः सर्ग ॥:

ततो रामः सुवेलाग्रं योजनद्वयमण्डलम्
उपारोहत्ससुग्रीवो हरियूथैः समन्वितः १
स्थित्वा मूहूर्तं तत्रैव दिशो दश विलोकयन्।
त्रिकूटशिखरे रम्ये निर्मितां विश्वकर्मणा २
ददर्श लङ्कां सुन्यस्तां रम्यकाननशोभिताम्।
तस्यां गोपुरशृङ्गस्थं राक्षसेन्द्रं दुरासदम् ३
श्वेतचामरपर्यन्तं विजयच्छत्रशोभितम्।

पर्वतोंसे शोभित नाना धातुओंसे, वाटिकाओंसे, युक्त ॥ २५॥ पक्षियोंके शब्दसे शब्दित और मृगोंसे सेवित, नाना राक्षसोंसे सेवित। सब पदार्थोंसे सम्पन्न भरी पुरी लंका देख राम बडे अचम्भेमें हुए। रत्नोंसे पूर्ण, उपजीविकाके अनेक साधनोंसे संपन्न प्रसाद पंक्तिओंसे और बडे बडे दरवाजे तथा सैन्योंसे युक्त लंकाको रामने देखा॥

॥ यहाँ ३९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ॥

सुलेख पर्वतके अगले भाग पर सुग्रीव तथा अन्य वानरोंके संग ले राम चढे ॥ १ ॥ वहां मुहूर्त्तभर तक खडे हो सब ओर देख त्रिकूटके शिखरपर विश्वकर्माकी बनाई ॥ २ ॥ लंका देखी, उस गोपुरपर खडे रावणको ॥३॥ चामर ढुरते व छत्र शिरपर लगाये,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रक्तचंदनसंलिप्तं रक्ताभरणभूषितम् ४
नीलजीमूतसंकाशं हेमसंछादिताम्बरम्।
ऐरावतविषाणाग्रैरुत्कृष्टकिणवक्षसम् ५
शशलोहितरागेण संवीतं रक्तवाससा।
संध्यातपेन संछन्नं मेघराशिमिवाम्बरे ६
पश्यतां वानरेन्द्राणां राघवस्यापि पश्यतः।
दर्शनाद्राक्षसेन्द्रस्य सुग्रीवः सहसोत्थितः ७
क्रोधवेगेन संयुक्तः सत्त्वेन च बलेन च।
अचलाग्रादथोत्थाय पुप्लुवे गोपुरस्थले ८
स्थित्वा मुहूर्तं संप्रेक्ष्य निर्भयेनान्तरात्मना।
तृणीकृत्य च तद्रक्षः सोऽब्रवीत्परुषं वचः ९
लोकनाथस्य रामस्य सखा दासोऽस्मि राक्षस।
न मया मोक्ष्यसेऽद्य त्वं पार्थिवेन्द्रस्य तेजसा १०
इत्युक्त्वा सहसोत्पत्य पुप्लुवे तस्य चोपरि।
आकृष्य मुकुटं चित्रं पातयामास तद्भुवि ११
समीक्ष्य तूर्णमायान्तं बभाषे तं निशाचरः।
सुग्रीवस्त्वं परोक्षं मे हीनग्रीवो भविष्यसि १२

[र]त्नाभूषण धारे ॥ ४ ॥ काले बादलकेसे रंगका सुवर्ण जटित वस्त्र धारे, [ऐर]ावत हाथीके दांतोंके घावसे छातीयुक्त ॥ ५ ॥ लाल रंगका कपडा [धा]रण किये आकाशमें सन्ध्याके बादलकी राशिके समान विराजमान ॥ ६ ॥ [सुग्रीव]ने देखा। राम व वानर गण रावण ही को देख रहे थे कि सुग्रीव [उठ]ा ॥ ७ ॥ और बडे पराक्रम व बलसे उस गिरिशिखरसे उसी गोपुर [पर कू]दा जहां रावण था ॥ ८ ॥ वहां पहुंच निर्भय हो रावणको तुच्छ समझ [कठोर वचन]से बोला ॥ ९ ॥

हे राक्षस ! श्रीरामका मैं मित्र व अनुचर हूं अब मुझसे तुम जीते नहीं सकते ॥ १० ॥ इतना कह उसके शिरसे मुकुट उतार भूमिमें फेंक [दिया] ॥ ११ ॥ सुग्रीवको ऐसा कर्म करते देख रावण बोला-हे सुग्रीव तुम परोक्ष हो मैं ग्रीवारहित हो जावोगे ॥ १२ ॥ यह कह दोनों हाथोंसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इत्युक्त्वोत्थाय तं क्षिप्रं बाहुभ्यामाक्षिपत्तले ।
कन्दुवत्स समुत्थाय बाहुभ्यामाक्षिपद्धरिः १३
परस्परं स्वेदविदिग्धगात्रौ परस्परं शोणितरक्तदेहौ ।
परस्परं श्लिष्टनिरुद्धचेष्टौ परस्परं शाल्मलिकिंशुकाविव १४
मुष्टिप्रहारैश्च तलप्रहारैररत्निघातैश्च कराग्रघातैः ।
तौ चक्रतुर्युद्धमसह्यरूपं महाबलौ राक्षसवानरेन्द्रौ १५
कृत्वा नियुद्धं भृशमुग्रवेगौ कालं चिरं गोपुरवेदिमध्ये ।
उत्क्षिप्य चोत्क्षिप्य विनम्य देहौ पादक्रमाद्गोपुरवेदिलग्नौ १६
अन्योन्यमापीड्य विलग्नदेहौ तौ पेततुः सालनिखातमध्ये ।
उत्पेततुर्भूमितलं स्पृशन्तौ स्थित्वा मुहूर्तं त्वभिनिःश्वसन्तौ १७
आलिङ्ग्य चालिङ्ग्य च बाहुयोक्त्रैः संयोजयामासतुराहवे तौ
संरम्भशिक्षाबलसंप्रयुक्तौ सुचेरतुः संप्रति युद्धमार्गे १८
शार्दूलसिंहाविव जातदंष्ट्रौ गजेन्द्रपोताविव संप्रयुक्तौ ।
संहत्य संवेद्य च तौ कराभ्यां तौ पेततुर्वै युगपद्धरायाम् १९
उद्यम्य चान्योन्यमधिक्षिपन्तौ संचक्रमाते बहु युद्धमार्गे ।
व्यायामशिक्षाबलसंप्रयुक्तौ क्लमं न तौ जग्मतुराशु वीरौ २०

पकड सुग्रीवको भूमिमें पटका; परन्तु सुग्रीवने भी झट उठ रावणको भूमिमें पटक दिया ॥ १३ ॥ दोनोंके अङ्गोंसे पसीना बहने लगा, शरीर रक्तसे लाल हो गये ॥ १४ ॥

दोनों लात थप्पडके प्रहारोंसे एक दूसरेको मार युद्ध करने लगे ॥ एवं लंकाके फाटकके आगेकी वेदी पर दोनों बहुत देरतक द्वन्द्व रहे ॥१६॥ फिर एक दूसरेको बडे बलसे दबा चिपट गये और लडते दोनों खाईमें गिरे । वहांसे बाहर आ कुछ देरतक दोनों ऊर्ध्व श्वांस रहे ॥ १७ ॥ फिर युद्ध करने लगे तथा युद्ध करनेकी विद्या जो जिसे थी काममें ला बडा युद्ध करने लगे ॥ १८ ॥ दोनों लडते, परस्पर मार खाते, भूमि पर गिरे ॥ १९ ॥ फिर उठ देरतक लडते रहे; दोनों वीर शीघ्र न थके ॥ २० ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बाहूत्तमैर्वारणवारणाभैर्निवारयन्तौ परवारणाभौ ।
चिरेण कालेन भृशं प्रयुद्धौ संचेरतुर्मण्डलमार्गमाशु २१
तौ परस्परमासाद्य यत्तावन्योन्यसूदने ।
मार्जाराविव भक्षार्थेवतस्थाते मुहुर्मुहुः २२
मण्डलानि विचित्राणि स्थानानि विविधानि च ।
गोमूत्रकाणि चित्राणि गतप्रत्यागतानि च २३
तिरश्चीनगतान्येव तथा वक्रगतानि च ।
परिमोक्षं प्रहाराणां वर्जनं परिधावनम् २४
अभिद्रवणमाप्लावमवस्थानं सविग्रहम् ।
परावृत्तमपावृत्तमपद्रुतमवप्लुतम् २५
उपन्यस्तमपन्यस्तं युद्धमार्गविशारदौ ।
तौ विचेरतुरन्योन्यं वानरेन्द्रश्च रावणः २६
एतस्मिन्नन्तरे रक्षो मायाबलमथात्मनः ।

वे एक दूसरेको झोंका देते सदान्ध हाथियोंके तुल्य देरतक द्वन्द्व करते, फिर मण्डल बनाकर युद्ध करने लगे ॥२१॥ वार बार एक दूसरेको मार ही डालनेके विचारसे युद्ध करते थे ॥ २२ ॥ फिर चारि, करण, खण्ड, महाखण्डके नामसे प्रसिद्ध मंडली द्वारा युद्ध करने लगे, नाना वैष्णवादि पांच स्थान करने लगे व गोमूत्राकार टेढे मेढे अनेक चित्र व गत प्रत्यागत ॥ २३ ॥ तिरछा चलना परस्पर प्रहार बचा बचा कुटिल चलना, घातको व प्रहारको युक्तिसे बचाना, यत्नसे मुष्टिक आदिसे बचाना, मारने पर आगेको कूदकर जाना ॥ २४ ॥ शीघ्र ही सम्मुख दौडना, ऊपरको कूद जाना, विग्रह दिखाकर एक स्थानमें ठहरना, प्रहार लगते देख युद्धकी चतुरतासे पीछे मुख कर जाना, पीछे हटना, झट पट कूद जाना, बगलसे निकल जाना शत्रुओंको लिये पैर उठाकर दौडना ॥ २५ ॥

शत्रुसे बचनेके लिये ऊंचे हो जाना, शत्रुओंको पकडनेके लिये बाह फैलाना इत्यादि विविध युद्ध कलाओंको दोनों बराबर करते रहे, जब कोई दिखाई न दिया ॥ २६ ॥ तो रावण अपनी माया दिखानेको उद्यत हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आरब्धुमुपसंपेदे ज्ञात्वा तं वानराधिपः २७
उत्पपात तदाकाशं जितकाशी जितक्लमः।
रावणः स्थित एवात्र हरिराजेन वञ्चितः २८
अथ हरिवरनाथः प्राप्तसङ्ग्रामकीर्तिर्निशिचरपतिमाजौ योजयित्वा श्रमेण।
गगनमतिविशालं लङ्घयित्वार्कसूनुर्हरिगणबलमध्ये रामपार्श्वं जगाम २९
स इति सवितृसूनुस्तत्र तत्कर्म कृत्वा पवनगतिरनीकं प्राविशत्संप्रहृष्टः।
रघुवरनृपसूनोर्वर्धयन्युद्धहर्षं तरुमृगगणमुख्यैः पूज्यमानो हरीन्द्रः ३०

इत्यार्षे श्रीमद्रा०वाल्मी०आदिकाव्ये युद्धकाण्डे चत्वारिंशः सर्गः ॥४०॥ [१४:

॥ एकचत्वारिंशः सर्गः ॥

अथ तस्मिन्निमित्तानि दृष्ट्वा लक्ष्मणपूर्वजः।
सुग्रीवं संपरिष्वज्य रामो वचनमब्रवीत् १
असंमन्त्र्य मया सार्धं तदिदं साहसं कृतम्।
एवं साहसयुक्तानि न कुर्वन्ति जनेश्वराः २
संशये स्थाप्य मां चेदं बलं चेमं विभीषणम्।

वानरराज सुग्रीव उसे जान ॥ २७ ॥ रावणको छोड वहांसे आका[श] चला गया। इस तरह सुग्रीवके धोखा देने पर रावण वहीं खडा रहा॥२[८] व श्रेष्ठ संग्रामकी कीर्ति पा सुग्रीव रावणको अच्छी तरह श्रमसे ल[डा] आकाशको लांघ रामके समीपको चला ॥ २९ ॥ ऐसा कर्म कर वान[र] सुग्रीव रामका हर्ष बढाते वानरोंसे पूजित हो, सेनाके बीचमें आ गया॥३[०]

॥ यहाँ ४० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः निमित्तोंको देख राम सुग्रीवको आलिङ्गन कर बोले ॥ १ ॥ [मि] साथ विना विचार किये यह जो साहस किया इस प्रकारके साहस [रा] लोग नहीं किया करते ॥ २ ॥ मुझको इस सेना व बिभीषणको सं[श]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कष्टं कृतमिदं वीर साहसं साहसप्रिय ३
इदानीं मा कृथा वीर एवंविधमरिंदम ।
त्वयि किंचित्समापन्ने किं कार्यं सीतया मम ४
भरतेन महाबाहो लक्ष्मणेन यवीयसा ।
शत्रुघ्नेन च शत्रुघ्न स्वशरीरेण वा पुनः ५
त्वयि चानागते पूर्वमिति मे निश्चिता मतिः ।
जानतश्चापि ते वीर्यं महेन्द्रवरुणोपम ६
हत्वाहं रावणं युद्धे सपुत्रबलवाहनम् ।
अभिषिच्य च लङ्कायां बिभीषणमथापि च ७
भरते राज्यमारोप्य त्यक्ष्ये देहं महाबल ।
तमेवं वादिनं रामं सुग्रीवः प्रत्यभाषत ८
तव भार्यापहर्तारं दृष्ट्वा राघव रावणम् ।
मर्षयामि कथं वीर जानन्विक्रममात्मनः ९
इत्येवं वादिनं वीरमभिनन्द्य च राघवः ।
लक्ष्मणं लक्ष्मिसंपन्नमिदं वचनमब्रवीत् १०
परिगृह्योदकं शीतं वनानि फलवन्ति च ।
बलौघं संविभज्येमं व्यूह्य तिष्ठाम लक्ष्मण ११

डाल तुमने यह महा साहस किया ॥ ३ ॥ हे वीर अब इस प्रकारका साहस कभी न करना; क्योंकि यदि तुम्हारा अपमानादि हो गया तो फिर सीता ही से मेरा क्या प्रयोजन है ? ॥ ४ ॥ अथवा भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न वे स्वशरीर ही से क्या कार्य रहेगा ॥ ५ ॥

यद्यपि मैं तुम्हारा वीर्य जानता था पर तुम्हारे न लौटने पर मैंने यह सोच लिया था ॥ ६ ॥ कि पुत्र वाहन सेनासहित रावणको मार बिभीषणका राजतिलक कर ॥ ७ ॥ भरतको अयोध्याका राज दे मैं भी तुम्हारे वियोगसे अपना शरीर छोड दूंगा, ऐसा कहते हुये रामसे सुग्रीवने कहा ॥ ८ ॥

हे राम ! आपकी भार्य्या हरनेवाले रावणको देख व अपने पराक्रमको जान मैं कैसे चुप रहता ॥ ९ ॥ वीर सुग्रीवकी प्रशंसा कर लक्ष्मणसे राम कहे ॥ १० ॥ हे लक्ष्मण ! जहां जल तथा फल युक्त बन हो वहां इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लोकक्षयकरं भीमं भयं पश्याम्युपस्थितम्।
निबर्हणं प्रवीराणामृक्षवानररक्षसाम् ॥ १२
वाता हि परुषं वान्ति कम्पते च वसुन्धरा।
पर्वताग्राणि वेपन्ते नदन्ति धरणीधराः ॥ १३
मेघाः क्रव्यादसंकाशाः परुषाः परुषस्वराः।
क्रूराः क्रूरं प्रवर्षन्ते मिश्रं शोणितबिन्दुभिः ॥ १४
रक्तचन्दनसंकाशा संध्या परमदारुणा।
ज्वलच्च निपतत्येतदादित्यादग्निमण्डलम् ॥ १५
आदित्यमभिवाश्यन्ति जनयन्तो महद्भयम्।
दीना दीनस्वराः क्रूरा अप्रशस्ता मृगद्विजाः ॥ १६
रजन्यामप्रशस्तश्च संतापयति चन्द्रमाः।
कृष्णरक्तांशुपर्यन्तो यथा लोकस्य संक्षये ॥ १७
ह्रस्वो रूक्षोऽप्रशस्तश्च परिवेषः सुलोहितः।
आदित्यमण्डले नीलं लक्ष्म लक्ष्मण दृश्यते ॥ १८
दृश्यते न यथावच्च नक्षत्राण्यभिवर्तते।
युगान्तमिव लोकस्य पश्य लक्ष्मण शंसति ॥ १९

सेनाको ठहराओ ॥ ११ ॥ लोक नाशक भयंकर भय उपस्थित हुआ दी पडता है जिसमें ऋक्ष वानर व राक्षस वीरोंका नाश होगा ॥ १२ ॥ पव प्रचण्डतासे चलता है, भूमि कांपती है, पर्वतोंके अग्रभाग थरथरा रहे धरणीधर नाद करते हैं ॥ १३ ॥

बादल कठोर शब्द करते और रक्तयुक्त वर्षा बरसाते हैं ॥ १४ ॥ सायंको मेघ लाल हो जाते हैं और सूर्य मण्डलसे जलती हुई सी ज्वा निकलती है ॥ १५ ॥ अशुभ मृग पक्षी सूर्यकी ओर मुख उठा रोते दुःखित शब्द कर जनाते हैं ॥ १६ ॥ रातको चन्द्रसे अन्धेरा नहीं गर्मी लगती है, उसके किनारे काले व लाल हो गये हैं ॥ १७ ॥

हे लक्ष्मण ! सूर्यमण्डलके चारों ओर अशुभ लाल मण्डल दीख पड जिसके बीचमें काले दाग दिखाई देते हैं ॥१८॥ नक्षत्र स्पष्ट नहीं दिखाई इन निमित्तोंसे युगान्तकाल उपस्थित हुआ विदित होता है ॥ १९ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

काकाः श्येनास्तथा गृध्रा नीचैः परिपतन्ति च ।
शिवाश्चाप्यशुभा वाचः प्रवदन्ति महास्वनाः २०
शैलैः शूलैश्च खड्गैश्च विमुक्तैः कपिराक्षसैः ।
भविष्यत्यावृता भूमिर्मांसशोणितकर्दमा २१
क्षिप्रमद्य दुराधर्षां पुरीं रावणपालिताम् ।
अभियाम जवेनैव सर्वतो हरिभिर्वृताः २२
इत्येवं तु वदन्वीरो लक्ष्मणं लक्ष्मणाग्रजः ।
तस्मादवातरच्छीघ्रं पर्वताग्रान्महाबलः २३
अवतीर्य तु धर्मात्मा तस्माच्छैलात्स राघवः ।
परैः परमदुर्धर्षं ददर्श बलमात्मनः २४
संनह्य तु ससुग्रीवः कपिराजबलं महत् ।
कालज्ञो राघवः काले संयुगायाभ्यचोदयत् २५
ततः काले महाबाहुर्बलेन महता वृतः ।
प्रविष्टः पुरतो धन्वी लङ्कामभिमुखः पुरीम् २६
तौ विभीषणसुग्रीवौ हनूमाञ्जाम्बवान्नलः ।
ऋक्षराजस्तथा नीलो लक्ष्मणश्चान्वयुस्तदा २७
ततः पश्चात्सुमहती पृतनर्क्षवनौकसाम् ।
प्रच्छाद्य महतीं भूमिमनुयाति स्म राघवम् २८

बाज, गृध्र घोसलोंसे गिरगिर पडते हैं गीदडियां अशुभ वाणी बोलती हैं ॥ २० ॥ इन अशकुनोंसे विदित होता है कि वानर और राक्षसोंके द्वारा मरे हुये लोगोंके मांस व रक्तसे भूमि भर जायगी ॥ २१ ॥ सो जल्दी ही दुर्द्धर्ष लंकाको वानर सेना ले सब ओरसे घेर चढाई करो ॥ २२ ॥ एवं लक्ष्मणसे कहते हुए महाबली राम उस पहाडसे नीचे उतरे ॥ २३ ॥

रामने उस गिरिसे उतर अपनी सेनाको देखा ॥ २४ ॥ रामने युद्ध सामग्री निहारकर युद्धार्थं वानरोंको आज्ञा दी ॥ २५ ॥ अवसर आनेपर महाबाहु राम बडी सेना ले लंकाकी ओर चले ॥ २६ ॥ बिभीषण सुग्रीव हनुमान जाम्बवान नल नील व लक्ष्मण ये सब पीछे पीछे चले ॥२७॥ पीछे पीछे वानरों और ऋक्षोंकी बडी सेना भूमिको आच्छादित करती चली॥२८॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शैलशृङ्गाणि शतशः प्रवृद्धांश्च महीरुहान्।
जगृहुः कुञ्जरप्रख्या वानराः परवारणाः २९
तौ त्वदीर्घेण कालेन भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।
रावणस्य पुरीं लङ्कामासेदतुररिन्दमौ ३०
पताकामालिनीं रम्यामुद्यानवनशोभिताम्।
चित्रवप्रां सुदुष्प्रापामुच्चैः प्राकारतोरणाम् ३१
तां सुरैरपि दुर्धर्षां रामवाक्यप्रचोदिताः।
यथानिदेशं संपीड्य न्यविशन्त वनौकसः ३२
लङ्कायास्तूत्तरद्वारं शैलशृङ्गमिवोन्नतम्।
रामः सहानुजो धन्वी जुगोप च रुरोध च ३३
लङ्कामुपनिविष्टस्तु रामो दशरथात्मजः।
लक्ष्मणानुचरो वीरः पुरीं रावणपालिताम् ३४
उत्तरद्वारमासाद्य यत्र तिष्ठति रावणः।
नान्यो रामाद्धि तद्द्वारं समर्थः परिरक्षितुम् ३५
रावणाधिष्ठितं भीमं वरुणेनेव सागरम्।
सायुधै राक्षसैर्भीमैरभिगुप्तं समन्ततः ३६
लघूनां त्रासजननं पातालमिव दानवैः ३७

वानर ऋक्ष सैकड़ों पर्वतोंके शिखर व वृक्ष ग्रहण कर लंकाकी ओर बढे ॥ २९ ॥ राम लक्ष्मण जल्दी ही लंकाके पास पहुंच गये ॥ ३० ॥ वह लंका पताकाओंसे शोभित चित्र प्रकारसे युक्त थी और दुर्द्धर्ष थी ॥ ३१ ॥ उस दुर्द्धर्ष लंकामें रामकी आज्ञा पा वानरगण यथायोग्य स्थानों में जा डटे ॥ ३२ ॥

लंकाके उत्तर फाटकको राम लक्ष्मणको साथ ले घेरकर रक्षा करने लगे ॥ ३३ ॥ राम व लक्ष्मण उस लंकामें प्रवेश कर गये ॥ ३४ ॥ जिस द्वारपर रावण था उस पर राम स्वयं गये ॥ ३५ ॥ वह द्वार रावणसे रक्षित होनेके कारण बडा भयंकर था चारों ओरसे भयंकर राक्षस उसकी रक्षा करते थे वह अल्प शक्तिवालोंको भयप्रद था ॥ ३६-३७ ॥ इसके आगे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विन्यस्तानि च योधानां बहूनि विविधानि च।
ददर्शायुधजालानि तथैव कवचानि च ३८
पूर्वं तु द्वारमासाद्य नीलो हरिचमूपतिः।
अतिष्ठत्सह मैन्देन द्विविदेन च वीर्यवान् ३९
अङ्गदो दक्षिणद्वारं जग्राह सुमहाबलः।
ऋषभेण गवाक्षेण गजेन गवयेन च ४०
हनूमान्पश्चिमद्वारं ररक्ष बलवान्कपिः।
प्रजङ्घतरसाभ्यां च वीरैरन्यैश्च संगतः ४१
मध्यमे च स्वयं गुल्मे सुग्रीवः समतिष्ठत।
सह सर्वैर्हरिश्रेष्ठैः सुपर्णपवनोपमैः ४२
वानराणां तु षट्त्रिंशत्कोट्यः प्रख्यातयूथपाः।
निपीड्योपनिविष्टाश्च सुग्रीवो यत्र वानरः ४३
शासनेन तु रामस्य लक्ष्मणः सविभीषणः।
द्वारे द्वारे हरीणां तु कोटिं कोटीर्न्यवेशयत् ४४
पश्चिमेन तु रामस्य सुषेणः सहजाम्बवान्।
अदूरान्मध्यमे गुल्मे तस्थौ बहुबलानुगः ४५
ते तु वानरशार्दूलाः शार्दूला इव दंष्ट्रिणः।

योधाओंके विविध अनेक प्रकार धरे हुये अस्त्र समूह और कवच देखे ॥ ३८ ॥ सेनापति नील पूर्व द्वारपर मैन्द द्विविद सहित स्थित हुआ ॥ ३९ ॥ दक्षिणके फाटकको अङ्गदने घेरा। ऋषभ, गवाक्ष, गज और गवय अङ्गदके साथ थे ॥४०॥ हनुमान पश्चिम फाटकपर रक्षा करने लगा, प्रजंघ और तरस सेनापति तथा और भी अनेक वानर साथ थे ॥ ४१ ॥

मध्यके गुल्मपर सुग्रीव श्रेष्ठ वानरोंको साथ ले स्थित हुआ ॥४२॥ इस वाहिनीमें छत्तीस करोड प्रसिद्ध यूथप थे ॥ ४३ ॥ रामकी आज्ञासे लक्ष्मण और बिभीषण आवश्यकतानुसार द्वार द्वारपर करोडों वानर भेजते थे ॥ ४४ ॥ सुषेण जाम्बवान् बहुतसी सेना ले रामके पीछे समीप ही मध्य वाली सेनाके स्थानपर हुये ॥ ४५ ॥ ये सब वानर शिला और वृक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गृहीत्वा द्रुमशैलाग्रान्हृष्टा युद्धाय तस्थिरे ४६
सर्वे विकृतलाङ्गूलाः सर्वे दंष्ट्रानखायुधाः ।
सर्वे विकृतचित्राङ्गाः सर्वे च विकृताननाः ४७
दशनागबलाः केचित्केचिद्दशगुणोत्तराः ।
केचिन्नागसहस्रस्य बभूवुस्तुल्यविक्रमाः ४८
सन्ति चौघबलाः केचित्केचिच्छतगुणोत्तराः ।
अप्रमेयबलाश्चान्ये तत्रासन्हरियूथपाः ४९
अद्भुतश्च विचित्रश्च तेषामासीत्समागमः ।
तत्र वानरसैन्यानां शलभानामिवोद्गमः ५०
प्रतिपूर्णमिवाकाशं संपूर्णेव च मेदिनी ।
लङ्कामुपनिविष्टैश्च संपतद्भिश्च वानरैः ५१
शतं शतसहस्राणां पृतनाक्षवनौकसाम् ।
लङ्काद्वाराण्युपाजग्मुरन्ये योद्धुं समन्ततः ५२
आवृतः स गिरिः सर्वैस्तैः समन्तात्प्लवङ्गमैः ।
अयुतानां सहस्रं च पुरीं तामभ्यवर्तत ५३

लिये बडे हर्षित हो युद्ध करनेको स्थित हुए ॥ ४६ ॥ सब वानर क्रोधसे अपनी अपनी पूछ नचाते पटकते थे, सबके अङ्ग नाना प्रकारके थे, सबके विकृत मु[ख] हो रहे थे ॥ ४७ ॥

किसी वानरमें दश किसीमें सौ और किसीमें हजार हाथियोंका ब[ल] था ॥ ४८ ॥ कोई वानर झुण्डके झुण्ड हाथियोंका बल रखता था, कोई [गि]नतीसे भी सौ अधिक बल रखता था ॥ ४९ ॥ उन वानरोंकी सेना[का] आगमन टीढीदल कैसा अद्भुत व विचित्र हुआ ॥ ५० ॥ लंकाके समी[प] पहुंचे वानरोंसे आकाश और पृथ्वी भर गई ॥ ५१ ॥ लाख लाख वानरोंकी सौ सेनायें लंकाके चारों फाटकोंपर स्थित थीं ॥ ५२ ॥ उन वानरोंसे सुवे[ल] घिर गया, एक करोड वानर लंकाके चारों ओर घूमते थे ॥ ५३ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वानरैर्बलवद्भिश्च बभूव द्रुमपाणिभिः ।
सर्वतः संवृता लङ्का दुष्प्रवेशापि वायुना ५४
राक्षसा विस्मयं जग्मुः सहसाभिनिपीडिताः ।
वानरैर्मेघसंकाशैः शक्रतुल्यपराक्रमैः ५५
महाञ्छब्दोऽभवत्तत्र बलौघस्याभिवर्ततः ।
सागरस्येव भिन्नस्य यथा स्यात्सलिलस्वनः ५६
तेन शब्देन महता सप्राकारा सतोरणा ।
लङ्का प्रचलिता सर्वा सशैलवनकानना ५७
रामलक्ष्मणगुप्ता सा सुग्रीवेण च वाहिनी ।
बभूव दुर्धर्षतरा सर्वैरपि सुरासुरैः ५८
राघवः संनिवेश्यैव स्वसैन्यं रक्षसां वधे ।
संमन्त्र्य मंत्रिभिः सार्धं निश्चित्य च पुनः पुनः ५९
आनन्तर्यमभिप्रेप्सुः क्रमयोगार्थतत्त्ववित् ।
विभीषणस्यानुमते राजधर्ममनुस्मरन् ६०
अङ्गदं वालितनयं समाहूयेदमब्रवीत् ।
गत्वा सौम्य दशग्रीवं ब्रूहि मद्वचनात्कपे ६१
लङ्घयित्वा पुरीं लङ्कां भयं त्यक्त्वा गतव्यथः ।
भ्रष्टश्रीकं गतैश्वर्यं मुमूर्षं नष्टचेतनम् ६२

वानर पेड हाथोंमें ले लंकाके चारों ओर घूमते थे ॥ ५४ ॥ एवं वानरोंसे घिर जानेसे राक्षसगण बहुत अचम्भेमें हुए ॥ ५५ ॥ चारों ओर घूमते सेनासमूहका बडा भारी शब्द हुआ ॥ ५६ ॥ उस बडे शब्दसे प्राकार तोरण पर्वत वन सहित लंका डोलायमान हो गई ॥ ५७ ॥

राम लक्ष्मण व सुग्रीवसे रक्षित वह सेना दैत्योंसे भी दुर्द्धर्ष थी ॥ ५८ ॥ राम इस प्रकार अपनी सेना नियत कर व मन्त्रियोंके साथ विचार कर ॥ ५९ ॥ विभीषणकी सलाह ले राजनीतिका स्मरण कर ॥ ६० ॥ अङ्गदको बुला बोले हे सौम्य! रावणके पास जा हमारे ये वचन कहना ॥ ६१ ॥ तुम निर्भय हो उस लक्ष्मीरहित मरनेकी इच्छा किये हुये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ऋषीणां देवतानां च गन्धर्वाप्सरसां तथा।
नागानामथ यक्षाणां राज्ञां च रजनीचर ६३
यच्च पापं कृतं मोहादवलिप्तेन राक्षस।
नूनं ते विगतो दर्पः स्वयंभूवरदानजः ६४
यस्य दण्डधरस्तेहं दाराहरणकर्शितः।
दण्डं धारयमाणस्तु लङ्काद्वारे व्यवस्थितः ६५
पदवीं देवतानां च महर्षीणां च राक्षस।
राजर्षीणां च सर्वेषां गमिष्यसि युधिस्थिरः ६६
बलेन येन वै सीतां मायया राक्षसाधम।
मामतिक्रमयित्वा त्वं हृतवांस्तन्निदर्शय ६७
अराक्षसमिमं लोकं कर्तास्मि निशितैः शरैः।
न चेच्छरणमभ्येषि तामादाय तु मैथिलीम् ६८
धर्मात्मा राक्षसश्रेष्ठः संप्राप्तोयं विभीषणः।
लङ्कैश्वर्यमिदं श्रीमान्ध्रुवं प्राप्नोत्यकण्टकम् ६९
न हि राज्यमधर्मेण भोक्तुं क्षणमपि त्वया।
शक्यं मूर्खसहायेन पापेनाविहितात्मना ७०
युध्यस्व मा धृतिं कृत्वा शौर्यमालम्ब्य राक्षस।

अज्ञानी रावणसे कहना ॥ ६२ ॥ कि हे रजनीचर ऋषि देवता गन्धर्व
राजाओंका ॥६३॥ जो अपराध घमंडसे तुमने किया उससे ब्रह्माका
जो तुमको था वह अब नष्ट हो गया ॥ ६४ ॥ दंड देनेवाला सीताह
कारण अति कर्षित मैं तुम्हारे लिये दण्डधारे लंकाके फाटकपर
कारण ॥ ६५ ॥ हे राक्षस! कपटसे देवता महर्षि आदिकोंको मार
पदवीको तुमने पहुंचाया है उस पदवीको तुम भी प्राप्त होगे ॥ ६६ ॥
राक्षसाधम! जिस बलसे सीताको कपटसे हर लाये हो अब वह
दिखाओ ॥६७॥ यदि तुम सीताको ले मेरी शरणमें न आओगे तो बाणोंसे
लोक राक्षस रहित कर दूंगा ॥ ६८ ॥ धर्मात्मा बिभीषण जो कि यहां
हुये हैं लंकाका अकंटक राज्य पावेंगे ॥ ६९ ॥ पापी अविचारी तुम
अब राज्य न करने पाओगे ॥ ७० ॥ हे राक्षस! अब शूरताका

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मच्छरैस्त्वं रणे शान्तस्ततः शान्तो भविष्यसि ॥ ७१
यद्याविशसि लोकांस्त्रीन्पक्षीभूतो निशाचर ।
मम चक्षुःपथं प्राप्य न जीवन्प्रतियास्यसि ॥ ७२
ब्रवीमि त्वां हितं वाक्यं क्रियतामौर्ध्वदेहिकम् ।
सुदृष्टा क्रियतां लङ्का जीवितं ते मयि स्थितम् ॥ ७३
इत्युक्तः स तु तारेयो रामेणाक्लिष्टकर्मणा ।
जगामाकाशमाविश्य मूर्तिमानिव हव्यवाट् ॥ ७४
सोऽतिपत्य मुहूर्तेन श्रीमान्रावणमन्दिरम् ।
ददर्शासीनमव्यग्रं रावणं सचिवैः सह ॥ ७५
ततस्तस्याविदूरेण निपत्य हरिपुङ्गवः ।
दीप्ताग्निसदृशस्तस्थावङ्गदः कनकाङ्गदः ॥ ७६
तद्रामवचनं सर्वमन्यूनाधिकमुत्तमम् ।
सामात्यं श्रावयामास निवेद्यात्मानमात्मना ॥ ७७
दूतोऽहं कोशलेन्द्रस्य रामस्याक्लिष्टकर्मणः ।
वालिपुत्रोऽङ्गदो नाम यदि ते श्रोत्रमागतः ॥ ७८
आह त्वां राघवो रामः कौसल्यानन्दवर्धनः ।

तो हमारे बाणोंसे समरमें शान्तिको प्राप्त होगे ॥ ७१ ॥ हे निशाचर ! जो पक्षी होकर भी अब मेरी दृष्टिके सामने जीते न बचोगे ॥ ७२ ॥ तुम्हारे प्राण मेरे ही आधीन हैं इससे जो कुछ दान करना हो कर लो तथा लंका भली भांति देख लो ॥ ७३ ॥ रामका यह सन्देश ले अङ्गद आकाश मार्गसे चले ॥ ७४ ॥ एक मुहूर्तमें रावणके पास पहुंचे और मन्त्रियों-सहित सावधान रावणको बैठे देखा ॥ ७५ ॥ अग्निसमान प्रकाशित अङ्गद आकाशसे उतर रावणके समीप बैठ गये ॥ ७६ ॥

रामका वचन यथावत् मन्त्रियोंसहित रावणको सुना फिर अपना परिचय कहा कि ॥ ७७ ॥ मैं श्रीरामका दूत हूं वालीका पुत्र अङ्गद मेरा नाम है जो ॥ ७८ श्रीरामने तुमसे कहा है कि अपनी पुरीसे निकल युद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

निष्पत्य प्रतियुध्यस्व नृशंस पुरुषो भव ७९
हन्ताऽस्मि त्वां सहामात्यं सपुत्रज्ञातिबान्धवम्।
निरुद्विग्नास्त्रयो लोका भविष्यन्ति हते त्वयि ८०
देवदानवयक्षाणां गन्धर्वोरगरक्षसाम्।
शत्रुमद्योद्धरिष्यामि त्वामृषीणां च कण्टकम् ८१
विभीषणस्य चैश्वर्यं भविष्यति हते त्वयि।
न चेत्सत्कृत्य वैदेहीं प्रणिपत्य प्रदास्यसि ८२
इत्येवं परुषं वाक्यं ब्रुवाणे हरिपुङ्गवे।
अमर्षवशमापन्नो निशाचरगणेश्वरः ८३
ततः स रोषमापन्नः शशास सचिवांस्तदा।
गृह्यतामिति दुर्मेधा वध्यतामिति चासकृत् ८४
रावणस्य वचः श्रुत्वा दीप्ताग्निमिव तेजसा।
जगृहुस्तं ततो घोराश्चत्वारो रजनीचराः ८५
ग्राहयामास तारेयः स्वयमात्मानमात्मवान्।
बलं दर्शयितुं वीरो यातुधानगणे तदा ८६
स तान्बाहुद्वयासक्तानादाय पतगानिव।
प्रासादं शैलसंकाशमुत्पपाताङ्गदस्तदा ८७

करो और अब पुरुष होओ ॥ ७९ ॥ मैं तुमको मन्त्री पुत्र ज्ञाति सहित मार डालूंगा ॥ ८० आज देवता, दानव आदि तथा ऋषियोंके तुमको मैं अवश्य मार डालूंगा ॥ ८१ ॥ तुम्हारे मारे जानेपर लंकाका विभीषणको मिलेगा ये सब बातें तभी होंगी जो सीताको वा लौटाओगे ॥ ८२ ॥

अङ्गदके ऐसा कहनेपर रावण अति क्रोधित हुआ ॥ ८३ ॥ और मंत्रि कहने लगा कि इस दुष्टको पकडकर बांधो ॥ ८४ ॥ रावणकी आज्ञा सु चार कठोर राक्षस उठे और तेजस्वी अङ्गदको पकड लिया ॥ ८५ ॥ राक्ष अपना बल दिखानेके लिये अङ्गदने अपनेको स्वयं पकडा दिया ॥ ८६ दो दो भुजाओंमें लिपटे हुए राक्षसोंसहित अङ्गद उछल एक राजमं

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तस्योत्पतनवेगेन निर्धूतास्तत्र राक्षसाः ।
भूमौ निपतिताः सर्वे राक्षसेन्द्रस्य पश्यतः ८८
ततः प्रासादशिखरं शैलशृङ्गमिवोन्नतम् ।
चक्राम राक्षसेन्द्रस्य वालिपुत्रः प्रतापवान् ८९
पफाल च तदाक्रान्तं दशग्रीवस्य पश्यतः ।
पुरा हिमवतः शृङ्गं वज्रेणेव विदारितम् ९०
भङ्क्त्वा प्रासादशिखरं नाम विश्राव्य चात्मनः ।
विनद्य सुमहानादमुत्पपात विहायसा ९१
व्यथयन्राक्षसान्सर्वान्हर्षयंश्चापि वानरान् ।
स वानराणां मध्ये तु रामपार्श्वमुपागतः ९२
रावणस्तु परं चक्रे क्रोधं प्रासादधर्षणात् ।
विनाशं चात्मनः पश्यन्निःश्वासपरमोभवत् ९३
रामस्तु बहुभिर्हृष्टैर्विनदद्भिः प्लवङ्गमैः ।
वृतो रिपुवधाकाङ्क्षी युद्धायैवाभिवर्तत ९४
सुषेणस्तु महावीर्यो गिरिकूटोपमो हरिः ।
बहुभिः संवृतस्तत्र वानरैः कामरूपिभिः ९५
स तु द्वाराणि संयम्य सुग्रीववचनात्कपिः ।

ऊपर चढ गया ॥ ८७ ॥ उछलनेके झटकेसे वे चारों राक्षस रावणके आगे गिर पडे ॥ ८८ ॥ उस ऊंचे रावणके राजमंदिरकी चोटीपर प्रतापी अङ्गदने एक लात मारी ॥८९॥ रावणके देखते ही देखते वह फटकर गिर पडा ॥९०॥ उस शिखरको गिरा अपना सबको सुना घोरनाद कर अङ्गद आकाशको उछला ॥ ९१ ॥ और राक्षसोंको व्यथित करता वानरोंको हर्षित करता हुआ रामके पास आ पहुंचा ॥ ९२ ॥

राजमंदिरके गिरनेसे रावणने बडा ही क्रोध किया ॥ ९३ ॥ व राम हुए वानरोंके साथ युद्ध करनेके लिये तैयार हुये ॥९४॥ महा वीर्यवान् सुषेण कामरूपी अनेक वानरोंके संग शोभित हुआ ॥ ९५ ॥ और सुग्रीवकी आज्ञा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पर्यक्रामत दुर्धर्षो नक्षत्राणीव चन्द्रमाः ९६
तेषामक्षौहिणिशतं समवेक्ष्य वनौकसाम् ।
लङ्कामुपनिविष्टानां सागरं चाभिवर्तताम् ९७
राक्षसा विस्मयं जग्मुस्त्रासं जग्मुस्तथापरे ।
अपरे समरे हर्षाद्धर्षमेवोपपेदिरे ९८
कृत्स्नं हि कपिभिर्व्याप्तं प्राकारपरिखान्तरम् ।
ददृशू राक्षसा दीनाः प्राकारं वानरीकृतम् ॥
हाहाकारमकुर्वन्त राक्षसा भयमागताः ९९
तस्मिन्महाभीषणके प्रवृत्ते कोलाहले राक्षसराजयोधाः ।
प्रगृह्य रक्षांसि महायुधानि युगान्तवाता इव संविचेरुः ।

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकांडे एकचत्वारिंशः सर्गः ॥४१॥ [१

॥ द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥

ततस्ते राक्षसास्तत्र गत्वा रावणमन्दिरम् ।
न्यवेदयन्पुरीं रुद्धां रामेण सह वानरैः १
रुद्धां तु नगरीं श्रुत्वा जातक्रोधो निशाचरः ।
विधानं द्विगुणं श्रुत्वा प्रासादं चाप्यरोहत २

से लङ्काके चारों ओर अपनी सेनासहित घूमने लगा ॥ ९६ ॥ चारों घिरे हुये, वानरोंकी सैंकडों अक्षौहिणी सेना देख ॥ ९७ ॥ कोई विस्मित हुये कोई भययुक्त हुये और बहुतसे हर्षित हुये ॥ ९८ ॥ व खाई आदिमें वानर भरे थे राक्षसोंने देखा कि सब ओरसे वानर पर चढ आये और सब राक्षस भयसे हाहाकार करने लगे ॥ ९९ ॥ प्रकार भयंकर उथल पुथल हो गई और राक्षसाधिपति रावणके योद्धा बडे बडे आयुध लेकर प्रलयकालीन वायुके समान संचार लगे ॥ १०० ॥

॥ यहां ४१ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः राक्षसोंने रावणके मन्दिरमें जा निवेदन किया कि वानरोंने लंकाको घेर लिया ॥ १ ॥ रावणने नगरी घिरी सुन पुरकी रक्षाके दूनी सेना नियुक्त की और आप प्रासाद पर चढा ॥२॥ और लंकाको

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

स ददर्शावृतां लङ्कां सशैलवनकाननाम्।
असंख्येयैर्हरिगणैः सर्वतो युद्धकाङ्क्षिभिः ३
स दृष्ट्वा वानरैः सर्वैर्वसुधां कपिलीकृताम्।
कथं क्षपयितव्याः स्युरिति चिन्तापरोऽभवत् ४
स चिन्तयित्वा सुचिरं धैर्यमालम्ब्य रावणः।
राघवं हरियूथांश्च ददर्शायतलोचनः ५
राघवः सह सैन्येन मुदितो नाम पुप्लुवे।
लङ्कां ददर्श गुप्तां वै सर्वतो राक्षसैर्वृताम् ६
दृष्ट्वा दाशरथिर्लङ्कां चित्रध्वजपताकिनीम्।
जगाम मनसा सीतां दूयमानेन चेतसा ७
अत्र सा मृगशावाक्षी मत्कृते जनकात्मजा।
पीड्यते शोकसंतप्ता कृशा स्थण्डिलशायिनी ८
निपीड्यमानां धर्मात्मा वैदेहीमनुचिन्तयन्।
क्षिप्रमाज्ञापयद्रामो वानरान्द्विषतां वधे ९
एवमुक्ते तु वचसि रामेणाक्लिष्टकर्मणा।
संघर्षमाणाः प्लवगाः सिंहनादैरपूरयन् १०

...ंकी असंख्य वानरोंसे घिरी देखी ॥ ३ ॥ लंकाके चारों ओर वानरोंसे ...भरी देख रावण सोचने लगा कि इस सेनाका कैसे नाश हो ॥ ४ ॥ एवं ...तक सोच रावणने राम तथा वानर यूथपोंको नेत्र फैलाकर देखा ॥ ५ ॥ ...र्षित हुए श्रीरामने भी जो वानरोंके ऊपर सवार थे ऊपरको उछल ...ससयुक्त लंका देखी ॥ ६ ॥

... विचित्र पताकाका युक्त लंका देख राम सीताकी याद करने लगे ॥ ७ ॥ ...र सोचने लगे कि इसमें ही जनक कुमारी सीता शोकसे संतप्त तथा ...ल हो दुःखित होती है ॥ ८ ॥ एवं पीडित सीताकी याद करते रामने ...ब्र वैरियोंको मारनेके लिये वानरोंको आज्ञा दी ॥ ९ ॥ रामके वचन सुन ...गोंने बड़ा भारी नाद किया जिससे लङ्का पूरित हो गई ॥ १० ॥ सब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शिखरैर्विकिरामैतां लङ्कां मुष्टिभिरेव वा ।
इति स्म दधिरे सर्वे मनांसि हरियूथपाः ११
उद्यम्य गिरिशृङ्गाणि महान्ति शिखराणि च ।
तरूंश्चोत्पाट्य विविधांस्तिष्ठन्ति हरियूथपाः १२
प्रेक्षतो राक्षसेन्द्रस्य तान्यनीकानि भागशः ।
राघवप्रियकामार्थं लङ्कामारुरुहुस्तदा १३
ते ताम्रवक्त्रा हेमाभा रामार्थे त्यक्तजीविताः ।
लङ्कामेवाभ्यवर्तन्त सालभूधरयोधिनः १४
ते द्रुमैः पर्वताग्रैश्च मुष्टिभिश्च प्लवङ्गमाः ।
प्राकाराग्राण्यसंख्यानि ममन्थुस्तोरणानि च १५
परिखान्पूरयन्तश्च प्रसन्नसलिलाशयान् ।
पांसुभिः पर्वताग्रैश्च तृणैः काष्ठैश्च वानराः १६
ततः सहस्रयूथाश्च कोटियूथाश्च यूथपाः ।
कोटियूथशताश्चान्ये लङ्कामारुरुहुस्तदा १७
काञ्चनानि प्रमर्दन्तस्तोरणानि प्लवङ्गमाः ।
कैलासशिखराग्राणि गोपुराणि प्रमथ्य च १८

वानर यूथपोंने अपने मनमें सोचा कि या तो इस लंकाको शिलों मुष्टिकोंसे तोड डालेंगे ॥ ११ ॥ सो वानर यूथप पर्वत, शिखर और उखाड लडनेको उद्यत हो गये ॥ १२ ॥ और वानरोंकी सेना रामका करनेके लिये लंकाको प्राकार पर चढ गई ॥ १३ ॥

वे ताम्रमुख रामके लिये प्राण छोडनेपर तत्पर वानरगण लंकाकी पर सब ओरसे चढ गये ॥ १४ ॥ वे वानर वृक्षों, पर्वत, शिला व मु पुरीके प्रासाद और तोरणको तोडने लगे ॥ १५ ॥ और काष्ठ तृण जलसे पूर्ण खाइयोंको पाटने लगे ॥ १६ ॥ हजार, करोड, अर्ब वानर यूथप लङ्काकी चहार दीवारी पर चढे ॥ १७ ॥ और फाटक मकान सुवर्ण जटित मन्दिरोंको तोडने लगे ॥ १८ ॥ वानर कूद कूद

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आप्लवन्तः प्लवन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवङ्गमाः ।
लङ्कां तामभिधावन्ति महावारणसंनिभाः १९
जयत्युरुबलो रामो लक्ष्मणश्च महाबलः ।
राजा जयति सुग्रीवो राघवेणाभिपालितः २०
इत्येवं घोषयन्तश्च गर्जन्तश्च प्लवङ्गमाः ।
अभ्यधावन्त लङ्कायाः प्राकारं कामरूपिणः २१
वीरबाहुः सुबाहुश्च नलश्च पनसस्तथा ।
निपीड्योपनिविष्टास्ते प्राकारं हरियूथपाः २२
एतस्मिन्नन्तरे चक्रुः स्कन्धावारनिवेशनम् २३
पूर्वद्वारं तु कुमुदः कोटिभिर्दशभिर्वृतः ।
आवृत्य बलवांस्तस्थौ हरिभिर्जितकाशिभिः २४
सहायार्थं तु तस्यैव निविष्टः प्रसभो हरिः ।
पनसश्च महाबाहुर्वानरैरभिसंवृतः २५
दक्षिणद्वारमासाद्य वीरः शतबलिः कपिः ।
आवृत्य बलवांस्तस्थौ विंशत्या कोटिभिर्वृतः २६
सुषेणः पश्चिमद्वारं गत्वा तारापिता बली ।
आवृत्य बलवांस्तस्थौ कोटिकोटिभिरावृतः २७
उत्तरद्वारमागम्य रामः सौमित्रिणा सह ।

...ला चारों ओर गर्जते दौडने लगे ॥ १९ ॥ और कि राम लक्ष्मण तथा सुग्रीवकी जय पुकारने लगे ॥ २० ॥ एवं पुकारते, गर्जन करते वानर लंकाके प्राचीरपरसे खडे हो गये ॥ २१ ॥ और उन्होंने सेनाको व्यूह ...स्थानमें स्थापित किया ॥ २२ ॥ और इतनेमें अन्य सेनाधिपतियोंने सारी सेनाको व्यवस्थित रूपसे खडा किया ॥ २३ ॥ दश करोड वानरोंको लेकर कुमुद पूर्वके द्वारपर स्थित हुआ ॥ २४ ॥

...कुमुदकी सहायताके लिये प्रसभ और पनस स्थित हुआ ॥ २५ ॥ २० करोड वानरोंको साथ ले शतबलि उपस्थित हुआ ॥ २६ ॥ बलवान् सुषेण ...करोडों वानरोंको साथ ले स्थित हुआ ॥ २७ ॥ उत्तरके दरवाजेपर राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आवृत्य बलवांस्तस्थौ सुग्रीवश्च हरीश्वरः २८
गोलाङ्गूलो महाकायो गवाक्षो भीमदर्शनः।
वृतः कोट्या महावीर्यस्तस्थौ रामस्य पार्श्वतः २९
ऋक्षाणां भीमकोपानां धूम्रः शत्रुनिबर्हणः।
वृतः कोट्या महावीर्यस्तस्थौ रामस्य पार्श्वतः ३०
संनद्धस्तु महावीर्यो गदापाणिर्विभीषणः।
वृतो यत्तैस्तु सचिवैस्तस्थौ यत्र महाबलः ३१
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गन्धमादनः।
समन्तात्परिधावन्तो ररक्षुर्हरिवाहिनीम् ३२
ततः कोपपरीतात्मा रावणो राक्षसेश्वरः।
निर्याणं सर्वसैन्यानां द्रुतमाज्ञापयत्तदा ३३
एतच्छ्रुत्वा तदा वाक्यं रावणस्य मुखेरितम्।
सहसा भीमनिर्घोषमुद्घुष्टं रजनीचरैः ३४
ततः प्रबोधिता भेर्यश्चन्द्रपाण्डुरपुष्कराः।
हेमकोणैरभिहता राक्षसानां समन्ततः ३५
विनेदुश्च महाघोषाः शङ्खाः शतसहस्रशः।
राक्षसानां सुघोराणां मुखमारुतपूरिताः ३६

लक्ष्मण और सुग्रीवको साथ ले स्थित हुए ॥ २८ ॥ गो पुच्छ गवाक्ष वा... सेनी करोड वानर संग ले रामकी एक बगलमें स्थित हुआ ॥ २९ ॥ ... शत्रुओंका नाशक धूम्र करोड ऋक्षोंसहित रामकी दूसरी ओर स्थि... हुआ ॥ ३० ॥ बिभीषण रामके समीपमें स्थित हुआ ॥ ३१ ॥ गज, गव... गवय, शरभ, गन्धमादन, चारों ओरसे वानरसेनाकी रक्षा करते थे ॥ ३...

ततः रावणने क्रोधकर अपनी सेनाको युद्धार्थ बाहर निकलनेकी आ... दी ॥ ३३ ॥ रावणकी आज्ञा सुनते ही सब राक्षसोंने घोर नाद किया॥ ... और उद्यत होनेके लिये नगारें बजाये जाने लगे ॥ ३५ ॥ राक्षसोंके ... पवनसे पूर्ण बडे शब्दवाले असंख्य शङ्ख भी बजने लगे ॥ ३६ ॥ मु...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ते बभुः शुक्लनीलाङ्गाः सशङ्खा रजनीचराः।
विद्युन्मण्डलसंनद्धाः सबलाका इवाम्बुदाः ३७
निष्पतन्ति ततः सैन्या हृष्टा रावणचोदिताः।
समये पूर्यमाणस्य वेगा इव महोदधेः ३८
ततो वानरसैन्येन मुक्तो नादः समन्ततः।
मलयः पूरितो येन ससानुप्रस्थकंदरः ३९
शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषः सिंहनादस्तरस्विनाम्।
पृथिवीं चान्तरिक्षं च सागरं चाभ्यनादयत् ४०
गजानां बृंहितैः सार्धं हयानां ह्रेषितैरपि।
रथानां नेमिनिर्घोषै रक्षसां पदनिःस्वनैः ४१
एतस्मिन्नन्तरे घोरः सङ्ग्रामः समपद्यत।
रक्षसां वानराणां च यथा देवासुरे पुरा ४२
ते गदाभिः प्रदीप्ताभिः शक्तिशूलपरश्वधैः।
निजघ्नुर्वानरान्सर्वान्कथयन्तः स्वविक्रमान् ४३
तथा वृक्षैर्महाकायाः पर्वताग्रैश्च वानराः।
निजघ्नुस्तानि रक्षांसि नखैर्दन्तैश्च वेगिनः ४४
राजा जयति सुग्रीव इति शब्दो महानभूत।

शङ्ख लगानेसे राक्षसगण बगेला युक्त विद्युत सहित मेघके समान शोभा देने लगे ॥ ३७ ॥ रावणकी आज्ञासे शब्द करती राक्षससेना हर्षित हो निकली ॥ ३८ ॥

ततः चारों ओरसे वानर सेनाने भी नाद किया ॥ ३९ ॥ शङ्ख नगारोंका शब्द तथा वानरोंके नादसे पृथ्वी आकाश और सागर परिपूरित हो गया ॥ ४० ॥ हाथियोंकी चिङ्घाड, घोडोंके हिनाहिनाहट, रथोंके खन-खनानेका भी शब्द हुआ ॥ ४१ ॥ इसी अन्तरमें वानरों और राक्षसोंका भारी युद्ध आरम्भ हुआ ॥ ४२ ॥

राक्षसोंने गदा, शक्ति आदि आयुधोंसे अपना अपना विक्रम बखान वानरोंको मारा ॥ ४३ ॥ तथा इसी प्रकार अतिकाय वानरोंने भी तथा नख, दांतोंसे राक्षसोंको मारा ॥ ४४ ॥ सुग्रीवकी जय हो यह बडा नाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राजञ्जयजयेत्युक्त्वा स्वस्वनामकथां ततः ४५
राक्षसास्त्वपरे भीमाः प्राकारस्था महीं गतान्।
वानरान्भिन्दिपालैश्च शूलैश्चैव व्यदारयन् ४६
वानराश्चापि संक्रुद्धाः प्राकारस्थान्महीं गताः।
राक्षसान्पातयामासुः खमाप्लुत्य स्वबाहुभिः ४७
स संप्रहारस्तुमुलो मांसशोणितकर्दमः।
रक्षसां वानराणां च संबभूवाद्भुतोपमः ४८

इत्यार्षे श्रीमद्रा॰ वाल्मी॰ आदि॰ युद्धकांडे द्विचत्वारिंशः सर्गः ॥४२॥ [१५...

॥ त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥

युध्यतां तु ततस्तेषां वानराणां महात्मनाम्।
रक्षसां संबभूवाथ बलरोषः सुदारुणः १
ते हयैः काञ्चनापीडैर्गजैश्चाग्निशिखोपमैः।
रथैश्चादित्यसंकाशैः कवचैश्च मनोरमैः २
निर्ययू राक्षसा वीरा नादयन्तो दिशो दश।
राक्षसा भीमकर्माणो रावणस्य जयैषिणः ३
वानराणामपि चमूर्बृहती जयमिच्छताम्।
अभ्यधावत तां सेनां रक्षसां घोरकर्मणाम् ४

हुआ ॥ ४५ ॥ और राक्षस लंकापर खडे हो तथा अन्य वानरोंको शूल... अस्त्रोंसे मारने लगे ॥ ४६ ॥ वानर लोग भी राक्षसोंके ऊपर कूदकर ... पृथ्वीपर गिराने और मारने लगे ॥ ४७ ॥ एवं राक्षसों व वानरोंके संग्राम... मांस और रक्तका कीचड हो गया ॥ ४८ ॥

॥ यहाँ ४२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

तब परस्पर लडते हुए वानरों और राक्षसोंको सुदारुणबलरोष उ... हुआ ॥ १ ॥ राक्षसवीर गण, घोडों, हाथियों तथा रथोंपर चढ और कव... धार दशो दिशाओंको नादसे पूरित करते रावणकी जय चाहते हुए यु... लिये निकले ॥ २–३ ॥ वानरोंकी भी बडी सेना रामकी विजय चा... हुई घोरकर्मा राक्षस सेनाकी ओर दौडी ॥ ४ ॥ इसी अन्तरमें ...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

एतस्मिन्नन्तरे तेषामन्योन्यमभिधावताम् ।
रक्षसां वानराणां च द्वन्द्वयुद्धमवर्तत ५
अङ्गदेनेन्द्रजित्सार्धं वालिपुत्रेण राक्षसः ।
अयुध्यत महातेजास्त्र्यम्बकेण यथान्धकः ६
प्रजङ्घेन च संपातिर्नित्यं दुर्धर्षणो रणे ।
जम्बुमालिनमारब्धो हनूमानपि वानरः ७
संगतस्तु महाक्रोधो राक्षसो रावणानुजः ।
समरे तीक्ष्णवेगेन शत्रुघ्नेन विभीषणः ८
तपनेन गजः सार्धं राक्षसेन महाबलः ।
निकुम्भेन महातेजा नीलोऽपि समयुध्यत ९
वानरेन्द्रस्तु सुग्रीवः प्रघसेन सुसंगतः ।
संगतः समरे श्रीमान्विरूपाक्षेण लक्ष्मणः १०
अग्निकेतुः सुदुर्धर्षो रश्मिकेतुश्च राक्षसः ।
मित्रघ्नो यज्ञकोपश्च रामेण सह संगताः ११
वज्रमुष्टिश्च मैन्देन द्विविदेनाशनिप्रभः ।
राक्षसाभ्यां सुघोराभ्यां कपिमुख्यौ समागतौ १२
वीरः प्रतपनो घोरो राक्षसो रणदुर्धरः ।
समरे तीक्ष्णवेगेन नलेन समयुध्यत १३

ओरसे दौडती हुई सेनाओंका द्वन्द्वयुद्ध आरम्भ हो गया ॥ ५ ॥ इन्द्रजित अङ्गदके साथ युद्ध करने लगा ॥ ६ ॥ दुर्द्धर्ष सम्पाति प्रजंघ राक्षससे और हनुमान् जाम्बुमाली राक्षससे लडने लगा ॥ ७ ॥ विभीषण शत्रुघ्न राक्षससे लडने लगा ॥ ८ ॥ गज तपन राक्षसके साथ तथा निकुम्भसे तेजस्वी नीलका युद्ध होने लगा ॥ ९ ॥ सुग्रीव प्रघससे और लक्ष्मण विरूपाक्ष राक्षससे युद्ध करने लगे ॥ १० ॥ अग्निकेतु, रश्मिकेतु, मित्रघ्न व यज्ञकोप राक्षस रामसे भिड गये ॥ ११ ॥ वज्रमुष्टि मैन्दसे और अशनिप्रभू द्विविदसे युद्धमें प्रवृत्त हुआ ॥ १२ ॥
वीर प्रतपननामक राक्षस नलसे युद्ध करने लगा ॥ १३ ॥ धर्मपुत्र महाबली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धर्मस्य पुत्रो बलवान्सुषेण इति विश्रुतः ।
स विद्युन्मालिना सार्धमयुध्यत महाकपिः १४
वानराश्चापरे घोरा राक्षसैरपरैः सह ।
द्वन्द्वं समीयुः सहसा युद्ध्वा च बहुभिः सह १५
तत्रासीत्सुमहद्युद्धं तुमुलं रोमहर्षणम् ।
रक्षसां वानराणां च वीराणां जयमिच्छताम् १६
हरिराक्षसदेहेभ्यः प्रसूताः केशशाद्वलाः ।
शरीरसंघाटवहाः प्रसुस्रुः शोणितापगाः १७
आजघानेन्द्रजित्क्रुद्धो वज्रेणेव शतक्रतुः ।
अङ्गदं गदया वीरं शत्रुसैन्यविदारणम् १८
तस्य काञ्चनचित्राङ्गं रथं साश्वं ससारथिम् ।
जघान गदया श्रीमानङ्गदो वेगवान्हरिः १९
संपातिस्तु प्रजङ्घेन त्रिभिर्बाणैः समाहतः ।
निजघानाश्वकर्णेन प्रजङ्घं रणमूर्धनि २०
जम्बुमाली रथस्थस्तु रथशक्त्या महाबलः ।
बिभेद समरे क्रुद्धो हनूमन्तं स्तनान्तरे २१
तस्य तं रथमास्थाय हनूमान्मारुतात्मजः ।
प्रममाथ तलेनाशु सह तेनैव रक्षसा २२

सुषेण विद्युन्मालीसे लडने लगा ॥ १४ ॥ और प्रचण्ड वानर अन्य अन्
घोर राक्षसोंसे द्वन्द्वयुद्ध करने लगे ॥ १५ ॥ तब वानरों और राक्षसों
अति घोर रोम हर्षण युद्ध हुआ ॥ १६ ॥ वानरों और राक्षसों
शरीरोंसे रुधिरकी नदियां बह चलीं ॥ १७ ॥ मेघनादने बडा क्रोध
अङ्गदको गदासे मारा ॥ १८ ॥ फिर अङ्गदने भी गदासे मेघनादका र
विध्वंस कर डाला ॥ १९ ॥ प्रजंघने तीन बाण सम्पातिको मारा फि
सम्पाती अश्वकर्णसे प्रजंघको भी शिरमें मारा ॥ २० ॥ जम्बुमालीने
हनुमानकी छातीमें शक्ति मारी ॥ २१ ॥ हनुमानने उसके रथपर
लातसे रथ सहित उसको ध्वंस कर दिया ॥ २२ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नदन्प्रतपनो घोरो नलं सोऽभ्यनुधावत ।
नलः प्रतपनस्याशु पातयामास चक्षुषी ॥
भिन्नगात्रः शरैस्तीक्ष्णैः क्षिप्रहस्तेन रक्षसा २३
ग्रसन्तमिव सैन्यानि प्रघसं वानराधिपः ।
सुग्रीवः सप्तपर्णेन निजघान जवेन च २४
प्रपीड्य शरवर्षेण राक्षसं भीमदर्शनम् ।
निजघान विरूपाक्षं शरेणैकेन लक्ष्मणः २५
अग्निकेतुश्च दुर्धर्षो रश्मिकेतुश्च राक्षसः ।
मित्रघ्नो यज्ञकोपश्च राममादीपयच्छरैः २६
तेषां चतुर्णां रामस्तु शिरांसि समरे शरैः ।
क्रुद्धश्चतुर्भिश्चिच्छेद घोरैरग्निशिखोपमैः २७
वज्रमुष्टिस्तु मैन्देन मुष्टिना निहतो रणे ।
पपात सरथः साश्वः सुराट्ट इव भूतले २८
निकुम्भस्तु रणे नीलं नीलाञ्जनचयप्रभम् ।
निर्बिभेद शरैस्तीक्ष्णैः करैर्मेघमिवांशुमान् २९
पुनः शरशतेनाथ क्षिप्रहस्तो निशाचरः ।
बिभेद समरे नीलं निकुम्भः प्रजहास च ३०

प्रतपन नलकी ओर दौड़ा, नलने तीव्रतासे उसके नयन निकाल लिये प्रतपनके बाणोंसे नल भिन्न गात्र हो गया ॥ २३ ॥ प्रघस मानों सेनाका लगा लेना ही चाहता था कि इतने ही में सुग्रीवने सप्तपर्ण उसको मारा ॥ २४ ॥ और विरूपाक्षको लक्ष्मणने एक ही बाणसे मार डाला ॥ २५ ॥ अग्निकेतु रश्मिके मित्रघ्न तथा यज्ञकोप चारोंने बाणोंसे रामको ढक दिया ॥ २६ ॥ पर रामने चारोंके शिर चार बाणोंसे काट डाले ॥ २७ ॥ मैन्दने वज्रमुष्टिका घूंसोंसे मारा वह पृथ्वीपर गिर पडा ॥ २८ ॥ काले अंजनके समान काले नीलको निकुम्भने तीव्र बाणोंसे मारा ॥ २९ ॥ फिर शरसौ बाण नीलके मारकर अट्टहास हंसा ॥ ३० ॥ तब नीलने उसके रथके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तस्यैव रथचक्रेण नीलो विष्णुरिवाहवे ।
शिरश्चिच्छेद समरे निकुम्भस्य च सारथेः ३१
वज्राशनिसमस्पर्शो द्विविदश्च समप्रभम् ।
जघान गिरिशृङ्गेण मिषतां सर्वरक्षसाम् ३२
द्विविदं वानरेन्द्रं तं द्रुमयोधिनमाहवे ।
शरैरशनिसंकाशैः स विव्याधाशनिप्रभः ३३
स शरैरभिविद्धाङ्गो द्विविदः क्रोधमूर्च्छितः ।
सालेन सरथं साश्वं निजघानाशनिप्रभम् ३४
विद्युन्माली रथस्थस्तु शरैः काञ्चनभूषणैः ।
सुषेणं ताडयामास ननाद च मुहुर्मुहुः ३५
तं रथस्थमथो दृष्ट्वा सुषेणो वानरोत्तमः ।
गिरिशृङ्गेण महता रथमाशु न्यपातयत् ३६
लाघवेन तु संयुक्तो विद्युन्माली निशाचरः ।
अपक्रम्य रथात्तूर्णं गदापाणिः क्षितौ स्थितः ३७
ततः क्रोधसमाविष्टः सुषेणो हरिपुङ्गवः ।
शिलां सुमहतीं गृह्य निशाचरमभिद्रवत् ३८
तमापतन्तं गदया विद्युन्माली निशाचरः ।
वक्षस्यभिजघानाशु सुषेणं हरिपुङ्गवम् ३९

पहियेसे निकुम्भ व उसके सारथिका शिर अलग कर दिया ॥ ३१ ॥ द्विविदने पर्वतके शृंगसे अशनिप्रभको मारा ॥ ३२ ॥ तब द्विविद अशनिप्रभने भी वज्रतुल्य बाणोंसे मारा ॥ ३३ ॥ द्विविदने क्रोध कर वृक्षसे रथ, घोडे सहित अशनिप्रभको मार डाला ॥ ३४ ॥ विद्युन्माली बाणोंसे सुषेणको आहतकर गर्जन करने लगा ॥ ३५ ॥

वानरश्रेष्ठ सुषेणने पर्वतके एक बडे शृंगसे उसका रथ चूर्णित कर दिया ॥ ३६ ॥ परन्तु वह जल्दीसे हाथमें गदा ले रथसे कूद भूमिपर खडा हो गया ॥ ३७ ॥ तब सुषेण पर्वतकी शिला ले उसकी ओर दौडा ॥ ३८ ॥ आते हुये सुषेणकी छातीमें विद्युन्मालीने गदासे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गदाप्रहारं तं घोरमाचिन्त्य प्लवगोत्तमः ।
तां तूर्णीं पातयामास तस्योरसि महामृधे ४०
शिलाप्रहाराभिहतो विद्युन्माली निशाचरः ।
निष्पिष्टहृदयो भूमौ गतासुर्निपपात ह ४१
एवं तैर्वानरैः शूरैः शूरास्ते रजनीचराः ।
द्वन्द्वे विमथितास्तत्र दैत्या इव दिवौकसैः ४२
भल्लैश्चान्यैर्गदाभिश्च शक्तितोमरसायकैः ।
अपविद्धैश्चापि रथैस्तथा साङ्ग्रामिकैर्हयैः ४३
निहतैः कुञ्जरैर्मत्तैस्तथा वानरराक्षसैः ।
चक्राक्षयुगदण्डैश्च भग्नैर्धरणिसंश्रितैः ४४
बभूवायोधनं घोरं गोमायुगणसेवितम् ।
कबन्धानि समुत्पेतुर्दिक्षु वानररक्षसाम् ४५
विमर्दे तुमुले तस्मिन्देवासुररणोपमे ४६
निहन्यमाना हरिपुङ्गवैस्तदा निशाचराः शोणितगन्धमूर्च्छिताः
पुनः सुयुद्धं तरसा समाश्रिता दिवाकरस्यास्तमयाभिकाङ्क्षिणः ४७
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे त्रिचत्वारिंशः सर्गः॥४३॥[१६२५]

श्लो॥ ३९ ॥ पर उस गदा प्रहारका तिरस्कार कर सुषेणने वह शिला विद्युन्मालाकी छातीमें मारी ॥ ४० ॥ उसके लगनेसे विद्युन्मालीका हृदय चूर्ण हो गया और वह भूमिमें गिर पडा ॥ ४१ ॥ एवं राक्षसगण वीर द्वारा, मथ, भल्ल व इतर बाण, गदा, शक्ति, तोमर, सामान्य बाणोंसे कटे रथों, अश्वों, ॥ ४२-४३ ॥ हाथियों, राक्षसों, वानरों आदिकोंसे वह युद्ध-भूमि ॥ ४४ ॥ भयंकर हो गई और चारों ओर श्रृगाल घूमने लगे ॥ ४५ ॥ और देव-दैत्योंके युद्धके समान हुए उस तुमुल युद्धमें वानरों एवं राक्षसोंके कबन्ध नृत्य करने लगे ॥ ४६ ॥ वानरोंके प्रहारोंके कारण शरीरसे निकलने वाले रक्तस्रावके कारण सुधबुध न रहे हुए वे राक्षस पुनः, वेगसे युद्ध छोडकर सूर्यास्तकी प्रतीक्षा करने लगे ॥ ४७ ॥

॥ यहाँ ४४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

॥ चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ॥

युध्यतामेव तेषां तु तदा वानररक्षसाम्।
रविरस्तं गतो रात्रिः प्रवृत्ता प्राणहारिणी १
अन्योन्यं बद्धवैराणां घोराणां जयमिच्छताम्।
संप्रवृत्तं निशायुद्धं तदा वानररक्षसाम् २
राक्षसोऽसीति हरयो वानरोऽसीति राक्षसाः।
अन्योन्यं समरे जघ्नुस्तस्मिंस्तमसि दारुणे ३
हत दारय चैहीति कथं विद्रवसीति च।
एवं सुतुमुलः शब्दस्तस्मिन्सैन्ये तु शुश्रुवे ४
कालाः काञ्चनसंनाहास्तस्मिंस्तमसि राक्षसाः।
संप्रदृश्यन्त शैलेन्द्रा दीप्तौषधिवना इव ५
तस्मिंस्तमसि दुष्पारे राक्षसाः क्रोधमूर्च्छिताः।
परिपेतुर्महावेगा भक्षयन्तः प्लवङ्गमान् ६
ते हयान्काञ्चनापीडान्ध्वजांश्चाशीविषोपमान्।
आप्लुत्य दशनैस्तीक्ष्णैर्भीमकोपा व्यदारयन्।
वानरा बलिनो युद्धेऽक्षोभयन्राक्षसीं चमूम् ७

तब राक्षसों और वानरोंके युद्ध करते करते सूर्य अस्त हो गया संध्या हो आई ॥ १ ॥ परस्पर वैर बांधे जयके इच्छुक वानरों राक्षसोंका घोर निशायुद्ध आरम्भ हुआ ॥ २ ॥ वानर राक्षसोंको राक्षस वानरोंको घोर अन्धकारमें मारने लगे ॥ ३ ॥ मरो, कटो, यहां आ क्यों भागे जाते हो ऐसा शब्द उस सैन्यमें सुनाई पडने लगा ॥ काले वर्ण तथा सुवर्णके कवच धारे राक्षस रात्रिमें प्रकाशित ओषधि युक्त पर्वतोंके समान दीख पडने लगे ॥ ५ ॥ उस घोर अन्धकारमें रा गण वेगसे वानरोंकी सेनामें कूद पडे और उन्हें खाने लगे ॥ ६ ॥

वानरलोग घोडों और पताका युक्त रथोंपर कूद कूद तीक्ष्ण दां राक्षसोंको चीडने, फाडने लगे वानरोंने राक्षसोंको चलायमान कर दिया

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कुञ्जरान्कुञ्जरारोहान्पताकाध्वजिनो रथान् ।
चकर्षुश्च ददंशुश्च दशनैः क्रोधमूर्च्छिताः ८
लक्ष्मणश्चापि रामश्च शरैराशीविषोपमैः ।
दृश्यादृश्यानि रक्षांसि प्रवराणि निजघ्नतुः ९
तुरङ्गखुरविध्वस्तं रथनेमिसमुत्थितम् ।
रुरोध कर्णनेत्राणि युध्यतां धरणीरजः १०
वर्तमाने तथा घोरे सङ्ग्रामे लोमहर्षणे ।
रुधिरौघा महाघोरा नद्यस्तत्र विसुस्रुवुः ११
ततो भेरीमृदङ्गानां पणवानां च निःस्वनः ।
शङ्खनेमिस्वनोन्मिश्रः संबभूवाद्भुतोपमः १२
हयानां स्तनमानानां राक्षसानां च निःस्वनः ।
शस्तानां वानराणां च संबभूवात्र दारुणः १३
हतैर्वानरमुख्यैश्च शक्तिशूलपरश्वधैः ।
निहतैः पर्वताकारै राक्षसैः कामरूपिभिः १४
शस्त्रपुष्पोपहारा च तत्रासीद्युद्धमेदिनी ।
दुर्ज्ञेया दुर्निवेशा च शोणितास्रावकर्दमा १५
सा बभूव निशा घोरा हरिराक्षसहारिणी ।
कालरात्रीव भूतानां सर्वेषां दुरतिक्रमा १६

हाथियों, सवारों और रथोंको इधर उधर खींच दांतोंसे काट खण्डित कर दिया ॥ ८ ॥ राम लक्ष्मण भी विषधर बाणोंसे राक्षसोंको मारने लगे ॥ ९ ॥ घोडोंके खुरों और रथके पहियोंसे उडी धूलि राक्षसों और वानरोंके कानों और नेत्रोंमें भर गई ॥ १० ॥ और रुधिरकी नदियां बहने लगी ॥ ११ ॥ फिर नगाडे, मृदंग, पणव, शङ्ख आदि बाजोंका घोर शब्द हुआ ॥ १२ ॥ घोडोंके हिनहिनाहटसे व राक्षसों और वानरोंद्वारा बडा भारी शब्द हुआ॥१३॥ शक्ति, शूल, फरसा आदिसे मारे हुये वानरों और दांतों, घूसों, पर्वतों, वृक्षोंसे मारे हुये राक्षसोंसे ॥ १४ ॥ पूर्ण वह रक्तमय भूमि दुःखसे देखने योग्य थी ॥ १५ ॥ वह वानरों और राक्षसोंकी नाशक रात्रि कालरात्रिके

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततस्ते राक्षसास्तत्र तस्मिंस्तमसि दारुणे।
राममेवाभ्यवर्तन्त संहृष्टाः शरवृष्टिभिः १७
तेषामापततां शब्दः क्रुद्धानामपि गर्जताम्।
उद्वर्त इव सत्त्वानां समुद्राणामभूत्स्वनः १८
तेषां रामः शरैः षड्भिः षड् जघान निशाचरान्।
निमेषान्तरमात्रेण शरैरग्निशिखोपमैः १९
यज्ञशत्रुश्च दुर्धर्षौ महापार्श्वमहोदरौ।
वज्रदंष्ट्रो महाकायस्तौ चोभौ शुकसारणौ २०
ते तु रामेण बाणौघैः सर्वमर्मसु ताडिताः।
युद्धादपसृतास्तत्र सावशेषायुषोऽभवन् २१
निमेषान्तरमात्रेण घोरैरग्निशिखोपमैः।
दिशश्चकार विमलाः प्रदिशश्च महारथः २२
ये त्वन्ये राक्षसा वीरा रामस्याभिमुखे स्थिताः।
तेऽपि नष्टाः समासाद्य पतङ्गा इव पावकम् २३
सुवर्णपुङ्खैर्विशिखैः संपतद्भिः समन्ततः।
बभूव रजनी चित्रा खद्योतैरिव शारदी २४

तुल्य भयंकर हुई ॥ १६ ॥ उस अन्धकारमें राक्षसगण प्रफुल्लित हो
राम ही पर बाणवृष्टि करने लगे ॥ १७ ॥ राक्षसोंके दौडने तथा गर्
नाद प्रलयकालके सातों समुद्रोंके तुल्य हुआ ॥ १८ ॥ रामने उनमें
राक्षसोंको छः बाणोंसे निमेषमात्रमें मार डाला ॥ १९ ॥ दुर्धर्ष य
महापार्श्व, महोदर, अतिकाय, वज्रदंष्ट्र, शुक और सारण ये छः राक्षस
रामके बाणोंसे आहत हुए पर वे आयु शेष रहनेके कारण युद्धसे
गये ॥ २१ ॥ फिर रामने अग्निशिखाके समान प्रकाशित बाणोंसे सब
प्रादिशा विमल कर दीं ॥ २२ ॥ और भी जो कोई राक्षस उनके आगे
वे भी नष्ट हो गये ॥ २३ ॥ चारों ओरसे बाणोंके चलनेसे वह रात्रि
उडती हुई शरदकी रातके तुल्य शोभा देने लगी ॥ २४ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

राक्षसानां च निनदैर्भेरीणां चैव निःस्वनैः ।
सा बभूव निशा घोरा भूयो घोरतराभवत् २५
तेन शब्देन महता प्रवृद्धेन समन्ततः ।
त्रिकूटः कन्दराकीर्णः प्रव्याहरदिवाचलः २६
गोलाङ्गूला महाकायास्तमसा तुल्यवर्चसः ।
संपरिष्वज्य बाहुभ्यां भक्षयन्नजनीचरान् २७
अङ्गदस्तु रणे शत्रून्निहन्तुं समुपस्थितः २८
इन्द्रजित्तु रथं त्यक्त्वा हताश्वो हतसारथिः ।
अङ्गदेन महायस्तस्तत्रैवान्तरधीयत २९
तत्कर्म वालिपुत्रस्य सर्वे देवाः महर्षिभिः ।
तुष्टुवुः पूजनार्हस्य तौ चोभौ रामलक्ष्मणौ ३०
प्रभावं सर्वभूतानि विदुरिन्द्रजितो युधि ।
ततस्तेन महात्मानं दृष्ट्वा तुष्टाः प्रधर्षितम् ३१
ततः प्रहृष्टाः कपयः ससुग्रीवविभीषणाः ।
साधुसाध्विति नेदुश्च दृष्ट्वा शत्रुं पराजितम् ३२
इन्द्रजित्तु तदानेन निर्जितो भीमकर्मणा ।
संयुगे वालिपुत्रेण क्रोधं चक्रे सुदारुणम् ३३

राक्षसोंके घोर नाद और नगारोंके शब्दसे वह रात्रि और भी भयावह हो गई ॥ २५ ॥ उस बडे नादसे त्रिकूटकी कन्दरायें भर गई ॥ २६ ॥ ऋक्ष और वानर राक्षसोंको पकड पकड खाने लगे ॥ २७ ॥ अङ्गदने इन्द्रजितके मार डालनेका विचार कर ॥ २८ ॥ रथसहित मेघनादको मारा परन्तु वह रथ मरे घोडे सारथीको छोड अन्तर्हित हो गया ॥ २९ ॥ अङ्गदका ऐसा अद्भुत कर्म देख देवता ऋषि तथा राम और लक्ष्मण प्रशंसा करने लगे ॥ ३० ॥ मेघनादका प्रभाव सब लोग जानते थे इससे अङ्गदसे उसकी हार देख सब आनन्दित हुए ॥ ३१ ॥ वैरीको हारा हुआ देख वानरगण सुग्रीव व विभीषण अङ्गदकी प्रशंसा करने लगे ॥ ३२ ॥
जब अङ्गदसे मेघनाद हार गया तो युद्धमें अति दारुण कोप किया ॥३३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सोऽन्तर्धानगतः पापो रावणी रणकर्शितः ।
ब्रह्मदत्तवरो वीरः रावणिः क्रोधमूर्च्छितः ३४
अदृश्यो निशितान्बाणान्मुमोचाशनिवर्चसः ।
रामं च लक्ष्मणं चैव घोरैर्नागमयैः शरैः ३५
बिभेद समरे क्रुद्धः सर्वगात्रेषु राघवौ ।
मायया संवृतस्तत्र मोहयन्राघवौ युधि ३६
अदृश्यः सर्वभूतानां कूटयोधी निशाचरः ।
बबन्ध शरबन्धेन भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ३७
तौ तेन पुरुषव्याघ्रौ क्रुद्धेनाशीविषैः शरैः ।
सहसाभिहतौ वीरौ तदा प्रैक्षन्त वानराः ३८
प्रकाशरूपस्तु यदा न शक्तस्तौ बाधितुं राक्षसराजपुत्रः ।
मायां प्रयोक्तुं समुपाजगाम बबन्ध तौ राजसुतौ दुरात्मा
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे चतुश्चत्वारिंशः सर्गः ॥४४॥[

॥ पञ्चचत्वारिंशः सर्गः ॥

स तस्य गतिमन्विच्छन्राजपुत्रः प्रतापवान् ।
दिदेशातिबलो रामो दश वानरयूथपान् १

वह पापी पुत्र ब्रह्माके वरदानसे गर्वित हो क्रोधसे मूर्च्छित हो अन्त[र्धान हो] गया ॥ ३४ ॥ और अदृश्य हो बाणोंकी वर्षा राम व लक्ष्मण पर [करने] लगा ॥ ३५ ॥ स्वयं अदृश्य रहकर रामके अंगोंमें बाण मार दोनों भा[इयोंको] मोहित कर दिया ॥ ३६ ॥ छली राक्षसने अदृश्य हो नागफांससे [राम] लक्ष्मणको बांध डाला ॥ ३७ ॥ मेघनादके विषैले बाणोंसे दोनों भा[ई] वानरोंके देखते आहत हो गये ॥ ३८ ॥ तात्पर्य यह कि आपका रूप [प्रकट] रखकर उन रामलक्ष्मणोंको दुःख देनेमें जब वह राक्षसराजपुत्र इन्द्र[जित्] समर्थ न हो सका तब मायाका अवलंबन कर उस दुरात्माने उन राजपु[त्रोंको] बांध दिया ॥ ३९ ॥

॥ यहाँ ४४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

प्रतापी बलवान् रामने इन्द्रजितको ढूंडनेके लिये दश हरियू[थपोंको]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

द्वौ सुषेणस्य दायादौ नीलं च प्लवगाधिपम्।
अङ्गदं वालिपुत्रं च शरभं च तरस्विनम् २
द्विविदं च हनूमन्तं सानुप्रस्थं महाबलम्।
ऋषभं चर्षभस्कन्धमादिदेश परन्तपः ३
ते संप्रहृष्टा हरयो भीमानुद्यम्य पादपान्।
आकाशं विविशुः सर्वे मार्गमाणा दिशो दश ४
तेषां वेगवतां वेगमिषुभिर्वेगवत्तरैः।
अस्त्रवित्परमास्त्रेण वारयामास रावणिः ५
तं भीमवेगा हरयो नाराचैः क्षतविक्षताः।
अन्धकारे न ददृशुर्मेघैः सूर्यमिवावृतम् ६
रामलक्ष्मणयोरेव सर्वदेहभिदः शरान्।
भृशमावेशयामास रावणिः समितिञ्जयः ७
निरन्तरशरीरौ तु तावुभौ रामलक्ष्मणौ।
क्रुद्धेनेन्द्रजिता वीरौ पन्नगैः शरतां गतैः ८
तयोः क्षतजमार्गेण सुस्राव रुधिरं बहु।
तावुभौ च प्रकाशेते पुष्पिताविव किंशुकौ ९
ततः पर्यन्तरक्ताक्षो भिन्नाञ्जनचयोपमः।
रावणिर्भ्रातरौ वाक्यमन्तर्धानगतोऽब्रवीत् १०

ज्ञा दी ॥ १ ॥ उनमें सुषेणके दोनों पुत्र वानरोंके अधिप नील, शरभ, ॥२॥ द्विविद, हनुमान्, सानुप्रस्थ, ऋषभ तथा ऋषभस्कन्ध थे ॥ ३ ॥ सब वानर बड़े पेंड ले दशों दिशाओंमें ढूंढते गगनमें प्रवेश कर गये ॥ ४ ॥ उन वानरोंका वेग बाणोंसे मेघनादने रोक दिया ॥ ५ ॥ भयंकर वेगवाले वानर अन्धकारके मारे इन्द्रजितको न देख सके ॥ ६ ॥

मेघनादने शरीर भेदीबाण राम व लक्ष्मणके अङ्गोंमें गाड दिये ॥ ७ ॥ मेघनादने बाणोंसे रामलक्ष्मणके देहको बींध डाला ॥ ८ ॥ दोनोंके घावोंसे रक्त बहने लगा ॥ ९ ॥ लाल नेत्र किये काला इन्द्रजित अदृश्यमें दोनों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

युध्यमानमनालक्ष्यं शक्रोऽपि त्रिदशेश्वरः।
द्रष्टुमासादितुं वापि न शक्तः किं पुनर्युवाम् ११
प्रापिताविषुजालेन राघवौ कङ्कपत्रिणा।
एष रोषपरीतात्मा नयामि यमसादनम् १२
एवमुक्त्वा तु धर्मज्ञौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।
निर्बिभेद शितैर्बाणैः प्रजहर्ष ननाद च १३
भिन्नाञ्जनचयश्यामो विस्फार्य विपुलं धनुः।
भूय एव शरान्घोरान्विससर्ज महामृधे १४
ततो मर्मसु मर्मज्ञो मज्जयन्निशिताञ्शरान्।
रामलक्ष्मणयोर्वीरो ननाद च मुहुर्मुहुः १५
बद्धौ तु शरबन्धेन तावुभौ रणमूर्धनि।
निमेषान्तरमात्रेण न शेकतुरवेक्षितुम् १६
ततो विभिन्नसर्वाङ्गौ शरशल्याचितौ कृतौ।
ध्वजाविव महेन्द्रस्य रज्जुमुक्तौ प्रकम्पितौ १७
तौ संप्रचलितौ वीरौ मर्मभेदेन कर्शितौ।
निपेततुर्महेष्वासौ जगत्यां जगतीपती १८
तौ वीरशयने वीरौ शयानौ रुधिरोक्षितौ।
शरवेष्टितसर्वाङ्गावार्तौ परमपीडितौ १९

भाइयोंसे बोला॥ १०॥ अलक्षित युद्ध करते मुझे जब इन्द्र ही न सका तो तुम्हारी क्या गिनती है॥ ११॥ सो अब बाणजालसे आवृ दोनोंको मैं यमालयको अभी भेजे देता हूं॥ १२॥

रामलक्ष्मणसे ऐसा कह उसने बडे तीक्ष्ण बाण मारे और लगा॥ १३॥ मेघनाद धनुषपर टंकोर दे फिर अति घोर बाण लगा॥ १४॥ वीर मेघनाद राम व लक्ष्मणके सब अङ्गोंमें तीक्ष्ण बाण बारम्बार गर्जन करने लगा॥ १५॥ बाणोंके जालसे बंधे हुये वे मेघनादको न देख सके॥ १६॥ तब बाण जालमें बंधे हुये दोनों कांपने लगे॥ १७॥ कोमल स्थानोंमें चोट लगनेसे व्याकुल हो राम

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

न ह्यविद्धं तयोर्गात्रे वभूवाङ्गुलमन्तरम् ।
नानिर्विण्णं न चाध्वस्तमाकराग्रादजिह्मगैः २०
तौ तु क्रूरेण निहतौ रक्षसा कामरूपिणा ।
असृक्सुस्रुवतुस्तीव्रं जलं प्रस्रवणाविव २१
पपात प्रथमं रामो विद्धो मर्मसु मार्गणैः ।
क्रोधादिन्द्रजिता येन पुरा शक्रो विनिर्जितः २२
रुक्मपुङ्खैः प्रसन्नाग्रै रजोगतिभिराशुगैः ।
नाराचैरर्धनाराचैर्भल्लैरञ्जलिकैरपि ॥
विव्याध वत्सदन्तैश्च सिंहदंष्ट्रैः क्षुरैस्तथा २३
स वीरशयने शिश्ये विज्यमाविध्य कार्मुकम् ।
भिन्नमुष्टिपरीणाहं त्रिनतं रुक्मभूषितम् २४
वाणपातान्तरे रामं पातितं पुरुषर्षभम् ।
स तत्र लक्ष्मणो दृष्ट्वा निराशो जीवितेऽभवत् २५
रामं कमलपत्राक्षं शरण्यं रणतोषिणम् ।
शुशोच भ्रातरं दृष्ट्वा पतितं धरणीतले २६
हरयश्चापि तं दृष्ट्वा संतापं परमं गताः ।

र पडे ॥ १८ ॥ अंगोंसें रुधिर लगने रणमें शयन करनेसे वे दुःखी हो रहे थे ॥ १९ ॥ उनके शरीरोंमें ऐसा कोई स्थल शेष न रहा जहां घाव न लगा हो ॥ २० ॥ क्रूर मेघनादने ऐसा आहत किया कि उनके अङ्गोंसे नोंसे जल गिरनेके तुल्य रक्त बहने लगा ॥ २१ ॥

इन्द्र विजयी मेघनादके बाण मर्मस्थलमें लगनेसे राम भूमिमें गिर पडे ॥ २२ ॥ उस दुष्टने सुवर्णकी फोंकें लगे हुये सर्वत्र शीघ्र पहुंचनेवाले क्ष्ण बाणोंसे मारा ॥ २३ ॥ जिससे राम रणभूमिपर सो गये, धनुष त्यञ्चासे रहित हो गया सब कवच आदि टूट गये ॥ २४ ॥ एवं बाण पसे रामको घिरा देख लक्ष्मण उनके जीवनसे निराश हो गये ॥ २५ ॥ त्रुओंके नाशक अपने भाई रामको भूमिपर गिरा देख लक्ष्मण बडा शोक रने लगे ॥ २६ ॥ वानरगण भी उनकी ऐसी दशा देख बडे दुःखित हुए

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शोकार्ताश्चुक्रुशुर्घोरमश्रुपूरितलोचनाः २७
यद्धौ तु तौ वीरशये शयानौ ते वानराः संपरिवार्य तस्थुः।
समागता वायुसुतप्रमुख्या विषादमार्ताः परमं च जग्मुः २८
इत्यार्षे श्रीमद्रा०वाल्मी०आदि० युद्धकाण्डे पंचचत्वारिंशः सर्गः ॥४५॥ [१६:

॥ षड्चत्वारिंशः सर्गः ॥

ततो द्यां पृथिवीं चैव वीक्षमाणा वनौकसः।
ददृशुः संततौ बाणैर्भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ १
वृष्ट्वेवोपरते देवे कृतकर्मणि राक्षसे।
आजगामाथ तं देशं ससुग्रीवो विभीषणः २
नीलश्च द्विविदो मैन्दः सुषेणः कुमुदोऽङ्गदः।
तूर्णं हनुमता सार्धमन्वशोचन्त राघवौ ३
अचेष्टौ मन्दनिःश्वासौ शोणितेन परिप्लुतौ।
शरजालाचितौ स्तब्धौ शयानौ शरतल्पगौ ४
निःश्वसन्तौ यथा सर्पौ निश्चेष्टौ दीनविक्रमौ।
रुधिरस्रावदिग्धाङ्गौ तपनीयाविव ध्वजौ ५
तौ वीरशयने वीरौ शयानौ मन्दचेष्टितौ।

और आंसू बहाते जोर जोरसे रोने लगे ॥ २७ ॥ तात्पर्य यह कि नागपा[श]
बद्ध हो जानेसे युद्धभूमिपर पड़े हुए रामलक्ष्मणको घेरकर वे वानर [खड़े]
खड़े हो गये। हनुमान आदि मुख्य मुख्य वानर भी वहाँ आये [और]
अत्यन्त दुःखी हुए ॥ २८ ॥

॥ यहाँ ४५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ततः वानरोंने बाण समूहमें बंधे रामलक्ष्मण दोनोंको देखा ॥१॥
मेघनादको बाण चलाकर शान्त हुआ देख सुग्रीव सहित विभीषण [भी]
आये ॥ २ ॥ नील, द्विविद, मैन्द, सुषेण, कुमुद, अङ्गद, और हनु[मान]
आदि उनके लिये शोक करने लगे ॥ ३ ॥ दोनों चेष्टा रहित मन्द श्वास[...]
बाणोंसे बंधे सोते थे ॥ ४ ॥ निश्चेष्ट दीन विक्रम बहते हुये रक्तसे अङ्ग[...]
हुए भूमिमें पड़े थे ॥ ५ ॥ रणभूमिपर शयन करते रोदन करते, हुये यूथ[...]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यूथपैः स्वैः परिवृत्तौ बाष्पव्याकुललोचनैः ६
राघवौ पतितौ दृष्ट्वा शरजालसमन्वितौ ।
बभूवुर्व्यथिताः सर्वे वानराः सविभीषणाः ७
अन्तरिक्षं निरीक्षन्तो दिशः सर्वाश्च वानराः ।
न चैनं मायया छन्नं ददृशू रावणिं रणे ८
तं तु मायाप्रतिच्छन्नं माययैव विभीषणः ।
वीक्षमाणो ददर्शाग्रे भ्रातुः पुत्रमवस्थितम् ९
तमप्रतिमकर्माणमप्रतिद्वन्द्वमाहवे ।
ददर्शान्तर्हितं वीरं वरदानाद्विभीषणः १०
तेजसा यशसा चैव विक्रमेण च संयुतः ।
इन्द्रजित्त्वात्मनः कर्म तौ शयानौ समीक्ष्य च ११
उवाच परमप्रीतो हर्षयन्सर्वराक्षसान् १२
दूषणस्य च हन्तारौ खरस्य च महाबलौ ।
सादितौ मामकैर्बाणैर्भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ १३
नेमौ मोक्षयितुं शक्यावेतस्मादिषुबन्धनात् ।
सर्वैरपि समागम्य सर्षिसङ्घैः सुरासुरैः १४
यत्कृते चिन्तयानस्य शोकार्तस्य पितुर्मम ।

...बीचमें लेटे हुये थे ॥ ६ ॥ बाणोंसे युक्त राम लक्ष्मणको देख बिभीषण व ...सब वानर अति दुःखित हुये ॥ ७ ॥ सब गगनमें चारों ओर देखने लगे पर ...छिपे हुये इन्द्रजितको किसीने न देख पाया ॥ ८ ॥

बिभीषणने राक्षसी मायाके सहारे मायासे छिपे इन्द्रजितको आगे ...देखा ॥ ९ ॥ और समझा कि समरमें यह अप्रतिमकर्मा है, वरदानके ...प्रभावसे अन्तर्हित इन्द्रजितको यश विक्रमयुक्त बिभीषणने देखा ॥ १० ॥ ...इन्द्रजित इन दोनों भाइयोंको सोते देख प्रसन्न हो ॥ ११ ॥ राक्षसोंको ...हर्षित करता बोला ॥ १२ ॥ कि दूषण व खरके घातक राम लक्ष्मण मेरे ...बाणोंसे हत हो गये ॥ १३ ॥ देवता ऋषि दैत्यों द्वारा छुडानेपर भी ये ...सर्पबन्धनसे नहीं छूट सकते ॥ १४ ॥ जिसके लिये चिन्तवन करते मेरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अस्पृष्ट्वा शयनं गात्रैस्त्रियामा याति शर्वरी १५
कृत्स्नेयं यत्कृते लङ्का नदी वर्षास्विवाकुला।
सोऽयं मूलहरोऽनर्थः सर्वेषां शमितो मया १६
रामस्य लक्ष्मणस्यैव सर्वेषां च वनौकसाम्।
विक्रमा निष्फलाः सर्वे यथा शरदि तोयदाः १७
एवमुक्त्वा तु तान्सर्वान्राक्षसान्परिपश्यतः।
यूथपानपि तान्सर्वांस्ताडयंस्स च रावणिः १८
नीलं नवभिराहत्य मैन्दं सद्विविदं तथा।
त्रिभिस्त्रिभिरमित्रघ्नस्तताप परमेषुभिः १९
जाम्बवन्तं महेष्वासो विद्ध्वा बाणेन वक्षसि।
हनूमतो वेगवतो विससर्ज शरान्दश २०
गवाक्षं शरभं चैव तावप्यमितविक्रमौ।
द्वाभ्यां द्वाभ्यां महावेगो विव्याध युधि रावणिः २१
गोलाङ्गूलेश्वरं चैव वालिपुत्रमथाङ्गदम्।
विव्याध बहुभिर्बाणैस्त्वरमाणोऽथ रावणिः २२
तान्वानरवरान्भित्त्वा शरैरग्निशिखोपमैः।
ननाद बलवांस्तत्र महासत्त्वः स रावणिः २३
तानर्दयित्वा बाणौघैस्त्रासयित्वा च वानरान्।
प्रजहास महाबाहुर्वचनं चेदमब्रवीत् २४

पिताको शय्यापर बिना सोये ही रात्रि बीत जाती है ॥ १५ ॥ जि[...]
लिये यह सम्पूर्ण लंका व्याकुल थी वह मूलहर अनर्थ मैंने नष्ट [...]
दिया ॥ १६ ॥ राम लक्ष्मण और वानरोंका पराक्रम निष्फल हो गया ॥[...]
ऐसा कह उनके देखते हुए मेघनादने सब यूथपोंको मारा ॥ १८ ॥ [...]
नौं तथा मैन्द और द्विविदके तीन तीन बाण मारे ॥ १९ ॥

जाम्बवान्के एक बाण और हनुमानको दश बाण मारे ॥ २[...]
गवाक्ष और शरभके मेघनादने दो दो बाण मारे ॥ २१ ॥ धूम्र और अङ्[...]
उसने बहुतसे बाण मारे ॥ २२ ॥ उनको बाणोंसे मार इन्द्रजित [...]
गर्जा ॥ २३ ॥ बाणोंसे सबको पीडित कर व अन्य वानरोंको भयभीत [...]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शरबन्धेन घोरेण मया बद्धौ चमूमुखे ।
सहितौ भ्रातरावेतौ निशामयत राक्षसाः २५
एवमुक्तास्तु ते सर्वे राक्षसाः कूटयोधिनः ।
परं विस्मयमापन्नाः कर्मणा तेन हर्षिताः २६
विनेदुश्च महानादान्सर्वे ते जलदोपमाः ।
हतो राम इति ज्ञात्वा रावणिं समपूजयन् २७
निष्पन्दौ तु तदा दृष्ट्वा भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
वसुधायां निरुच्छ्वासौ हतावित्यन्वमन्यत २८
हर्षेण तु समाविष्ट इन्द्रजित्समितिञ्जयः ।
प्रविवेश पुरीं लङ्कां हर्षयन्सर्वनैर्ऋतान् २९
रामलक्ष्मणयोर्दृष्ट्वा शरीरे सायकैश्चिते ।
सर्वाणि चाङ्गोपाङ्गानि सुग्रीवं भयमाविशत् ३०
तमुवाच परित्रस्तं वानरेन्द्रं विभीषणः ।
सबाष्पवदनं दीनं क्रोधव्याकुललोचनम् ३१
अलं त्रासेन सुग्रीव बाष्पवेगो निगृह्यताम् ।
एवं प्रायाणि युद्धानि विजयो नास्ति नैष्ठिकः ३२
सभाग्यशेषतास्माकं यदि वीर भविष्यति ।
मोहमेतौ प्रहास्येते महात्मानौ महाबलौ ३३

वह बहुत हंसा और बोला ॥२४॥ हे राक्षसो ! शरबन्धनसे मैं राम लक्ष्मणको बन्दी कर लिया सो जान लो ॥ २५ ॥ यह सुन वे राक्षस विस्मित होकर उसके कर्मसे प्रसन्न हुए ॥ २६ ॥ और गर्जे व रामको मरा जान इन्द्रजितकी प्रशंसा करने लगे ॥ २७ ॥

रामलक्ष्मणको निश्चेष्ट पृथ्वीमें पडे देख सबने जाना कि ये मर गये ॥२८॥ अतः विजयी हो मेघनाद सब राक्षसोंको हर्षित कर लंकामें चला गया ॥ २९ ॥ रामके सब अङ्गोंमें बाण लगे देख सुग्रीव बडे डरे ॥३०॥ व अपसे रोदन करते सुग्रीवसे विभीषण बोले ॥३१॥ हे सुग्रीव ! डर न करो ऐसा युद्धका विजय कुछ ठीक नहीं ॥ ३२ ॥ जो हमारे भाग्यमें कुछ और पुण्य भोग शेष होगा तो ये महाबली रामलक्ष्मण इस मोहको छोड

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पर्यवस्थापयात्मानमनाथं मां च वानर।
सत्यधर्माभिरक्तानां नास्ति मृत्युकृतं भयम् ३४
एवमुक्त्वा ततस्तस्य जलक्लिन्नेन पाणिना।
सुग्रीवस्य शुभे नेत्रे प्रममार्ज विभीषणः ३५
ततः सलिलमादाय विद्यया परिजप्य च।
सुग्रीवनेत्रे धर्मात्मा प्रममार्ज विभीषणः ३६
विमृज्य वदनं तस्य कपिराजस्य धीमतः।
अब्रवीत्कालसंप्राप्तमसंभ्रान्तमिदं वचः ३७
न कालः कपिराजेन्द्र वैक्लव्यमवलम्बितुम्।
अतिस्नेहोऽपि कालेऽस्मिन्मरणायोपकल्पते ३८
तस्मादुत्सृज्य वैक्लव्यं सर्वकार्यविनाशनम्।
हितं रामपुरोगाणां सैन्यानामनुचिन्तय ३९
अथ वा रक्ष्यतां रामो यावत्संज्ञाविपर्ययः।
लब्धसंज्ञौ हि काकुत्स्थौ भयं नौ व्यपनेष्यतः ४०
नैतत्किंचन रामस्य न च रामो मुमूर्षति।
न ह्येनं हास्यते लक्ष्मीर्दुर्लभा या गतायुषाम् ४१

देंगे ॥ ३३ ॥ इसलिये हे वानर ! तू मुझ दीनको और स्वतःको धीरज दे क्योंकि जहां सत्य धर्म है वहां मृत्यु सम्बन्धि भय नहीं हो सकता ॥ ३४ ॥ यह कह विभीषणने हाथमें जल ले सुग्रीवके नेत्र धोये ॥ ३५ ॥ फिर जल हाथमें ले शोक निवारण मंत्रसे अभिमंत्रित कर उसके नेत्र धोए ॥ ३६ ॥ सुग्रीवके नेत्र पोंछ विभीषण समयानुसार कहने लगे ॥ ३७ ॥

हे वानरराज ! यह समय व्याकुल होनेका नहीं ॥ ३८ ॥ विकलता छोड़ राम और स्वसेनाके हितकी बात विचारो ॥ ३९ ॥ जबतक मूर्च्छा जगे तबतक रामकी रक्षा करते रहो हे ककुत्स्थकुलो रामलक्ष्मणकी मूर्च्छा नष्ट होनेपर हम सबको निर्भय करेंगे ॥ ४० ॥ राम कुछ भी विकार नहीं हुआ ये मरनेकी इच्छा भी नहीं करते ॥ ४१ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तस्मादाश्वासयात्मानं बलं चाश्वासय स्वकम् ।
यावत्सैन्यानि सर्वाणि पुनः संस्थापयाम्यहम् ४२
एते हि फुल्लनयनास्त्रासादागतसाध्वसाः ।
कर्णे कर्णे प्रकथिता हरयो हरिसत्तम ४३
मां तु दृष्ट्वा प्रधावन्तमनीकं संप्रहर्षितम् ।
त्यजन्तु हरयस्त्रासं भुक्तपूर्वामिव स्रजम् ४४
समाश्वास्य तु सुग्रीवं राक्षसेन्द्रो विभीषणः ।
विद्रुतं वानरानीकं तत्समाश्वासयत्पुनः ४५
इन्द्रजित्तु महामायः सर्वसैन्यसमावृतः ।
विवेश नगरीं लङ्कां पितरं चाभ्युपागमत् ४६
तत्र रावणमासाद्य अभिवाद्य कृताञ्जलिः ।
आचचक्षे प्रियं पित्रे निहतौ रामलक्ष्मणौ ४७
उत्पपात ततो हृष्टः पुत्रं च परिषस्वजे ।
रावणो रक्षसां मध्ये श्रुत्वा शत्रू निपातितौ ४८
उपाघ्राय च तं मूर्ध्नि पप्रच्छ प्रीतमानसः ।
पृच्छते च यथावृत्तं पित्रे तस्मै न्यवेदयत् ॥
यथा तौ शरबन्धेन निश्चेष्टौ निष्प्रभौ कृतौ ४९
स हर्षवेगानुगतान्तरात्मा श्रुत्वा गिरं तस्य महारथस्य ।

तबतक मैं अन्योंको समझाऊं तबतक तुम स्वयं अपनेको समझाते रहो ॥ ४२ ॥ वानरगण भयसे व्याकुल हैं इन सबके कानोंमें कह कह समझाये ॥ ४३ ॥ मुझको इधर उधर दौडते व सेनाको हर्षित देख वानरगण भयको छोड देंगे ॥ ४४ ॥ विभीषण एवं सुग्रीवको समझा वानरोंको समझाने लगे ॥ ४५ ॥

इन्द्रजित् लंकामें जा रावणके समीप पहुंचा ॥ ४६ ॥ और हाथ जोड यह प्रिय वचन बोला कि मैंने राम लक्ष्मणको मार डाला ॥ ४७ ॥ उन्हें मरा सुन रावणने झट उठ पुत्रका प्रेमपूर्वक आलिङ्गन किया ॥ ४८ ॥ उसको युद्धका हाल पूंछने लगा तब उसने सब वृत्तान्त कहा कि किस प्रकार राम निश्चेष्ट कर दिए गए ॥ ४९ ॥ उसका वचन सुन रावण प्रसन्न

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जहौ ज्वरं दाशरथेः समुत्थं प्रहृष्टवाचाभिननन्द पुत्रम् ५०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे षट्चत्वारिंशः सर्गः ॥४६॥ [१७

सप्तचत्वारिंशः सर्गः ।

तस्मिन्प्रविष्टे लङ्कायां कृतार्थे रावणात्मजे ।
राघवं परिवार्याथ ररक्षुर्वानरर्षभाः १
हनुमानङ्गदो नीलः सुषेणः कुमुदो नलः ।
गजो गवाक्षः पनसः सानुप्रस्थो महाहरिः २
जाम्बवानृषभः सुन्दो रम्भः शतबलिः पृथुः ।
व्यूढानीकाश्च यत्ताश्च द्रुमानादाय सर्वतः ३
वीक्षमाणा दिशः सर्वास्तिर्यगूर्ध्वं च वानराः ।
तृणेष्वपि च चेष्टत्सु राक्षसा इति मेनिरे ४
रावणश्चापि संहृष्टो विसृज्येन्द्रजितं सुतम् ।
आजुहाव ततः सीतारक्षणी राक्षसीस्तदा ५
राक्षस्यस्त्रिजटा चापि शासनात्तमुपस्थिताः ।
ता उवाच ततो हृष्टो राक्षसी राक्षसाधिपः ६

हुआ और रामके भयसे जो दुःखित था वह दुःख जाता रहा तथा मी
बातोंसे पुत्रको प्रसन्न किया ॥ ५० ॥

॥ यहाँ ४६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

जब विजयी हो मेघनादके लंकाको जानेपर वानरगण रामकी रक्षा क
लगे ॥१॥ हनुमान, अङ्गद, नील, नल, कुमुद, सुषेण, पनस, गज, गवाक्ष,
जाम्बवान्, शतबलि, पृथु, रम्भ, सुन्द, ऋषभ, आदि वानरसेनाकी
रचना कर पादप ले ॥३॥ चारोंओर देखते थे जहां कहीं तिनका हिलता
राक्षसका होना निश्चित करते थे ॥ ४ ॥ रावणने मेघनादको विदा
सीताकी रक्षिका राक्षसियोंको बुलाया ॥५॥ उसकी आज्ञा पा राक्षसि
त्रिजटाको ले रावणके पास आई तब वह उनसे बोला ॥ ६ ॥ कि

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हताविन्द्रजिताख्यात वैदेह्या रामलक्ष्मणौ ।
पुष्पकं तत्समारोप्य दर्शयध्वं रणे हतौ ७
यदा श्रयादवष्टब्धा नेयं मामुपतिष्ठते ।
सोऽस्या भर्ता सह भ्रात्रा निहतो रणमूर्धनि ८
निर्विशङ्का निरुद्विग्ना निरपेक्षा च मैथिली ।
मामुपस्थास्यते सीता सर्वाभरणभूषिता ९
अद्य कालवशं प्राप्तं रणे रामं सलक्ष्मणम् ।
अवेक्ष्य विनिवृत्ता सा चान्यां गतिमपश्यती १०
अनपेक्षा विशालाक्षी मामुपस्थास्यते स्वयम् ११
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रावणस्य दुरात्मनः ।
राक्षस्यस्तास्तथेत्युक्त्वा जग्मुर्वै यत्र पुष्पकम् १२
ततः पुष्पकमादाय राक्षस्यो रावणाज्ञया ।
अशोकवनिकास्थां तां मैथिलीं समुपानयन् १३
तामादाय तु राक्षस्यो भर्तृशोकपराजिताम् ।
सीतामारोपयमासुर्विमानं पुष्पकं तदा १४

सीतासे जाकर कहो कि इन्द्रजित्‌ने रामलक्ष्मणको मार डाला तथा पुष्पक विमानपर चढा रणमें ले जाकर मरे दोनों भाइयोंको दिखला दो ॥ ७ ॥

जिस रामके सहारे सीता मुझको कुछ नहीं समझती थी, वही युद्धमें मारा गया ॥ ८ ॥ अब सीता सब ओरसे निरपेक्ष हो भूषित हो मेरे पास आवेगी ॥ ९ ॥ क्योंकि मरे हुये रामलक्ष्मणको देख निराश हो आप ही मेरे वशमें होगी ॥ १० ॥ रामकी अपेक्षा न करके वह विशालनयना अब स्वयं ही मेरे पास आयगी ॥ ११ ॥ ऐसे वचन सुन राक्षसियां बहुत अच्छा कह पुष्पक विमानके पास गईं ॥ १२ ॥ राक्षसियोंने पुष्पक ले अशोक वाटिकामें जा सीताको उसपर चढाया ॥ १३ ॥ भर्तृ; शोकसे पराजित सीताको राक्षसियोंने पुष्पक विमानपर चढाया ॥ १४ ॥ सीता और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततः पुष्पकमारोप्य सीतां त्रिजटया सह ।
रावणश्चारयामास पताकाध्वजमालिनीम् ॥ १५
प्राघोषयत हृष्टश्च लङ्कायां राक्षसेश्वरः ।
राघवो लक्ष्मणश्चैव हताविन्द्रजिता रणे ॥ १६
विमानेनापि गत्वा तु सीता त्रिजटया सह ।
ददर्श वानराणां तु सर्वं सैन्यं निपातितम् ॥ १७
प्रहृष्टमनसश्चापि ददर्श पिशिताशनान् ।
वानरांश्चातिदुःखार्तान्रामलक्ष्मणपार्श्वतः ॥ १८
ततः सीता ददर्शोभौ शयानौ शरतल्पगौ ।
लक्ष्मणं चैव रामं च विसंज्ञौ शरपीडितौ ॥ १९
विध्वस्तकवचौ वीरौ विप्रविद्धशरासनौ ।
सायकैश्छिन्नसर्वाङ्गौ शरस्तम्बमयौ क्षितौ ॥ २०
तौ दृष्ट्वा भ्रातरौ तत्र प्रवीरौ पुरुषर्षभौ ।
शयानौ पुण्डरीकाक्षौ कुमाराविव पावकी ॥ २१
शरतल्पगतौ वीरौ तथाभूतौ नरर्षभौ ।
दुःखार्ता करुणं सीता सुभृशं विललाप ह ॥ २२
भर्तारमनवद्याङ्गी लक्ष्मणं चासितेक्षणा ।

त्रिजटाको पुष्पकपर चढा दुष्टात्मा रावणने लंकामें घुमवाया ॥ १५ ॥ रा
लंकामें ढोंडी पिटवा दी कि इन्द्रजित्ने युद्धमें रामलक्ष्मणको
डाला ॥ १६ ॥

विमानपर सीताने रणस्थलमें जा देखा कि वानरोंकी बहुतसी
कटी पडी है ॥ १७ ॥ राक्षस हर्षित दीख पडे पर वानरगण दु
पीडित थे ॥ १८ ॥ तदनु शरशय्या पर सोते मूर्छित रामलक्ष्म
देखा ॥ १९ ॥ उनके कवच टूट गये थे, धनुष खण्डित हो गये थे,
सब अंग कट गये थे ॥ २० ॥ पुरुषश्रेष्ठ दोनों भ्राताओंको सीताने
पुत्रोंके तुल्य सोते देखा ॥ २१ ॥ दोनों वीरोंको बाणशय्यापर सोते
बडा करुण विलाप करने लगी ॥ २२ ॥ लक्ष्मणको धूलिमें पडे देख

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

प्रेक्ष्य पांसुषु चेष्टन्तौ रुरोद जनकात्मजा २३
सबाष्पशोकाभिहता समीक्ष्य तौ भ्रातरौ देवसुतप्रभावौ।
वितर्कयन्ती निधनं तयोः सा दुःखान्विता वाक्यमिदं जगाद २४
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे सप्तचत्वारिंशः सर्गः॥४७॥[१७६६]

॥ अष्टचत्वारिंशः सर्गः॥

भर्तारं निहतं दृष्ट्वा लक्ष्मणं च महाबलम्।
विललाप भृशं सीता करुणं शोककर्शिता १
ऊचुर्लाक्षणिका ये मां पुत्रिण्यविधवेति च।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः २
यज्वनो महिषीं ये मामूचुः पत्नीं च सत्रिणः।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ३
वीरपार्थिवपत्नीनां ये विदुर्भर्तृपूजिताम्।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ४
ऊचुः संश्रवणे ये मां द्विजाः कार्तान्तिकाः शुभाम्।
तेऽद्य सर्वे हते रामे ज्ञानिनोऽनृतवादिनः ५

बड़े जोरसे रोदन करने लगी ॥ २३ ॥ और आंसुओंसे गला रुंधी हुई, शोकसे व्याकुल हुई एवं दुःखसे भरी हुई वह सीता देवकुमारके समान पराक्रमी उन दोनों भाईकी ओर देखकर उनकी मृत्युके विषयमें मनमें तर्क वितर्क करती हुई अपनेसे बोलने लगी ॥ २४ ॥

॥ यहाँ ४७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ॥

रामलक्ष्मणको समरमें मरा देख सीता विलाप करने लगी ॥ १ ॥ जो मुझको पुत्रवती होकर सदा सौभाग्यवती कहते थे वे सब लोग इस समय रामके मारे जानेसे अनृतवादी हो गये ॥ २ ॥ अश्वमेधादि तथा दीर्घकालीन यज्ञके कर्त्ता श्रीरामकी महिषी मुझको जो लोग कहते थे वे सब आज रामके मारे जानेसे असत्यवादी हो गये ॥ ३ ॥ जो सब रानियोंमें पूजनीय व पतिकी मङ्गली मुझको कहते थे वे सब आज रामके मारे जानेपर अनृतवादी हो गये ॥ ४ ॥ जो कहते थे कि तुम सदा सधवा रहोगी वे सब रामके मारे जानेसे अनृतवादी हो गये ॥ ५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इमानि खलु पद्मानि पादयोर्वै कुलस्त्रियः।
आधिराज्येऽभिषिच्यन्ते नरेन्द्रैः पतिभिः सह ६
वैधव्यं यान्ति यैर्नार्यौलक्षणैर्भाग्यदुर्लभाः।
नात्मनस्तानि पश्यामि पश्यन्ती हतलक्षणा ७
सत्यनामानि पद्मानि स्त्रीणामुक्तानि लक्षणैः।
तान्यद्य निहते रामे वितथानि भवन्ति मे ८
केशाः सूक्ष्माः समा नीला भ्रुवौ चासंहते मम।
वृत्ते चारोमके जङ्घे दन्ताश्चाविरला मम ९
शङ्खे नेत्रे करौ पादौ गुल्फावूरू समौ चितौ।
अनुवृत्तनखाः स्निग्धाः समाश्चाङ्गुलयो मम १०
स्तनौ चाविरलौ पीनौ मामकौ मग्नचूचुकौ।
मग्ना चोत्सेधनी नाभिः पार्श्वोरस्कं च मे चितम् ११
मम वर्णो मणिनिभो मृदून्यङ्गरुहाणि च।
प्रतिष्ठितां द्वादशभिर्मामूचुः शुभलक्षणाम् १२
समग्रयवमच्छिद्रं पाणिपादं च वर्णवत्।
मन्दस्मितेत्येव च मां कन्यालाक्षणिका विदुः १३

जिन चिन्होंसे स्त्रियां नरेन्द्रपतियोंके साथ राज्यपर अभिषिक्त हों वे चिन्ह मेरे चरणोंमें हैं ॥ ६ ॥ जिन चिन्होंसे नारियां विधवा हो जा वे अपनेमें कोई नहीं ॥ ७ ॥ मेरे शरीरके पद्मादि लक्षण अब रामके जानेपर निरर्थक हुए जाते हैं ॥ ८ ॥ मेरे बारीक नीले केश हैं भौंहें अलग हैं, जांघें रोमरहित, दांत विरल हैं ॥ ९ ॥ नेत्रोंके अन्तनेत्र, पैर, घुटने तथा जांघ बराबर और यथा उचित हैं, अंगुलियां सब हैं ॥ १० ॥ मोटे व मुखपर खाली मेरे स्तन है ॥ ११ ॥ मेरे देहकी मणिके तुल्य चमकनेवाली हैं, रोयें कोमल हैं, दोनों पैरोंकी अंगु और पैरोंके दो तलवे मिलाकर बारह हैं इन सब चिन्होंसे मैं शुभ कहलाती हूं ॥ १२ ॥

अंगुलियोंके पोरोंपर यव स्थित हैं, हाथ पैरकी सब अंगुलियां इन सब चिन्होंसे मैं मन्दस्मिता कहाती थी ॥ १३ ॥ ज्योतिषी लोग

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आधिराज्येऽभिषेको मे ब्राह्मणैः पतिना सह।
कृतान्तकुशलैरुक्तं तत्सर्वं वितथीकृतम् १४
शोधयित्वा जनस्थानं प्रवृत्तिमुपलभ्य च।
तीर्त्वा सागरमक्षोभ्यं भ्रातरौ गोष्पदे हतौ १५
ननु वारुणमाग्नेयमैन्द्रं वायव्यमेव च।
अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चैव राघवौ प्रत्यपद्यत १६
अदृश्यमानेन रणे मायया वासवोपमौ।
मम नाथावनाथाया निहतौ रामलक्ष्मणौ १७
न हि दृष्टिपथं प्राप्य राघवस्य रणे रिपुः।
जीवन्प्रतिनिवर्तेत यद्यपि स्यान्मनोजवः १८
न कालस्यातिभारोऽस्ति कृतान्तश्च सुदुर्जयः।
यत्र रामः सह भ्रात्रा शेते युधि निपातितः १९
न शोचामि तथा रामं लक्ष्मणं च महारथम्।
नात्मानं जननीं चापि यथा श्वश्रूं तपस्विनीम् २०
सा तु चिन्तयते नित्यं समाप्तव्रतमागतम्।
कदा द्रक्ष्यामि सीतां च लक्ष्मणं च सराघवम् २१

कि पतिके सहित आधिराज्य पदवीपर अभिषिक्त होगी वह सब मिथ्या गया ॥ १४ ॥ हा हनुमानसे मेरा समाचार पा यहां आकर गायके खुरके में दोनों भ्राता डूब गये ॥ १५ ॥ वरुण, अग्नि, इन्द्र, वायु तथा ब्रह्म आयुधोंसे भी रामलक्ष्मण सन्तापित नहीं हो सकते ॥ १६ ॥ इन दोनों भाइयोंको अदृश्य शत्रुने समरमें मायासे मार डाला है ॥ १७ ॥

युद्धमें रामके सामने आनेपर मनके तुल्य वेगवान् भी जीता नहीं जा सकता ॥ १८ ॥ भाई समेत श्रीराम मरे हुए युद्धमें सोते हैं इससे काल दुर्जय है ॥ १९ ॥ मुझे रामलक्ष्मण व अपनी तथा अपनी माकी इतनी चिन्ता नहीं है जितनी कौशल्याकी है ॥ २० ॥ जो नित्य ही यह सोचती है कि कब रामलक्ष्मण व सीताको देखूंगी ॥ २१ ॥ एवं विलाप करती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परिदेवयमानां तां राक्षसी त्रिजटाऽब्रवीत् ।
मा विषादं कृथा देवि भर्ताऽयं तव जीवति २२
कारणानि च वक्ष्यामि महान्ति सदृशानि च ।
यथेमौ जीवतो देवि भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ २३
न हि कोपपरीतानि हर्षपर्युत्सुकानि च ।
भवन्ति युधि योधानां मुखानि निहते पतौ २४
इदं विमानं वैदेहि पुष्पकं नाम नामतः ।
दिव्यं त्वां धारयेन्नेदं यद्येतौ गतजीवितौ २५
हतवीरप्रधाना हि गतोत्साहा निरुद्यमा ।
सेना भ्रमति सङ्ख्येषु हतकर्णेव नौर्जले २६
इयं पुनरसंभ्रान्ता निरुद्विग्ना तपस्विनि ।
सेना रक्षति काकुत्स्थौ मया प्रीत्या निवेदितौ २७
सा त्वं भव सुविस्रब्धा अनुमानैः सुखोदयैः ।
अहतौ पश्य काकुत्स्थौ स्नेहादेतद्ब्रवीमि ते २८
अनृतं नोक्तपूर्वं मे न च वक्ष्यामि मैथिलि ।
चारित्रसुखशीलत्वात्प्रविष्टासि मनो मम २९

हुई सीतासे त्रिजटा बोली हे देवि ! शोक न करो ये तुम्हारे भर्ता जीते हैं ॥ २२ ॥ हे देवि ! जिससे ऐसे कहती हूं वह महा... सुनो ॥ २३ ॥

हे सीते ! सेनापतिके मरनेपर योधाओंके मुख कोप और हर्षयुक्त रहते पर वह बात यहां नहीं है इससे ये मृतक नहीं हैं ॥ २४ ॥ ... दोनों मर जाते तो यह पुष्पक विमान तुमको न चढाता क्योंकि विधवाको ऊपर नहीं धारण करता ॥ २५ ॥ सेनापतिके मर जानेपर उत्साहशून्य हो कुछ कार्य नहीं करती वरन चञ्चल हो जाया है ॥ २६ ॥ परन्तु यह सेना सावधानीसे उद्वेगशून्य हो दोनों भाई रक्षा करती है ॥ २७ ॥ इससे इन अनुमानोंसे विश्वास कर दोनों भाई जीता ही समझो ॥ २८ ॥

हे सीते ! मैंने न कभी झूंठ पहले कहा है न कहूंगी ॥ २९ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नेमौ शक्यौ रणे जेतुं सेन्द्रैरपि सुरासुरैः ।
तादृशं दर्शनं दृष्ट्वा मया चोदीरितं तव ३०
इदं तु सुमहाच्चित्रं शरैः पश्यस्व मैथिलि ।
विसंज्ञौ पतितावेतौ नैव लक्ष्मीर्विमुञ्चति ३१
प्रायेण गतसत्त्वानां पुरुषाणां गतायुषाम् ।
दृश्यमानेषु वक्त्रेषु परं भवति वैकृतम् ३२
त्यज शोकं च दुःखं च मोहं च जनकात्मजे ।
रामलक्ष्मणयोरर्थं नाद्य शक्यमजीवितुम् ३३
श्रुत्वा तु वचनं तस्याः सीता सुरसुतोपमा ।
कृताञ्जलिरुवाचेमामेवमस्त्विति मैथिली ३४
विमानं पुष्पकं तत्तु संनिवर्त्य मनोजवम् ।
दीना त्रिजटया सीता लङ्कामेव प्रवेशिता ३५
ततस्त्रिजटया सार्धं पुष्पकादवरुह्य सा ।
अशोकवनिकामेव राक्षसीभिः प्रवेशिता ३६
प्रविश्य सीता बहुवृक्षखण्डां तां राक्षसेन्द्रस्य विहारभूमिम् ।
संप्रेक्ष्य संचिन्त्य च राजपुत्रौ परं विषादं समुपाजगाम ३७
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे अष्टचत्वारिंशः सर्गः ॥४८॥[१८०३]

...समरमें इन्द्रादि देवता तथा असुर भी नहीं मार सकते ॥ ३० ॥ हे सीते ! ...ये दोनों भाई अस्त्रोंके लगनेसे मूर्च्छित हैं पर श्री इनके मुखोंको नहीं ...छोड़ती है ॥ ३१ ॥ बहुधा म्रियमाण पुरुषोंके मुखोंमें कुछ विकार हो जाता ...है ॥ ३२ ॥ इससे हे सीते ! शोक, दुःख और मोहको छोडो ॥ ३३ ॥ ...सीता त्रिजटाके ऐसे वचन सुन हाथ जोड बोली कि तुम्हारे वचन सत्य ...हों ॥ ३४ ॥ इसके पीछे विमान लौटाकर सीता त्रिजटा समेत लङ्कामें ...आई गई ॥ ३५ ॥ त्रिजटाके साथ पुष्पक विमानसे उतर राक्षसियोंके साथ ...जानकी अशोक वाटिकामें आई ॥ ३६ ॥ और अनेक वृक्षसमुदायोंसे युक्त ...राक्षसाधिपति रावणके क्रीडास्थानमें प्रविष्ट हो जानेपर वह स्थान जब ...देखा हुआ तो राजकुमार रामलक्ष्मणका स्मरण होकर उसे अत्यधिक ...दुःख हुआ ॥ ३७ ॥ ॥यहाँ ४८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

॥ एकोनपंचाशः सर्गः ॥

घोरेण शरबन्धेन बद्धौ दशरथात्मजौ।
निःश्वसन्तौ यथा नागौ शयानौ रुधिरोक्षितौ १
सर्वे ते वानरश्रेष्ठाः ससुग्रीवमहाबलाः।
परिवार्य महात्मानौ तस्थुः शोकपरिप्लुताः २
एतस्मिन्नन्तरे रामः प्रत्यबुध्यत वीर्यवान्।
स्थिरत्वात्सत्त्वयोगाच्च शरैः संदानितोऽपि सन् ३
ततो दृष्ट्वा सरुधिरं निषण्णं गाढमर्पितम्।
भ्रातरं दीनवदनं पर्यदेवयदातुरः ४
किं नु मे सीतया कार्यं लब्धया जीवितेन वा।
शयानं योऽद्य पश्यामि भ्रातरं युधि निर्जितम् ५
शक्या सीतासमा नारी मर्त्यलोके विचिन्वता।
न लक्ष्मणसमो भ्राता सचिवः सांपरायिकः ६
परित्यक्ष्याम्यहं प्राणान्वानराणां तु पश्यताम्।
यदि पञ्चत्वमापन्नः सुमित्रानंदवर्धनः ७
किं नु वक्ष्यामि कौसल्यां मातरं किं नु कैकयीम्।
कथमम्बां सुमित्रां च पुत्रदर्शनलालसाम् ८
विवत्सां वेपमानां च वेपन्तीं कुररीमिव।

बाणजालसे बंधे अङ्गोंमें रक्तयुक्त सोते राम लक्ष्मणको ॥ १ ॥ महा
सब वानर यूथप व्याकुल हो घेरकर खड़े हुए ॥ २ ॥ वीर्यवान् व परा
तथा बाणोंसे विंधे होनेपर भी रामको चेतना आई ॥ ३ ॥ दीनवदन
लगे लक्ष्मणको देख आतुर हो वह विलाप करने लगे ॥ ४ ॥ मैं यु
निर्जित हो सोते हुये अपने भाईको देख रहा हूं इससे सीताके पा
अपने जीनेसे क्या प्रयोजन ? ॥ ५ ॥ ढूंढनेसे सीताके तुल्य स्त्री चाहे मि
जाय पर लक्ष्मण तुल्य भाई न मिलेगा ॥ ६ ॥ लक्ष्मण यदि मृतक हो
तो मैं भी प्राण त्याग दूंगा ॥ ७ ॥ मैं कौशल्या, कैकयी तथा सुमित्रासे
कहूंगा ॥ ८ ॥ जो विना लक्ष्मण अयोध्याको जाऊंगा तो कांपती

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कथमाश्वासयिष्यामि यदि यास्यामि तं विना ९
कथं वक्ष्यामि शत्रुघ्नं भरतं च यशस्विनम्।
मया सह वनं यातो विना तेनाहमागतः १०
उपालम्भं न शक्ष्यामि सोढुमम्बासुमित्रया।
इहैव देहं त्यक्ष्यामि न हि जीवितुमुत्सहे ११
धिङ् मां दुष्कृतकर्माणमनार्यं मत्कृते ह्यसौ।
लक्ष्मणः पतितः शेते शरतल्पे गतासुवत् १२
त्वं नित्यं सुविषण्णं मामाश्वासयसि लक्ष्मण।
गतासुर्नाद्य शक्तोऽसि मामार्तमभिभाषितुम् १३
येनाद्य बहवो युद्धे निहता राक्षसाः क्षितौ।
तस्यामेवाद्य शूरस्त्वं शेषे विनिहतः शरैः १४
शयानः शरतल्पेऽस्मिन्स्वशोणितपरिप्लुतः।
शरभूतस्ततो भासि भास्करोऽस्तमिव व्रजन् १५
बाणाभिहतमर्मत्वान्न शक्नोषीह भाषितुम्।
रुजा चाब्रुवतो यस्य दृष्टिरागेण सूच्यते १६
यथैव मां वनं यान्तमनुयातो महाद्युतिः।

[मा]ताको कैसे समझाऊंगा ? ॥ ९ ॥

लक्ष्मण मेरे साथ वनको आये मैं उनके विना वहां जा शत्रुघ्न व भरतसे [क्य]ा कहूंगा ? ॥ १० ॥ सुमित्राका किया विलाप मैं न सह सकूंगा इससे [य]हीं शरीर छोड दूंगा ॥ ११ ॥ मुझ पापीको धिक्कार है जिसके कारण लक्ष्मण शरशय्यापर सो रहे हैं ॥ १२ ॥ हे लक्ष्मण ! मेरे व्यथित होनेपर [तु]म मुझे समझाया करते थे पर अब बोल भी नहीं सकते ॥ १३ ॥ हे [वी]र! जिस भूमिमें तुम्हारे मारे अनेक राक्षस पडे हैं उसीमें बाणोंसे आहत [तु]म भी सो रहे हो ॥ १४ ॥ अङ्गोंमें रक्तयुक्त बाणोंसे विंधे तुम इस [शय्]यापर सोते हो ॥ १५ ॥ बाणोंके लगनेसे तुम बोल नहीं सकते, पर [आंख]ोंसे बडी पीडा ज्ञात होती है ॥ १६ ॥
जैसे लक्ष्मण मेरे पीछे वनको आये हैं वैसे ही इनके पीछे मैं भी यमा-

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अहमप्यनुयास्यामि तथैवैनं यमक्षयम् १७
इष्टबन्धुजनो नित्यं मां च नित्यमनुव्रतः।
इमामद्य गतोऽवस्थां ममानार्यस्य दुर्नयैः १८
सुरुष्टेनापि वीरेण लक्ष्मणेन न संस्मरे।
परुषं विप्रियं चापि श्रावितं तु कदाचन १९
विससर्जैकवेगेन पञ्च बाणशतानि यः।
इष्वस्त्रेष्वधिकस्तस्मात्कार्तवीर्याच्च लक्ष्मणः २०
अस्त्रैरस्त्राणि यो हन्याच्छक्रस्यापि महात्मनः।
सोऽयमुर्व्यां हतः शेते महार्हशयनोचितः २१
तत्तु मिथ्या प्रलप्तं मां प्रधक्ष्यति न संशयः।
यन्मया न कृतो राजा राक्षसानां विभीषणः २२
अस्मिन्मुहूर्ते सुग्रीव प्रतियातुमितोऽर्हसि।
सत्त्वहीनं मया राजन्रावणोऽभिभविष्यति २३
अङ्गदं तु पुरस्कृत्य ससैन्यं सपरिच्छदम्।
सागरांतर सुग्रीव नीलेन च नलेन च २४
कृतं हि सुमहत्कर्म यदन्यैर्दुष्करं रणे।
ऋक्षराजेन तुष्यामि गोलाङ्गूलाधिपेन च २५

लयको जाऊंगा ॥ १७ ॥ लक्ष्मण आज जो इस दशाको प्राप्त हुए यह मुझ अनार्यकी ही अनीतिसे हुआ ॥ १८ ॥ मैंने क्रोधित वीर लक्ष्मणके मुखसे कठोर तथा अप्रिय वचन कभी नहीं सुने ॥ १९ ॥ लक्ष्मण सहस्र बाहुसे भी अधिक धनुर्विद्यामें निष्णात थे ॥ २० ॥ जो अस्त्रोंसे इन्द्रके भी अस्त्रोंको नष्ट कर सकते थे ये लक्ष्मण आज भूमिपर सोते हैं ॥ २१ ॥ मैं प्रतिज्ञा कर विभीषणको राक्षसोंका राजा नहीं बना सका यही मुझको ... डालता है ॥ २२ ॥

हे सुग्रीव! अब मैं पराक्रम हीन हो गया हूं इससे मेरे साथ तुमको भी रावण अपमान करेगा ॥ २३ ॥ इससे अङ्गद तथा सेनाको आगे ... नील नलादिकोंको संग ले समुद्र उतरो ॥ २४ ॥ हनुमान और जाम्बवान् जो कर्म किया वह कोई नहीं कर सकता इससे मैं संतुष्ट हूं ॥ २५ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अङ्गदेन कृतं कर्म मैन्देन द्विविदेन च ।
युद्धं केसरिणा सङ्ख्ये घोरं संपातिना कृतम् २६
गवयेन गवाक्षेण शरभेण गजेन च ।
अन्यैश्च हरिभिर्युद्धं दुर्धरं त्यक्तजीवितैः ॥
न चातिक्रमितुं शक्यं दैवं सुग्रीव मानुषैः २७
यत्तु शक्यं वयस्येन सुहृदा वा परं मम ।
कृतं सुग्रीव तत्सर्वं भवता धर्मभीरुणा २८
मित्रकार्यं कृतमिदं भवद्भिर्वानरर्षभाः ।
अनुज्ञाता मया सर्वे यथेष्टं गन्तुमर्हथ २९
शुश्रुवुस्तस्य ये सर्वे वानराः परिदेवितम् ।
वर्तयांचक्रिरेऽश्रूणि नेत्रैः कृष्णेतरेक्षणाः ३०
ततः सर्वाण्यनीकानि स्थापयित्वा विभीषणः ।
आजगाम गदापाणिस्त्वरितं यत्र राघवः ३१
तं दृष्ट्वा त्वरितं यान्तं नीलाञ्जनचयोपमम् ।
वानरा दुद्रुवुः सर्वे मन्यमानास्तु रावणिम् ३२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे एकोनपञ्चाशः सर्गः ॥४९॥ [१८३५]

न्द, द्विविद, केसरी व संपातिने भी युद्धमें बडा दुष्कर कर्म किया ॥ २६ ॥ य, गवाक्ष, शरभ, गज और अन्य वानरोंने भी बडा भारी युद्ध किया, पर सुग्रीव ! मनुष्य भाग्यका उल्लंघन नहीं कर सकता ॥ २७ ॥ जो मित्रको मित्रके साथ करना चाहिये आपने वह सब मेरे साथ किया ॥ २८ ॥ हे नरों आप लोगोंने भी मित्रकार्य भली प्रकार किया अब मैं सबको विदा ता हूं ॥ २९ ॥ रामका ऐसा विलाप सुन वानरगण भी विलाप करने गे ॥ ३० ॥ इतनेमें सारी सेनाको ठीक खडी करके वह विभीषण हाथमें दा लेकर रामके समीप शीघ्र आया ॥ ३१ ॥ परन्तु कज्जल पर्वततुल्य विभीषण सत्वर आ रहा है, यह देखते ही वह रावणपुत्र इन्द्रजित है, सा समझकर समस्त वानर भाग खडे हुए ॥ ३२ ॥

॥ यहां ४९ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

॥ पञ्चाशत्तमः सर्गः ॥

अथोवाच महातेजा हरिराजो महाबलः ।
किमियं व्यथिता सेना मूढवातेव नौर्जले १
सुग्रीवस्य वचः श्रुत्वा वालिपुत्रोऽङ्गदोऽब्रवीत् ।
न त्वं पश्यसि रामं च लक्ष्मणं च महारथम् २
शरजालाचितौ वीरावुभौ दशरथात्मजौ ।
शरतल्पे महात्मानौ शयानौ रुधिरोक्षितौ ३
अथाब्रवीद्वानरेन्द्रः सुग्रीवः पुत्रमङ्गदम् ।
नानिमित्तमिदं मन्ये भवितव्यं भयेन तु ४
विषण्णवदना ह्येते त्यक्तप्रहरणा दिशः ।
पलायन्तेऽत्र हरयस्त्रासादुत्फुल्ललोचनाः ५
अन्योन्यस्य न लज्जन्ते न निरीक्षन्ति पृष्ठतः ।
विप्रकर्षन्ति चान्योऽन्यं पतितं लङ्घयन्ति च ६
एतस्मिन्नन्तरे वीरो गदापाणिर्विभीषणः ।
सुग्रीवं वर्धयामास राघवं च जयाशिषा ७
विभीषणं च सुग्रीवो दृष्ट्वा वानरभीषणम् ।
ऋक्षराजं महात्मानं समीपस्थमुवाच ह ८

इसके बाद वानरराज सुग्रीव बोले कि यह सेना क्यों कांप रही है?॥ सुग्रीवकी बात सुन अङ्गद बोले कि आप नहीं देखते ॥ २ ॥ कि रामल दोनों वीर बाणसमूहसे बँधे शरशय्यापर शयन करते हैं ॥ ३ ॥ यह सुग्रीव अङ्गदसे कहने लगे कि केवल यही इनके भयका कारण नहीं, और भी है ॥ ४ ॥ देखो, व्याकुल मुख भयसे चंचल नयन किये व गण भागते चले जाते हैं ॥ ५ ॥ कोई पीछे फिरकर नहीं देखते, एक दू धकेलते हैं, जो गिर पडते हैं उनको लांघ जाते हैं ॥ ६ ॥ इसी अ वीर विभीषण वहां आ पहुंचे और रामको जयपूर्वक आशीर्वाद लगे ॥ ७ ॥

विभीषणको देख सुग्रीव जाम्बवान्‌से बोले ॥ ८ ॥ कि विभी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

विभीषणोऽयं संप्राप्तो यं दृष्ट्वा वानरर्षभाः ।
द्रवन्त्यागतसंत्रासा रावणात्मजशङ्कया ९
शीघ्रमेतान्सुसंत्रस्तान्बहुधा विप्रधावितान् ।
पर्यवस्थापयाख्याहि विभीषणमुपस्थितम् १०
सुग्रीवेणैवमुक्तस्तु जाम्बवानृक्षपार्थिवः ।
वानरान्सान्त्वयामास संनिवर्त्य प्रधावतः ११
ते निवृत्ताः पुनः सर्वे वानरास्त्यक्तसाध्वसाः ।
ऋक्षराजवचः श्रुत्वा तं च दृष्ट्वा विभीषणम् १२
विभीषणस्तु रामस्य दृष्ट्वा गात्रं शरैश्चितम् ।
लक्ष्मणस्य तु धर्मात्मा बभूव व्यथितस्तदा १३
जलक्लिन्नेन हस्तेन तयोर्नेत्रे विमृज्य च ।
शोकसंपीडितमना रुरोद विललाप च १४
इमौ तौ सत्त्वसंपन्नौ विक्रान्तौ प्रियसंयुगौ ।
इमामवस्थां गमितौ राक्षसैः कूटयोधिभिः १५
भ्रातृपुत्रेण चैतेन दुष्पुत्रेण दुरात्मना ।
राक्षस्या जिह्मया बुद्ध्या वञ्चितावृजुविक्रमौ १६
शरैरिमावलं विद्धौ रुधिरेण समुक्षितौ ।
वसुधायामिमौ सुप्तौ दृश्येते शल्यकाविव १७

...वानरगण इन्द्रजित् समझ शङ्कासे भाग रहे हैं ॥ ९ ॥ सो तुम शीघ्र जा ...व्याकुल भागते वानरोंको रोको ॥ १० ॥ सुग्रीवके ऐसा कहनेपर जाम्बवान्ने ...समझाकर वानरोंको भागनेसे रोका ॥ ११ ॥ वानरगण जाम्बवान्की बात ...न विभीषणको देख लौटे ॥ १२ ॥ विभीषण रामलक्ष्मणके सब अङ्ग ...णोंसे क्षत देख बडे दुःखी हुए ॥ १३ ॥ उन दोनों भाइयोंके नेत्र धो ...डित हो विलाप करने लगे ॥ १४ ॥ कि महाविक्रमी इन दोनोंको ...यो राक्षसोंने इस अवस्थाको पहुंचा दिया ॥ १५ ॥ ...इन सरल विक्रमी दोनोंको दुष्टात्मा रावणपुत्रने ठग लिया ॥ १६ ॥ ...दोनों भाई पृथ्वीपर सोते लोहेके बाणोंके ढेरके तुल्य दीख पडते हैं ॥ १७ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ययोर्वीर्यमुपाश्रित्य प्रतिष्ठा काङ्क्षिता मया।
ताविमौ देहनाशाय प्रसुप्तौ पुरुषर्षभौ १८
जीवन्नद्य विपन्नोऽस्मि नष्टराज्यमनोरथः।
प्राप्तप्रतिज्ञश्च रिपुः सकामो रावणः कृतः १९
एवं विलपमानं तं परिष्वज्य विभीषणम्।
सुग्रीवः सत्वसंपन्नो हरिराजोऽब्रवीदिदम् २०
राज्यं प्राप्स्यसि धर्मज्ञ लङ्कायां नेह संशयः।
रावणः सह पुत्रेण स्वकामं नेह लप्स्यते २१
गरुडाधिष्ठितावेतावुभौ राघवलक्ष्मणौ।
त्यक्त्वा मोहं वधिष्येते सगणं रावणं रणे २२
तमेवं सान्त्वयित्वा तु समाश्वास्य तु राक्षसम्।
सुषेणं श्वशुरं पार्श्वे सुग्रीवस्तमुवाच ह २३
सह शूरैर्हरिगणैर्लब्धसंज्ञावरिन्दमौ।
गच्छ त्वं भ्रातरौ गृह्य किष्किन्धां रामलक्ष्मणौ २४
अहं तु रावणं हत्वा सपुत्रं सहबान्धवम्।
मैथिलीमानयिष्यामि शक्रो नष्टामिव श्रियम् २५
श्रुत्वैतद्वानरेन्द्रस्य सुषेणो वाक्यमब्रवीत्।
देवासुरं महायुद्धमनुभूतं पुरातनम् २६

ये दोनों पुरुषोत्तम अपनी देहके नाशके लिये पृथ्वीपर सो रहे हैं॥१८॥ अब मेरा राज्य पानेका अभिप्राय नष्ट हो गया और मेरे शत्रुकी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई ॥ १९ ॥ एवं विलपते विभीषणको छातीसें लगा सुग्रीव बोले॥२०॥ हे धर्म्मज्ञ आप लंकाका राज्य पावेंगे इससें कुछ भी सन्देह नहीं है॥२१॥ ये रामलक्ष्मण गरुडको पा मोह छोड रावणको युद्धसें मार डालेंगे॥२२॥ विभीषणको एवं समझा सुग्रीव समीपस्थ सुषेणसे बोले ॥ २३ ॥ कि हरिगण सहित मूर्च्छा जागते ही रामलक्ष्मणको ले किष्किन्धाको जाओ ॥ २४ ॥ मैं पुत्र बान्धवसहित रावणको युद्धसें मार सीताको लाऊंगा ॥ २५ ॥

इसपर सुषेण बोले कि पूर्वकालसें जब देवासुर युद्ध हुआ था॥२६॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तदा स दानवा देवाञ्शरसंस्पर्शकोविदान्।
निजघ्नुः शस्त्रविदुषच्छादयन्तो मुहुर्मुहुः २७
तानार्तान्नष्टसंज्ञांश्च गतासूंश्च बृहस्पतिः।
विद्याभिर्मन्त्रयुक्ताभिरोषधीभिश्चिकित्सति २८
तान्यौषधान्यानयितुं क्षीरोदं यान्तु सागरम्।
जवेन वानराः शीघ्रं संपातिपनसादयः २९
हरयस्तु विजानन्ति पार्वती ते महौषधी।
संजीवकरणीं दिव्यां विशल्यां देवनिर्मिताम् ३०
चन्द्रश्च नाम द्रोणश्च क्षीरोदे सागरोत्तमे।
अमृतं यत्र मथितं तत्र ते परमौषधी ३१
तौ तत्र विहितौ देवैः पर्वतौ तौ महोदधौ।
अयं वायुसुतो राजन्हनूमांस्तत्र गच्छतु ३२
एतस्मिन्नन्तरे वायुर्मेघाश्चापि सविद्युतः।
पर्यस्य सागरे तोयं कम्पयन्निव पर्वतान् ३३
महता पक्षवातेन सर्वद्वीपमहाद्रुमाः।
निपेतुर्भग्नविटपाः सलिले लवणाम्भसि ३४
अभवन्पन्नगास्त्रस्ता भोगिनस्तत्रवासिन।

तब दैत्योंने देवताओंको बाणोंसे बराबर आच्छादित कर दिया ॥ २७ ॥ जब वे लोग पीडित व मूर्छित हो मर भी गये तो बृहस्पतिने चिकित्सा कर जिला दिया ॥ २८ ॥ उन औषधियोंके लिये सम्पाति, पनसादि वानर शीघ्र ही क्षीरसागरके पास जावें ॥ २९ ॥ वे वानर उन औषधियोंको अच्छी-तरह जानते हैं उनमें एक संजीवनी है और दूसरी विशल्या ॥ ३० ॥ जहां क्षीरसागर मथा गया था वहां चन्द्र और द्रोण नाम दो पर्वत हैं उन्हींपर ये दोनों औषधियां हैं ॥ ३१ ॥

इन दोनों पर्वतोंको देवताओंने क्षीरसमुद्रके बीच स्थापित कर दिया है ॥ ३२ ॥ इसी अन्तरमें वायु तीव्रतासे चलने लगा, बादलोंमें बिजुली चमकने लगी, ॥ ३३ ॥ प्रचण्ड पवनके लगनेसे द्वीपोंके बीचके बड़े हुये वृक्ष सागरमें गिरे ॥ ३४ ॥ वहांके निवासी सब सर्प भयातुर हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शीघ्रं सर्वाणि यादांसि जग्मुश्च लवणार्णवम् ३५
ततो मुहूर्ताद्गरुडं वैनतेयं महाबलम्।
वानरा ददृशुः सर्वे ज्वलन्तमिव पावकम् ३६
तमागतमभिप्रेक्ष्य नागास्ते विप्रदुद्रुवुः।
यैस्तु तौ पुरुषौ बद्धौ शरभूतैर्महाबलैः ३७
ततः सुपर्णः काकुत्स्थौ स्पृष्ट्वा प्रत्यभिनन्द्य च।
विममर्श च पाणिभ्यां मुखे चन्द्रसमप्रभे ३८
वैनतेयेन संस्पृष्टास्तयोः संरुरुहुर्व्रणाः।
सुवर्णे च तनू स्निग्धे तयोराशु बभूवतुः ३९
तेजो वीर्यं बलं चौज उत्साहश्च महागुणाः।
प्रदर्शनं च बुद्धिश्च स्मृतिश्च द्विगुणा तयोः ४०
तावुत्थाप्य महातेजा गरुडो वासवोपमौ।
उभौ च सस्वजे हृष्टो रामश्चैनमुवाच ह ४१
भवत्प्रसादाद्व्यसनं रावणिप्रभवं महत्।
उपायेन व्यतिक्रान्तौ शीघ्रं च बलिनौ कृतौ ४२
यथा तातं दशरथं यथाऽजं च पितामहम्।
तथा भवन्तमासाद्य हृदयं मे प्रसीदति ४३

सागरमें जा छिपे ॥ ३५ ॥ ततः मुहूर्त भर पीछे सब वानरोंने मह[...] विनताके पुत्र गरुडको देखा ॥ ३६ ॥ जिन बाणरूप सर्पोंसे वे दोनों [...] बंधे थे वे सब गरुडको देख भाग खडे हुए ॥ ३७ ॥ तब वैनतेयने [...] हाथोंसे रामलक्ष्मणको सुहराया और उनके मुखोंपर हाथ फेरा ॥[...] वैनतेयके छूते ही दोनोंके शरीर पूर्ववत् हो गये ॥ ३९ ॥ [...] उत्साह आदि गुण बुद्धि और स्मरण दोनों भाइयोंको पूर्वसे दू[...] गया ॥ ४० ॥

गरुड दोनोंको उठाया; तब राम गरुडसे बोले ॥४१॥ कि आपकी [...] रावणके पुत्रका किया हुआ दुःख दूर हो गया ॥ ४२ ॥ जैसे अपने [...] पितामहको पा चित्तप्रसन्न होता था उसी तरह आपको पा आज प्र[...]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

को भवान्रूपसंपन्नो दिव्यस्रगनुलेपनः ।
वसानो विरजे वस्त्रे दिव्याभरणभूषितः ४४
तमुवाच महातेजा वैनतेयो महाबलः ।
पतत्त्रिराजः प्रीतात्मा हर्षपर्याकुलेक्षणम् ४५
अहं सखा ते काकुत्स्थ प्रियः प्राणो बहिश्चरः ।
गरुत्मानिह संप्राप्तो युवयोः साह्यकारणात् ४६
असुरा वा महावीर्या दानवा वा महाबलाः ।
सुराश्चापि सगन्धर्वाः पुरस्कृत्य शतक्रतुम् ४७
नेमं मोक्षयितुं शक्ताः शरबन्धं सुदारुणम् ।
मायाबलादिन्द्रजिता निर्मितं क्रूरकर्मणा ४८
एते नागाः काद्रवेयास्तीक्ष्णदंष्ट्रा विषोल्बणाः ।
रक्षोमायाप्रभावेण शरभूतास्त्वदाश्रयः ४९
सभाग्यश्चासि धर्मज्ञ रामः सत्यपराक्रम ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा समरे रिपुघातिना ५०
इमं श्रुत्वा तु वृत्तान्तस्त्वरमाणोऽहमागतः ।
सहसैवावयोः स्नेहात्सखित्वमनुपालयन् ५१
मोक्षितौ च महाघोरादस्मात्सायकबन्धनात् ।

ता है ॥ ४३ ॥ अति रूपसम्पन्न दिव्य चन्दनानुलेपन युक्त विमल वधारी आप कौन हैं ! ॥ ४४ ॥ यह सुन गरुड बोला कि मेरा नाम ड़ है तथा आपकी सहायताके लिये यहां आया हूं ॥ ४५ ॥ हे ककुत्स्थ ोत्पन्न राम ! मैं तुम्हारा मित्र और शरीरके बाहर संचार करनेवाले णस्वरूप तुमको सहायता करनेके लिये यहां आया हूं ॥ ४६ ॥ दैत्य र वानरगण तथा देवतागण और देवराज भी ॥ ४७ ॥ मेघनादका या हुआ यह शरबन्ध नहीं छुडा सकते थे ॥ ४८ ॥ ये कद्रूके पुत्र थे राक्षसकी मायासे बाणरूप होकर आपको काटते ॥ ४९ ॥ पर तुम युद्धमें शत्रुओंको मारनेवाले भाई लक्ष्मणसहित भाग्यवाले हो ॥ ५० ॥ क्योंकि आपके शरबन्धका वृत्तांत सुन आप के स्नेहसे जल्दीसे ॥ ५१ ॥ इस बाणबन्धनसे मैंने तुम्हें छुडा दिया

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अप्रमादश्च कर्तव्यो युवाभ्यां नित्यमेव हि ५२
प्रकृत्या राक्षसाः सर्वे सङ्ग्रामे कूटयोधिनः ।
शूराणां शुद्धभावानां भवतामार्जवं वलम् ५३
तन्न विश्वसनीयं वो राक्षसानां रणाजिरे ।
एतेनैवोपमानेन नित्यं जिह्मा हि राक्षसाः ५४
एवमुक्त्वा तदा रामं सुपर्णः स महाबलः ।
परिष्वज्य च सुस्निग्धमाप्रष्टुमुपचक्रमे ५५
सखे राघव धर्मज्ञ रिपूणामपि वत्सल ।
अभ्यनुज्ञातुमिच्छामि गमिष्यामि यथासुखम् ५६
न च कौतूहलं कार्यं सखित्वं प्रति राघव ।
कृतकर्मा रणे वीर सखित्वं प्रतिवेत्स्यसि ५७
वालवृद्धावशेषां तु लङ्कां कृत्वा शरोर्मिभिः ।
रावणं तु रिपुं हत्वा सीतां त्वमुपलप्स्यसे ५८
इत्येवमुक्त्वा वचनं सुपर्णः शीघ्रविक्रमः ।
रामं च नीरुजं कृत्वा मध्ये तेषां वनौकसाम् ५९
प्रदक्षिणं ततः कृत्वा परिष्वज्य च वीर्यवान् ।
जगामाकाशमाविश्य सुपर्णः पवनो यथा ६०

अब आप लोग होशियारीसे रहें ॥ ५२ ॥ राक्षसलोग युद्धमें छल क
और आप लोग शूर हैं शुद्धभाव ही आप श्रेष्ठ बल समझते हैं ॥
इससे युद्धमें इन दुष्ट राक्षसोंका आप विश्वास न करें ॥ ५४ ॥ गरु
रामसे कह उनसे मधुरवाणीसे बोले ॥ ५५ ॥ हे सखे ! अब मैं
आज्ञा पा अपने स्थानको जाना चाहता हूं ॥ ५६ ॥

हे राघव ! अभी मेरे सखित्व जाननेका कौतूहल न करें जब
सब कर्म कर चुकोगे तब इसे जानोगे ॥ ५७ ॥ आप लङ्काका विध्वं
तथा रावणको मार बहुत जल्दी सीताको पावोगे ॥ ५८ ॥ गरुड राम
कह और दोनोंको नीरोग कर ॥ ५९ ॥ रामकी प्रदक्षिणा कर
मार्गसे बडे वेगसे चले गये ॥ ६० ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नीरुजौ राघवौ दृष्ट्वा ततो वानरयूथपाः ।
सिंहनादं तदा नेदुर्लाङ्गूलं दुधुवुश्च ते ६१
ततो भेरीः समाजघ्नुर्मृदङ्गांश्चाप्यवादयन् ।
दध्मुः शङ्खान्संप्रहृष्टाः क्ष्वेलन्त्यपि यथापुरम् ६२
अपरे स्फोट्य विक्रान्ता वानरा नगयोधिनः ।
द्रुमानुत्पाट्य विविधांस्तस्थुः शतसहस्रशः ६३
विसृजन्तो महानादांस्त्रासयन्तो निशाचरान् ।
लङ्काद्वाराण्युपाजग्मुर्युद्धकामाः प्लवङ्गमाः ६४
तेषां सुभीमस्तुमुलो निनादो बभूव शाखामृगयूथपानाम् ।
क्षये निदाघस्य यथा घनानां नादः सुभीमो नदतां निशीथे ६५
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे पञ्चाशः सर्गः॥५०॥[१९००]

॥ एकपंचाशः सर्गः ॥

तेषां तु तुमुलं शब्दं वानराणां महौजसाम् ।
नर्दतां राक्षसैः सार्धं तदा शुश्राव रावणः १
स्निग्धगम्भीरनिर्घोषं श्रुत्वा तं निनदं भृशम् ।
सचिवानां ततस्तेषां मध्ये वचनमब्रवीत् २

राम लक्ष्मणको रोगरहित देख वानर नाद करने व पूंछ फटकारने लगे ॥ ६१ ॥ सबोंने भेरी मृदंग बजाये बड़े आनन्दसें शङ्ख भी बजाने लगे ॥ ६२ ॥ नाना प्रकारके वृक्ष उखाड हाथोंमें ले खडे हो गये ॥ ६३ ॥ नाद करते राक्षसोंको डरवाते युद्धकी आकांक्षासे लङ्काके फाटकोंपर जा खडे ॥ ६४ ॥ ग्रीष्म ऋतु समाप्त हो जानेपर मध्यरात्री गर्जना करनेवाले मेघोंका नाद जिस प्रकार अति भयंकर होता है तद्वत् उन वानराधिपतियोंका अतिभीषण तुमुल ध्वनि होने लगा ॥ ६५ ॥

॥ यहाँ ५० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

उन गर्जते वानरोंका घोर नाद राक्षसों समेत रावणने सुना ॥ १ ॥ उस नादको सुन मन्त्रियोंके बीचमें बैठा रावण बोला ॥ २ ॥ यह जो गर्जते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यथाऽसौ संप्रहृष्टानां वानराणामुपस्थितः ।
बहूनां सुमहान्नादो मेघानामिव गर्जताम् ३
सुव्यक्तं महती प्रीतिरेतेषां नात्र संशयः ।
तथा हि विपुलैर्नादैश्चुक्षुभे लवणार्णवः ४
तौ तु बद्धौ शरैस्तीक्ष्णैर्भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।
अयं च सुमहान्नादः शङ्कां जनयतीव मे ५
एवं च वचनं चोक्त्वा मंत्रिणो राक्षसेश्वरः ।
उवाच नैऋतांस्तत्र समीपपरिवर्तिनः ६
ज्ञायतां तूर्णमेतेषां सर्वेषां च वनौकसाम् ।
शोककाले समुत्पन्ने हर्षकारणमुत्थितम् ७
तथोक्तास्ते सुसंभ्रान्ताः प्राकारमधिरुह्य च ।
ददृशुः पालितां सेनां सुग्रीवेण महात्मना ८
तौ च मुक्तौ सुघोरेण शरबन्धेन राघवौ ।
समुत्थितौ महाभागौ विषेदुः सर्वराक्षसाः ९
संत्रस्तहृदयाः सर्वे प्राकारादवरुह्य ते ।
विवर्णा राक्षसा घोरा राक्षसेन्द्रमुपस्थिताः १०
तदप्रियं दीनमुखा रावणस्य च राक्षसाः ।
कृत्स्नं निवेदयामासुर्यथावद्वाक्यकोविदाः ११
यौ ताविन्द्रजिता युद्धे भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।

वानरोंका शब्द सुनाई देता है ॥ ३ ॥ इसमें कुछ शक नहीं कि इन वा[नरों]
को बडा आनन्द हो रहा है ॥ ४ ॥ राम लक्ष्मण तो बाणोंसे बँ[धे]
हैं फिर वानरगण ऐसा घोर नाद क्यों करते हैं ॥ ५ ॥ रावण एवं म[ंत्रियों]
से कह समीपस्थ राक्षसोंसे बोला ॥ ६ ॥ कि तुम वानरोंके हर्षका [कारण]
वहां जा जल्दी जान आओ ॥ ७ ॥ ऐसी आज्ञा पा मंत्रियोंने नगर [के]
स्थित हो वानरोंकी बडी सेना देखी ॥ ८ ॥

बाण बन्धनसे छूटे दोनों भाइयोंको खडे देख राक्षसोंको बडा [दुःख]
हुआ ॥ ९ ॥ और भयभीत हो प्राचीरसे उत्तर वे रावणके पास आये ॥ [१०॥]
राक्षसोंने रावणको अप्रिय वचन यथावत् कहा ॥ ११ ॥ कि जिन

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

निबद्धौ शरबन्धेन निष्प्रकम्पभुजौ कृतौ १२
विमुक्तौ शरबन्धेन दृश्येते तौ रणाजिरे ।
पाशानिव गजौ छित्त्वा गजेन्द्रसमविक्रमौ १३
तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां राक्षसेन्द्रो महाबलः ।
चिन्तारोषसमाक्रान्तो विवर्णवदनोऽभवत् १४
घोरैर्दत्तवरैर्बद्धौ शरैराशीविषोपमैः ।
अमोघैः सूर्यसंकाशैः प्रमथ्येन्द्रजिता युधि १५
तदस्त्रबन्धमासाद्य यदि मुक्तौ रिपू मम ।
संशयस्थमिदं सर्वमनुपश्याम्यहं बलम् १६
निष्फलाः खलु संवृत्ताः शराः पावकतेजसः ।
आदत्तं यैस्तु सङ्ग्रामे रिपूणां जीवितं मम १७
एवमुक्त्वा तु संक्रुद्धो निःश्वसन्नुरगो यथा ।
अब्रवीद्रक्षसां मध्ये धूम्राक्षं नाम राक्षसम् १८
बलेन महता युक्तो राक्षसैर्भीमविक्रमः ।
त्वं वधायाशु निर्याहि रामस्य सह वानरैः १९
एवमुक्तस्तु धूम्राक्षो राक्षसेन्द्रेण धीमता ।
परिक्रम्य ततः शीघ्रं निर्जगाम नृपालयात् २०
अभिनिष्क्रम्य तद्द्वारं बलाध्यक्षमुवाच ह ।
त्वरयस्व बलं शीघ्रं किं चिरेण युयुत्सतः २१

मणको इन्द्रजित्ने युद्धमें बाणोंसे बांधा था ॥ १२ ॥ वे दोनों युद्ध भूमिमें समय शरबन्धनसे छूटे दीखते हैं ॥ १३ ॥ ऐसा वचन सुन राक्षसेन्द्र न्ता और क्रोधसे मुख विषण्ण हो गया ॥ १४ ॥ वह बोला कि इन्द्रजित्ने मों विषधर सर्पोंके समान बाणोंसे बांधा था ॥ १५ ॥ ऐसे शरबन्धनसे शत्रु छूट गये इससे अब उनके बलमें सन्देह है ॥ १६ ॥
अग्नि तेजवत् बाण विफल हो गए ॥ १७ ॥ यह कह श्वास ले धूम्राक्ष क राक्षससे बोला ॥ १८ ॥ कि तुम बडी भारी सेना ले वानरों समेत को मार डालनेके लिये शीघ्र प्रस्थान करो ॥ १९ ॥ ऐसी आज्ञा पा की प्रदक्षिणा कर धूम्राक्ष शीघ्र वहांसे चला ॥ २० ॥ और बाहर सेनाध्यक्षसे बोला कि सेना शीघ्र तैयार करो ॥२१॥ धूम्राक्षके वचन

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

धूम्राक्षवचनं श्रुत्वा बलाध्यक्षो बलानुगः।
बलमुद्योजयामास रावणस्याज्ञया भृशम् २२
ते बद्धघण्टा बलिनो घोररूपा निशाचराः।
विनद्यमानाः संहृष्टा धूम्राक्षं पर्यवारयन् २३
विविधायुधहस्ताश्च शूलमुद्गरपाणयः।
गदाभिः पट्टिशैर्दण्डैरायसैर्मुसलैरपि २४
परिघैर्भिन्दिपालैश्च भल्लैः पाशैः परश्वधैः।
निर्ययू राक्षसा घोरा नर्दन्तो जलदा यथा २५
रथैः कवचिनस्त्वन्ये ध्वजैश्च समलङ्कृतैः।
सुवर्णजालविहितैः खरैश्च विविधाननैः २६
हयैः परमशीघ्रैश्च गजैश्चैव महोत्कटैः।
निर्ययुर्नैर्ऋतव्याघ्रा व्याघ्रा इव दुरासदाः २७
मृगसिंहमुखैर्युक्तं खरैः कनकभूषितैः।
आरुरोह रथं दिव्यं धूम्राक्षः खरनिःस्वनः २८
स निर्यातो महावीर्यो धूम्राक्षो राक्षसैर्वृतः।
हसन्वै पश्चिमद्वाराद्धनूमान्यत्र तिष्ठति २९
रथप्रवरमास्थाय खरयुक्तं खरस्वनम्।
प्रयान्तं तु महाघोरं राक्षसं भीमदर्शनम् ३०

सुन सेनाध्यक्षने सेनाको जानेके लिये आज्ञा दी ॥ २२ ॥ घोर
हर्षित हो नाद कर धूम्र राक्षसको घेर आ खडे हुये ॥ २३ ॥ नाना
व शूल मुद्गर गदा पटा दण्ड आदि लिये ॥ २४ ॥ परिघ भिन्दपाल
पाश फरसा आदि हथियार ग्रहण कर राक्षस गर्जते चले ॥ २५ ॥

कवचादि धारे पताकाओंसे भूषित रथोंपर कोई विविध मुखवाले
पर कोई घोडोंपर और कोई हाथियोंपर चढ राक्षस व्याघ्रके
चले ॥ २६–२७ ॥ सुवर्ण भूषित गदहे जुते रथपर गदहेके तुल्य
करता धूम्रा चढा ॥ २८ ॥ महावीर्य धूम्राक्ष राक्षसोंसे घिरा पश्चिम
निकला जिसपर हनूमान् स्थित था ॥ २९ ॥

गदहे जुते उत्तम रथपर सवार हो जाते राक्षसको ॥ ३० ॥ क्रूर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्तरिक्षगताः क्रूराः शकुनाः प्रत्यषेधयन् ।
रथशीर्षे महाभीमो गृध्रश्च निपपात ह ३१
ध्वजाग्रे ग्रथिताश्चैव निपेतुः कुणपाशनाः ।
रुधिरार्द्रो महाञ्श्वेतः कबन्धः पतितो भुवि ३२
विस्वरं चोत्सृजन्नादान्धूम्राक्षस्य निपातितः ।
ववर्ष रुधिरं देवः संचचाल च मेदिनी ३३
प्रतिलोमं ववौ वायुर्निर्घातसमनिःस्वनः ।
तिमिरौघावृतास्तत्र दिशश्च न चकाशिरे ३४
स तूत्पातांस्ततो दृष्ट्वा राक्षसानां भयावहान् ।
प्रादुर्भूतान्सुघोरांश्च धूम्राक्षो व्यथितोऽभवत् ३५
मुमुहू राक्षसाः सर्वे धूम्राक्षस्य पुरःसराः ३६
ततः सुभीमो बहुभिर्निशाचरैर्वृतोऽभिनिष्क्रम्य रणोत्सुको बली ।
ददर्श तां राघवबाहुपालितां महौघकल्पां बहुवानरीं चमूम् ३७
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकांडे एकपंचाशः सर्गः ॥५१॥ [१९३७]

॥ द्विपंचाशः सर्गः ॥

धूम्राक्षं प्रेक्ष्य निर्यान्तं राक्षसं भीमविक्रमम् ।
विनेदुर्वानराः सर्वे प्रहृष्टा युद्धकाङ्क्षिणः १

रोकने लगे रथके ऊपर एक बडा गिद्ध ऊपरसे गिरा ॥ ३१ ॥ पताकाके ऊपर मांसभक्षी पक्षी कूदे, आगे रुधिरसे भीगा श्वेत रंग कबन्ध गिरा ॥३२॥ शब्द करता हुआ कबन्ध धूम्राक्षके आगे गिरा रक्तकी वर्षा होने लगी वसुन्धरा कांप उठी ॥ ३३ ॥ शब्द करता पवन सामने बहने लगा, दिशाओंमें अन्धेरा छा गया ॥ ३४ ॥ भयकारी घोर उत्पात देख धूम्राक्ष दुःखी हुआ ॥ ३५ ॥ और उससे आगे चलनेवाले राक्षस मूर्छित हो गये ॥ ३६ ॥ तथापि संग्रामार्थ उत्सुक वह अतिबलाढ्य एवं भयङ्कर धूम्राक्ष राक्षस साथमें लेकर बाहर आया और असंख्य वानर युक्त उस सागर जैसी सेनाको-जो राम बाहुसे रक्षित थी उसने देखी ॥ ३७ ॥

॥ यहाँ ५१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

धूम्राक्षको आते देख युद्धकांक्षी वानर नाद करने लगे ॥ १ ॥ वानरों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तेषां सुतुमुलं युद्धं संजज्ञे कपिरक्षसाम् ।
अन्योऽन्यं पादपैर्घोरैर्निघ्नतां शूलमुद्गरैः २
राक्षसैर्वानरा घोरा विनिकृत्ताः समन्ततः ।
वानरै राक्षसाश्चापि द्रुमभूमिसमीकृताः ३
राक्षसास्त्वभिसंक्रुद्धा वानरान्निशितैः शरैः ।
विव्यधुर्घोरसंकाशैः कङ्कपत्रैरजिह्मगैः ४
ते गदाभिश्च भीमाभिः पट्टिशैः कूटमुद्गरैः ।
घोरैश्च परिघैश्चित्रैस्त्रिशूलैश्चापि संश्रितैः ५
विदार्यमाणा रक्षोभिर्वानरास्ते महाबलाः ।
अमर्षजनितोद्धर्षाश्चक्रुः कर्माण्यभीतवत् ६
शरनिर्भिन्नगात्रास्ते शूलनिर्भिन्नदेहिनः ।
जगृहुस्ते द्रुमांस्तत्र शिलाश्च हरियूथपाः ७
ते भीमवेगा हरयो नर्दमानास्ततस्ततः ।
ममन्थू राक्षसान्वीरान्नामानि च बभाषिरे ८
तद्बभूवाद्भुतं घोरं युद्धं वानररक्षसाम् ।
शिलाभिर्विविधाभिश्च बहुशाखैश्च पादपैः ९
राक्षसा मथिताः केचिद्वानरैर्जितकाशिभिः ।
प्रवेमू रुधिरं केचिन्मुखै रुधिरभोजनाः १०

और राक्षसोंका घोर युद्ध होने लगा ॥ २ ॥ राक्षसोंने बहुतसे वान
काट डाला और वानरोंने पादपोंसे अनेक निशाचरोंको पीस डाला ॥
राक्षसोंने तीक्ष्ण बाणोंसे वानरोंको मारा ॥ ४ ॥ गदाओं, शूल, पटा
त्रिशूलोंसे ॥ ५ ॥ विदारित होना वानर न सह सके और हर्षित हो
प्रवृत्त हुये ॥ ६ ॥

अङ्ग कटने व देह बिंधनेपर वानरोंने बडे बडे वृक्ष और पत्
शिलायें उखाड लीं ॥ ७ ॥ और गर्ज गर्ज राक्षसोंको मथने लगे ॥
विविध शिलाओं और अनेक वृक्षोंसे वानरों और राक्षसोंका बड
संग्राम हुआ ॥ ९ ॥ कोई राक्षस वानरोंसे मथित हुए किसी राक्षसके
रक्त गिरने लगा, किसीकी पसुलियां टूट गईं, कोई वृक्षोंसे मारा गया,

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पार्श्वेषु दारिताः केचित्केचिद्राशीकृता द्रुमैः।
शिलाभिश्चूर्णिताः केचित्केचिद्दन्तैर्विदारिताः ११
ध्वजैर्विमथितैर्भग्नैः खड्गैश्च विनिपातितैः।
रथैर्विध्वंसिताः केचिद्व्यथिता रजनीचराः १२
गजेन्द्रैः पर्वताकारैः पर्वताग्रैर्वनौकसाम्।
मथितैर्वाजिभिः कीर्णं सारोहैर्वसुधातलम् १३
वानरैर्भीमविक्रान्तैराप्लुत्योत्प्लुत्य वेगितैः।
राक्षसाः करजैस्तीक्ष्णैर्मुखेषु विनिदारिताः १४
विषण्णवदना भूयो विप्रकीर्णशिरोरुहाः।
मूढाः शोणितगन्धेन निपेतुर्धरणीतले १५
अन्ये तु परमक्रुद्धा राक्षसा भीमविक्रमाः।
तलैरेवाभिधावन्ति वज्रस्पर्शसमैर्हरीन् १६
वानरैः पातयन्तस्ते वेगिता वेगवत्तरैः।
मुष्टिभिश्चरणैर्दन्तैः पादपैश्चावपोथिताः १७
सैन्यं तु विद्रुतं दृष्ट्वा धूम्राक्षो राक्षसर्षभः।
रोषेण कदनं चक्रे वानराणां युयुत्सताम् १८
प्रासैः प्रमथिताः केचिद्वानराः शोणितस्रवाः।
मुद्गरैराहताः केचित्पतिता धरणीतले १९

शिलाओंसे पीस डाला गया तथा कोई दांतोंसे फाड डाले गये ॥ १०-११ ॥ किसीकी ध्वजा, किसीके खड्ग, तथा किसीके रथ विध्वंस हो गये ॥ १२ ॥ वानरोंकी चलाई हुई शिलाओंसे मरे हाथियों, घोडों और उनके सवारोंसे युद्धभूमि भर गई ॥ १३ ॥ वानरोंने उछल उछल अपने नखोंसे राक्षसोंके मुख नोच लिये ॥ १४ ॥ अतिव्याकुल हो रुधिर बहते हुये राक्षस भूमिपर गिर पडे ॥ १५ ॥ अवशिष्ट राक्षस क्रोध कर लातोंसे ही वानरोंको मारने लगे ॥ १६ ॥ अनेक राक्षस वानरोंकी लात घूंसों आदिसे मारे गये ॥ १७ ॥ अपनी सेना भागती देख धूम्राक्ष क्रोधित हो वानरोंको मारने लगा ॥ १८ ॥ कोई वानर बाणोंके लगनेसे गिर पडे, कोई कोई मुदगरोंके लगनेसे मर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परिघैर्मथिताः केचिद्भिन्दिपालैश्च दारिताः।
पट्टिशैर्मथिताः केचिद्विह्वलन्तो गतासवः १०
केचिद्विनिहता भूमौ रुधिरार्द्रा वनौकसः।
केचिद्विद्राविता नष्टाः संक्रुद्धै राक्षसैर्युधि ११
विभिन्नहृदयाः केचिदेकपार्श्वेन शायिताः।
विदारितास्त्रिशूलैश्च केचिदान्त्रैर्विनिःसृताः १२
तत्सुभीमं महद्युद्धं हरिराक्षससंकुलम्।
प्रबभौ शस्त्रबहुलं शिलापादपसंकुलम् १३
धनुर्ज्यातन्त्रिमधुरं हिक्कातालसमन्वितम्।
मन्दस्तनितगीतं तद्युद्धगान्धर्वमाबभौ १४
धूम्राक्षस्तु धनुष्पाणिर्वानराणमूर्धनि।
हसन्विद्रावयामास दिशस्ताञ्छरवृष्टिभिः १५
धूम्राक्षेणार्दितं सैन्यं व्यथितं प्रेक्ष्य मारुतिः।
अभ्यवर्तत संक्रुद्धः प्रगृह्य विपुलां शिलाम् २६
क्रोधाद्द्विगुणताम्राक्षः पितुस्तुल्यपराक्रमः।
शिलां तां पातयामास धूम्राक्षस्य रथं प्रति २७

गये ॥ १९ ॥ कोई कोई परिघसे कोई, भिंदिपाल, कोई पटोंके ... त्रिह्वल हो गये ॥ २० ॥

कोई कोई वानर रुधिरसे भीगे मरकर गिर पडे कोई राक्षसोंसे ... हो भाग गये ॥ २१ ॥ किसीकी पसुली टूट गई, किसीके पेटमें ... लगे थे ॥ २२ ॥ एवं राक्षसों और वानरोंका बडा घोर युद्ध हुआ ॥ ... वह युद्ध गन्धर्व विद्याके तुल्य शोभा देने लगा क्योंकि धनुषकी प्रत्यञ्चा... शब्द वीणाके समान आहत योधाओंकी हुचकी तालके तुल्य वीरोंका ... गर्जन गीतके तुल्य था ॥ २४ ॥ धूम्राक्षने बाणोंकी वर्षासे सब वानरों... इधर उधर भगा दिया ॥ २५ ॥ उस राक्षस द्वारा व्यथित वानरसेना ... हनुमान एक भारी शिला ग्रहण कर उसके आगे दौडा ॥ २६ ॥

क्रोधसे लाल नेत्र किये पराक्रमी हनुमानने वह शिला धूम्राक्षके ...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आपतन्तीं शिलां दृष्ट्वा गदामुद्यम्य संभ्रमात्।
रथादाप्लुत्य वेगेन वसुधायां व्यतिष्ठत २८
सा प्रमथ्य रथं तस्य निपपात शिला भुवि।
सचक्रकूबरमुखं सध्वजं सशरासनम् २९
स त्यक्त्वा तु रथं तस्य हनूमान्मारुतात्मजः।
रक्षसां कदनं चक्रे सस्कन्धविटपैर्द्रुमैः ३०
विभिन्नशिरसो भूत्वा राक्षसा रुधिरोक्षिताः।
द्रुमैः प्रमथिताश्चान्ये निपेतुर्धरणीतले ३१
विद्राव्य राक्षसं सैन्यं हनूमान्मारुतात्मजः।
गिरेः शिखरमादाय धूम्राक्षमभिदुद्रुवे ३२
तमापतन्तं धूम्राक्षो गदामुद्यम्य वीर्यवान्।
विनर्दमानः सहसा हनूमन्तमभिद्रवत् ३३
तस्य क्रुद्धस्य रोषेण गदां तां बहुकण्टकाम्।
पातयामास धूम्राक्षो मस्तकेऽथ हनूमतः ३४
ताडितः स तया तत्र गदया भीमवेगया।
स कपिर्मारुतबलस्तं प्रहारमचिन्तयन्॥
धूम्राक्षस्य शिरो मध्ये गिरिशृङ्गमपातयत् ३५
स विस्फारितसर्वाङ्गो गिरिशृङ्गेण ताडितः।

पर मारी ॥ २७ ॥ आती हुई शिला देख धूम्राक्ष रथसे कूद अलग खडा
गया ॥ २८ ॥ वह शिला रथको चूर्ण कर भूमिपर गिर पडी ॥ २९ ॥
नुमान रथको छोड वृक्षोंका नाश करने लगा ॥ ३० ॥ पादपोंकी चोटसे
क्षसोंके शिर फूट गये ॥ ३१ ॥ राक्षसोंको भगा हनुमान गिरिशिखर
ण कर धूम्राक्षके आगे दौडा ॥ ३२ ॥ हनुमानको आता देख धूम्राक्ष
उठा गर्जता हुआ हनुमानकी ओर दौडा ॥ ३३ ॥ और क्रोधित हो
नुमानके मस्तकमें उस गदाको मारा ॥ ३४ ॥ वह गदा हनुमानके मस्तकमें
पर हनुमानने उस चोटकी ओर कुछ ध्यान न दिया और उसने
म्राक्षके शिरपर मारा ॥ ३५ ॥ जिससे उसके सब अंग चूर्ण हो गये और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पपात सहसा भूमौ विकीर्ण इव पर्वतः ३६
धूम्राक्षं निहतं दृष्ट्वा हतशेषा निशाचराः।
त्रस्ताः प्रविविशुर्लङ्कां वध्यमानाः प्लवङ्गमैः ३७
स तु पवनसुतो निहत्य शत्रून्क्षतजवहाः सरितश्च संविकीर्य।
रिपुवधजनितश्रमो महात्मा मुदमगमत्कपिभिः सुपूज्यमानः ।
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे द्विपञ्चाशः सर्गः ॥५२॥ [११

॥ त्रिपञ्चाशः सर्गः ॥

धूम्राक्षं निहतं श्रुत्वा रावणो राक्षसेश्वरः।
क्रोधेन महताविष्टो निःश्वसन्नुरगो यथा १
दीर्घमुष्णं विनिःश्वस्य क्रोधेन कलुषीकृतः।
अब्रवीद्राक्षसं क्रूरं वज्रदंष्ट्रं महाबलम् २
गच्छ त्वं वीर निर्याहि राक्षसैः परिवारितः।
जहि दाशरथिं रामं सुग्रीवं वानरैः सह ३
तथेत्युक्त्वा द्रुततरं मायावी राक्षसेश्वरः।
निर्जगाम बलैः सार्धं बहुभिः परिवारितः ४
नागैरश्वैः खरैरुष्ट्रैः संयुक्तः सुसमाहितः।

वह पृथ्वीपर गिर पडा ॥ ३६ ॥ धूम्राक्षको मरा देख शेष राक्षस लं
भागे ॥ ३७ ॥ और इस प्रकार शत्रु वध करके संग्राममें रक्तकी
बहानेपर शत्रुके वधके कारण श्रमित हुए उस महात्मा हनुमानकी
वानर करने लगे तब वह आनन्दित हुआ ॥ ३८ ॥

॥ यहां ५२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

धूम्राक्षको मरा सुन रावण क्रोधसे सर्पवत् सांस लेने लगा ॥ १ ॥ और क्रो
व्यथित हो वह वज्रदंष्ट्रसे बोला ॥२॥ राक्षसोंको ले तुम शीघ्र जा राम व
सहित सुग्रीवको मारो ॥ ३ ॥ बहुत अच्छा कह वज्रदंष्ट्र राक्षसोंको सं
चला ॥ ४ ॥ उसकी सेना हाथी, घोडे, गदहे, ऊंट ध्वजादिकसे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पताकाध्वजचित्रैश्च बहुभिः समलंकृतः ५
ततो विचित्रकेयूरमुकुटेन विभूषितः।
तनुत्रं च समावृत्य सधनुर्निर्ययौ द्रुतम् ६
पताकालंकृतं दीप्तं तप्तकाञ्चनभूषितम्।
रथं प्रदक्षिणं कृत्वा समारोहच्चमूपतिः ७
ऋष्टिभिस्तोमरैश्चित्रैः श्लक्ष्णैश्च मुसलैरपि।
भिन्दिपालैश्च चापैश्च शक्तिभिः पट्टिशैरपि ८
खड्गैश्चक्रैर्गदाभिश्च निशितैश्च परश्वधैः।
पदातयश्च निर्यान्ति विविधाः शस्त्रपाणयः ९
विचित्रवाससः सर्वे दीप्ता राक्षसपुङ्गवाः।
गजा मदोत्कटाः शूराश्चलन्त इव पर्वता १०
ते युद्धकुशला रूढास्तोमराङ्कुशपाणिभिः।
अन्ये लक्षणसंयुक्ताः शूरारूढा महाबलाः ११
तद्राक्षसबलं सर्वं विप्रस्थितमशोभत।
प्रावृट्काले यथा मेघा नर्दमानाः सविद्युतः १२
निःसृता दक्षिणद्वाराद्ङ्गदो यत्र यूथपः।
तेषां निष्क्रममाणानामशुभं समजायत १३
आकाशाद्विघनात्तीव्रादुल्मुकान्यपतंस्तदा।
वमन्तः पावकज्वालाः शिवा घोरा ववाशिरे १४

॥ ५ ॥ वह स्वयं धनुषबाण लिये बडी जल्दीसे युद्धार्थ चला ॥ ६ ॥ पताका व चमकते तप्त सुवर्णसे भूषित ॥ ७ ॥ ऋष्टि तोमर मूसल भिन्दिपाल धनुष सांग पटा ॥ ८ ॥ आदिसे युक्त रथपर चढ वज्रदंष्ट्र चला और राक्षस अस्त्र शस्त्र ले पैदल चले ॥ ९ ॥ व बडे मतवाले शेर, हाथी भी चले जो पहाडके तुल्य थे ॥ १० ॥ इनके सवार भाला अंकुशादि हाथोंमें धारण किये थे तथा और वे महाबली शूर वीर थे ॥ ११ ॥ यह राक्षससेना वर्षाके बिजुली सहित गर्जते बादलोंके समान शोभित हुई ॥ १२ ॥ वह सेना दक्षिणके द्वारसे जिसपर अङ्गदथा निकली उस समय बहुत अशकुन हुए ॥ १३ ॥ आकाशसे उल्कापात हुआ, शृगाल दारुण शब्द करने लगे ॥ १४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

व्याहरन्त मृगा घोरा रक्षसां निधनं तदा।
समापतन्तो योधास्तु प्रास्खलंस्तत्र दारुणम् १५
एतानौत्पातिकान्दृष्ट्वा वज्रदंष्ट्रो महाबलः।
धैर्यमालम्ब्य तेजस्वी निर्जगाम रणोत्सुकः १६
तांस्तु विद्रवतो दृष्ट्वा वानरा जितकाशिनः।
प्रणेदुःसुमहानादान्दिशः शब्देन पूरयन् १७
ततः प्रवृत्तं तुमुलं हरीणां राक्षसैः सह।
घोराणां भीमरूपाणामन्योऽन्यवधकाङ्क्षिणाम् १८
निष्पतन्तो महोत्साहा भिन्नदेहाशिरोधराः।
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गान्यपतन्धरणीतले १९
केचिदन्योन्यमासाद्य शूराः परिघबाहवः।
चिक्षिपुर्विविधाञ्शस्त्रान्समरेष्वनिवर्तिनः २०
द्रुमाणां च शिलानां च शस्त्राणां चापि निःस्वनः।
श्रूयते सुमहांस्तत्र घोरो हृदयभेदनः २१
रथनेमिस्वनस्तत्र धनुषश्चापि घोरवत्।
शङ्खभेरीमृदङ्गानां बभूव तुमुलः स्वनः २२
केचिदस्त्राणि संत्यज्य बाहुयुद्धमकुर्वत।
तलैश्च चरणैश्चापि मुष्टिभिश्च द्रुमैरपि २३

मृगगण राक्षसोंका मरण बताने लगे॥ १५॥ वज्रदंष्ट्र अशकुन ... भी धैर्य धोर संग्रामकी इच्छासे चला ही गया ॥१६॥ राक्षसोंको आते ... वानरोंने बडा नाद किया ॥ १७ ॥ तदनु परस्पर वानरों और राक्ष... भयंकर संग्राम हुआ ॥ १८ ॥ अङ्ग कटनेपर भी वे अति उत्साहसे ... और पृथ्वीपर गिर गिर पडते थे ॥ १९ ॥ कोई कोई लम्बी बाहोंसे ... दूसरेको लिपट जाते थे ॥ २० ॥ वृक्षों, शिलाओं और शस्त्रोंका घोर ... सुनाई दे रहा था ॥ २१ ॥

रथोंके पहियोंका धनुषके टंकोरका शंख, तुरीआदिकोंका बडा ... हुआ ॥ २२ ॥ कोई मल्लयुद्ध करने लगे, थप्पड लातों घूसोंसे ...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जानुभिश्च हताः केचिद्भग्नदेहाश्च राक्षसाः ।
शिलाभिश्चूर्णिताः केचिद्वानरैर्युद्धदुर्मदैः २४

वज्रदंष्ट्रोऽथ तं दृष्ट्वा रणे वित्रासयन्हरीन् ।
चचार लोकसंहारे पाशहस्त इवान्तकः २५

बलवन्तोऽस्त्रविदुषो नानाप्रहरणा रणे ।
जघ्नुर्वानरसैन्यानि राक्षसाः क्रोधमूर्छिताः २६

जघ्ने तान्राक्षसान्सर्वान्धृष्टो वायुसुतो रणे ।
क्रोधेन द्विगुणाविष्टः संवर्तक इवानलः २७

तान्राक्षसगणान्सर्वान्वृक्षमुद्यम्य वीर्यवान् ।
अङ्गदः क्रोधताम्राक्षः सिंहः क्षुद्रमृगानिव २८

चकार कदनं घोरं शक्रतुल्यपराक्रमः ।
अङ्गदाभिहतास्तत्र राक्षसा भीमविक्रमाः २९

विभिन्नशिरसः पेतुर्निकृत्ता इव पादपाः ।
रथैश्चित्रैर्ध्वजैरश्वैः शरीरैर्हरिरक्षसाम् ३०

रुधिरौघेण संछन्ना भूमिर्भयकरी तदा ।
हारकेयूरवस्त्रैश्च छत्रैश्च समलंकृता ३१

...गये ॥ २३ ॥ कोई राक्षस लातोंसे मारे गये, उनके शरीर भङ्ग हो गये, ...वानरोंने किसी किसी राक्षसको शिलाओंसे पीस डाला ॥ २४ ॥ यह देख ...वज्रदंष्ट्र वानरोंको डरपाने लगा और यमराजके तुल्य वानरोंकी ओर ...गा ॥ २५ ॥ तब राक्षसगण क्रोधयुक्त हो वानर सेनाको मारने लगे ॥२६॥ ...व अङ्गद दूना क्रोध कर मारने लगे ॥ २७ ॥ उन राक्षसोंको बड़े पेड़ोंसे ...धित अङ्गद मारने लगे ॥ २८ ॥

पराक्रमी अङ्गदने राक्षसोंको काट डाला राक्षसोंके शिर ॥ २९ ॥ फट ...र और वे भूमिमें गिर पडे राक्षसोंके शरीरोंसे ॥ ३० ॥ व रुधिरसे पर्ण ...नेसे रणभूमि भयंकर हो गई हार वजुल्ला वस्त्र मुकुट छत्रोंसे ॥ ३१ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भूमिर्भाति रणे तत्र शारदीव यथा निशा।
अङ्गदस्य च वेगेन तद्राक्षसबलं महत्।
प्राकम्पत तदा तत्र पवनेनाम्बुदो यथा ३२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे त्रिपंचाशःसर्गः॥५३॥[२..

॥ चतुःपंचाशः सर्गः ॥

स्वबलस्य च घातेन अङ्गदस्य बलेन च।
राक्षसः क्रोधमाविष्टो वज्रदंष्ट्रो महाबलः १
विस्फार्य च धनुर्घोरं शक्राशनिसमप्रभम्।
वानराणामनीकानि प्राकिरच्छरवृष्टिभिः २
राक्षसाश्चापि मुख्यास्ते रथैश्च समवस्थिताः।
नानाप्रहरणाः शूराः प्रायुध्यन्त तदा रणे ३
वानराणां च शूरास्तु ते सर्वे प्लवगर्षभाः।
अयुध्यन्त शिलाहस्ताः समवेताः समन्ततः ४
तत्रायुधसहस्राणि तस्मिन्नायोधने भृशम्।
राक्षसाः कपिमुख्येषु पातयाञ्चक्रिरे तदा ५
वानराश्चैव रक्षःसु गिरिवृक्षान्महाशिलाः।
प्रवीराः पातयामासुर्मत्तवारणसन्निभाः ६
शूराणां युध्यमानानां समरेष्वनिवर्तिनाम्।
तद्राक्षसगणानां च सुयुद्धं समवर्तत ७

भूषित समरभूमि शरदऋतुकी निशावत् शोभा देने लगी अङ्गदके ... राक्षसी सेना कांपने लगी ॥ ३२ ॥

॥ यहाँ ५३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

अङ्गद द्वारा राक्षससेनाका नाश होनेपर वज्रदंष्ट्रने बडा क्रोध किया और धनुष्को चढा वानर सेनापर बाण वर्षा करने लगा ॥ २ ॥ ... आयुध धारे राक्षस पुङ्गव रथोंपर चढ युद्ध करने लगे ॥ ३ ॥ वानर ... शिला ग्रहण कर युद्ध करने लगे ॥ ४ ॥ उस युद्धमें वानरोंपर राक्ष... असंख्य आयुध चलाये ॥ ५ ॥ वानरोंने भी राक्षसोंके ऊपर वृक्ष ... शिला चलाई ॥ ६ ॥ एवं शूर राक्षसोंका युद्ध हुआ ॥ ७ ॥ किसीके

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अभग्नशिरसः केचिच्छिन्नैः पादैश्च बाहुभिः ।
शस्त्रैरर्दितदेहास्तु रुधिरेण समुक्षिताः　८
हरयो राक्षसाश्चैव शेरते गां समाश्रिताः ।
कङ्कगृध्रबलाढ्याश्च गोमायुकुलसंकुलाः ॥
कबन्धानि समुत्पेतुर्भीरूणां भीषणानि वै　९
भुजपाणिशिरश्छिन्नाश्छिन्नकायाश्च भूतले ।
वानरा राक्षसाश्चापि निपेतुस्तत्र भूतले　१०
ततो वानरसैन्येन हन्यमानं निशाचरम् ।
प्राभज्यत बलं सर्वं वज्रदंष्ट्रस्य पश्यतः　११
राक्षसान्भयवित्रस्तान्हन्यमानान्प्लवङ्गमैः ।
दृष्ट्वा स रोषताम्राक्षो वज्रदंष्ट्रः प्रतापवान्　१२
प्रविवेश धनुष्पाणिस्त्रासयन्हरिवाहिनीम् ।
शरैर्विदारयामास कङ्कपत्रैरजिह्मगैः　१३
बिभेद वानरांस्तत्र सप्ताष्टौ नव पञ्च च ।
विव्याध परमक्रुद्धो वज्रदंष्ट्रः प्रतापवान्　१४
त्रस्ताः सर्वे हरिगणाः शरैः संकृत्तदेहिनः ।
अङ्गदं संप्रधावन्ति प्रजापतिमिव प्रजाः　१५
ततो हरिगणान्भग्नान्दृष्ट्वा वालिसुतस्तदा ।
क्रोधेन वज्रदंष्ट्रं तमुदीक्षन्तमुदैक्षत　१६

...सोंके हाथ पैर कट गये ॥ ८ ॥
वानर और राक्षसगण मर मर गिरने लगे कबन्ध भी पृथ्वीमें गिरने ...गे ॥ ९ ॥ वानर और राक्षस दोनों ही मरे ॥ १० ॥ तदनु वानरोंने ...क्षसोंको ऐसा मारा कि ॥ ११ ॥ राक्षस सेना भाग खडी हुई, वानरोंसे ...रे हुये राक्षसोंको देख ॥ १२ ॥ वज्रदंष्ट्रने क्रोधकर धनुष् ले युद्धमें प्रवेश ...या और बाणोंसे वानरोंको नष्ट करने लगा ॥ १३ ॥ जब वज्रदंष्ट्रने बडा ...नरोंको मारा तो ॥ १४ ॥ वानरगण बहुत घबडाये और अङ्गदके पास ...गे ॥ १५ ॥ वानरोंको नष्ट देख अङ्गदने क्रोधसे वज्रदंष्ट्रकी ओर ...खा ॥ १६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वज्रदंष्ट्रोऽङ्गदश्चोभौ योयुध्येते परस्परम्।
चेरतुः परमक्रुद्धौ हरिमत्तगजाविव १७
ततः शतसहस्रेण हरिपुत्रं महाबलम्।
जघान मर्मदेशेषु शरैरग्निशिखोपमैः १८
रुधिरोक्षितसर्वाङ्गो वालिसूनुर्महाबलः।
चिक्षेप वज्रदंष्ट्राय वृक्षं भीमपराक्रमः १९
दृष्ट्वा पतन्तं तं वृक्षमसंभ्रान्तश्च राक्षसः।
चिच्छेद बहुधा सोऽपि मथितः प्रापतद्भुवि २०
तं दृष्ट्वा वज्रदंष्ट्रस्य विक्रमं प्लवगर्षभः।
प्रगृह्य विपुलं शैलं चिक्षेप च ननाद च २१
तमापतन्तं दृष्ट्वा सरथादाप्लुत्य वीर्यवान्।
गदापाणिरसंभ्रान्तः पृथिव्यां समतिष्ठत २२
अङ्गदेन शिला क्षिप्ता गत्वा तु रणमूर्धनि।
सचक्रकूबरं साश्वं प्रममाथ रथं तदा २३
ततोऽन्यच्छिखरं गृह्य विपुलं द्रुमभूषितम्।
वज्रदंष्ट्रस्य शिरसि पातयामास वानरः २४
अभवच्छोणितोद्गारी वज्रदंष्ट्रः सुमूर्च्छितः।
मुहूर्तमभवन्मूढो गदामालिङ्ग्य निःश्वसन् २५

वज्रदंष्ट्र और अङ्गद दोनोंका परस्पर युद्ध हुआ और दोनों मद्‌मत्त हाथीके समान भिडने लगे ॥ १७ ॥ तब अङ्गदको वज्रदंष्ट्रने मर्मस्थलोंमें एक लाख बाण मारे ॥ १८ ॥ जिससे अङ्गदके शरीरसे रक्त बहने लगा तब उसने एक बडा वृक्ष वज्रदंष्ट्रके ऊपर चलाया ॥ १९ ॥ वृक्षको अपने ऊपर आता देख वज्रदंष्ट्रने उसे बाणोंसे काट डाला ॥ २० ॥ अङ्गदने यह देख बडा पर्वत उठा वज्रदंष्ट्रको मारा ॥ २१ ॥ उसको आता देख वज्रदंष्ट्र रथसे उतर गदा ले पृथ्वीपर खडा हो गया ॥ २२ ॥ अङ्गदका फेंका पर्वत रथपर गिरा जिससे रथ चूर्ण हो गया ॥ २३ ॥

तब दूसरा शिखर ले अङ्गदने वज्रदंष्ट्रके शिरपर मारा ॥ २४ ॥ उसके लगनेसे वज्रदंष्ट्रके मुखसे रक्त बहने लगा और मूर्छित हो गया ॥ २५ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

स लब्धसंज्ञो गदया वालिपुत्रमवस्थितम्।
जघान परमक्रुद्धो वक्षोदेशे निशाचरः २६
गदां त्यक्त्वा ततस्तत्र मुष्टियुद्धमकुर्वत।
अन्योऽन्यं जघ्नतुस्तत्र तावुभौ हरिराक्षसौ २७
रुधिरोद्गारिणौ तौ तु प्रहारैर्जनितश्रमौ।
बभूवतुः सुविक्रान्तावङ्गारकबुधाविव २८
ततः परमतेजस्वी अङ्गदः प्लवगर्षभः।
उत्पाट्य वृक्षं स्थितवानासीत्पुष्पफलैर्युतः २९
जग्राह चार्षभं चर्म खड्गं च विपुलं शुभम्।
किङ्किणीजालसंछन्नं चर्मणा च परिष्कृतम् ३०
चित्रांश्च रुचिरान्मार्गांश्चेरतुः कपिराक्षसौ।
जघ्नतुश्च तदान्योऽन्यं नर्दन्तौ जयकाङ्क्षिणौ ३१
व्रणैः समुत्थैः शोभेतां पुष्पिताविव किंशुकौ।
युध्यमानौ परिश्रान्तौ जानुभ्यामवनीं गतौ ३२
निमेषान्तरमात्रेण अङ्गदः कपिकुञ्जरः।
उदतिष्ठत दीप्ताक्षो दण्डाहत इवोरगः ३३
निर्मलेन सुधौतेन खड्गेनास्य महच्छिरः।
जघान वज्रदंष्ट्रस्य वालिसूनुर्महाबलः ३४

मूर्छा जगनेपर अङ्गदकी छातीमें क्रोधसे गदा मारी ॥ २६ ॥ फिर मुष्टिक युद्ध करने लगा ॥ २७ ॥ मारे प्रहारोंके दोनोंके अङ्गोंसे रक्त बहने लगा ॥ २८ ॥ फिर अङ्गद एक वृक्ष लेकर खडा हो गया ॥ २९ ॥ वज्रदंष्ट्रने भी नंगी तलवार हाथमें ली ॥ ३० ॥ तब दोनों पैतरे बदल बदल गर्ज गर्ज एक दूसरेको मारने लगा ॥ ३१ ॥

घाव लगनेसे दोनों टेसूके फूलके समान शोभा देने लगे और थककर पृथ्वीपर बैठ गये ॥ ३२ ॥ एक क्षणमें अङ्गद क्रोधसे लाल नेत्र कर उठ खडा हुआ ॥ ३३ ॥ तलवारसे अङ्गदने वज्रदंष्ट्रका शिर काट डाला ॥ ३४ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रुधिरोक्षितगात्रस्य बभूव पतितं द्विधा ।
तच्च तस्य परीताक्षं शुभं खड्गहतं शिरः ३५
वज्रदंष्ट्रं हतं दृष्ट्वा राक्षसा भयमोहिताः ।
त्रस्ता ह्यभ्यद्रवँल्लङ्कां वध्यमानाः प्लवङ्गमैः ३६
विषण्णवदना दीना ह्रिया किंचिदवाङ्मुखाः ३७
निहत्य तं वज्रधरः प्रतापवान्स वालिसूनुः कपिसैन्यमध्ये।
जगाम हर्षं महितो महाबलः सहस्रनेत्रस्त्रिदशैरिवावृतः ३८

इत्यार्षे श्रीमद्रा०वाल्मी०आदि० युद्धकाण्डे चतुःपंचाशः सर्गः ॥५४॥ [२..

॥ पंचपञ्चाशः सर्गः ॥

वज्रदंष्ट्रं हतं श्रुत्वा वालिपुत्रेण रावणः ।
बलाध्यक्षमुवाचेदं कृताञ्जलिमुपास्थितम् १
शीघ्रं निर्यान्तु दुर्धर्षा राक्षसा भीमविक्रमाः ।
अकम्पनं पुरस्कृत्य सर्वशस्त्रास्त्रकोविदम् २
एष शास्ता च गोप्ता च नेता च युधि सत्तमः ।
भूतिकामश्च मे नित्यं नित्यं च समरप्रियः ३
एष जेष्यति काकुत्स्थौ सुग्रीवं च महाबलम् ।
वानरांश्चापरान्घोरान्हनिष्यति न संशयः ४

वज्रदंष्ट्रके शरीरके टुकडे हो गये ॥ ३५ ॥ निशाचर वज्रदंष्ट्रको मरा मोहित हो सब लंकाकी ओर भाग गये ॥ ३६ ॥ और खिन्नवदन होकर लज्जासे उसने अपनी गर्दन कुछ झुका लीं ॥ ३७ ॥ अस्तु । दे वेष्टित वज्रपाणी, महाबलाढ्य इन्द्र प्रशंसित होकर जिस प्रकार हर्ष है वैसे उस वज्रदंष्ट्रके वधसे वानर सेनासें प्रशंसित अङ्गदक हुआ ॥ ३८ ॥

॥ यहाँ ५४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

वज्रदंष्ट्रको मरा सुन रावण अपने समीपस्थ सेनाध्यक्षसे बोला कि अकम्पनको आगे कर शीघ्र ही सब राक्षस युद्ध करनेको जावें अकम्पन समरसें अति उत्तम है और समरप्रिय है ॥ ३ ॥ यह राम और सुग्रीवको जीत लेगा तथा अन्य वानरोंको मारेगा ॥ ४ ॥ रा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

परिगृह्य स तामाज्ञां रावणस्य महाबलः ।
बलं संप्रेरयामास तदा लघुपराक्रमः ५
ततो नानाप्रहरणा भीमाक्षा भीमदर्शनाः ।
निष्पेतू राक्षसा मुख्या बलाध्यक्षप्रचोदिताः ६
रथमास्थाय विपुलं तप्तकाञ्चनभूषणम् ।
मेघाभो मेघवर्णश्च मेघस्वनमहास्वनः ७
राक्षसैः संवृतो घोरैस्तदा निर्यात्यकम्पनः ।
न हि कम्पयितुं शक्यः सुरैरपि महामृधे ८
अकम्पनस्ततस्तेषामादित्य इव तेजसा ।
तस्य निर्धावमानस्य संरब्धस्य युयुत्सया ९
अकस्माद्दैन्यमागच्छद्धयानां रथवाहिनाम् ।
विस्फुरन्नयनंचास्य सव्यं युद्धाभिनन्दिनः १०
विवर्णो मुखवर्णश्च गद्गदश्चाभवत्स्वनः ।
अभवत्सुदिने काले दुर्दिनं रूक्षमारुतम् ११
ऊचुः खगमृगाः सर्वे वाचः क्रूरा भयावहाः ।
स सिंहोपचितस्कन्धः शार्दूलसमविक्रमः १२
तानुत्पातानचिन्त्यैव निर्जगाम रणाजिरम् ।
तथा निर्गच्छतस्तस्य रक्षसः सह राक्षसैः १३

आज्ञा मान बलाध्यक्षने सेना भेजी ॥ ५ ॥ तब नाना आयुध लिये भीमदर्शन राक्षस चले ॥ ६ ॥

मेघाकार, महा शब्द करता अकम्पन महा रथपर सवार हो ॥ ७ ॥ चला युद्धमें देवताओंसे भी अक्षोभ्य था इसीसे अकम्पन कहलाता था ॥ ८ ॥ राक्षसोंके बीचमें सूर्यवत् अकम्पन चला, अकम्पनके ॥ ९ ॥ रथके घोडे सहसा दीन हो गये उसका बांया नेत्र फडकने लगा ॥ १० ॥ मुखका रंग विवर्ण हो गया स्वर गद्गद हो गया प्रचण्ड वायु बहने लगा ॥ ११ ॥ पशु पक्षी भयंकर शब्द करने लगे ॥ १२ ॥ पर उन उत्पातोंकी ओर कुछ ध्यान न दे अकम्पन चला गया एवं जाते अकम्पनके साथ ॥ १३ ॥

*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बभूव सुमहान्नादः क्षोभयन्निव सागरम्।
तेन शब्देन वित्रस्ता वानराणां महाचमूः १४
द्रुमशैलप्रहाराणां योद्धुं समुपातिष्ठताम्।
तेषां युद्धं महारौद्रं संजज्ञे कपिरक्षसाम् १५
रामरावणयोरर्थे समभित्यक्तदेहिनः।
सर्वे ह्यतिबलाः शूराः सर्वे पर्वतसन्निभाः १६
हरयो राक्षसाश्चैव परस्परजिघांसया।
तेषां विनर्दतां शब्दः संयुगेऽतितरस्विनाम् १७
शुश्राव सुमहान्कोपादन्योऽन्यमभिगर्जताम्।
रजश्चारुणवर्णाभं सुभीममभवद्भृशम् १८
उद्धृतं हरिरक्षोभिः संरुरोध दिशो दश।
अन्योऽन्यं रजसा तेन कौशेयोद्धृतपाण्डुना १९
संवृतानि च भूतानि ददृशुर्न रणाजिरे।
न ध्वजो न पताका वा चर्म वा तुरगोऽपि वा २०
आयुधं स्यन्दनो वापि ददृशे तेन रेणुना।
शब्दश्च सुमहांस्तेषां नर्दतामभिधावताम् २१
श्रूयते तुमुलो युद्धे न रूपाणि चकाशिरे।
हरीनेव सुसंरुष्टा हरयो जघ्नुराहवे २२
राक्षसा राक्षसांश्चापि निजघ्नुस्तिमिरे तदा।

बडा भारी शब्द हुआ उससे वानर सेना डर गई ॥ १४ ॥ वानरों और राक्षसोंका महान् युद्ध होने लगा ॥ १५ ॥ वानर और राक्षस रावणके लिये प्राण त्यागनेको तत्पर थे ॥ १६ ॥ संग्राममें वेगवाले उन लोगोंका शब्द ॥ १७ ॥ सुनाई देने लगा दोनों के गर्जते थे सेनाओंके पदन्याससे लाल वर्णकी धूलि उठी ॥ १८ ॥ दशों दिशा भर गई ॥ १९ ॥ इतनी धूलि उडी कि राक्षस और कोई नहीं दीख पडते थे, ध्वजा ढाल अश्व ॥ २० ॥ हथियार रथ दिखाई देता था वानर और राक्षसोंका बडा शब्द ॥ २१ ॥ सुनाई देता कोई दीखता नहीं था ॥ २२ ॥ उस अन्धकारमें राक्षस राक्षसोंको

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ते परांश्च विनिघ्नन्तः स्वांश्च वानरराक्षसाः २३
रुधिरार्द्रां तदा चक्रुर्महीं पङ्कानुलेपनाम् ।
ततस्तु रुधिरौघेण सिक्तं ह्यपगतं रजः २४
शरीरशवसंकीर्णा बभूव च वसुन्धरा ।
द्रुमशक्तिगदाप्रासैः शिलापरिघतोमरैः २५
राक्षसा हरयस्तूर्णं जघ्नुरन्योऽन्यमोजसा ।
बाहुभिः परिघाकारैर्युध्यन्तः पर्वतोपमान् २६
हरयो भीमकर्माणो राक्षसाञ्जघ्नुराहवे ।
राक्षसास्त्वभिसंक्रुद्धाः प्रासतोमरपाणयः २७
कपींस्तिजघ्निरे तत्र शस्त्रैः परमदारुणैः ।
अकम्पनः सुसंक्रुद्धो राक्षसानां चमूपतिः २८
संहर्षयति तान्सर्वान्राक्षसान्भीमविक्रमान् ।
हरयस्त्वपि रक्षांसि महाद्रुममहाश्मभिः २९
विदारयन्त्यभिक्रम्य शस्त्राण्याच्छिद्य वीर्यतः ।
एतस्मिन्नन्तरे वीरा हरयः कुमुदो नलः ३०
मैन्दश्च परमक्रुद्धश्चक्रुर्वेगमनुत्तमम् ।
ते तु वृक्षैर्महावीरा राक्षसानां चमूमुखे ३१

वानर राक्षस दोनों अपने अपने पक्षवालोंको तथा शत्रुओंको भी मारते ॥ २३ ॥
पृथ्वीको रक्तका स्नान कराके (रक्तमांसमय) कीचडका उबटन लगाया । ...र रक्तप्रवाहसे सिक्त होनेके कारण धूल दूर हो जानेपर ॥ २४ ॥ ...से रणभूमि पूर्ण हो गई ॥ २५ ॥ राक्षस और वानर बडे पराक्रमसे ...रते थे ॥ २६ ॥ राक्षसगण क्रोधसे प्रास तोमरादि ले ॥ २७ ॥ ...स्त्रोंसे वानरोंको मारने लगे अकम्पन बडा क्रोध कर ॥ २८ ॥ अपने ...मसे राक्षसोंको हर्षित करने लगा, वानर गण भी ॥ २९ ॥ राक्षसोंको ...उनके अस्त्र शस्त्रादि छीनने लगे कुमुद नल ॥ ३० ॥ मैंद वानर ...कर बडा वेग करने लगे व राक्षसोंकी सेनाको ॥ ३१ ॥ मारने लगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कदनं सुमहच्चक्रुर्लीलया हरिपुङ्गवाः।
ममन्थ राक्षसान्सर्वे नानाप्रहरणैर्भृशम् ३२
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकांडे पञ्चपञ्चाशः सर्गः ॥५५॥

षड्पञ्चाशः सर्गः।

तद्दृष्ट्वा सुमहत्कर्म कृतं वानरसत्तमैः।
क्रोधमाहारयामास युधि तीव्रमकम्पनः १
क्रोधमूर्च्छितरूपस्तु धुन्वन्परमकार्मुकम्।
दृष्ट्वा तु कर्म शत्रूणां सारथिं वाक्यमब्रवीत् २
तत्रैव तावत्त्वरितो रथं प्रापय सारथे।
एते च बलिनो घ्नन्ति सुबहून्राक्षसान्रणे ३
एते च बलवन्तो वा भीमकोपाश्च वानराः।
द्रुमशैलप्रहरणास्तिष्ठन्ति प्रमुखे मम ४
एतान्निहन्तुमिच्छामि समरश्लाघिनो ह्यहम्।
एतैः प्रमथितं सर्वं रक्षसां दृश्यते बलम् ५
ततः प्रचलिताश्वेन रथेन रथिनां वरः।
हरीनभ्यपतद्दूराच्छरजालैरकम्पनः ६
न स्थातुं वानराः शेकुः किं पुनर्योद्धुमाहवे।
अकम्पनशरैर्भग्नाः सर्वं एवाभिदुद्रुवुः ७

और उन्होंने राक्षसोंका मान मर्दन कर डाला ॥ ३२ ॥

॥ यहाँ ५५ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

वानरसत्तमोंका महत्कर्म देख अकम्पनने बडा रोष किया ॥ १ ॥ धनुष् कंपा अपने सारथिसे बोला ॥ २ ॥ हे सारथी हे! महाबलाढ्य संग्राममें असंख्य राक्षसोंको मार रहा है, उधर हमारा रथ पहुं चल ॥ ३ ॥ हे सारथे! जो वे बलवान् कोपकारी वानर मेरे सामने हैं ॥४॥ मैं इन बलवान् वानरोंको मारना चाहता हूं ॥५॥ इतना कह अक रथपर चढे वानरोंके ऊपर बाण वर्षा की ॥ ६ ॥ जिससे अकम्पनके कोई वानर खडा न हो सका उसके बाणोंसे आहत हो वानरगण

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तान्मृत्युवशमापन्नानकम्पनशरानुगान् ।
समीक्ष्य हनुमाञ्ज्ञातीनुपतस्थे महाबलः ८
तं महाप्लवगं दृष्ट्वा सर्वे ते प्लवगर्षभाः ।
समेत्य समरे वीराः सहिताः पर्यवारयन् ९
व्यवस्थितं हनूमन्तं ते दृष्ट्वा प्लवगर्षभाः ।
बभूवुर्बलवन्तो हि बलवन्तमुपाश्रिताः १०
अकम्पनस्तु शैलाभं हनूमन्तमवस्थितम् ।
महेन्द्र इव धाराभिः शरैरभिववर्ष ह ११
अचिन्तयित्वा बाणौघाञ्शरीरे पातितान्कपिः ।
अकम्पनवधार्थाय मनो दध्रे महाबलः १२
स प्रहस्य महातेजा हनूमान्मारुतात्मजः ।
अभिदुद्राव तद्रक्षः कम्पयन्निव मेदिनीम् १३
तस्याथ नर्दमानस्य दीप्यमानस्य तेजसा ।
बभूव रूपं दुर्धर्षं दीप्तस्येव विभावसोः १४
आत्मानं त्वप्रहरणं ज्ञात्वा क्रोधसमन्वितः ।
शैलमुत्पाटयामास वेगेन हरिपुङ्गवः १५

ते ॥ ७ ॥ मृत्युको प्राप्त होते अपने पक्षवालोंको देख हनुमान वहां
था ॥ ८ ॥

हनुमानको देख सब वानर इकट्ठे हो युद्धमें जाकर खडे हो गये ॥ ९ ॥
हनुमानको पास देख वानरगण बलीके आश्रयी हो बलवान् हो गये ॥ १० ॥
कम्पन हनुमानको सामने देख बाणोंकी वर्षा करने लगा ॥ ११ ॥
हनुमान उसके बाणोंको तुच्छ समझ अकम्पनके बधका विचार करने
गा ॥ १२ ॥ हनुमान पृथ्वीको कंपाते उस राक्षसकी ओर दौडे ॥ १३ ॥
दौड़ी हनुमान उसकी ओर दौडा कि उसका रूप अग्निके तुल्य दुर्द्धर्ष हो
या ॥ १४ ॥

अपनेको निरस्त्र समझ क्रोध कर हनुमानने एक गिरि उखाड लिया ॥ १५ ॥

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गृहीत्वा सुमहाशैलं पाणिनैकेन मारुतिः।
स विनद्य महानादं भ्रामयामास वीर्यवान् १६
ततस्तमभिदुद्राव राक्षसेन्द्रमकम्पनम्।
पुरा हि नमुचिं संख्ये वज्रेणेव पुरन्दरः १७
अकम्पनस्तु तद्दृष्ट्वा गिरिशृङ्गं समुद्यतम्।
दूरादेव महाबाणैरर्धचन्द्रैर्व्यदारयत् १८
त पर्वताग्रमाकाशे रक्षोबाणविदारितम्।
विकीर्णं पतितं दृष्ट्वा हनूमान्क्रोधमूर्च्छितः १९
सोऽश्वकर्णं समासाद्य रोषदर्पान्वितो हरिः।
तूर्णमुत्पाटयामास महागिरिमिवोच्छ्रितम् २०
तं गृहीत्वा महास्कन्धं सोऽश्वकर्णं महाद्युतिः।
प्रगृह्य परया प्रीत्या भ्रामयामास भूतले २१
प्रधावन्नुरुवेगेन बभञ्ज तरसा द्रुमान्।
हनूमान्परमक्रुद्धश्चरणैर्दारयन्महीम् २२
गजांश्च सगजारोहान्सरथान्रथिनस्तथा।
जघान हनुमान्धीमान्राक्षसांश्च पदातिगान्, २३
तमन्तकमिव क्रुद्धं सद्रुमं प्राणहारिणम्।
हनूमन्तमभिप्रेक्ष्य राक्षसा विप्रदुद्रुवुः २४

हाथमें ले नाद कर हनुमानने उस पर्वतको घुमाया ॥ १६ ॥ और अकम्पनके
ओर दौडा ॥ १७ ॥ अकम्पनने बडा गिरि लिये हनुमानको आते
बाणोंसे उसको दूरसे ही खण्डित कर दिया ॥ १८ ॥ उस पर्वतको वि
हो गिरता देख हनुमान क्रोधसे मूर्च्छित हो गया ॥ १९ ॥ और अश्व
पेडके नीचे जा शीघ्रतासे उसे उखाड लिया ॥ २० ॥ उस अश्वकर्ण
हनुमानने घुमाया और भूमिमें पटका ॥ २१ ॥ और उसे ले बडे
दौडा उस समय हनुमान चरणोंसे भूमिको विदीर्ण करने लगा ॥ २२ ॥
और हाथियों रथीसहित रथों तथा पैदल राक्षसोंको हनुमानने मारा ॥ २३ ॥
बडा वृक्ष लिये प्राणसंहारक हनुमानको देख राक्षस भागे ॥ २४ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तमापतन्तं संक्रुद्धं राक्षसानां भयावहम् ।
ददर्शाकम्पनो वीरश्चुक्षोभ च ननाद च २५
स चतुर्दशभिर्बाणैर्निशितैर्देहदारुणैः ।
निर्बिभेद महावीर्यं हनूमन्तमकम्पनः २६
स तथा विप्रकीर्णस्तु नाराचैः शितशक्तिभिः ।
हनूमान्ददृशे वीरः प्ररूढ इव सानुमान् २७
विरराज महावीर्यो महाकायो महाबलः ।
पुष्पिताशोकसंकाशो विधूम इव पावकः २८
ततोऽन्यं वृक्षमुत्पाट्य कृत्वा वेगमनुत्तमम् ।
शिरस्यभिजघानाशु राक्षसेन्द्रमकम्पनम् २९
स वृक्षेण हतस्तेन सक्रोधेन महात्मना ।
राक्षसो वानरेन्द्रेण पपात च ममार च ३०
तं दृष्ट्वा निहतं भूमौ राक्षसेन्द्रमकम्पनम् ।
व्यथिता राक्षसाः सर्वे क्षितिकम्प इव द्रुमाः ३१
त्यक्तप्रहरणाः सर्वे राक्षसास्ते पराजिताः ।
लङ्कामभिययुस्त्रासाद्वानरैस्तैरभिद्रुताः ३२
ते मुक्तकेशाः संभ्रान्ता भग्नमानाः पराजिताः ।

…नुमानको आते देख अकम्पनने घोर नाद किया ॥ २५ ॥ फिर तीक्ष्ण …देह वाण हनुमानके शरीरमें मारे ॥ २६ ॥ उन बाणोंसे युक्त हनुमान …श्रृंग युक्त गिरिके तुल्य दिखाई दिया ॥ २७ ॥ हनुमान पुष्पित …शोकके पेड व धूमरहित अग्निवत् शोभित हुआ ॥ २८ ॥ फिर वेगसे …र एक पेड उखाड अकम्पनके शिरमें मारा ॥ २९ ॥ हनुमानके उस वृक्षसे …हो अकम्पन मर गया ॥ ३० ॥ अकम्पनको मरा देख राक्षसगण कांपने …॥ ३१ ॥ व हथियार फेंक भयातुर हो भाग चले और लंकामें घुस …॥ ३२ ॥

…नके केश अस्तव्यस्त हो गये, उन्हें कुछ भी सुझाई न दिया, पराजित …के कारण उनका गर्व भी नष्ट हो गया तथा श्रमके कारण शरीरसे

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भयाच्छ्रमजलैरङ्गैः प्रस्रवद्भिर्विदुद्रुवुः ३३
अन्योऽन्यं ते प्रमथ्नन्तो विविशुर्नगरं भयात् ।
पृष्ठतस्ते तु संमूढाः प्रेक्षमाणा मुहुर्मुहुः ३४
तेषु लङ्कां प्रविष्टेषु राक्षसेषु महाबलाः ।
समेत्य हरयः सर्वे हनूमन्तमपूजयन् ३५
सोऽपि प्रवृद्धस्तान्सर्वान्हरीन्संप्रत्यपूजयत् ।
हनूमान्सत्त्वसंपन्नो यथार्हमनुकूलतः ३६
विनेदुश्च यथाप्राणं हरयो जितकाशिनः ।
चकृषुश्च पुनस्तत्र सप्राणानेव राक्षसान् ३७
स वीरशोभामभजन्महाकपिः समेत्य रक्षांसि निहत्य मारुतिः
महासुरं भीमममित्रनाशनं विष्णुर्यथैवोरुबलं चमूमुखे ३८
अपूजयन्देवगणास्तदा कपिं स्वयं च रामोऽतिबलश्च लक्ष्मणः ।
तथैव सुग्रीवमुखाः प्लवङ्गमा विभीषणश्चैव महाबलस्तदा
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे षट्पञ्चाशः सर्गः ॥५६॥ [२१

पसीना बहने लगा । तब वे भयभीत हो भाग निकले ॥ ३३ ॥ दरवा
पास आनेपर परस्पर खींचातानी करते करते अचेतसे होकर, पुनः
भयसे पीछे देखते हुए वे नगरमें प्रविष्ट हुए ॥ ३४ ॥ अस्तु । इस प्रका
राक्षस लंकामें प्रविष्ट हुए । तब सभी बलाढ्य वानर एकत्रित हो हनुमा
प्रशंसा करने लगे ॥ ३५ ॥ तब वृद्धिंगत हुए उस धैर्य सम्पन्न हनुमा
भी योग्यता देखकर समस्त वानरोंके प्रेमपूर्वक अवलोकन, भाषण
स्तुति की ॥ ३६ ॥ वे निर्भीक वानर अपने अपने सामर्थ्यानुसार ग
करने लगे और जीवित राक्षसोंको ही वे खींचकर ले जाने लगे ॥ ३
अस्तु । सेनामें महाबलाढ्य, दैत्यका वध करनेके कारण जिस प्रकार वि
वीरत्व प्राप्त होती है तद्वत् उस शत्रुनाशक भयंकर दैत्यका वध क
पश्चात् महाकपिको वीरत्वका गौरव प्राप्त हुआ ॥ ३८ ॥ और देव
स्वयं राम, बलाढ्य लक्ष्मण सुग्रीव प्रभृति वानर एवं बलाढ्य विभी
उसकी प्रशंसा करने लगे ॥ ३९ ॥

॥ यहां ५६ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

॥ सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥

अकम्पनवधं श्रुत्वा क्रुद्धो वै राक्षसेश्वरः ।
किंचिद्दीनमुखश्चापि सचिवांस्तानुदैक्षत १
स तु ध्यात्वा मुहूर्तं तु मंत्रिभिः संविचार्य च ।
ततस्तु रावणः पूर्वदिवसे राक्षसाधिपः ॥
पुरीं परिययौ लङ्कां सर्वान्गुल्मानवेक्षितुम् २
तां राक्षसगणैर्गुप्तां गुल्मैर्बहुभिरावृताम् ।
ददर्श नगरीं राजा पताकाध्वजमालिनीम् ३
रुद्धां तु नगरीं दृष्ट्वा रावणो राक्षसेश्वरः ।
उवाचात्महितं काले प्रहस्तं युद्धकोविदम् ४
पुरस्योपनिविष्टस्य सहसा पीडितस्य इ ।
नान्ययुद्धात्प्रपश्यामि मोक्षं युद्धविशारदाः ५
अहं वा कुम्भकर्णो वा त्वं वा सेनापतिर्मम ।
इन्द्रजिद्वा निकुम्भो वा वहेयुर्भारमीदृशम् ६
स त्वं बलमतः शीघ्रमादाय परिगृह्य च ।
विजयायाभिनिर्याहि यत्र सर्वे वनौकसः ७
निर्याणादेव तूर्णं च चालिता हरिवाहिनी ।
नर्दतां राक्षसेन्द्राणां श्रुत्वा नादं द्रविष्यति ८

अकम्पनका वध सुन रावण उदासीन हो सचिवोंको ओर देखने लगा ॥ १ ॥ व मन्त्रियोंकी सम्मति ले लंकाके सब मोरचे देखनेके लिये गया ॥ २ ॥ और बहुत राक्षसोंसे रक्षित अनेक छावनियोंसे युक्त लंकाको देखा ॥ ३ ॥ चारों ओरसे लंकाको घिरा देख रावण प्रहस्त सेनापतिसे कहा ॥ ४ ॥ इस लंकाके पास अब शत्रु आ गये अतः युद्ध करनेके सिवाय और कुछ उपाय नहीं दिखाई देता ॥ ५ ॥ मैं कुम्भकर्ण सेनापति तुम मेघनाद तथा निकुम्भ ही इसका भार उठा सकते हो ॥ ६ ॥ तुम बड़ी सेना शीघ्र ही विजयके लिये ले जावो ॥ ७ ॥ तुम्हारे जाते ही वानरोंकी सेना चलायमान हो जावेगी ॥ ८ ॥ वानर लोग चञ्चल हैं

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चपला ह्यविनीताश्च चलचित्ताश्च वानराः ।
न सहिष्यन्ति ते नादं सिंहनादमिव द्विपाः ९
विद्रुते च बलेतस्मिन्रामः सौमित्रिणा सह ।
अवशस्तु निरालम्बः प्रहस्तवशमेष्यति १०
आपत्संशयिता श्रेयो नात्र निःसंशयीकृता ।
प्रतिलोमानुलोमं वा यत्तु नो मन्यसे हितम् ११
रावणेनेवमुक्तस्तु प्रहस्तो वाहिनीपतिः ।
राक्षसेन्द्रमुवाचेदमसुरेन्द्रमिवोशना १२
राजन्मन्त्रितपूर्वं नः कुशलैः सह मन्त्रिभिः ।
विवादश्चापि नो वृत्तः समवेक्ष्य परस्परम् १३
प्रदानेन तु सीतायाः श्रेयो व्यवसितं मया ।
अप्रदाने पुनर्युद्धं दृष्टमेव तथैव नः १४
सोऽहं दानैश्च मानैश्च सततं पूजितस्त्वया ।
सान्त्वैश्च विविधैः काले किं न कुर्यां हितं तव १५
न हि मे जीवितं रक्ष्यं पुत्रदारधनानि च ।
त्वं पश्य मां जुहूषन्तं त्वदर्थे जीवितं युधि १६
एवमुक्त्वा तु भर्तारं रावणं वाहिनीपतिः ।
उवाचेदं बलाध्यक्षान्प्रहस्तः पुरतः स्थितान् १७

तुम्हारा नाद न सह सकेंगे ॥ ९ ॥ सेना भाग जानेपर राम लक्ष्मण अवश तुम्हारे वशीभूत हो जावेंगे ॥ १० ॥ यद्यपि युद्धमें मरण संशययुक्त है प तुम्हारी विजय निःसन्देह होगी ॥ ११ ॥ जब रावणने ऐसा कहा तो प्रह बोला ॥ १२ ॥ राजन् ! इस विषयमें तो माल्यवान् और मन्त्रियोंसहि हमने प्रथम ही विचार किया पर हम लोगोंकी मति परस्पर विरु रही ॥ १३ ॥ हमने सीताके देने ही में कल्याण विचारा था ॥ १४ आपने समय समयपर हमारी पूजा की है सो हम आपका प्रिय कैसे करेंगे ? ॥ १५ ॥

मैं अपने प्राणों पुत्र स्त्री धनकी रक्षा नहीं चाहता तुम्हारे लिये मैं अपने प्राण देनेको उद्यत हूं ॥ १६ ॥ एवं रावणसे कह प्रहस्त आगे खडे सेना

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

समानयत मे शीघ्रं राक्षसानां महाबलम् १८
मद्बाणानां तु वेगेन हतानां तु रणाजिरे।
अद्य तृप्यन्तु मांसादाः पक्षिणः काननौकसः १९
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा बलाध्यक्षा महाबलाः।
बलमुद्योजयामासुस्तस्मिन्राक्षसमन्दिरे २०
सा बभूव मुहूर्तेन भीमैर्नानाविधायुधैः।
लङ्का राक्षसवीरैस्तैर्गजैरिव समाकुला २१
हुताशनं तर्पयतां ब्राह्मणांश्च नमस्यताम्।
आज्यगन्धप्रतिवहः सुरभिर्मारुतो ववौ २२
स्रजश्च विविधाकारा जगृहुस्त्वभिमन्त्रिताः।
सङ्ग्रामसज्जाः संहृष्टा धारयन्राक्षसास्तदा २३
सधनुष्काः कवचिनो वेगादुत्सृज्य राक्षसाः।
रावणं प्रेक्ष्य राजानं प्रहस्तं पर्यवारयन् २४
अथामन्त्र्य तु राजानं भेरीमाहत्य भैरवाम्।
आरुरोह रथं युक्तः प्रहस्तः सज्जकल्पितम् २५
हयैर्महाजवैर्युक्तं सम्यक्सूतं सुसंयुतम्।
महाजलदनिर्घोषं साक्षाच्चन्द्रार्कभास्वरम् २६
उरगध्वजदुर्धर्षं सुवरूथं स्वपस्करम्।

ध्यक्षोंसे बोला ॥ १७ ॥ कि शीघ्र राक्षससेना हमारे संग जानेको लाओ ॥ १८ ॥ कारण मेरे बाणके वेगसे संग्राममें वध हुआ वानरोंका मांस भक्षण कर आज वनवासी मांस भक्षण पक्षी सब तृप्त होंगी ॥ १९ ॥ उसके वचन सुन महाबली सेनाध्यक्षोंने सेना इकट्ठी कर दी ॥ २० ॥ आयुधधारी राक्षसोंसे मुहूर्त भरमें लंका भर गई अग्निको तृप्त करते हुये ॥२१॥ ब्राह्मणोंको नमते राक्षसोंके घीकी सुगन्धिसे युक्त सुगन्धित वायु वहने लगा ॥ २२ ॥ धनुष-धारे कवच पहिने राक्षस बडे वेगसे उठ ॥ २३ ॥ रावणको देख प्रहस्त सेनापतिको घेरकर खडे हुये ॥ २४ ॥ व फिर भेरीका शब्द कर सब शस्त्रोंसे युक्त रथपर प्रहस्त चढा ॥ २५ ॥ उसमें वेगवान् घोडे जुते अच्छा सारथी बैठा था मेघकासा शब्द प्रकाशित ॥ २६ ॥ सर्प्प पताका युक्त सुन्दर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सुवर्णजालसंयुक्तं प्रहसन्तमिव श्रिया २७
ततस्तं रथमास्थाय रावणार्पितशासनः।
लङ्काया निर्ययौ तूर्णं बलेन महता वृतः २८
ततो दुन्दुभिनिर्घोषः पर्जन्यनिनदोपमः।
वादित्राणां च निनदः पूरयन्निव मेदिनीम् २९
शुश्रुवे शङ्खशब्दश्च प्रयाते वाहिनीपतौ।
निनदन्तः स्वरान्घोरान्राक्षसा जग्मुरग्रतः ३०
भीमरूपा महाकायाः प्रहस्तस्य पुरःसराः।
नरान्तकः कुम्भहनुर्महानादः समुन्नतः॥
प्रहस्तसचिवा ह्येते निर्ययुः परिवार्य तम् ३१
व्यूढेनैव सुघोरेण पूर्वद्वारात्स निर्ययौ।
गजयूथनिकाशेन बलेन महता वृतः ३२
सागरप्रतिमौघेन वृतस्तेन बलेन सः।
प्रहस्तो निर्ययौ क्रुद्धः कालान्तकयमोपमः ३३
तस्य निर्याणघोषेण राक्षसानां च नर्दताम्।
लङ्कायां सर्वभूतानि विनेदुर्विकृतैः स्वरैः ३४
व्यभ्रमाकाशमाविश्य मांसशोणितभोजनाः।
मण्डलान्यपसव्यानि खगाश्चक्रू रथं प्रति ३५

गुम्मजदार सुवर्णकी झालर लगे हुए ॥ २७ ॥ ऐसे रथपर प्रहस्त स[वार] हो बडी सेना ले लंकासे निकला ॥ २८ ॥ उस समय नगारा व[जने] व अन्य वाजोंका शब्द भी हुआ ॥ २९ ॥ चलनेके समय शंख बजने ल[गे] शब्द करते राक्षसगण आगे आगे चले ॥ ३० ॥ प्रहस्तके, चार म[न्त्री] नरान्तक, कुम्भहनु, समुन्नत, महानाद आगे चले ॥ ३१ ॥ बडी सेना[के] भयंकर व्यूह रच पूर्वद्वारसे प्रहस्त निकला ॥ ३२ ॥ चलती हुई से[ना]के साथ प्रहस्त कालान्तकयमके तुल्य चला ॥ ३३ ॥ राक्षसोंके गर्जनेसे लं[का]के सब प्राणी भयानक शब्द कर उठे ॥ ३४ ॥ मांस भोजी पक्षी आका[श]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वमन्ति पावकज्वालाः शिवा घोरा ववाशिरे।
अन्तरिक्षात्पपातोल्का वायुश्च परुषं ववौ ३६
अन्योऽन्यमभिसंरब्धा ग्रहाश्च न चकाशिरे ३७
मेघाश्च खरनिर्घोषा रथस्योपरि रक्षसः।
ववर्षू रुधिरं चास्य सिषिचुश्च पुरःसरान् ३८
केतुमूर्धनि गृध्रस्तु विलीनो दक्षिणामुखः।
नदन्नुभयतः पार्श्वं समग्रां श्रियमाहरत् ३९
सारथेर्बहुशश्चात्र सङ्ग्राममवनिवर्तिनः।
प्रतोदो न्यपतद्धस्तात्सूतस्य हयसादिनः ४०
निर्याणश्री च या च स्याद्भास्वरा च सुदुर्लभा।
सा ननाश मुहूर्तेन समे च स्खलिता हयाः ४१
प्रहस्तं तं हि निर्यान्तं प्रख्यातगुणपौरुषम्।
युधि नानाप्रहरणाः कपिसेनाऽभ्यवर्तत ४२
अथ घोषः सुतुमुलो हरीणां समजायत।

...थके ऊपर घूमने लगे ॥ ३५ ॥ गीदडियां मुखसे ज्वाला उगिलने लगीं। अन्तरिक्षसे उल्कापात हुआ, तीव्र वायु चलने लगा ॥ ३६ ॥ ग्रह प्रकाशित नहीं होते थे ॥ ३७ ॥ राक्षसके रथके ऊपर गर्जते हुये मेघ घूमने लगे और ...धिरकी वर्षा करने लगे ॥ ३८ ॥

...ध्वजापर एक गृध्र दक्षिणाभिमुख होकर बैठ गया और आक्रोश करता हुआ अपने दोनों ओर देखता हुआ उनकी समस्त सम्पत्तिके विनाशको ...सने सूचित किया ॥ ३९ ॥ संग्रामसे न लौटनेवाले एवं अश्वोंको शिक्षा ...देनेवाले, सूतवंशज सारथीके हाथसे बारंबार चाबुक नीचे गिरने लगा ॥ ४० ॥ ...ज्वल एवं अति दुर्लभ जो प्रयाण शोभा वह उसे प्राप्त हुई थी। वह शोभा ...ी क्षणभरमें नष्ट हो गई और अश्व भी सपाट प्रदेशपर लोटने लगे ॥ ४१ ॥ इस प्रकार प्रख्यात गुण एवं पराक्रमसे युक्त वह प्रहस्त बाहर ...ने लगा। तब नाना प्रकारके आयुध लेकर वानर सेना भी संग्राममें ...आई ॥ ४२ ॥ तदनंतर वृक्ष उखाडनेवाले एवं बडी बडी शिलायें

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वृक्षानारुजतां चैव गुर्वीर्वै गृह्णतां शिलाः ४३
नदतां राक्षसानां च वानराणां च गर्जताम्।
उभे प्रमुदिते सैन्ये रक्षोगणवनौकसाम् ४४
वेगितानां समर्थानामन्योऽन्यवधकाङ्क्षिणाम्।
परस्परं चाह्वयतां निनादः श्रूयते महान् ४५
ततः प्रहस्तः कपिराजवाहिनीमभिप्रतस्थे विजयाय दुर्मतिः।
विवृद्धवेगश्च विवेशितां चमूं यथा मुमूर्षुः शलभो विभावसुम्
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे सप्तपञ्चाशः सर्गः ॥५७॥ [२६:

॥ अष्टपञ्चाशः सर्गः ॥

ततः प्रहस्तं निर्यान्तं दृष्ट्वा रणकृतोद्यमम्।
उवाच सस्मितं रामो बिभीषणमरिन्दमः १
क एष सुमहाकायो बलेन महता वृतः।
आगच्छति महावेगः किंरूपबलपौरुषः २
आचक्ष्व मे महाबाहो वीर्यवन्तं निशाचरम्।
राघवस्य वचः श्रुत्वा प्रत्युवाच बिभीषणः ३

हाथमें लेनेवाले वानरोंसें भयंकर गर्जना होने लगी ॥ ४३ ॥ गर्जना क वाले राक्षसों एवं वानरोंकी उभय सेना आनन्दित हुई। वेगवान् परस्परके वधेच्छु एवं परस्परका आह्वान करनेवाले राक्षस व वानरों गर्जना आरम्भ हुई ॥ ४४-४५ ॥ तदनंतर वह दुर्बुद्धि प्रहस्त प्राप्त्यर्थं वानरराजकी सेनाकी ओर बढा और मुमूर्षु पतंग जिस अग्निमें प्रवेश करता है तद्वत् अतिशय वेगसे उसने उस सेनामें किया ॥ ४६ ॥

॥ यहाँ ५७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

समर करनेके लिये उद्यत हुवे आते प्रहस्तको देख राम विभी बोले ॥ १ ॥ कि यह अतिकाय कौन है जो बडी भारी सेना लिये है ॥ २ ॥ हे विभीषण! इस निशाचरका वृत्तान्त मुझसे कहो

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एष सेनापतिस्तस्य प्रहस्तो नाम राक्षसः।
लङ्कायां राक्षसेन्द्रस्य त्रिभागबलसंवृतः॥
वीर्यवानस्त्रविच्छूरः सुप्रख्यातपराक्रमः ४
ततः प्रहस्तं निर्यान्तं भीमं भीमपराक्रमम्।
गर्जन्तं सुमहाकायं राक्षसैरभिसंवृतम् ५
ददर्श महती सेना वानराणां बलीयसाम्।
अभिसंजातघोषाणां प्रहस्तमभिगर्जताम् ६
खड्गशक्त्यृष्टिशूलाश्च बाणानि मुसलानि च।
गदाश्च परिघाः प्रासा विविधाश्च परश्वधाः ७
धनूंषि च विचित्राणि राक्षसानां जयैषिणाम्।
प्रगृहीतान्यराजन्त वानरानभिधावताम् ८
जगृहुः पादपांश्चापि पुष्पितांस्तु गिरींस्तथा।
शिलाश्च विपुला दीर्घा योद्धुकामाः प्लवङ्गमाः ९
तेषामन्योऽन्यमासाद्य सङ्ग्रामः सुमहानभूत्।
बहूनामश्मवृष्टिं च शरवर्षं च वर्षताम् १०
बहवो राक्षसा युद्धे बहून्वानरपुङ्गवान्।
वानरा राक्षसांश्चापि निजघ्नुर्बहवो बहून् ११
शूलैः प्रमथिताः केचित्केचित्तु परमायुधैः।

...डे॥ ३॥ कि यह रावणका सेनापति प्रहस्त है लंकाकी सेनाके तृतीयांश-
...आ यह सेनापति है अस्त्रविद्यामें निपुण शूर व पराक्रमी है॥ ४॥ तब
...क्रमी प्रहस्तको आते तथा राक्षसोंसे घिरे हुए॥ ५॥ वानर सेनाने
...ना, सब प्रहस्तको गर्जते देख गर्जने लगे॥ ६॥
...स समय विविध प्रकारके शस्त्रास्त्र॥ ७॥ आदि लिये वानरोंके ऊपर
...ते राक्षसोंके आयुध शोभित होते थे॥ ८॥ तब वानरोंने भी वृक्ष
...र बड़े बड़े गिरि तथा शिखर उखाड़े॥ ९॥ शिला और अस्त्रोंकी वर्षा
...ते हुवे वानरों और राक्षसोंका युद्ध होने लगा॥१०॥ राक्षसोंने वानरोंको
...र वानरोंने राक्षसोंको मारा॥११॥ कोई वानर शूलोंसे कोई अन्य आयुधोंसे

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परिघैराहताः केचित्केचिच्छिन्नाः परश्वधैः ११
निरुच्छ्वासाः पुनः केचित्पतिता जगतीतले।
विभिन्नहृदयाः केचिदिषुसंधानसाधिताः १३
केचिद्द्विधा कृताः खड्गैः स्फुरन्तः पतिता भुवि।
वानरा राक्षसैः शूरैः पार्श्वतश्च विदारिताः १४
वानरैश्चापि संक्रुद्धै राक्षसौघाः समन्ततः।
पादपैर्गिरिशृङ्गैश्च संपिष्टा वसुधातले १५
वज्रस्पर्शतलैर्हस्तैर्मुष्टिभिश्च हता भृशम्।
वमञ्शोणितमास्येभ्यो विशीर्णवदनेक्षणाः १६
आर्तस्वनं च स्वनतां सिंहनादं च नर्दताम्।
बभूव तुमुलः शब्दो हरीणां रक्षसामपि १७
वानरा राक्षसाः क्रुद्धा वीरमार्गमनुव्रताः।
विवृत्तवदनाः क्रूराश्चक्रुः कर्माण्यभीतवत् १८
नरान्तकः कुम्भहनुर्महानादः समुन्नतः।
एते प्रहस्तसचिवाः सर्वे जघ्नुर्वनौकसः १९
तेषां निपततां शीघ्रं निघ्नतां चापि वानरान्।
द्विविदो गिरिशृङ्गेण जघानैकं नरान्तकम् २०

कोई परिघोंसे घायल हुआ ॥ १२ ॥ कोई पृथ्वीमें गिरा कोई बाण लगने मृतक होगया ॥ १३ ॥ कोई कोई खड्गोंसे दो खण्ड हो गिरपड़ा किसी किसी वानरकी वगल नोच ली गई ॥ १४ ॥

इसी तरह वानरोंने वृक्षों और शिलाओंसे राक्षसोंको मारा ॥ १५ ॥ किसीको लात मूकोंसे किसीको थप्पडोंसे मारा ॥ १६ ॥ वानरों राक्षसों आर्तनाद व घोर शब्द मिलकर बडा भयङ्कर शब्द हुआ ॥ १७ ॥ वानर राक्षस क्रोधित हो मुख फैला फैला दौडते और अद्भुत कर्म करते थे ॥ १८ ॥ नरान्तक कुम्भहनु महानाद समुन्नत ये चारों प्रहस्तके मन्त्री सब वानरों मारते थे ॥ १९ ॥ ये चारों वानरोंको मारते ही थे कि द्विविदने नरान्तक

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दुर्मुखः पुनरुत्थाय कपिः स विपुलद्रुमम् ।
राक्षसं क्षिप्रहस्तं तु समुन्नतमपोथयत् २१
जाम्बवांस्तु सुसंक्रुद्धः प्रगृह्य महतीं शिलाम् ।
पातयामास तेजस्वी महानादस्य वक्षसि २२
अथ कुम्भहनुस्तत्र तारेणासाद्य वीर्यवान् ।
वृक्षेण महता सद्यः प्राणान्संत्याजयद्रणे २३
अमृष्यमाणस्तत्कर्म प्रहस्तो रथमाश्रितः ।
चकार कदनं घोरं धनुष्पाणिर्वनौकसाम् २४
आवर्त इव संजज्ञे सेनयोरुभयोस्तदा ।
क्षुभितस्याप्रमेयस्य सागरस्येव निःस्वनः २५
महता हि शरौघेण राक्षसो रणदुर्मदः ।
अर्दयामास संक्रुद्धो वानरान्परमाहवे २६
वानराणां शरीरैस्तु राक्षसानां च मेदिनी ।
बभूवातिचिता घोरैः पर्वतैरिव संवृता २७
सा मही रुधिरौघेण प्रच्छन्ना संप्रकाशते ।
संछन्ना माधवे मासि पलाशैरिव पुष्पितैः २८
हतवीरौघवप्रां तु भग्नायुधमहाद्रुमाम् ।
शोणितौघमहातोयां यमसागरगामिनीम् २९

...से मार डाला ॥ २० ॥ दुर्मुखने समुन्नतको मार डाला ॥ २१ ॥
...वान्ने एक बडी शिला महानादकी छातीमें मारी ॥ २२ ॥
...र वानरने वृक्षसे कुम्भहनुको मार डाला ॥ २३ ॥ यह देख
...धनुष ले वानरोंका संहार करने लगा ॥ २४ ॥ एवं दोनों सैन्योंके
...इधर दौडनेसे सागरके समान शब्द हुआ ॥ २५ ॥ प्रहस्तने बडे बडे
...से वानरोंको मारा ॥ २६ ॥ लोथोंसे पूर्ण युद्धभूमि मानों पर्वतोंसे
...होगई ॥ २७ ॥ वह युद्धांगन रुधिरकी धारासे युक्त ऐसा दीख पडने
...जैसे पुष्पित पलाशोंसे पृथ्वी शोभती हैं ॥ २८ ॥
...क वीर ही जिसके दोनों तट हैं टूटे हुए आयुध ही पेड हैं रक्त ही

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यकृत्प्लीहमहापङ्कां विनिकीर्णान्त्रशैवलाम्
भिन्नकायशिरोमीनामङ्गावयवशाद्वलाम् ३०
गृध्रहंसवराकीर्णां कङ्कसारससेविताम् ।
मेदःफेनसमाकीर्णामार्तस्तनितनिःस्वनाम् ३१
तां कापुरुषदुस्तारां युद्धभूमिमयीं नदीम् ।
नदीमिव घनापायो हंससारससेविताम् ३२
राक्षसाः कपिमुख्यास्ते तेरुस्तां दुस्तरां नदीम् ।
यथा पद्मरजोध्वस्तां नलिनीं गजयूथपाः ३३
ततः सृजन्तं बाणौघान्प्रहस्त स्यन्दने स्थितम् ।
ददर्श तरसा नीलो विधमन्तं प्लवङ्गमान् ३४
उद्धूत इव वायुः खे महदभ्रबलं बलात् ।
समीक्ष्याभिद्रुतं युद्धे प्रहस्तो वाहिनीपतिः ३५
रथेनादित्यवर्णेन नीलमेवाभिदुद्रुवे ।
स धनुर्धन्विनां श्रेष्ठो विकृष्य परमाहवे ३६
नीलाय व्यसृजद्बाणान्प्रहस्तो वाहिनीपतिः ।
ते प्राप्य विशिखा नीलं विनिर्भिद्य समाहिताः ३७
महीं जग्मुर्महावेगा रोषिता इव पन्नगाः ।
नीलः शरैरभिहतो निशितैर्ज्वलनोपमैः ३८

जल हैं ॥ २९ ॥ पिल ही कांच हैं आंतें सिवार हैं देह खंड मछलि अङ्गोंके टुकडे घास हैं ॥ ३० ॥ हंस सारसोंके तुल्य गृध्र बैठे हैं आ शब्दके समान हैं ॥ ३१ ॥ ऐसी युद्धभूमिमयी नदीके पार. कायर नहीं जासकते ऐसी दुस्तर नदीको ॥ ३२ ॥ राक्षस और मुख्य मुख्य तर गये ॥ ३३ ॥

वानरोंको मारते हुए प्रहस्तको नीलने देखा ॥ ३४ ॥ प्रहस्त भी सेनाको युद्धसे भागती देख ॥ ३५ ॥ रथपर चढ नीलके आगे दौडा युद्धमें धनुष चढा ॥ ३६ ॥ नीलपर बाण छोडने लगा वे बाण शरीरको फोड ॥ ३७ ॥ बडे वेगसे पृथ्वीमें घुस गए बाणोंके लगनेप

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

स तं परमदुर्धर्षमापतन्तं महाकपिः ।
प्रहस्तं ताडयामास वृक्षमुत्पाट्य वीर्यवान् ३९
स तेनाभिहतः क्रुद्धो नदन्राक्षसपुङ्गवः ।
ववर्ष शरवर्षाणि प्लवङ्गानां चमूपतौ ४०
तस्य बाणगणानेव राक्षसस्य दुरात्मनः ।
अपारयन्वारयितुं प्रत्यगृह्णान्निमीलितः ४१
यथैव गोवृषो वर्षं शारदं शीघ्रमागतम् ४२
एवमेव प्रहस्तस्य शरवर्षान्दुरासदान् ।
निमीलिताक्षः सहसा नीलः सेहे दुरासदान् ४३
रोषितः शरवर्षेण सालेन महता महान् ।
प्रजघान हयान्नीलः प्रहस्तस्य महाबलः ४४
ततो रोषपरीतात्मा धनुस्तस्य दुरात्मनः ।
बभञ्ज तरसा नीलो ननाद च पुनःपुनः ४५
विधनुः स कृतस्तेन प्रहस्तो वाहिनीपतिः ।
प्रगृह्य मुसलं घोरं स्यन्दनादवपुप्लुवे ४६
तावुभौ वाहिनीमुख्यौ जातवैरौ तरस्विनौ ।
स्थितौ क्षतजसिक्ताङ्गौ प्रभिन्नाविव कुञ्जरौ ४७

के ॥ ३८ ॥ प्रहस्तको दौडते आते देख भारी वृक्ष उखाड मारा ॥३९॥ त हो गर्जते प्रहस्तने नीलके ऊपर बाणोंकी वर्षा की ॥ ४० ॥ प्रहस्तके णोंको रोकनेमें असमर्थ हो नीलने नेत्र मूंद उन्हें सहन किया ॥ ४१ ॥ शरद ऋतुके जलवृष्टिको जिस प्रकार बैल आँख मूंदकर सहन करता है सी प्रकार नील उसके शरसमुदायको आँख मूंदकर सहन किया ॥ ४२ ॥ दुःसह प्रहस्तके बाण नीलने नेत्र मूंद सह लिये ॥ ४३ ॥ फिर एक शालके पेडसे प्रहस्तके अश्व मार डाले ॥ ४४ ॥ फिर उसका धनुष तोड डाला ॥ ४५ ॥ धनुष टूट जानेपर प्रहस्त एक भयंकर मूसल के उतर पडा ॥ ४६ ॥ नील और प्रहस्त दोनों सेनापति मदान्ध थियोंके तुल्य पृथ्वी पर खडे हुए ॥ ४७ ॥ दोनों अपने तीक्ष्ण दांतोंसे

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उल्लिखन्तौ सुतीक्ष्णाभिर्दंष्ट्राभिरितरेतरम् ।
सिंहशार्दूलसदृशौ सिंहशार्दूलचेष्टितौ ४८
विक्रान्तविजयौ वीरौ समरेष्वनिवर्तिनौ ।
काङ्क्षमाणौ यशः प्राप्तुं वृत्रवासवयोरिव ४९
आजघान तदा नीलं ललाटे मुसलेन सः ।
प्रहस्तः परमायत्तस्ततः सुस्राव शोणितम् ५०
ततः शोणितदिग्धाङ्गः प्रगृह्य च महातरुम् ।
प्रहस्तस्योरसि क्रुद्धो विससर्ज महाकपिः ५१
तमचिन्त्यप्रहारं स प्रगृह्य मुसलं महत् ।
अभिदुद्राव बलिनं बलान्नीलं प्लवङ्गमम् ५२
तमुग्रवेगं संरब्धमापतन्तं महाकपिः ।
ततः संप्रेक्ष्य जग्राह महावेगो महाशिलाम् ५३
तस्य युद्धाभिकामस्य मृधे मुसलयोधिनः ।
प्रहस्तस्य शिलां नीलो मूर्ध्नि तूर्णमपातयत् ५४
नीलेन कपिमुख्येन विमुक्ता महती शिला ।
बिभेद बहुधा घोरा प्रहस्तस्य शिरस्तदा ५५
स गतासुर्गतश्रीको गतसत्त्वो गतेन्द्रियः ।

ओष्ठ चबाते सिंह शार्दूलसम चेष्टा करते ॥ ४८ ॥ दोनों अपने
विक्रमसे विजय पानेके योग्य थे दोनों समरसे शत्रुको विना जीते लौटने
न थे ॥ ४९ ॥

प्रहस्तने बडे बलसे नीलके माथेमें मूसलका प्रहार किया ॥ ५० ॥
बहते हुए नीलने एक भारी वृक्ष उखाड प्रहस्तकी छातीमें मारा ॥
प्रहस्त उस प्रहारको तुच्छ समझ मूसल ले नीलकी ओर दौडा ॥
उसको सामने आते देख नीलने एक बडी शिला उखाड ली और ॥
प्रहस्तके शिरपर जल्दीसे पटक दी जिससे उसके शिरके अनेकखण्ड
गये ॥ ५४ ॥ उस शिला प्रहारसे प्रहस्त निर्जीव हो पृथ्वीपर गिर पडा।
प्राण, तेज, धैर्य और इन्द्रियहीन वह प्रहस्त जड होकर उखडे हुए

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पपात सहसा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः ५६
विभिन्नशिरसस्तस्य बहु सुस्राव शोणितम्।
शरीरादपि सुस्राव गिरेः प्रस्रवणो यथा ५७
हते प्रहस्ते नीलेन तदकम्प्यं महाबलम्।
राक्षसानामहृष्टानां लङ्कामभिजगाम ह ५८
न शेकुः समवस्थातुं निहते वाहिनीपतौ।
सेतुबन्धं समासाद्य विशीर्णं सलिलं यथा ५९
हते तस्मिंश्चमूमुख्ये राक्षसास्ते निरुद्यमाः।
रक्षःपतिगृहं गत्वा ध्यानमूकत्वमागताः॥
प्राप्ताः शोकार्णवं तीव्रं विसंज्ञा इव ते भवन् ६०
ततस्तु नीलो विजयी महाबलः प्रशस्यमानः सुकृतेन कर्मणा।
समेत्य रामेण सलक्ष्मणेन प्रहृष्टरूपस्तु बभूव यूथपः ६१

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे अष्टपंचाशः सर्गः॥५८॥ [२२२३]

समान पृथ्वीपर गिर पडा॥ ५६॥ और पर्वतसे जिस प्रकार झरना बहता है उस प्रकार उसके छिन्नभिन्न हुए मस्तकसे व शरीरसे अत्यन्त रक्तस्राव होने लगा॥ ५७॥ अस्तु। नील प्रहस्तका वध करनेपर हर्षरहित राक्षसोंसे अजय प्रचंड वानरसेना लेकर लंकाकी तरफ चलने लगा॥ ५८॥ क्योंकि टूटे हुए बांधके नजदीक जल आजानेपर जिस प्रकार स्थिर नहीं रह सकता उस प्रकार सेनापतिके वध होनेसे वे राक्षस गण समरांगणमें स्थिर नहीं रह सके॥ ५९॥ प्रधान सेनापति प्रहस्तका वध होनेसे राक्षसोंमें उत्साह नहीं रहा और अत्यंत शोकसागरमें निमग्न हो वे मूर्च्छितसे हो गये॥ ६०॥ इसके बाद सुन्दर पराक्रम करनेके कारण महाबलाढ्य विजयी नीलकी प्रशंसा होने लगी तब लक्ष्मणसहित रामसे मिलनेके कारण उस सेनाधिपतिको अत्यन्त आनन्द हुआ॥ ६१॥

यहां ५८ वां सर्ग समाप्त हुआ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

॥ एकोनषष्टितमः सर्गः ॥

तस्मिन्हते राक्षससैन्यपाले प्लवङ्गमानामृषभेण युद्धे।
भीमायुधं सागरवेगतुल्यं विदुद्रुवे राक्षसराजसैन्यम् ॥
गत्वा तु रक्षोऽधिपतेः शशंसुः सेनापतिं पावकसूनुशस्तं।
तच्चापि तेषां वचनं निशम्य रक्षोधिपः क्रोधवशं जगाम॥
सङ्ख्ये प्रहस्तं निहतं निशम्य क्रोधार्दितः शोकपरीतचेताः।
उवाच तान्राक्षसयूथमुख्यानिन्द्रो यथा निर्जरयूथमुख्यान्
नावज्ञा रिपवे कार्या यैरिन्द्रबलसादनः।
सूदितः सैन्यपालो मे सानुयात्रः सकुञ्जरः
सोऽहं रिपुविनाशाय विजयायाविचारयन्।
स्वयमेव गमिष्यामि रणशीर्षं तदद्भुतम्
अद्य तद्वानरानीकं रामं च सहलक्ष्मणम्।
निर्दहिष्यामि बाणौघैर्वनं दीप्तैरिवाग्निभिः
स एवमुक्त्वा ज्वलनप्रकाशं रथं तुरङ्गोत्तमराजियुक्तम्।
प्रकाशमानं वपुषा ज्वलन्तं समारुरोहामरराजशत्रुः
स शङ्खभेरीपणवप्रणादैरास्फोटितक्ष्वेडितसिंहनादैः।
पुण्यैः स्तवैश्चापि सुपूज्यमानस्तदा ययौ राक्षसराजमुख्यः
स शैलजीमूतनिकाशरूपैर्मांसाशनैः पावकदीप्तनेत्रैः।

नीलके प्रहस्तको मार डालनेपर रावणकी सेना भाग खडी हुई ॥ १ ॥ और राक्षसेंद्रके पास जा प्रहस्तका मारना कहा ॥ २ ॥ प्रहस्तको मरा सुन शोकसे पीडित रावण अन्य सेनापतियोंसे बोला ॥ ३ ॥ जिन शत्रुओंने प्रहस्तको मार डाला उन शत्रुओंको तुच्छ न समझना चाहिये ॥ ४ ॥ मैं स्वयं ही विजयके लिये समर भूमिको जाऊंगा ॥ ५ ॥ और बाणोंसे वानरसेना व राम लक्ष्मणको भस्म कर दूंगा ॥ ६ ॥ इतना कह उत्तम अश्वों युक्त रथपर स्वयं चढा ॥ ७ ॥

शङ्खभेरी नरसिंहा आदि बाजा तथा वीरोंके सिंहनाद द्वारा पूजित किया गया रावण चला ॥ ८ ॥ पर्वताकार मेघाकार व अग्नि समान

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बभौ वृतो राक्षसराजमुख्यो भूतैर्वृतो रुद्र इवामरेशः ९
ततो नगर्याः सहसा महौजा निष्क्रम्य तद्वानरसैन्यमुग्रम् ।
महार्णवाभ्रस्तनितं ददर्श समुद्यतं पादपशैलहस्तम् १०
तद्राक्षसानीकमतिप्रचण्डमालोक्य रामो भुजगेन्द्रबाहुः ।
विभीषणं शस्त्रभृतां वरिष्ठमुवाच सेनानुगतः पृथुश्रीः ११
नानापताकाध्वजछत्रजुष्टं प्रासासिशूलायुधशस्त्रजुष्टम् ।
कस्येदमक्षोभ्यमभीरुजुष्टं सैन्यं महेन्द्रोपमनागजुष्टम् १२
ततस्तु रामस्य निशम्य वाक्यं विभीषणः शक्रसमानवीर्यः ।
शशंस रामस्य बलप्रवेकं महात्मनां राक्षसपुङ्गवानाम् १३
योऽसौ गजस्कन्धगतो महात्मा नवोदिताकोंपमताम्रवक्त्रः ।
संकम्पयन्नागशिरोऽभ्युपैति ह्यकम्पनं त्वेनमवेहि राजन् १४
योऽसौ रथस्थो मृगराजकेतुर्धुन्वन्धनुः शक्रधनुः प्रकाशम् ।
करीव भात्युग्रविवृत्तदंष्ट्रः स इन्द्रजिन्नाम वरप्रधानः १५
यश्चैष विन्ध्यास्तमहेन्द्रकल्पो धन्वी रथस्थोऽतिरथोऽतिवीरः ।
विस्फारयंश्चापमतुल्यमानं नाम्नातिकायोऽतिविवृद्धकायः १६
योऽसौ नवार्कोदितताम्रचक्षुरारुह्य घण्टानिनदप्रणादम् ।
गजं खरं गर्जति वै महात्मा महोदरो नाम स एष वीरः १७

लाल नेत्रवाले राक्षसोंके संग रावण शोभित हुआ ॥ ९ ॥ लङ्कासे बाहर निकल रावणने वानरोंकी अति भयंकर सेना देखी ॥ १० ॥ प्रचण्ड राक्षस सेनाको देख राम विभीषणसे बोले ॥ ११ ॥ कि नाना पताका छत्र खड्गादि आयुध तथा राक्षसोंसे युक्त हाथियोंसे सेवित अचल यह किसकी सेना है ॥१२॥ तब विभीषण राक्षसोंकी सेनाकी बखान करने लगा ॥१३॥ हे राजन् ! यह जो अरुणमुख हाथीके ऊपर चढा आता है यह दूसरा अकम्पन है ॥ १४ ॥ जो सिंहालिखित पताका युक्त रथपर चढा बडे बडे दांत निकले हाथीके तुल्य शोभित है यह मेघनाद है ॥ १५ ॥ जो विन्ध्या-चलके समान शरीर व धनुष धारे रथपर सवार धनुष टंकोरता आता है यह अतिकाय है ॥ १६ ॥ यह जो लाल नेत्र किये घण्टा बजाते हाथीपर चढा कठोर शब्द करता आता है महोदर है ॥ १७ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

योऽसौ हयं काञ्चनचित्रभाण्डमारुह्य संध्याभ्रगिरिप्रकाशः।
प्रासं समुद्यम्य मरीचिनद्धं पिशाच एषोऽशनितुल्यवेगः
यश्चैष शूलं निशितं प्रगृह्य विद्युत्प्रभं किङ्करवज्रवेगम् ।
वृषेन्द्रमास्थाय शशिप्रकाशमायाति योऽसौ त्रिशिरा यशस्वी
असौ च जीमूतनिकाशरूपः कुम्भः पृथुव्यूढसुजातवक्षाः।
समाहितः पन्नगराजकेतुर्विस्फारयन्याति धनुर्विधुन्वन्
यश्चैष जाम्बूनदवज्रजुष्टं दीप्तं सधूमं परिघं प्रगृह्य ।
आयाति रक्षोबलकेतुभूतो योऽसौ निकुम्भोऽद्भुतवीरकर्मा
यश्चैष चापासिशरौघजुष्टं पताकिनं पावकदीप्तरूपम् ।
रथं समास्थाय विभात्युदग्रो नरान्तकोऽसौ नगशृङ्गयोधी
यश्चैष नानाविधघोररूपैर्व्याघ्रोष्ट्रनागेन्द्रमृगाश्ववक्त्रैः ।
भूतैर्वृतो भाति विवृत्तनेत्रैर्योऽसौ सुराणामपि दर्पहन्ता
यत्रैतदिन्दुप्रतिमं विभाति च्छत्रं सितं सूक्ष्मशलाकमग्र्यम्।
अत्रैव रक्षोऽधिपतिर्महात्मा भूतैर्वृतो रुद्र इवावभाति
असौ किरीटी चलकुण्डलास्यो नगेन्द्रविन्ध्योपमभीमकायः।
महेन्द्रवैवस्वतदर्पहन्ता रक्षोऽधिपः सूर्य इवावभाति

जो भूषित घोडेपर सवार सन्ध्याके बादलके समान प्रकाशित है च्याकार प्रास हाथमें लिये आता है पिशाच राक्षस है ॥ १८ ॥ यह वेगवान् तीक्ष्ण शूल लिये सफेद बैलपर चढा आता है यह त्रि है ॥ १९ ॥ यह जो बडी चौडी छातीवाला है जिसकी पताकामें चिन्ह है यह कुम्भ है ॥ २० ॥ यह जो सुवर्ण हीराजटित परिघ चला आता है यह निकुम्भ है ॥ २१ ॥ यह जो रथपर चढा अति दिखाई देता है यह नरान्तक है ॥ २२ ॥ यह जो नाना व्याघ्र ऊंट मृग घोडोंके समान मुखवाले और बडे बडे नेत्रवाले भूतों शोभित ॥ २३ ॥ है जिसके ऊपर सूक्ष्म कमानीका छत्र लगा है वह रा रावण है ॥ २४ ॥

यह मुकुट धरे कुण्डल पहिने भयङ्कर शरीरवाला इन्द्रका भी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रत्युवाच ततो रामो विभीषणमरिन्दमः।
अहो दीप्तमहातेजा रावणो राक्षसेश्वरः २६
आदित्य इव दुष्प्रेक्ष्यो रश्मिभिर्भाति रावणः।
न व्यक्तं लक्षये ह्यस्य रूपं तेजः समावृतम् २७
देवदानववीराणां वपुर्नैवंविधं भवेत्।
यादृशं राक्षसेन्द्रस्य वपुरेतद्विराजते २८
सर्वे पर्वतसंकाशाः सर्वे पर्वतयोधिनः।
सर्वे दीप्तायुधधरा योधास्तस्य महात्मनः २९
विभाति रक्षोराजोऽसौ प्रदीप्तैर्भीमदर्शनैः।
भूतैः परिवृतैस्तीक्ष्णैर्देहवद्भिरिवान्तकः ३०
दिष्ट्यायमद्य पापात्मा मम दृष्टिपथं गतः।
अद्य क्रोधं विमोक्ष्यामि सीताहरणसंभवम् ३१
एवमुक्त्वा ततो रामो धनुरादाय वीर्यवान्।
लक्ष्मणानुचरस्तस्थौ समुद्धृत्य शरोत्तमम् ३२
ततः स रक्षोऽधिपतिर्महात्मा रक्षांसि तान्याह महाबलानि।
द्वारेषु चर्यागृहगोपुरेषु सुनिर्वृतास्तिष्ठत निर्विशङ्काः ३३
इहागतं मां सहितं भवद्भिर्वनौकसाश्छिद्रमिदं विदित्वा।

तोड़नेवाला रावण शोभित होरहा है ॥ २५ ॥ यह सुन राम बोले कि रावणकी दीप्ति तथा तेज सराहनीय है ॥ २६ ॥ यह रावण तो सूर्यके तुल्य दुष्प्रेक्ष्य है तेजके कारण इसका रूप जान ही नहीं पडता ॥ २७ ॥ जैसा शरीर रावणका है वैसा तो देव दानवोंका भी नहीं ॥ २८ ॥ इस महात्माके सब योद्धा पर्वताकार हैं सब चमकते हुए शस्त्र धारे हैं ॥ २९ ॥ यह रावण भयङ्कर सेवकोंसे सेवित अति शोभित होता है ॥ ३० ॥ यह हर्षकी बात है कि यह आज मेरे सामने आया है ॥ ३१ ॥

यह कह राम लक्ष्मणको पीछे कर धनुष बाण हाथमें ले खडे हो गये ॥ ३२ ॥ तथा रावण अपने राक्षसपुङ्गवोंसे बोला कि तुम लोग महामार्गं व अन्य द्वारोंपर खडे हो ॥ ३३ ॥ क्योंकि सब लोगों सहित हमको

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शून्यां पुरीं दुष्प्रसहां प्रमथ्य प्रधर्षयेयुः सहसा समेताः
विसर्जयित्वा सचिवांस्ततस्तान्गतेषु रक्षःसु यथानियोगम्।
व्यदारयद्वानरसागरौघं महाझषः पूर्णमिवार्णवौघम्
तमापतन्तं सहसा समीक्ष्य दीप्तेषुचापं युधि राक्षसेन्द्रम्।
महत्समुत्पाट्य महीधराग्रं दुद्राव रक्षोऽधिपतिं हरीशः
तच्छैलशृङ्गं बहुवृक्षसानुं प्रगृह्य चिक्षेप निशाचराय।
तमापतन्तं सहसा समीक्ष्य चिच्छेद बाणैस्तपनीयपुङ्खैः
तस्मिन्प्रवृद्धोत्तमसानुवृक्षे शृङ्गे विदीर्णे पतिते पृथिव्याम्।
महाहिकल्पं शरमन्तकाभं समादधे राक्षसलोकनाथः
स तं गृहीत्वाऽनिलतुल्यवेगं सविस्फुलिङ्गज्वलनप्रकाशम्।
बाणं महेन्द्राशनितुल्यवेगं चिक्षेप सुग्रीववधाय रुष्टः
स सायको रावणबाहुमुक्तः शक्राशनिस्पर्शवपुःप्रकाशम्।
सुग्रीवमासाद्य बिभेद वेगाद्गुहेरिता क्रौञ्चमिवोग्रशक्तिः
स सायकार्तो विपरीतचेताः कूजन्पृथिव्यां निपपात वीरः।
तं वीक्ष्य भूमौ पतितं विसंज्ञं नेदुः प्रहृष्टा युधि यातुधानाः

यहां आया जान छिद्र पा वानरगण शून्यपुरीमें घुस जावेंगे और सब प्रध्वंस कर डालेंगे ॥ ३४ ॥ जब इन सबको लौटा दिया और वे चले तो वह वानरोंके सागर रूप जलसमूहको विदारने लगा ॥ ३५ ॥ बाण लिये रावणको सामने आते देख एक बडा भारी गिरि उखाड़ सुग्रीव उसकी ओर दौडा ॥ ३६ ॥

उस पर्वतशृंगको रावणके ऊपर फेंका पर रावणने बाणोंसे उसे डाला ॥ ३७ ॥ जब वह शिखर विदारण हो गिर पडा तब कराल रावणने लिया ॥ ३८ ॥ और क्रोधित हो उसे सुग्रीवके मार डालने छोडा ॥ ३९ ॥ वह बाण सुग्रीवको भेदन कर गया ॥ ४० ॥ बाण लगते मूर्च्छित हो सुग्रीव पृथ्वीपर गिर पडा उनको मूर्च्छित देख राक्षसोंने भारी नाद किया ॥ ४१ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततो गवाक्षो गवयः सुषेणस्त्वथर्षभो ज्योतिर्मुखो नलश्च।
शैलान्समुत्पाट्य विवृद्धकायाः प्रदुद्रुवुस्तं प्रति राक्षसेन्द्रम् ४२
तेषां प्रहारान्स चकार मोघान्रक्षोऽधिपो बाणशतैः शिताग्रैः।
तान्वानरेन्द्रानपि बाणजालैर्बिभेद जाम्बूनदचित्रपुङ्खैः।
ते वानरेन्द्रास्त्रिदशारिबाणैर्भिन्ना निपेतुर्भुवि भीमकायाः ४३
ततस्तु तद्वानरसैन्यमुग्रं प्रच्छादयामास स बाणजालैः ४४
ते वध्यमानाः पतिताश्च वीरा नानद्यमाना भयशल्यविद्धाः।
शाखामृगा रावणसायकार्ता जग्मुः शरण्यं शरणं स्म रामम् ४५
ततो महात्मा स धनुर्धनुष्मानादाय रामः सहसा जगाम।
तं लक्ष्मणः प्राञ्जलिरभ्युपेत्य उवाच रामं परमार्थयुक्तम् ४६

काममार्य सुपर्याप्तो वधायास्य दुरात्मनः।
विधमिष्याम्यहं चैतमनुजानीहि मां विभो ४७
तमब्रवीन्महातेजा रामः सत्यपराक्रमः।
गच्छ यत्नपरश्चापि भव लक्ष्मण संयुगे ४८
रावणो हि महावीर्यो रणेऽद्भुतपराक्रमः।
त्रैलोक्येनापि संक्रुद्धो दुष्प्रसह्यो न संशयः ४९

तब गवाक्ष गवय सुषेण ऋषभ ज्योतिर्मुख और नल वानर पर्वत शिखर ले रावणकी ओर दौडे ॥ ४२ ॥ पर रावणने उनके प्रहार बाणोंसे काट कर निष्फल कर दिये और उनको भी बाणोंसे मारा रावणके बाणोंके लगनेसे वे छिन्नभिन्न हो गिर पडे ॥ ४३ ॥ तब रावणने बाणोंसे वानर सेनाको आच्छादित कर दिया वे पीडित हो रामकी शरणमें गए ॥४४–४५॥ तब राम शीघ्र धनुष उठा चले पर लक्ष्मण उनके समीप आ हाथ जोड बोले ॥ ४६ ॥

हे आर्य ! इस दुष्टात्माका वध करनेमें मैं समर्थ हूं इससे मुझहीको आज्ञा दीजिये ॥ ४७ ॥ यह सुन राम बोले कि हे लक्ष्मण तुम्हीं जाओ, पर यत्नपूर्वक कार्य करना ॥ ४८ ॥ वह रावण महा वीर्यवान् है ॥ ४९ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तस्य च्छिद्राणि मार्गस्व स्वच्छिद्राणि च लक्षय ।
चक्षुषा धनुषात्मानं गोपायस्व समाहितः ५०
राघवस्य वचः श्रुत्वा संपरिष्वज्य पूज्य च ।
अभिवाद्य च रामाय ययौ सौमित्रिराहवे ५१
स रावणं वारणहस्तबाहुं ददर्श भीमोद्यतदीप्तचापम् ।
प्रच्छादयन्तं शरवृष्टिजालैस्तान्वानरान्भिन्नविकीर्णदेहान् ५२
तमालोक्य महातेजा हनूमान्मारुतात्मजः ।
निवार्य शरजालानि विदुद्राव स रावणम् ५३
रथं तस्य समासाद्य बाहुमुद्यम्य दक्षिणम् ।
त्रासयन्रावणं धीमान्हनूमान्वाक्यमब्रवीत् ५४
देवदानवगन्धर्वैर्यक्षैश्च सह राक्षसैः ।
अवध्यत्वं त्वया प्राप्तं वानरेभ्यस्तु ते भयम् ५५
एष मे दक्षिणो बाहुः पञ्चशाखः समुद्यतः ।
विधमिष्यति ते देहे भूतात्मानं चिरोषितम् ५६
श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं रावणो भीमविक्रमः ।
संरक्तनयनः क्रोधादिदं वचनमब्रवीत् ५७
क्षिप्रं प्रहर निःशङ्कं स्थिरां कीर्तिमवाप्नुहि ।
ततस्त्वां ज्ञातविक्रान्तं नाशयिष्यामि वानर ५८

रावणके छिद्र ढूंढते रहना स्वयं सावधान हो अपनी रक्षा करते रहना ॥ ५० ॥ रामके वचन सुन लक्ष्मण उनसे मिल प्रणाम कर चल दिये ॥ ५१ ॥ और वानरोंके ऊपर बाण वर्षा करते रावणको देखा ॥ ५२ ॥

हनुमान् रावणको देख उसके बाण जालको विदीर्ण कर सामने दौडे ॥ ५३ ॥ और रावणके रथपर चढ उसको डराते हुए बोले ॥ ५४ ॥ कि देवता आदिसे तुम अवध्य हो पर वानरोंसे तो तुमको भय है ॥ ५५ ॥ इससे यह मेरा दहिना हाथ तुम्हारे प्राणोंको बाहर निकाल देगा ॥ ५६ ॥ हनुमान्के वचन सुन रावण क्रोधसे बोला ॥ ५७ ॥ हे वानर ! निशंक हाथ चलाओ और स्थिर कीर्तिको प्राप्त हो फिर तुमको मारूंगा ॥ ५८ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रावणस्य वचः श्रुत्वा वायुसूनुर्वचोऽब्रवीत् ।
प्रहतं हि मया पूर्वमक्षं तव सुतं स्मर ५९
एवमुक्तो महातेजा रावणो राक्षसेश्वरः ।
आजघानानिलसुतं तलेनोरसि वीर्यवान् ६०
स तलाभिहतस्तेन चचाल च मुहुर्मुहुः ६१
स्थितो मुहूर्तं तेजस्वी स्थैर्यं कृत्वा महामतिः ।
आजघान च संक्रुद्धस्तलेनैवामरद्विषम् ६२
ततः स तेनाभिहतो वानरेण महात्मना ।
दशग्रीवः समाधूतो यथा भूमिचलेऽचलः ६३
सङ्ग्रामे तं तथा दृष्ट्वा रावणं तलताडितम् ।
ऋषयो वानराः सिद्धा नेदुर्देवाः सुरासुरैः ६४
अथाश्वस्य महातेजा रावणो वाक्यमब्रवीत् ।
साधु वानर वीर्येण श्लाघनीयोऽसि मे रिपुः ॥
रावणेनैवमुक्तस्तु मारुतिर्वाक्यमब्रवीत् ६५
धिगस्तु मम वीर्यस्य यत्त्वं जीवसि रावण ।
सकृत्तु प्रहरेदानीं दुर्बुद्धे किं विकत्थसे ६६
ततस्त्वां मामको मुष्टिर्नयिष्यति यमक्षयम् ।
ततो मारुतिवाक्येन कोपस्तस्य प्रजज्वले ६७

सुन हनुमान् बोला कि मैंने पूर्वमें तुम्हारे पुत्र अक्षयको मारा है उसकी याद करो ॥५९॥ यह सुन रावणने एक लात हनुमान्की छातीमें मारी ॥६०॥ बुद्धिमान् हनुमान्ने भी क्रोध कर रावणको लात ही से मारा ॥६१-६२॥ हनुमान्के प्रहारसे रावण ऐसा कांपा जैसे भूकम्पसे पहाड ॥ ६३ ॥ रावणको उस प्रकार व्याकुल देख सब ऋषि देवतादि हर्षित हो नाद करने लगे ॥ ६४ ॥ कुछ देर सुस्ता कर रावण बोला हे वानर ! शत्रु होनेपर भी लड़ाई करनेके योग्य हो ॥ ६५ ॥ इसपर हनुमान् बोले हे रावण जो तू जीते रहे इससे मेरे वीर्यको धिक्कार है ॥ ६६ ॥
रे मूर्ख ! एक बार तो प्रहार कर क्योंकि उसके पीछे तो मेरा मूका

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

संरक्तनयनो यत्नान्मुष्टिमावृत्य दक्षिणम् ।
पातयामास वेगेन वानरोरसि वीर्यवान् । ६८
हनूमान्वक्षसि व्यूढे संचचाल पुनःपुनः ।
विह्वलं तं तदा दृष्ट्वा हनूमन्तं महाबलम् ६९
रथेनातिरथः शीघ्रं नीलं प्रतिसमभ्यगात् ।
राक्षसानामधिपतिर्दशग्रीवः प्रतापवान् ७०
पन्नगप्रतिमैर्भीमैः परमर्माभिभेदनैः ।
शरैरादीपयामास नीलं हरिचमूपतिम् ७१
स शरौघसमायस्तो नीलो हरिचमूपतिः ।
करेणैकेन शैलाग्रं रक्षोऽधिपतयेऽसृजत् ७२
हनूमानपि तेजस्वी समाश्वस्तो महामनाः ।
विप्रेक्षमाणो युद्धेप्सुः सरोषमिदमब्रवीत् ७३
नीलेन सह संयुक्तं रावणं राक्षसेश्वरम् ।
अन्येन युध्यमानस्य न युक्तमभिधावनम् ७४
रावणोऽथ महातेजास्तं शृङ्गं सप्तभिः शरैः ।
आजघान सुतीक्ष्णाग्रैस्तद्विशीर्णं पपात ह ७५
तद्विशीर्णं गिरेः शृङ्गं दृष्ट्वा हरिचमूपतिः ।
कालाग्निरिव जज्वाल कोपेन परवीरहा ७६

तुम्हें यमपुर पहुंचावेगा ॥ ६७ ॥ रावणने क्रोधित हो बडे यत्नसे द
मूका बांध हनुमान्की छातीमें मारा ॥ ६८ ॥ छातीमें लगनेसे हनु
व्याकुल हो गया हनुमान्को विह्वल देख ॥ ६९ ॥ रावण रथपर
जल्दीसे नीलके पास पहुंचा और ॥ ७० ॥ सर्पाकार भयङ्कर ब
सेनापति नीलको मारा ॥ ७१ ॥ परन्तु बाण लगनेपर भी नीलने पर्वतका
शिखर रावणके ऊपर चलाया ॥ ७२ ॥

हनुमान्ने रावणको नीलके संग युद्ध करते देखा तो रावणसे बोला
कि अन्यके साथ युद्ध करते देख तुम्हारे ऊपर अब दौडना
नहीं ॥ ७४ ॥ रावणने तीक्ष्ण बाणोंसे नीलके उस शृंगको काट डाला
उस शृंगको कटा देख नीलने बडा क्रोध किया ॥ ७६ ॥ और साथ

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सोऽश्वकर्णद्रुमाञ्शालांश्चूतांश्चापि सुपुष्पितान्।
अन्यांश्च विविधान्वृक्षान्नीलश्चिक्षेप संयुगे ७७
स तान्वृक्षान्समासाद्य प्रतिचिच्छेद रावणः।
अभ्यवर्षच्च घोरेण शरवर्षेण पावकिम् ७८
अभिवृष्टः शरौघेण मेघेनेव महाबलः।
ह्रस्वं कृत्वा ततो रूपं ध्वजाग्रे निपपात ह ७९
पावकात्मजमालोक्य ध्वजाग्रे समवस्थितम्।
जज्वाल रावणः क्रोधात्ततो नीलो ननाद च ८०
ध्वजाग्रे धनुषश्चाग्रे किरीटाग्रे च तं हरिम्।
लक्ष्मणोऽथ हनूमांश्च रामश्चापि सुविस्मिताः ८१
रावणोऽपि महातेजाः कपिलाघवविस्मितः।
अस्त्रमाहारयामास दीप्तमाग्नेयमद्भुतम् ८२
ततस्ते चुक्रुशुर्हृष्टा लब्धलक्षाः प्लवङ्गमाः।
नीललाघवसंभ्रान्तं दृष्ट्वा रावणमाहवे ८३
वानराणां च नादेन संरब्धो रावणस्तदा।
संभ्रमाविष्टहृदयो न किंचित्प्रत्यपद्यत ८४
आग्नेयेनापि संयुक्तं गृहीत्वा रावणः शरम्।
ध्वजशीर्षस्थितं नीलमुदैक्षत निशाचरः ८५

पेड युद्धमें उखाड उखाड फेकने लगा ॥ ७७ ॥ रावणने उन वृक्षोंको बाणोंसे काट डाला और नीलपर बहुत बाण छोडे ॥ ७८ ॥ जब बाणोंकी वर्षा होनेसे अपना रूप छोटा कर नील रावणके ध्वजाके ऊपर कूद गया ॥ ७९ ॥ नीलको ध्वजाके आगे स्थित देख रावण बडा क्रोधित हुआ ॥ ८० ॥ नीलको कभी ध्वजाके आगे कभी धनुषके आगे स्थित देख लक्ष्मण हनुमान और राम सब बडा अचम्भा करने लगे ॥ ८१ ॥ रावण भी नीलकी लाघवता देख अति विस्मित हुआ ॥ ८२ ॥ रावणको सम्भ्रान्त देख वानरगण हर्षित हो नाद करने लगे ॥ ८३ ॥ वानरोंके नादसे रावण क्रुद्ध हुआ ॥ ८४ ॥ और ध्वजाके अगले भागपर बैठे नीलको देख

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततोऽब्रवीन्महातेजा रावणो राक्षसेश्वरः।
कपे लाघवयुक्तोऽसि मायया परया सह ८६
जीवितं खलु रक्षस्व यदि शक्तोऽसि वानर।
तानि तान्यात्मरूपाणि सृजसि त्वमनेकशः ८७
तथापि त्वां मया मुक्तः सायकोऽस्त्रप्रयोजितः।
जीवितं परिरक्षन्तं जीविताद्भ्रंशयिष्यति ८८
एवमुक्त्वा महाबाहू रावणो राक्षसेश्वरः।
संधाय बाणमस्त्रेण चमूपतिमताडयत् ८९
सोऽस्त्रमुक्तेन बाणेन नीलो वक्षसि ताडितः।
निर्दह्यमानः सहसा स पपात महीतले ९०
पितृमाहात्म्यसंयोगादात्मनश्चापि तेजसा।
जानुभ्यामपतद्भूमौ न तु प्राणैर्वियुज्यत ९१
विसंज्ञं वानरं दृष्ट्वा दशग्रीवो रणोत्सुकः।
रथेनाम्बुदनादेन सौमित्रिमभिदुद्रुवे ९२
आसाद्य रणमध्ये तु वारयित्वा स्थितो ज्वलन्।
धनुर्विस्फारयामास राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् ९३
तमाह सौमित्रिरदीनसत्त्वो विस्फारयन्तं धनुरप्रमेयम्।
अवेहि मामद्य निशाचरेन्द्र न वानरांस्त्वं प्रतियोद्धुमर्हसि ९४

बोला ॥ ८५ ॥ कि हे वानर ! तुम बडी मायासे छोटा रूप ध
हो ॥ ८६ ॥ परन्तु अब जो समर्थवान् हो तो अपने प्राणोंकी
करो ॥ ८७ ॥ तौ भी मेरा छोडा अभिमन्त्रित बाण तुम्हारे प्राणोंका
कर देगा ॥ ८८ ॥ यह कह रावणने आग्नेयास्त्रसे नीलको मारा ॥
वह बाण नीलकी छातीमें लगा जिससे वह पृथ्वीपर गिर पडा ॥
परन्तु तेजसे केवल जांघोंके बल पृथ्वीपर गिरा मरनेसे बच गया ॥
नीलको मूर्च्छित देख रावण रथपर चढ लक्ष्मणकी ओर दौडा ॥
लक्ष्मणके समीप जा प्रतापी रावणने धनुषपर टङ्कोर दी ॥ ९३ ॥
लक्ष्मण बोले कि राक्षसराज ! अब मेरा बल आज देखो वानरोंसे यु

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स तस्य वाक्यं प्रतिपूर्णघोषं ज्याशब्दमुग्रं च निशम्य राजा।
आसाद्य सौमित्रिमुपस्थितं तं रोषान्वितं वाचमुवाच रक्षः ९५
दिष्ट्यासि मे राघव दृष्टिमार्गं प्राप्तोऽन्तगामी विपरीतबुद्धिः।
अस्मिन्क्षणे यास्यसि मृत्युलोकं संसाद्यमानो मम बाणजालैः ९६
तमाह सौमित्रिरविस्मयानो गर्जन्तमुद्वृत्तशिताग्रदंष्ट्रम्।
राजन्न गर्जन्ति महाप्रभावा विकत्थसे पापकृतां वरिष्ठ ९७
जानामि वीर्यं तव राक्षसेन्द्र बलं प्रतापं च पराक्रमं च।
अवस्थितोऽहं शरचापपाणिरागच्छ किं मोघविकत्थनेन ९८
स एवमुक्तः कुपितः ससर्ज रक्षोऽधिपः सप्त शरान्सुपुङ्खान्।
ताल्लँक्ष्मणः काञ्चनचित्रपुङ्खैश्चिच्छेद बाणैर्निशिताग्रधारैः ९९
तान्प्रेक्षमाणः सहसा निकृत्तान्निकृत्तभोगानिव पन्नगेन्द्रान्।
लङ्केश्वरः क्रोधवशं जगाम ससर्ज चान्यान्निशितान्पृषत्कान् १००
स बाणवर्षं तु ववर्ष तीव्रं रामानुजः कार्मुकसंप्रयुक्तम्।
क्षुरार्धचन्द्रोत्तमकर्णभल्लैः शरांश्च चिच्छेद न चुक्षुभे च १०१
स बाणजालान्यपि तानि तानि मोघानि पश्यंस्त्रिदशारिराजः।
विसिस्मिये लक्ष्मणलाघवेन पुनश्च बाणान्निशितान्मुमोच १०२

...॥ ९४ ॥ रावण लक्ष्मणका वचन सुन समीपस्थ लक्ष्मणसे बोला ॥९५॥ ...रे लक्ष्मण! विपरीत बुद्धि होजानेके कारण ही तुम मेरे आगे आये हो ...से इसी क्षण मृत्युलोकको प्राप्त होओगे ॥ ९६ ॥ यह सुन लक्ष्मण ...ते हुए रावणसे बोले कि हे राजन् महाप्रभाववाले लोग गर्जते नहीं ...तुम अति पापी होनेसे बकते हो ॥ ९७ ॥ हे राक्षसेंद्र मैं तुम्हारा वीर्य ...र पराक्रम जानता हूं व्यर्थ बकनेसे क्या? ॥ ९८ ॥ यह सुन रावणने ...पित हो सात बाण चलाए उनको लक्ष्मणने तीक्ष्ण बाणोंसे काट ...डाले ॥ ९९ ॥ उन बाणोंको कटे हुए देख रावणने क्रोधमें भर और तीक्ष्ण ...छोडे ॥ १०० ॥

...रावणके बाणोंको लक्ष्मणने अपने बाणोंसे काट डाला और स्वयं कुछ ...व्यथित न हुए ॥ १०१ ॥ उन बाणोंकी निष्फलता देख विस्मित हो रावणने

*

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स लक्ष्मणश्चापि शिताग्निशिताग्रान्महेन्द्रतुल्योऽशनिभीमवेगान्।
संधाय चापे ज्वलनप्रकाशान्ससर्ज रक्षोऽधिपतेर्वधाय ॥
स तान्प्रचिच्छेद हि राक्षसेन्द्रः शिताञ्शराँल्लक्ष्मणमाजघान।
शरेण कालाग्निसमप्रभेण स्वयंभुदत्तेन ललाटदेशे ॥
स लक्ष्मणो रावणसायकार्तश्चचाल चापं शिथिलं प्रगृह्य।
पुनश्च संज्ञां प्रतिलभ्य कृच्छ्राच्चिच्छेद चापं त्रिदशेन्द्रशत्रोः ॥
निकृत्तचापं त्रिभिराजघान बाणैस्तदा दाशरथिः शिताग्रैः।
स सायकार्तो विचचाल राजा कृच्छ्राच्च संज्ञां पुनराससाद ॥
सुकृत्तचापः शरताडितश्च मेदार्द्रगात्रो रुधिरावसिक्तः।
जग्राह शक्तिं स्वयमुग्रशक्तिः स्वयंभुदत्तां युधि देवशत्रुः ॥
स तां सधूमानलसंनिकाशां वित्रासनीं संयति वानराणाम्।
चिक्षेप शक्तिं तरसा ज्वलन्तीं सौमित्रये राक्षसराष्ट्रनाथः ॥
तामापतन्तीं भरतानुजोऽस्त्रैर्जघान बाणैश्च हुताग्निकल्पैः।
तथापि सा तस्य विवेश शक्तिर्भुजान्तरं दाशरथेर्विशालम् ॥
स शक्तिमाञ्शक्तिसमाहतः सन्पपात भूमौ स रघुप्रवीरः।
तं विह्वलन्तं सहसाभ्युपेत्य जग्राह राजा तरसा भुजाभ्याम् ॥

फिर तीक्ष्ण बाण चलाये ॥ १०२ ॥ लक्ष्मणने भी रावणके मार अभिप्रायसे तीक्ष्ण वेगवाले बाण छोडे ॥ १०३ ॥ पर रावणने लक्ष्मणके चलाये हुए तीक्ष्ण बाणोंको काट फिर स्वयम्भूदत्त बाण लक्ष्मणके मस्तकमें मारा ॥ १०४ ॥ इससे लक्ष्मण चलायमान होगये और बडे कष्टसे सावधान हो रावणका धनुष काट डाला फिर रावणको पैने बाणोंसे मारा, रावण मूर्च्छित होगया ॥ १०५-१०६ ॥

बाणसे ताडित रावणने ब्रह्मा की दी हुई बडी प्रचण्ड शक्ति ग्रहण की ॥ १०७ ॥ धूमलक्षित अग्निके समान प्रकाशित शक्ति राक्षसराजने लक्ष्मणके ऊपर चलाई ॥ १०८ ॥ उसको आते देख लक्ष्मणने बाणोंसे काटा तौ भी वह छातीमें प्रवेश कर गई ॥ १०९ ॥ शक्तिके लगनेसे लक्ष्मण भूमिमें गिर पडे उनको विह्वल देख रावण अपने दोनों हाथोंसे पकड

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हिमवान्मन्दरो मेरुस्त्रैलोक्यं वा सहामरैः ।
शक्यं भुजाभ्यामुद्धर्तुं न शक्यो भरतानुजः १११
शक्त्या ब्राह्म्या तु सौमित्रिस्ताडितोऽपि स्तनान्तरे ।
विष्णोरमीमांस्यभागमात्मानं प्रत्यनुस्मरत् ११२
ततो दानवदर्पघ्नं सौमित्रिं देवकण्टकः ।
तं पीडयित्वा बाहुभ्यां न प्रभुर्लङ्घनेऽभवत् ११३
ततः क्रुद्धो वायुसुतो रावणं समभिद्रवत् ।
आजघानोरसि क्रुद्धो वज्रकल्पेन मुष्टिना ११४
तेन मुष्टिप्रहारेण रावणो राक्षसेश्वरः ।
जानुभ्यामगमद्भूमौ चचाल च पपात च ११५
आस्यैश्च नेत्रैः श्रवणैः पपात रुधिरं बहु ।
विघूर्णमानो निश्चेष्टो रथोपस्थ उपाविशत् ११६
विसंज्ञो मूर्च्छितश्चासीन्न च स्थानं समालभत् ।
विसंज्ञं रावणं दृष्ट्वा समरे भीमविक्रमम् ११७
ऋषयो वानराश्चैव नेदुर्देवाश्च सासुराः ११८
हनूमानथ तेजस्वी लक्ष्मणं रावणार्दितम् ।

...ा ॥ ११० ॥ यद्यपि हिमवान् और सुमेरु पर्वत तथा तीनों लोक भी ...ा उठा लेता था, पर लक्ष्मणको न उठा सका ॥ १११ ॥ यद्यपि ब्रह्म-...के लगनेसे लक्ष्मण ताडित भी हुए तो भी श्रीरामका स्मरण करते ...से रावण उनको न उठा सका ॥ ११२ ॥

...ब लक्ष्मणको देवशत्रु रावणने अपनी भुजोंसे पीडित किया, पर ...को चलायमान न कर सका ॥ ११३ ॥ तब हनूमान रावणके आगे दौडा ...क्रुद्ध हो एक घूंसा रावणकी छातीमें मारा ॥ ११४ ॥ उस घूंसेके लग-... रावण मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिर पडा ॥ ११५ ॥ उसके मुखों, नेत्रों और ...नोंसे रक्त बहने लगा इससे विह्वल हो गिर पडा ॥ ११६ ॥ समरमें भीम ...मी रावणको मूर्च्छित देख ॥ ११७ ॥ ऋषि, वानर, देवता तथा असुरगण ...हो नाद करने लगे ॥ ११८ ॥ हनूमान् लक्ष्मणको अपनी दोनों

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आनयद्राघवाभ्याशं बाहुभ्यां परिगृह्य तम् ११९
वायुसूनोः सुहृत्त्वेन भक्त्या परमया च सः ।
शत्रूणामप्यकम्प्योऽपि लघुत्वमगमत्कपेः १२०
तं समुत्सृज्य सा शक्तिः सौमित्रिं युधि निर्जितम् ।
रावणस्य रथे तस्मिन्स्थानं पुनरुपागमत् १२१
रावणोऽपि महातेजाः प्राप्य संज्ञां महाहवे ।
आददे निशितान्बाणाञ्जग्राह च महद्धनुः १२२
आश्वस्तश्च विशल्यश्च लक्ष्मणः शत्रुसूदनः ।
विष्णोर्भागममीमांस्यमात्मानं प्रत्यनुस्मरन् १२३
निपातितमहावीरां वानराणां महाचमूम् ।
राघवस्तु रणे दृष्ट्वा रावणं समभिद्रवत् १२४
अथैनमनुसंक्रम्य हनूमान्वाक्यमब्रवीत् ।
मम पृष्ठं समारुह्य राक्षसं शास्तुमर्हसि १२५
विष्णुर्यथा गरुत्मन्तमारुह्यामरवैरिणम् ।
तच्छ्रुत्वा राघवो वाक्यं वायुपुत्रेण भाषितम् १२६
अथारुरोह सहसा हनूमन्तं महाकपिम् ।
रथस्थं रावणं सङ्ख्ये ददर्श मनुजाधिपः १२७

भुजाओंसे उठा रामके पास लाया ॥ ११९ ॥ लक्ष्मण हनूमानके सं[...] व भक्तिसे प्रसन्न हो राम हलके होगये ॥ १२० ॥

समरमें निर्जित लक्ष्मणको छोड वह शक्ति रावणके रथपर फिर [...] होगई ॥ १२१ ॥ रावणने मूर्च्छा जागनेपर फिर बाण व धनुष हाथमें [...] किया ॥ १२२ ॥ लक्ष्मण भी निज आत्माका चिन्तन करते ही स्वस्थ [...] और उनकी सब व्यथा जाती रही ॥ १२३ ॥ वानरसेना निपातित देख [...] रावणके साथ युद्ध करनेको चले ॥ १२४ ॥ तब हनुमान रामके पास [...] बोले कि आप मेरी पीठपर चढ रावणको मारिये ॥ १२५ ॥ वायुपुत्र[...] वचन सुन राम हनूमान ॥ १२६ ॥ की पीठपर चढे और रावणको [...]

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तमालोक्य महातेजाः प्रदुद्राव स रावणम् ।
वैरोचनमिव क्रुद्धो विष्णुरभ्युद्यतायुधः १२८
ज्याशब्दमकरोत्तीव्रं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् ।
गिरा गम्भीरया रामो राक्षसेन्द्रमुवाच ह १२९
तिष्ठ तिष्ठ मम त्वं हि कृत्वा विप्रियमीदृशम् ।
क्व नु राक्षसशार्दूल गत्वा मोक्षमवाप्स्यसि १३०
यदीन्द्रवैवस्वतभास्करान्वा स्वयंभुवैश्वानरशंकरान्वा ।
गमिष्यसि त्वं दशधा दिशो वा तथापि मे नाद्य गतो विमोक्ष्यसे १३१
यश्चैष शक्त्या निहतस्त्वयाद्य गच्छन्विषादं सहसाभ्युपेत्य ।
स एष रक्षोगणराज मृत्युः सपुत्रपौत्रस्य तवाद्य युद्धे १३२
एतेन चात्यद्भुतदर्शनानि शरैर्जनस्थानकृतालयानि ।
चतुर्दशान्यात्तवरायुधानि रक्षःसहस्राणि निषूदितानि १३३
राघवस्य वचः श्रुत्वा राक्षसेन्द्रो महाबलः ।
वायुपुत्रं महावेगं वहन्तं राघवं रणे १३४
रोषेण महताविष्टः पूर्ववैरमनुस्मरन् ।
आजघान शरैर्दीप्तैः कालानलशिखोपमैः १३५
राक्षसेनाहते तस्य ताडितस्यापि सायकैः ।
स्वभावतेजोयुक्तस्य भूयस्तेजोऽभ्यवर्धत १३६

...चा देखा ॥ १२७ ॥ राम रावणको देख उसके सामने चले ॥ १२८ ॥ पहुंचते ही कठोर प्रत्यंचाका शब्द किया फिर गम्भीर स्वरसे राम रावणसे ...ले ॥ १२९ ॥ हे राक्षस शार्दूल खडे रहो मेरा अप्रिय कर न बचोगे ॥ १३० ॥ ...इन्द्र वरुण यम अग्नि ब्रह्मा किसीकी शरणमें चले जाओ पर अब नहीं बच ...सक्ते ॥ १३१ ॥ हे रावण जिस इन लक्ष्मणको तुमने शक्तिसे मारा इससे ...वही तुम्हारे पुत्र-पौत्रसमेत मृत्युके कारण हैं ॥ १३२ ॥ मैंने ही जनस्थान ...निवासी चौदह हजार राक्षस मारे हैं ॥ १३३ ॥ रावणने रामके वचन सुन ...हनुमानपर सवार रामपर ॥ १३४ ॥ बडा रोषकर कालाग्नि समान प्रकाशित ...बाण छोडे ॥ १३५ ॥

बाणोंसे ताडित होनेपर अति तेजस्वी हनूमानका तेज और भी अधिक

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ततो रामो महातेजा रावणेन कृतव्रणम्।
दृष्ट्वा प्लवगशार्दूलं क्रोधस्य वशमेयिवान्
तस्याभिसंक्रम्य रथं सचक्रं साश्वध्वजच्छत्रमहापताकम्।
ससारथिं साशनिशूलखड्गं रामः प्रचिच्छेद शितैः शराग्रैः
अथेन्द्रशत्रुं तरसा जघान बाणेन वज्राशनिसन्निभेन।
भुजान्तरे व्यूढसुजातरूपे वज्रेण मेरुं भगवानिवेन्द्रः
यो वज्रपाताशनिसंनिपातान्न चुक्षुभे नापि चचाल राजा।
स रामबाणाभिहतो भृशार्तश्चचाल चापं च मुमोच वीरः
तं विह्वलन्तं प्रसमीक्ष्य रामः समाददे दीप्तमथार्धचन्द्रम्।
तेनार्कवर्णं सहसा किरीटं विच्छेद रक्षोऽधिपतेर्महात्मा
तं निर्विषाशीविषसंनिकाशं शान्तार्चिषं सूर्यमिवाप्रकाशम्।
गतश्रियं कृत्तकिरीटकूटमुवाच रामो युधि राक्षसेन्द्रम्
कृतं त्वया कर्म महत्सुभीमं हतप्रवीरश्च कृतस्त्वयाहम्।
तस्मात्परिश्रान्त इति व्यवस्य न त्वां शरैर्मृत्युवशं नयामि
प्रयाहि जानामि रणार्दितस्त्वं प्रविश्य रात्रिंचरराज लंकाम्।
आश्वस्य निर्याहि रथी सधन्वी तदा बलं प्रेक्ष्यसि मे रथस्थः

बढा ॥ १३६ ॥ रामने हनुमानकी पीठमें रावणके मारनेसे घाव देख... भी रोष किया ॥१३७॥ अपने तीक्ष्ण बाणोंसे ध्वजा पताका सारथि खड्... सहित रावणका रथ काट डाला ॥ १३८ ॥ फिर एक बाण शीघ्र... रावणकी छातीमें मारा ॥ १३९ ॥ जो रावण इन्द्रके वज्रके लगनेसे न चल... मान हुआ था उसने रामके बाणके लगनेसे पीडित हो धनुष भी हा... छोड दिया ॥ १४० ॥ उसको विह्वल देख रामने अर्द्धचन्द्राकार बाण लि... और उससे रावणका मुकुट काट डाला ॥ १४१ ॥

विषरहित सर्पके समान विषवत् श्रीरहित मुकुट कटे रावणसे रा... बोले ॥ १४२ ॥ हे रावण ! तुमने बडा काम कर हमारे वीरोंको मारा हम... थक गये हो इसी कारण अब मैं तुमको नहीं मारता ॥ १४३ ॥ तुम ... गये हो इससे यहांसे जाओ रात्रिभर सुस्ता कर कल फिर आकर मेरा ...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स एवमुक्तो हतदर्पहर्षो निकृत्तचापः स हताश्वसूतः।
शरार्दितो भग्नमहाकिरीटो विवेश लङ्कां सहसा स्म राजा १४५
तस्मिन्प्रविष्टे रजनीचरेन्द्रे महाबले दानवदेवशत्रौ।
हरीन्विशल्यान्सह लक्ष्मणेन चकार रामः परमाहवाग्रे १४६
तस्मिन्प्रभग्ने त्रिदशेन्द्रशत्रौ सुरासुरा भूतगणा दिशश्च।
ससागराः सर्षिमहोरगाश्च तथैव भूम्यम्बुचराः प्रहृष्टाः १४७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे एकोनषष्टितमः सर्गः ॥५९॥[२३७०]

॥ षष्टितमः सर्गः ॥

स प्रविश्य पुरीं लङ्कां रामबाणभयार्दितः।
भग्नदर्पस्तदा राजा बभूव व्यथितेन्द्रियः १
मातङ्ग इव सिंहेन गरुडेनेव पन्नगः।
अभिभूतोऽभवद्राजा राघवेण महात्मना २
ब्रह्मदण्डप्रतीकानां विद्युच्चलितवर्चसाम्।
स्मरन्राघवबाणानां विव्यथे राक्षसेश्वरः ३
स काञ्चनमयं दिव्यमाश्रित्य परमासनम्।
विप्रेक्षमाणो रक्षांसि रावणो वाक्यमब्रवीत् ४

...होगे ॥ १४४ ॥ यह सुन रावण दर्पहत होजाने धनुष कट जाने तथा ...मुकुट कट जानेसे लज्जितहो लङ्काको चला गया ॥ १४५ ॥ इस तरह उस ...देवताओंके शत्रु महाबलाढ्य राक्षसाधिपतिको लंका चले जानेपर उस प्रचंड ...संग्राममें रामने लक्ष्मणसहित वानरोंको शल्य रहित किया ॥ १४६ ॥ और ...इस तरह उस देवराज शत्रुका पराजय होनेसे देव, दैत्य, भूतगण, दिशा, ...समुद्र, महोरग, जलचर व स्थलचर प्राणियोंको आनन्द हुआ ॥ १४७ ॥

॥ यहाँ ५९ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

... रामके बाणोंसे विकल दर्पहत रावण लङ्कामें जा अतिव्यथित हुआ ॥१॥ जैसे ...सिंहसे हाथी पीडितहो व्याकुल होता है एवं रामसे पराजित रावण व्याकुल हुआ ...ब्रह्मदण्डके समान सफल रामके बाणोंकी याद करता रावण व्यथित हुआ ...वह सुवर्णमय सिंहासनपर बैठ राक्षसोंकी ओर देख बोला॥४॥ मैंने जो तप

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सर्वं तत्खलु मे मोघं यत्तप्तं परमं तपः।
यत्समानो महेन्द्रेण मानुषेण विनिर्जितः ५
इदं तद्ब्रह्मणो घोरं वाक्यं मामभ्युपस्थितम्।
मानुषेभ्यो विजानीहि भयं त्वमिति तत्तथा ६
देवदानवगन्धर्वैर्यक्षराक्षसपन्नगैः।
अवध्यत्वं मया प्रोक्तं मानुषेभ्यो न याचितम् ७
तमिमं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्।
इक्ष्वाकुकुलजातेन अनरण्येन यत्पुरा ८
उत्पत्स्यति हि मद्वंशपुरुषो राक्षसाधम।
यस्त्वां सपुत्रं सामात्यं सबलं साश्वसारथिम् ९
निहनिष्यति सङ्ग्रामे त्वां कुलाधम दुर्मते।
शप्तोऽहं वेदवत्या च यथा सा धर्षिता पुरा १०
सेयं सीता महाभागा जाता जनकनन्दिनी।
उमानन्दीश्वरश्चापि रम्भा वरुणकन्यका ११
यथोक्तास्तन्मया प्राप्तं न मिथ्या ऋषिभाषितम्।
एतदेव समागम्य यत्नं कर्तुमिहार्हथ १२

किया था वह सब फलहीन होगया क्योंकि मैं मनुष्यसे हार गया॥

आज ब्रह्माका वाक्य कि मनुष्योंसे तुमको भय होगा आगे आया मैंने
देवता, दानव, गन्धर्व यक्ष, राक्षस, नागसे अपना अवध्यत्व मांगा पर मनु
अवध्यत्व न मांगा ॥७॥ रामको मैं अपनी मौतका कारण समझता हूं इक्ष्वा
शीय अनरण्यने मुझे शाप दिया था कि ॥८॥ हे राक्षसाधम ! मेरे वंशमें
पुरुष उत्पन्न होगा जो तुमको ॥ ९ ॥ युद्धमें मार डालेगा मैंने पूर्व
वतीको धर्षित किया था तब उसने शाप दिया था कि मेरे ही हेतु
नाश होगा ॥ १० ॥ सो वेदवतीके समान सीता उत्पन्न हुई है रम्भा
वरुणकी कन्याने भी ॥ ११ ॥ जो शाप दिया था वह मुझे प्राप्त
ऋषियोंके वचन भी मिथ्या नहीं होते इससे अब आप सब यत्न करो

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राक्षसाश्चापि तिष्ठन्तु चर्यागोपुरमूर्धसु।
स चाप्रतिमगाम्भीर्यो देवदानवदर्पहा १३
ब्रह्मशापाभिभूतस्तु कुम्भकर्णो विबोध्यताम्।
समरे जितमात्मानं प्रहस्तं च निषूदितम् १४
ज्ञात्वा रक्षो भीमबलमादिदेश महाबलः।
द्वारेषु यत्नः क्रियतां प्राकारश्चाधिरुह्यताम् १५
निद्रावशसमाविष्टः कुम्भकर्णो विबोध्यताम्।
सुखं स्वपिति निश्चिन्तः कामोपहतचेतनः १६
नव सप्त दशाष्टौ च मासान्स्वपिति राक्षसः।
मन्त्रं कृत्वा प्रसुप्तोऽयमितस्तु नवमेऽहनि १७
स हि सङ्ख्ये महाबाहुः ककुदं सर्वरक्षसाम्।
वानरान्राजपुत्रौ च क्षिप्रमेव हनिष्यति १८
एष केतुः परं सङ्ख्ये मुख्यो वै सर्वरक्षसाम्।
कुम्भकर्णः सदा शेते मूढो ग्राम्यसुखे रतः १९
रामेणाभिनिरस्तस्य सङ्ग्रामेऽस्मिन्सुदारुणे।
भविष्यति न मे शोकः कुम्भकर्णे विबोधिते २०
किं करिष्याम्यहं तेन शक्रतुल्यबलेन हि।
ईदृशे व्यसने घोरे यो न साह्याय कल्पते २१

राजमार्गोंमें प्राकारके किनारे किनारे राक्षसगण स्थित हों और ॥ १३ ॥ सोते हुये कुम्भकर्णको भी जगाओ, रावणने अपनेको हारा प्रहस्तको मरा देख ॥ १४ ॥ कुम्भकर्णको बलवान् जानं आज्ञा दी कि प्राकारपर चढकर रक्षा करो ॥ १५ ॥ सोते हुये कुम्भकर्णको जगाओ ॥१६॥ वह सलाह करके नवदिनसे सो रहा है और नव सात दश आठ महीनोंतक सोया ही रहता है ॥ १७ ॥ समरमें सब वानरों और इन राजपुत्रोंको मार डालेगा ॥१८॥ यह सब राक्षसोंमें मुख्य और सबका पताकारूप कुम्भकर्ण नित्य सोताही रहता है ॥ १९ ॥ जब कुम्भकर्ण जगेगा तो रामसे हारे हुयेसे मुझे दुःख न होगा ॥ २० ॥ जो कुम्भकर्ण इस दुःखमें भी सहायता न करे तो फिर उससे क्या प्रयोजन ॥ २१ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ते तु तद्वचनं श्रुत्वा राक्षसेन्द्रस्य राक्षसाः ।
जग्मुः परमसंभ्रान्ताः कुम्भकर्णनिवेशनम् २२
ते रावणसमादिष्टा मांसशोणितभोजनाः ।
गन्धं माल्यं महद्भक्ष्यमादाय सहसा ययुः २३
तां प्रविश्य महाद्वारां सर्वतो योजनायताम् ।
कुम्भकर्णगुहां रम्यां पुष्पगन्धप्रवाहिनीम् २४
कुम्भकर्णस्य निःश्वासादवधूता महाबलाः ।
प्रतिष्ठमानाः कृच्छ्रेण यत्नात्प्रविविशुर्गुहाम् २५
तां प्रविश्य गुहां रम्यां रत्नकाञ्चनकुट्टिमाम् ।
ददृशुर्नैर्ऋतव्याघ्राः शयानं भीमविक्रमम् २६
ते तु तं विकृतं सुप्तं विकीर्णमिव पर्वतम् ।
कुम्भकर्णं महानिद्रं समेताः प्रत्यबोधयन् २७
ऊर्ध्वलोमाञ्चिततनुं श्वसन्तमिव पन्नगम् ।
भ्रामयन्तं विनिःश्वासैः शयानं भीमविक्रमम् २८
भीमनासापुटं तं तु पातालविपुलाननम् ।
शयने न्यस्तसर्वाङ्गं मेदोरुधिरगन्धिनम् २९
काञ्चनाङ्गदनद्धाङ्गं किरीटिनार्कवर्चसम् ।
ददृशुर्नैर्ऋतव्याघ्रं कुम्भकर्णमरिन्दमम् ३०

रावणकी आज्ञा सुन वे राक्षस शीघ्रतासे कुम्भकर्णके पास गये ॥ २२ ॥ राक्षस रावणकी प्रेरणासे चन्दनादि सुगन्धित वस्तु विविध भोजन ले पर्व शीघ्रतासे गए ॥ २३ ॥ और चार कोसकी विस्तीर्ण अतिरमणीय कुम्भकर्णकी गुहामें प्रवेश किया राक्षस कुम्भकर्णके सांसोंसे कम्पित होनेके कारण कष्टसे उसमें प्रवेश कर सके ॥ २४-२५ ॥ उस रमणीक गुहामें जा राक्षसोंने कुम्भकर्णको सोते देखा ॥ २६ ॥ सब इकट्ठे हो सोते कुम्भकर्णको जगाने लगे ॥ २७ ॥ उसके सब रोम ऊपर खडे थे ऊर्ध्वश्वासें ले रहा था ॥ २८ ॥ उसके नासापुट बडे भीम थे उसका मुख पातालसम बडा था ॥ २९ ॥ सुवर्णके बहुंटा सुवर्ण ही का किरीट धारे था ऐसे राक्षसासिंह कुम्भकर्णको राक्षसोंने देखा ॥ ३० ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततश्चक्रुर्महात्मानः कुम्भकर्णस्य चाग्रतः।
भूतानां मेरुसंकाशं राशिं परमतर्पणम् ३१
मृगाणां महिषाणां च वराहाणां च संचयान्।
चक्रुर्नैर्ऋतशार्दूला राशिमन्नस्य चाद्भुतम् ३२
ततः शोणितकुम्भांश्च मांसानि विविधानि च।
पुरस्तात्कुम्भकर्णस्य चक्रुस्त्रिदशशत्रवः ३३
लिलिपुश्च परार्ध्येन चन्दनेन परन्तपम्।
दिव्यैराश्वासयामासुर्माल्यैर्गन्धैश्च गन्धिभिः ३४
धूपगन्धांश्च सस्मृजुस्तुष्टुवुश्च परन्तपम्।
जलदा इव चानेदुर्यातुधानास्ततस्ततः ३५
शङ्खांश्च पूरयामासुः शशाङ्कसदृशप्रभान्।
तुमुलं युगपच्चापि विनेदुश्चाप्यमर्षिताः ३६
नेदुरास्फोटयामासुश्चिक्षिपुस्ते निशाचराः।
कुम्भकर्णविबोधार्थं चक्रुस्ते विपुलं स्वरम् ३७
स शङ्खभेरीपणवप्रणादं सास्फोटितक्ष्वेलितसिंहनादम्।
दिशो द्रवन्तस्त्रिदिवं किरन्तः श्रुत्वा विहङ्गाः सहसा निपेतुः ३८
यदा भृशार्तैर्निनदैर्महात्मा न कुम्भकर्णो बुबुधे प्रसुप्तः।
ततो भुशुण्डीमुसलानि सर्वे रक्षोगणास्ते जगृहुर्गदांश्च ३९

फिर कुम्भकर्णके आगे बहुतसे जीवोंको उसके खानेके लिये खडा कर दिया ॥ ३१ ॥ मृगों, महिषों, शूकरों, अन्नोंका बडा ढेर राक्षसोंने इकट्ठा किया ॥ ३२ ॥ फिर रुधिरसे भरे घडे मांस कुम्भकर्णके पास रख ॥ ३३ ॥ उसके अङ्गोंमें चन्दन लगा दिव्यमालादिसे सब गुहा सुगन्धित कर दी ॥ ३४ ॥ सब राक्षसोंने धूप गन्ध कर स्तुति की ॥ ३५ ॥ उजले शंख भी बजाये सबोंने एकही साथ नाद किया ॥ ३६ ॥ वे निशाचर जोरसे पुकारने उसके कर पकड पकड पटकने व शब्द करने लगे ॥ ३७ ॥ शंख, नगाडे तुरही आदि बजा सिंहवत् नाद किया जिसे सुन पक्षी सब ओरको भाग चले ॥ ३८ ॥ जब इतनेपर भी कुम्भकर्ण न जगा तब सब राक्षसोंने भुशुण्डी, मुद्गर,

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तं शैलशृङ्गैर्मुसलैर्गदाभिर्वक्षःस्थले मुद्गरमुष्टिभिश्च ।
सुखप्रसुप्तं भुवि कुम्भकर्णं रक्षांस्युदग्राणि तदा निजघ्नुः ४०
तस्य निःश्वासवातेन कुम्भकर्णस्य रक्षसः ।
राक्षसाः कुम्भकर्णस्य स्थातुं शेकुर्न चाग्रतः ४१
ततः परिहिता गाढं राक्षसा भीमविक्रमाः ।
मृदङ्गपणवान्भेरीः शङ्खकुम्भगणांस्तथा ॥
दश राक्षससाहस्रं युगपत्पर्यवारयत् ४२
नीलाञ्जनचयाकारं ते तु तं प्रत्यबोधयन् ।
अभिघ्नन्तो नदन्तश्च न च संवुबुधे तदा ४३
यदा चैनं न शेकुस्ते प्रतिबोधयितुं तदा ।
ततो गुरुतरं यत्नं दारुणं समुपाक्रमन् ४४
अश्वानुष्ट्रान्खरान्नागाञ्जघ्नुर्दण्डकशाङ्कुशैः ।
भेरीशङ्खमृदङ्गांश्च सर्वप्राणैरवादयन् ४५
निजघ्नुश्चास्य गात्राणि महाकाष्ठकटङ्करैः ।
मुद्गरैर्मुसलैश्चापि सर्वप्राणसमुद्यतैः ४६
तेन नादेन महता लङ्का सर्वा प्रपूरिता ।
सपर्वतवना सर्वा सोऽपि नैव प्रबुध्यते ४७

गदा आदि शस्त्र लिये ॥ ३९ ॥ पर्वत शृंग मूसल गदा मुद्गर तथा घूसे सोते हुये कुम्भकर्णकी छातीमें मारने लगे ॥ ४० ॥ पर उस कुम्भकर्णके निश्वासके आगे राक्षस न खडे होसके ॥ ४१ ॥ तब राक्षस मृदंग नगाडे तुरही शंख तथा घडे आदि बजाने लगे दशहजार राक्षस एक ही साथ उस राक्षसको जगाने लगे ॥ ४२ ॥ जब इस प्रकार भी कुम्भकर्ण न जगा तो राक्षस गण ॥ ४३ ॥ उससे भी बढकर उपाय करने लगे ॥ ४४ ॥ घोडे ऊंट हाथी आदिको दण्ड आदिसे मारने लगे बाजे भी जोरसे बजाने लगे ॥ ४५ ॥ बडे काठसे उसके अङ्ग पीटने लगे मुद्गर मूसलोंसे भी पीटने लगे ॥ ४६ ॥ उस नादसे सब लङ्का पूर्ण होगई पर कुम्भकर्ण न जगा ॥ ४७ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततो भेरीसहस्रं तु युगपत्समहन्यत ।
मृष्टकाञ्चनकोणानामसक्तानां समन्ततः ४८
एवमप्यतिनिद्रस्तु यदा नैव प्रबुध्यते ।
शापस्य वशमापन्नस्ततः क्रुद्धा निशाचराः ४९
ततः कोपसमाविष्टाः सर्वे भीमपराक्रमाः ।
तद्रक्षो बोधयिष्यन्तश्चक्रुरन्ये पराक्रमम् ५०
अन्ये भेरीः समाजघ्नुरन्ये चक्रुर्महास्वनम् ।
केशानन्ये प्रलुलुपुः कर्णानन्ये दशन्ति च ५१
उदकुम्भशतानन्ये समसिञ्चन्त कर्णयोः ।
न कुम्भकर्णः पस्पन्दे महानिद्रावशं गतः ५२
अन्ये च बलिनस्तस्य कूटमुद्गरपाणयः ।
मूर्ध्नि वक्षसि गात्रेषु पातयन्कूटमुद्गरान् ५३
रज्जुबन्धनबद्धाभिः शतघ्नीभिश्च सर्वशः ।
वध्यमानो महाकायो न प्राबुध्यत राक्षसः ५४
वानराणां सहस्रं च शरीरेऽस्य प्रधावितम् ।
कुम्भकर्णस्तदा बुद्ध्वा स्पर्शं परमबुध्यत ५५
स पात्यमानैर्गिरिशृङ्गवृक्षैरचिन्तयंस्तान्विपुलान्प्रहारान् ।

फिर सुवर्णके बने हुये हजारों दुन्दुभि एक ही साथ जोरसे बजाये गये ॥ ४८ ॥ जब ऐसा करनेपर भी वह न जगा तो निशाचर अति क्रुद्ध हुए ॥ ४९ ॥ सब राक्षस कोपयुक्त हो उस राक्षसको जगानेमें स्वपराक्रम दिखाने लगे ॥ ५० ॥ कोई तुरही बजाने लगे कोई बडा नाद करने लगे कोई बाल उखाडने लगे कोई कान काटने लगे ॥ ५१ ॥ कोई सैकडों घडोंमें जल भर उसके कानोंमें डालने लगे पर कुम्भकर्ण न जगा ॥ ५२ ॥ बलीराक्षस शूल मुद्गरादि ले उसके शिर छाती तथा अन्य सब अङ्गोंमें मारने लगे ॥ ५३ ॥ फिर शतघ्नीसे सब ओरसे उसे बांधा पर वह न जगा ॥ ५४ ॥ तब उसके शरीरपर सहस्रों हाथी दौडाये गये ऐसा करनेसे कुम्भकर्ण जगा और उसे स्पर्श ज्ञान हुआ ॥ ५५ ॥ निद्रा मिटनेपर भूखसे

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

निद्राक्षयात्क्षुद्भयपीडितश्च विजृम्भमाणः सहसोत्पपात ५६
स नागभोगाचलशृङ्गकल्पौ विक्षिप्य बाहू जितवज्रसारौ।
विवृत्य वक्त्रं वडवामुखाभं निशाचरोऽसौ विकृतं जजृम्भे ५७
तस्य जाजृम्भमाणस्य वक्त्रं पातालसंनिभम्।
ददृशे मेरुशृङ्गाग्रे दिवाकर इवोदितः ५८
स जृम्भमाणोऽतिबलः प्रवुद्धस्तु निशाचरः।
निःश्वासश्चास्य संजज्ञे पर्वतादिव मारुतः ५९
रूपमुत्तिष्ठतस्तस्य कुम्भकर्णस्य तद्बभौ।
युगान्ते सर्वभूतानि कालस्येव दिधक्षतः ६०
तस्याग्निदीप्तसदृशे विद्युत्सदृशवर्चसी।
ददृशाते महानेत्रे दीप्ताविव महाग्रहौ ६१
ततस्त्वदर्शयन्सर्वान्भक्ष्यांश्च विविधान्बहून्।
वराहान्महिषांश्चैव बभक्ष स महाबलः ६२
आदद्द्बुभुक्षितो मांसं शोणितं तृषितोऽपिवत्।
मेदःकुम्भांश्च मद्यांश्च पपौ शक्ररिपुस्तदा ६३
ततस्तृप्त इति ज्ञात्वा समुत्पेतुर्निशाचराः।
शिरोभिश्च प्रणम्यैनं सर्वतः पर्यवारयन् ६४

पीडित हो जंभाता उठ खडा हुआ ॥ ५६ ॥ अपने दोनों हाथ उठाकर अपना मुख पसारकर कुम्भकर्ण बडी विकरालतासे जम्भाने लगा ॥ ५७ ॥ जंभुआते हुए उसका मुख उदित सूर्यके तुल्य दिखाई देने लगा ॥ ५८ ॥ कुम्भकर्ण जम्भाता हुआ जगा। जागनेपर उसके मुखसे पवनवत् श्वास निकलने लगा ॥ ५९ ॥ उठते हुये कुम्भकर्णका रूप युगान्तमें सब प्राणियोंका भस्म करते हुए कालसा दिखाई पडा ॥ ६० ॥ अग्निकी दीप्तिके समान प्रकाशित उसके नेत्र प्रकाशित ग्रहोंके तुल्य दिखाई देने लगे ॥ ६१ ॥ तब राक्षसोंने महिष शूकरादि तथा नाना प्रकारके भोजन दिये जिन्हें खा डाला ॥ ६२ ॥ जब प्यासा हुआ तब रुधिर पीने लगा फिर चरबी मदिराके कुम्भ पान करने लगा ॥ ६३ ॥ जब सब राक्षसोंने तृप्त जाना तो सामने आ आ प्रणाम कर घेर खडे हुए ॥ ६४ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

निद्राविशदनेत्रस्तु कलुषीकृतलोचनः।
चारयन्सर्वतो दृष्टिं तानुवाच निशाचरान् ६५
ससर्वान्सान्त्वयामास नैर्ऋतान्नैर्ऋतर्षभः।
बोधनाद्विस्मितश्चापि राक्षसानिदमब्रवीत् ६६
किमर्थमहमादृत्य भवद्भिः प्रतिबोधितः।
कच्चित्सुकुशलं राज्ञो भयं वा नेह किंचन ६७
अथ वा ध्रुवमन्येभ्यो भयं परमुपास्थितम्।
यदर्थमेव त्वरितैर्भवद्भिः प्रतिबोधितः ६८
अद्य राक्षसराजस्य भयमुत्पाटयाम्यहम्।
दारयिष्ये महेन्द्रं वा शीतयिष्ये तथानलम् ६९
न ह्यल्पकारणे सुप्तं बोधयिष्यति मादृशम्।
तदाख्यातार्थतत्त्वेन मत्प्रबोधनकारणम् ७०
एवं ब्रुवाणं संरब्धं कुम्भकर्णमरिन्दमम्।
यूपाक्षः सचिवो राज्ञः कृताञ्जलिरभाषत ७१
न नो देवकृतं किंचिद्भयमस्ति कदाचन।
मानुषान्नो भयं राजंस्तुमुलं संप्रबाधते ७२

वह चारों ओर देख राक्षसोंसे बोला ॥ ६५ ॥ कुम्भकर्णने प्रथम सब राक्षसोंको शान्त किया फिर असमय जगा देनेके कारण विस्मित हो बोला ॥ ६६ ॥ तुम लोगोंने मुझको क्यों जगाया कुशल तो है राजाको किसीसे कुछ भय तो नहीं है ॥ ६७ ॥ मैं समझता हूं कि वैरियोंसे कुछ भय है तभी मुझको जल्दीसे जगाया गया है ॥ ६८ ॥ मैं आज रावणका भय दूर करूंगा ॥ ६९ ॥ अल्प कारणके लिये मुझे कोई नहीं जगा सकता मेरे जगानेका हेतु शीघ्र बताओ ॥ ७० ॥ क्रोधित हो ऐसा कहते हुए कुम्भकर्णसे यूपाक्ष मन्त्री हाथ जोड बोला ॥ ७१ ॥

हम लोगोंको मनुष्यसे वडा भारी भय उत्पन्न हुआ है ॥ ७२ ॥ हे

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न दैत्यदानवेभ्यो वा भयमस्ति न नः क्वचित्।
यादृशं मानुषं राजन्भयमस्मानुपस्थितम् ७३
वानरैः पर्वताकारैर्लङ्केयं परिवारिता।
सीताहरणसंतप्ताद्रामान्नस्तुमुलं भयम् ७४
एकेन वानरेणेयं पूर्वं दग्धा महापुरी।
कुमारो निहतश्चाक्षः सानुयात्रः सकुञ्जरः ७५
स्वयं रक्षोऽधिपश्चापि पौलस्त्यो देवकण्टकः।
व्रजेति संयुगे मुक्तो रामेणादित्यवर्चसा ७६
यन्न देवैः कृतो राजा नापि दैत्यैर्न दानवैः।
कृतः स इह रामेण विमुक्तः प्राणसंशयात् ७७
स यूपाक्षवचः श्रुत्वा भ्रातुर्युधि पराभवम्
कुम्भकर्णो विवृत्ताक्षो यूपाक्षमिदमब्रवीत् ७८
सर्वमद्यैव यूपाक्ष हरिसैन्यं सलक्ष्मणम्।
राघवं च रणे जित्वा ततो द्रक्ष्यामि रावणम् ७९
राक्षसांस्तर्पयिष्यामि हरीणां मांसशोणितैः।
रामलक्ष्मणयोश्चापि स्वयं पास्यामि शोणितम् ८०
तत्तस्य वाक्यं ब्रुवतो निशम्य सगर्वितं रोषविवृद्धदोषम्।

राजन्! जैसा भय मनुष्यसे उत्पन्न हुआ है उस तरहका दैत्य दानवादिकोंसे भी नहीं हुआ था ॥ ७३ ॥ वानरोंसे यह लङ्का चारों ओरसे घिर गई है यह भय रामकी ओरसे प्राप्त हुआ है ॥ ७४ ॥ पूर्व एक वानरने लङ्का फूंक दी व अक्ष आदि अनेक वीरोंको भी मारा था ॥ ७५ ॥ राक्षसोंके राजा स्वयं रावण राम द्वारा जीवन मृत करके छोड दिये गये ॥ ७६ ॥ जो बात महाराजके साथ कोई न कर सकता था वह यहां आ रामने की है रावणको छोड दिया ॥ ७७ ॥

यूपाक्षके मुंहसे युद्धमें अपने भाईका अपमान सुन कुंभकर्ण बोला ॥ ७८ ॥ हे यूपाक्ष! आज सब सैन्यसहित राम लक्ष्मणको युद्धमें जीत फिर रावणको देखूंगा ॥७९॥ राक्षसोंको वानरोंके मांस रक्तसे तृप्त कराऊंगा और राम लक्ष्मणका रक्त स्वयं पान करूंगा ॥८०॥ कुंभकर्णके वचन सुन रा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

महोदरो नैर्ऋतयोधमुख्यः कृताञ्जलिर्वाक्यमिदं बभाषे ८१
रावणस्य वचः श्रुत्वा गुणदोषौ विमृश्य च ।
पश्चादपि महाबाहो शत्रून्युधि विजेष्यसि ८२
महोदरवचः श्रुत्वा राक्षसैः परिवारितः ।
कुम्भकर्णो महातेजाः संप्रतस्थे महाबलः ८३
सुप्तमुत्थाप्य भीमाक्षं भीमरूपपराक्रमम् ।
राक्षसास्त्वरिता जग्मुर्दशग्रीवनिवेशनम् ८४
तेऽभिगम्य दशग्रीवमासीनं परमासने ।
ऊचुर्बद्धाञ्जलिपुटाः सर्व एव निशाचराः ८५
कुम्भकर्णः प्रबुद्धोऽसौ भ्राता ते राक्षसेश्वर ।
कथं तत्रैव निर्यातु द्रक्ष्यसे तमिहागतम् ८६
रावणस्त्वब्रवीद्धृष्टो राक्षसांस्तानुपस्थितान् ।
द्रष्टुमेनमिहेच्छामि यथान्यायं च पूज्यताम् ८७
तथेत्युक्त्वा तु ते सर्वे पुनरागम्य राक्षसाः ।
कुम्भकर्णमिदं वाक्यमूचू रावणचोदिताः ८८
द्रष्टुं त्वां काङ्क्षते राजा सर्वराक्षसपुङ्गवः ।
गमने क्रियतां बुद्धिर्भ्रातरं संप्रहर्षय ८९

...ख्य महोदर हाथ जोड़ा बोला ॥ ८१ ॥ हे महाबाहु रावणकी बात सुन ...र युद्धमें शत्रुओंको जीतिए ॥ ८२ ॥ महोदरके वचन सुन कुंभकर्ण ...क्षसोंके साथ चला ॥८३॥ कुंभकर्णको सोनेसे जगा अनेक राक्षस रावणके ...पास पहले ही पहुंच गये थे ॥ ८४ ॥ वे राक्षस रावणसे हाथ जोड़ ...के ॥ ८५ ॥

...हे राक्षसेश्वर ! आपका भ्राता कुंभकर्ण जगा है अब वहींसे समरको चला ...या आप उसे यहां आया देखना चाहते हैं ॥ ८६ ॥ यह सुन रावण ...ा कि मैं प्रथम यहांही उसे देखना चाहता हूं सो संमान पूर्वक ले ...ओ ॥ ८७ ॥ रावणकी आज्ञा पा राक्षसगण कुंभकर्णके पास आकर ...के ॥ ८८ ॥ रावण आपको देखना चाहते हैं इससे चलकर अपने भाईको

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कुम्भकर्णस्तु दुर्धर्षो भ्रातुराज्ञाय शासनम्।
तथेत्युक्त्वा महावीर्यः शयनादुत्पपात ह ९०
प्रक्षाल्य वदनं हृष्टः स्नातः परमहर्षितः।
पिपासुस्त्वरयामास पानं बलसमीरणम् ९१
ततस्ते त्वरितास्तत्र राक्षसा रावणाज्ञया।
मद्यं भक्ष्यांश्च विविधान्क्षिप्रमेवोपहारयन् ९२
पीत्वा घटसहस्रे द्वे गमनायोपचक्रमे।
ईषत्समुत्कटो मत्तस्तेजोबलसमन्वितः ९३
कुम्भकर्णो बभौ रुष्टः कालान्तकयमोपमः।
भ्रातुः स भवनं गच्छन्रक्षोबलसमन्वितः ९४
कुम्भकर्णः पदन्यासैरकम्पयत मेदिनीम् ९५
स राजमार्गं वपुषा प्रकाशयन्सहस्ररश्मिर्धरणीमिवांशुभिः।
जगाम तत्राञ्जलिमालया वृतः शतक्रतुर्गेहमिव स्वयंभुवः ९६
तं राजमार्गस्थममित्रघातिनं वनौकसस्ते सहसा बहिः स्थिताः।
दृष्ट्वाप्रमेयं गिरिशृङ्गकल्पं वितत्रसुस्ते सह यूथपालैः ९७

हर्षित कीजिये ॥ ८९ ॥ भाईकी आज्ञा पा बहुत अच्छा कह आसनसे उठा ॥ ९० ॥ और पीनेकी वस्तु मांगने लगा ॥ ९१ ॥

तब राक्षसगण मद्यमांसादि खाने पीनेकी चीजें शीघ्र उसके पास लाये ॥ ९२ ॥ तब मदिराके दोहजार घट पानकर गमन किया ॥ ९३ ॥ उस समय क्रोध किये कुंभकर्ण भाईके मन्दिरको जाते समय पदन्यासोंसे पृथ्वीको कंपाता चला ॥ ९४-९५ ॥ और किरणोंके योगसे जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी प्रकाशित करता है उस प्रकार अपने शरीरके तेजसे राजमार्ग प्रकाशित करता हुआ वह कुंभकर्ण हाथ जोडे हुए राक्षसोंसे परिवेष्टित हुआ और इन्द्र जिस प्रकार ब्रह्मदेवके घर जाते हैं उस प्रकार कुंभकर्ण अपने भाई रावणके घरको गया ॥ ९६ ॥ इस प्रकार शत्रुघातक पर्वतशिखरतुल्य अनुपम कुंभकर्णको राजमार्गसे बाहर आता हुआ देख सेनासहित वानर सब

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jagad

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

केचिच्छरण्यं शरणं स्म रामं व्रजन्ति केचिद्व्यथिताः पतन्ति ।
केचिद्दिशश्च व्यथिताः पतन्ति केचिद्भयार्ता भुवि शेरते स्म　९८
तमद्रिशृङ्गप्रतिमं किरीटिनं स्पृशन्तमादित्यमिवात्मतेजसा ।
वनौकसः प्रेक्ष्य विवृद्धमद्भुतं भयार्दिता दुद्रुविरे यतस्ततः　९९
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे षष्टितमः सर्गः ॥६०॥ [२४६९]

॥ एकषष्टितमः सर्गः ॥

ततो रामो महातेजा धनुरादाय वीर्यवान् ।
किरीटिनं महाकायं कुम्भकर्णं ददर्श ह　१
तं दृष्ट्वा राक्षसश्रेष्ठं पर्वताकारदर्शनम् ।
क्रममाणमिवाकाशं पुरा नारायणं यथा　२
सतोयाम्बुदसंकाशं काञ्चनाङ्गदभूषणम् ।
दृष्ट्वा पुनः प्रदुद्राव वानराणां महाचमूः　३
विद्रुतां वाहिनीं दृष्ट्वा वर्धमानं च राक्षसम् ।
सविस्मितमिदं रामो विभीषणमुवाच ह　४

॥ ९७ ॥ कुछ वानर रामके शरण गया; कुछ घबरानेके कारण वहीं गया, कुछ भयभीत हो दूसरे रास्तेसे जाने लगा, और कुछ भीतिग्रस्त कर पृथ्वीपर गिर गया ॥ ९८ ॥ अर्थात् पर्वत-शिखर तुल्य शरीर, के समान तेजसे युक्त प्रचंड कुंभकर्णको देखनेसे वानर भयभीत हो र उधर भागने लगा ॥ ९९ ॥

॥ यहाँ ६० वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

तदनन्तर महातेजस्वी वीर्यवान् रामने धनुष्य तथा किरीट धारण किये कुंभकर्णको देखा ॥१॥ जिसका आकार व मुद्रा पर्वतके समान है; सजल सदृश जिसकी कान्ति है; सुवर्णके आभूषणसे जिसके बाहु अलंकृत हैं पूर्वी आकाश व्याप्त करनेके लिये तत्पर हुआ नारायण सदृश जो दीखता ऐसे उस राक्षसश्रेष्ठ कुंभकर्णको देखनेसे पुनः वानरसेना तितर बितर हो ॥ २-३ ॥ तब सेनाको भागते देख और राक्षसोंकी विजय होती हुई कर राम विस्मयपूर्वक विभीषणसे बोला ॥ ४ ॥ " पर्वतके सदृश शरीर,

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कोऽसौ पर्वतसंकाशः किरीटी हरिलोचनः।
लङ्कायां दृश्यते वीरः सविद्युदिव तोयदः ५
पृथिव्यां केतुभूतोऽसौ महानेकोऽत्र दृश्यते।
यं दृष्ट्वा वानराः सर्वे विद्रवन्ति यतस्ततः ६
आचक्ष्व सुमहान्कोऽसौ रक्षो वा यदि वासुरः।
न मयैवंविधं भूतं दृष्टपूर्वं कदाचन ७
संपृष्टो राजपुत्रेण रामेणाक्लिष्टकर्मणा।
विभीषणो महाप्राज्ञः काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ८
येन वैवस्वतो युद्धे वासवश्च पराजितः।
सैष विश्रवसः पुत्रः कुम्भकर्णः प्रतापवान्॥
अस्य प्रमाणसदृशो राक्षसोऽन्यो न विद्यते ९
एतेन देवा युधि दानवाश्च यक्षा भुजङ्गाः पिशिताशनाश्च।
गन्धर्वविद्याधरपन्नगाश्च सहस्रशो राघव संप्रभग्नाः १०
शूलपाणिं विरूपाक्षं कुम्भकर्णं महाबलम्।

वानरके समान नेत्र, विद्युत् युक्त मेघके समान कान्ति व किरीट युक्त ऐसा कौन वीर लंकामें दीख रहा है ? ॥ ५ ॥

पृथ्वी पर ध्वज ही है या क्या? ऐसा प्रचंड योद्धा अकेला ही दीख रहा और उसको देखकर सब वानर सेना इधर उधर भाग रही है ॥६॥ अतः यह अतिप्रचंड पुरुष राक्षस है किंवा असुर है यह मुझे कहो, इस प्रकारका प्राणी हमने आजपर्यंत कहीं नहीं देखा "॥ ७ ॥ उदार कर्म करनेवाले राजपुत्र रामको इस तरह प्रश्न करनेपर महाबुद्धिमान् विभीषण उस ककुत्स्थ कुलोत्पन्न रामसे बोला ॥८॥ " जिसने यम व इन्द्रको युद्धमें पराजित किया वह यह विश्रवसाका पुत्र कुंभकर्ण हो सकता है; क्योंकि विशालतामें इसके बराबरी करनेवाला दूसरा कोई राक्षस नहीं है ॥ ९ ॥

हे राघव हजरों देव, दानव, यक्ष, भुजङ्ग, राक्षस, गंधर्व, विद्याधर आदिको इसने युद्धमें पराजय किया हुआ है ॥ १० ॥ उग्र नेत्र और शूल युक्त हाथसे देवता भी महाबलाढ्य कुंभकर्णको वध करनेमें समर्थ नहीं हुए

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हन्तुं न शेकुस्त्रिदशाः कालोऽयमिति मोहिताः ११
प्रकृत्या ह्येष तेजस्वी कुम्भकर्णो महाबलः।
अन्येषां राक्षसेन्द्राणां वरदानकृतं बलम् १२
बालेन जातमात्रेण क्षुधार्तेन महात्मना।
भक्षितानि सहस्राणि प्रजानां सुबहून्यपि १३
तेषु संभक्ष्यमाणेषु प्रजा भयनिपीडिताः।
यान्ति स्म शरणं शक्रं तमप्यर्थं न्यवेदयन् १४
स कुम्भकर्णं कुपितो महेन्द्रो जघान वज्रेण शितेन वज्री।
स चक्रवज्राभिहतो महात्मा चचाल कोपाच्च भृशं ननाद १५
तस्य नानद्यमानस्य कुम्भकर्णस्य रक्षसः।
श्रुत्वा निनादं वित्रस्ताः प्रजा भूयो वितत्रसुः १६
ततः क्रुद्धो महेन्द्रस्य कुम्भकर्णो महाबलः।
निष्कृष्यैरावताद्दन्तं जघानोरसि वासवम् १७
कुम्भकर्णप्रहारार्तो विजज्वाल स वासवः।

सका ही नहीं परन्तु, यह काल है ऐसा भ्रम उनको होता ही रहा ॥ ११ ॥ यह महाबलाढ्य कुंभकर्ण स्वभावसे ही दूसरे राक्षसोंकी अपेक्षा तेजस्वी है और वरप्रदानके कारण इसको बल प्राप्त हुआ है ॥ १२ ॥ जन्म लेते ही बालपनमें भूखके कारण इस महात्माने सैकडों प्रजाजनोंको भक्षण कर लिया ॥ १३ ॥ और इस तरह हजारों लोगोंके उसके द्वारा भक्षण किये जानेपर प्रजाजन भयभीत होकर इन्द्रकी शरणमें गये और ये सब कथाएँ उन्हें निवेदन की ॥ १४ ॥ तब वज्रपाणि महेन्द्रने क्रुद्ध होकर अपने तीक्ष्ण वज्रसे कुंभकर्णके ऊपर प्रहार किया व इन्द्रके प्रहार करनेके साथ ही वह महात्मा क्रोधसे हाथ पैर पटकने लगा और अत्यन्त जोरसे गर्जन करने लगा ॥ १५ ॥ इस प्रकार उस कुंभकर्णके गर्जना करनेपर पहलेकी भयभीत प्रजा और अधिक त्रस्त होने लगी ॥ १६ ॥

तदनंतर क्रोधित हुआ महाबलाढ्य कुंभकर्णने ऐरावतका दांत उखाड कर इन्द्रके वक्षःस्थलपर एक प्रहार किया ॥ १७ ॥ इस प्रहारसे जर्जर हुआ वह इन्द्र रक्तप्रवाहके कारण ज्वालाओंसे व्याप्त हुआसा दीखने लगा तब

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततो विषेदुः सहसा देवा ब्रह्मर्षिदानवाः १८
प्रजाभिः सह शक्रश्च ययौ स्थानं स्वयंभुवः।
कुम्भकर्णस्य दौरात्म्यं शशंसुस्ते प्रजापतेः १९
प्रजानां भक्षणं चापि शशंसुस्ते दिवौकसाम्।
आश्रमध्वंसनं चापि परस्त्रीहरणं तथा २०
एवं प्रजा यदि त्वेष भक्षयिष्यति नित्यशः।
अचिरेणैव कालेन शून्यो लोको भविष्यति २१
वासवस्य वचः श्रुत्वा सर्वलोकपितामहः।
रक्षांस्यावाहयामास कुम्भकर्णं ददर्श ह २२
कुम्भकर्णं समीक्ष्यैव वितत्रास प्रजापतिः।
कुम्भकर्णमथाश्वस्तः स्वयंभूरिदमब्रवीत् २३
ध्रुवं लोकविनाशाय पौलस्त्येनासि निर्मितः।
तस्मात्त्वमद्यप्रभृति मृतकल्पः शयिष्यसे २४
ब्रह्मशापाभिभूतोऽथ निपपाताग्रतः प्रभोः।
ततः परमसंभ्रान्तो रावणो वाक्यमब्रवीत् २५

देव, ब्रह्मर्षि और दानव एकाएक खिन्न हो गये ॥ १८ ॥ और प्रजाजनके साथ इन्द्र ब्रह्मलोकको गया व कुंभकर्णसे किया हुआ दुष्ट कर्म उसने ब्रह्मदेवसे निवेदन किया ॥ १९ ॥ देवोंके प्रजाजनका भक्षण करना, आश्रमोंका विध्वंस करना व परस्त्रियोंका हरण करना, ये सब उनसे कहा और पुनः बोला ॥ २० ॥ " इस प्रकार यदि नित्य प्रजाभक्षण करता ही रहा तो थोडे ही समयमें सम्पूर्ण जगत शून्य हो जायगा ॥ २१ ॥

इस तरह इन्द्रका भाषण श्रवण करनेपर सर्वलोकाधिपति ब्रह्मदेवने सब राक्षसोंको बुलाकर कुंभकर्णको देखा ॥ २२ ॥ प्रथमतः कुंभकर्णको देखते ही ब्रह्मदेव पर आतंक छा गया, परन्तु, धैर्य धारण कर ब्रह्मदेव कुंभकर्णसे बोला ॥ २३ ॥ " विश्रवसाने तुमको निःसंशय लोकनाशार्थ निर्माण किया है; अतः तुम आजसे मृततुल्य निद्रिस्थ होकर रहोगे " ॥ २४ ॥ इस प्रकार ब्रह्मदेवके शाप देनेपर कुंभकर्णने प्रभु ब्रह्मदेवके सामने साष्टांग नमस्कार किया और अत्यन्त घबराकर रावण ब्रह्मदेवसे बोला ॥ २५ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रवृद्धः काञ्चनो वृक्षः फलकाले निकृन्त्यते ।
न नप्तारं स्वकं न्याय्यं शप्तुमेवं प्रजापते २६
न मिथ्यावचनश्च त्वं स्वप्स्यत्येव न संशयः ।
कालस्तु क्रियतामस्य शयने जागरणे तथा २७
रावणस्य वचः श्रुत्वा स्वयंभूरिदमब्रवीत् ।
शयिता ह्येष षण्मासमेकाहं जागरिष्यति २८
एकेनाह्ना त्वसौ वीरश्चरन्भूमिं बुभुक्षितः ।
व्यात्तास्यो भक्षयेल्लोकान्संवृद्ध इव पावकः २९
सोऽसौ व्यसनमापन्नः कुम्भकर्णमबोधयत् ।
त्वत्पराक्रमभीतश्च राजा संप्रति रावणः ३०
स एष निर्गतो वीरः शिबिराद्भीमविक्रमः ।
वानरान्भृशसंक्रुद्धो भक्षयन्परिधावति ३१
कुम्भकर्णं प्रतीक्ष्यैव हरयोऽद्य प्रदुद्रुवुः ।

स्वयं रोपे हुये सुवर्ण फलके वृक्षको स्वर्णरूपी फल प्राप्त होनेके समय जिस प्रकार कोई उसे तोड ले उसी प्रकार हे प्रजाधिपति स्वयंके संबंधिको इस प्रकार शाप देना न्याय्य नहीं है ॥ २६ ॥ आपका वचन मिथ्या होने वाला नहीं है; अतः निःसंशय वह निद्रिस्थ रहेगा, परन्तु इसके सोनेका तथा जागरणका समय आप निश्चित कर दें" ॥ २७ ॥

रावणका भाषण श्रवण कर ब्रह्मदेव बोले "(कमसे कम) यह लगातार छः महिने सोनेपर एक रोज जागता रहेगा ॥ २८ ॥ एक रोजमें यह वीर बुभुक्षित होकर मुख और करका भूमिपर संचार करता करता वृद्धिंगत अग्निके समान लोगोंको भक्षण करेगा" ॥ २९ ॥ अस्तु । (हे राघव) यह राजारावण सम्प्रति तुम्हारे पराक्रमसे डर गया है और ऐसे संकट उपस्थित होनेपर उसने कुंभकर्णको उठाया है ॥ ३० ॥ यह भयंकर पराक्रमी वीर कुंभकर्ण अपने घरसे बाहर हुआ है और यह अत्यन्त क्रोधित होकर वानरोंको भक्षण करनेके लिये इधर उधर दौडता है ॥ ३१ ॥ अरे, कुंभकर्णको देखने मात्रसे जब आज वानर भाग रहे हैं तब संग्राममें इस क्रुद्ध

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कथमेनं रणे क्रुद्धं वारयिष्यन्ति वानराः ३२
उच्यन्तां वानराः सर्वे यन्त्रमेतत्समुच्छ्रितम्।
इति विज्ञाय हरयो भविष्यन्तीह निर्भयाः ३३
विभीषणवचः श्रुत्वा हेतुमत्सुमुखोद्गतम्।
उवाच राघवो वाक्यं नीलं सेनापतिं तदा ३४
गच्छ सैन्यानि सर्वाणि व्यूह्य तिष्ठस्व पावके।
द्वाराण्यादाय लङ्कायाश्चर्याश्चास्याथ संक्रमान् ३५
शैलशृङ्गाणि वृक्षांश्च शिलाश्चाप्युपसंहरन्।
भवन्तः सायुधाः सर्वे वानराः शैलपाणयः ३६
राघवेण समादिष्टो नीलो हरिचमूपतिः।
शशास वानरानीकं यथावत्कपिकुञ्जरः ३७
ततो गवाक्षः शरभो हनूमानङ्गदस्तथा।
शैलशृङ्गाणि शैलाभा गृहीत्वा द्वारमभ्ययुः ३८
रामवाक्यमुपश्रुत्य हरयो जितकाशिनः।
पादपैरर्दयन्वीरा वानराः परवाहिनीम् ३९

कुंभकर्णको कोई कैसे निवारण करेगा? ॥ ३२ ॥ अतः यह यंत्र सब वानरोंसे जाकर कहो; इसे समझकर वानर यहां निर्भय खडे रह सकेंगे ॥३३॥ वानरोंको धैर्य धारण करानेके उद्देश्यसे विभीषणका भाषण श्रवण कर सेनापति नीलसे राम बोले ॥ ३४ ॥ " हे अग्निपुत्र, जावो और सब सैन्य सजाकर खडे रहो लंकाके द्वार और छोटे बडे रास्ते रोक दो ॥ ३५ ॥ और तुम सब वानर हाथमें पर्वत व इतर आयुध ले लेकर पर्वतशिखर, वृक्ष व शिला जमा करो " ॥ ३६ ॥ इस प्रकार रामकी आज्ञा होनेपर वानर सेनाधिपति वानरश्रेष्ठ नीलने उनकी आज्ञानुसार वानर सैन्यको आदेश किया ॥ ३७ ॥ तदनंतर गवाक्ष, शरभ, हनुमान और अंगद ये पर्वतके समान वानर पर्वतशिखर ले लेकर लंकाके द्वारके समीप गये ॥ ३८ ॥ रामका भाषण श्रवण कर वानर निर्भय हो गये, वे वीर वृक्षोंके योगसे श

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततो हरीणां तदनीकमुग्रं रराज शैलोद्यतवृक्षहस्तम्।
गिरेः समीपानुगतं यथैव महन्महाम्भोधरजालमुग्रम् ४०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे एकषष्टितमः सर्गः ॥६१॥[२५०९]

॥ द्विषष्टितमः सर्गः ॥

स तु राक्षसशार्दूलो निद्रामदसमाकुलः।
राजमार्गं श्रिया जुष्टं ययौ विपुलविक्रमः १
राक्षसानां सहस्रैश्च वृतः परमदुर्जयः।
गृहेभ्यः पुष्पवर्षेण कीर्यमाणस्तदा ययौ २
स हेमजालविततं भानुभास्वरदर्शनम्।
ददर्श विपुलं रम्यं राक्षसेन्द्रनिवेशनम् ३
स तत्तदा सूर्य इवाभ्रजालं प्रविश्य रक्षोऽधिपतेर्निवेशनम्।
ददर्श दूरेऽग्रजमासनस्थं स्वयंभुवं शक्र इवासनस्थम् ४
भ्रातुः स भवनं गत्वा रक्षोगणसमन्वितः।
कुम्भकर्णः पदन्यासैरकम्पयत मेदिनीम् ५
सोऽभिगम्य गृहं भ्रातुः कक्ष्यामभिविगाह्य च।
ददर्शोद्विग्नमासीनं विमाने पुष्पके गुरुम् ६

सेनाको पीडा देने लगे ॥ ३९ ॥ और इस प्रकार पर्वत व वृक्ष हाथमें लिये हुये लंकाके समीप वानर सैन्य पर्वतके समीप विशाल प्रदेशको व्याप्त करनेवाले प्रचंड मेघ समुदायके समान दीखने लगे ॥ ४० ॥

॥ यहाँ ६१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

राक्षस शार्दूल कुम्भकर्ण निद्राके मदसे आकुल राजमार्गमें चला ॥ १ ॥ उसे हजारों राक्षस घेरे जाते थे सब घरोंसे उसके ऊपर फूलोंकी वर्षा होती थी ॥ २ ॥ आगे चल सूर्यवत् प्रकाशित बडा भारी रावणका मन्दिर देखा ॥ ३ ॥ रावणके मन्दिरमें कुम्भकर्णने प्रवेश किया और दूरहीसे बैठे हुए रावणको देखा ॥ ४ ॥ भाईके भवनको जाते कुम्भकर्णने अपने पैरोंसे पृथ्वीको कंपा दिया ॥ ५ ॥
रावणके भवनमें जा बैठे हुये उदासीन अपने बडे भाईको देखा ॥ ६ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अथ दृष्ट्वा दशग्रीवः कुम्भकर्णमुपस्थितम्।
तूर्णमुत्थाय संहृष्टः संनिकर्षमुपानयत् ७
अथासीनस्य पर्यङ्के कुम्भकर्णो महाबलः।
भ्रातुर्ववन्दे चरणौ किं कृत्यमिति चाब्रवीत् ८
पुनः समुदितोत्पत्य रावणः परिषस्वजे ९
स भ्रात्रा संपरिष्वक्तो यथावच्चाभिनन्दितः।
कुम्भकर्णः शुभं दिव्यं प्रतिपेदे वरासनम् १०
स तदासनमाश्रित्य कुम्भकर्णो महाबलः।
संरक्तनयनः क्रोधाद्रावणं वाक्यमब्रवीत् ११
किमर्थमहमादृत्य त्वया राजन्प्रबोधितः।
शंस कस्माद्भयं तेऽत्र को वा प्रेतो भविष्यति १२
भ्रातरं रावणः क्रुद्धं कुम्भकर्णमवस्थितम्।
रोषेण परिवृत्ताभ्यां नेत्राभ्यां वाक्यमब्रवीत्। १३
अयं ते सुमहान्कालः शयानस्य महाबल।
सुषुप्तस्त्वं न जानीषे मम रामकृतं भयम् १४
एष दाशरथिः श्रीमान्सुग्रीवसहितो बली।
समुद्रं लङ्घयित्वा तु कुलं नः परिकृन्तति १५

कुम्भकर्णको देख अतिप्रसन्न हो उठ रावण उसको अपने पास ले आया॥७॥ और स्वयं आसन पर बैठ गया तब कुम्भकर्णने प्रणाम कर कहा कि क्या करना है॥ ८॥ यह सुन रावण हर्षित हो कुम्भकर्णको फिर मिला॥ ९॥ जिससे कुम्भकर्ण बहुत प्रसन्न हुआ उसने भाईका दिया हुआ उत्तम आसन बैठनेके लिये पाया॥ १०॥ कुम्भकर्ण उस पर बैठ रावणसे बोला॥ ११॥

हे राजन्! किस लिए बडे संमानसे आपने मुझको जगवाया है आपको आज कहांसे भय है॥१२॥ ऐसा कहने पर कुंभकर्णसे रावण बोला॥१३॥ हे महाबल! अति कालसे सोनेके कारण रामसे जो भय मुझको प्राप्त है तो नहीं जानते हो॥ १४॥ ये राम सुग्रीव सहित सागरको पारकर यहां आ

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

हन्त पश्य स्वलङ्कायां वानन्युपवनानि च ।
सेतुना सुखमागत्य वानरैर्कार्णवं कृतम् १६
ये राक्षसा मुख्यतमा हतास्ते वानरैर्युधि ।
वानराणां क्षयं युद्धे न पश्यामि कथंचन ॥
न चापि वानरा युद्धे जितपूर्वाः कदाचन १७
तदेतद्भयमुत्पन्नं त्रायस्वेह महाबल ।
नाशय त्वमिमानद्य तदर्थं बोधितो भवान् १८
सर्वक्षपितकोशं च स त्वमभ्युपपद्य माम् ।
त्रायस्वेमां पुरीं लङ्कां बालवृद्धावशेषिताम् १९
भ्रातुरर्थे महाबाहो कुरु कर्म सुदुष्करम् ।
मयैवं नोक्तपूर्वो हि भ्राता कश्चित्परन्तप २०
त्वय्यस्ति मम च स्नेहः परा संभावना च मे ।
देवासुरेषु युद्धेषु बहुशो राक्षसर्षभ २१
त्वया देवाः प्रतिव्यूह्य निर्जिताश्चामरा युधि २२
तदेतत्सर्वमातिष्ठ वीर्यं भीमपराक्रम ।
न हि ते सर्वभूतेषु दृश्यते सदृशो बली २३

हमारे कुलका नाश करते हैं ॥ १५ ॥ देखो लङ्कामें सब वानर उपवन उजडे पडे हैं ॥ १६ ॥

वानरोंने मुख्य मुख्य राक्षसोंको युद्धमें मार डाला पर मैं युद्धमें वानरोंका नाश नहीं देखता क्योंकि कोई वानर युद्धमें आजतक पराजित नहीं हुआ ॥१७॥ इसलिये मुझे भय उत्पन्न हुआ है हेमहाबल ! अब मेरी रक्षा करो और इन सबोंको आज ही तुम मार डालो ॥ १८ ॥ सब द्रव्य सैन्य कोश आदि नाश कराये हुये हमारी और हतशेष है बाल वृद्ध युक्त इस लङ्काकी रक्षा करो ॥ १९ ॥

हे महाबाहो ! अब भाईके लिये दुष्कर कर्म करो ॥२०॥ पर तुममें मेरा अति अनुराग है और तुम्हारा बडा भरोसा है ॥ २१ ॥ देवासुर संग्राममें तुम अनेक वार लडा और देवोंके प्रतिपक्षमें जीता ॥ २२ ॥ सो हे भीम पराक्रमी अपने वीर्य पर आरूढ होवो तुम्हारे समान बली और कोई नहीं

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कुरुष्व मे प्रियहितमेतदुत्तमं यथाप्रियं प्रियरण बान्धवाप्रिय ।
स्वतेजसा व्यथय सपत्नवाहिनीं शरद्घनं पवन इवोद्यतो महान् २४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे द्विषष्टितमः सर्गः ॥६२॥ [२५३३]

॥ त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

तस्य राक्षसराजस्य निशम्य परिदेवितम् ।
कुम्भकर्णो बभाषेदं वचनं प्रजहास च १
दृष्टो दोषो हि योऽस्माभिः पुरा मन्त्रविनिर्णये ।
हितेष्वनभियुक्तेन सोऽयमासादितस्त्वया २
शीघ्रं खल्वभ्युपेतं त्वां फलं पापस्य कर्मणः ।
निरयेष्वेव पतनं यथा दुष्कृतकर्मणः ३
प्रथमं वै महाराज कृत्यमेतदचिन्तितम् ।
केवलं वीर्यदर्पेण नानुबन्धो विचारितः ४
यः पश्चात्पूर्वकार्याणि कुर्यादैश्वर्यमास्थितः ।
पूर्वं चोत्तरकार्याणि न स वेद नयानयौ ५

दीख पडता ॥ २३ ॥ हे संग्रामप्रिय ! हे बांधवप्रिय ! तुम हमारे प्रिय तथा उत्कृष्ट वचनके अनुसार आचरण करो, और प्रकट हुआ हुआ प्रचंड वायु जिस प्रकार शरदृतुके मेघको उडा देता है उस प्रकार तुम अपने तेजसे शत्रु सेनाको उडा दो ॥ २४ ॥

॥ यहाँ ६२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रावणका विलाप सुन कुम्भकर्ण हंसा और बोला ॥ १ ॥ कि पूर्व मन्त्रियों सहित जब इस विषयमें विचार किया था और जो दोष लोगोंने विचारा था वह अपने सहितमें संलग्न प्राप्त हुआ ॥ २ ॥ तुमको पापकर्मका फल शीघ्र ही मिल गया ॥ ३ ॥ हे महाराज ! प्रथम इस कार्यका विचार आपने कुछ किया पर दर्पसे इसका परिणाम नहीं विचारा ॥ ४ ॥ जो पुरुष ऐश्वर्यके अहंकारसे पहले करने योग्य कार्य पीछे करता तथा पीछेका पहले करता है वह नीति अनीति नहीं जानता ॥ ५ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

देशकालविहीनानि कर्माणि विपरीतवत् ।
क्रियमाणानि दुष्यन्ति हवींष्यप्रयतेष्विव ६
त्रयाणां पञ्च वा योगं कर्मणां वः प्रपद्यते ।
सचिवैः समयं कृत्वा स सम्यग्वर्तते पथि ७
यथागमं च यो राजा समयं च चिकीर्षति ।
बुध्यते सचिवैर्बुद्ध्या सुहृदश्चानुपश्यति ८
धर्ममर्थं हि कामं वा सर्वान्वा रक्षसांपते ।
भजते पुरुषः काले त्रीणि द्वन्द्वानि वा पुनः ९
त्रिषु चैतेषु यच्छ्रेष्ठं श्रुत्वा तन्नावबुध्यते ।
राजा वा राजमात्रो वा व्यर्थं तस्य बहुश्रुतम् १०
उपप्रदानं सान्त्वं च भेदं काले च विक्रमम् ।
योगं च रक्षसां श्रेष्ठ तावुभौ च नयानयौ ११
काले धर्मार्थकामान्यः संमन्त्र्य सचिवैः सह ।
निषेवेतात्मवाँल्लोके न स व्यसनमाप्नुयात् १२
हितानुबन्धमालोक्य कुर्यात्कार्यमिहात्मनः ।

अनुचित देश कालमें किये हुये कर्म विपरीत फल देते हैं इससे दूषित होजाते हैं ॥ ६ जो पुरुष मान्त्रियोंकी सम्मतिसे कर्तव्य क्षय व वृद्धि इन तीनोंका कर्मारम्भोपांग करता है वह राजमार्गमें अच्छी तरह चलता है ॥७॥ जो राजा राजनीतिके अनुसार संमति ले फिर अपनी बुद्धिसे भी विचार करता और सुहृदोंसे भी पूंछ लेता है वह अच्छा कार्य करता है ॥ ८ ॥ जो पुरुष समय पर धर्म अर्थ और कामका सेवन करता है वह पुरुष सुखी रहता है ॥ ९ ॥ इन तीनोंको सुन जो श्रेष्ठ होता है उसको नहीं मानता चाहे राजा हो वा राजपुत्र हो उसके बहुत सुननेके कुछ भी फल नहीं होता ॥ १० ॥

हे राक्षसश्रेष्ठ ! जो पुरुष दाम साम भेद पराक्रम योग नीति और अनीति ॥ ११ ॥ धर्म अर्थ काम इन सबका सेवन मान्त्रियोंकी संमतिसे करता है वह दुःख नहीं पाता ॥ १२ ॥ राजाको उचित है कि वह सचि-

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राजा सहार्थतत्त्वज्ञैः सचिवैर्बुद्धिजीविभिः १३
अनभिज्ञाय शास्त्रार्थान्पुरुषाः पशुबुद्धयः।
प्रागल्भ्याद्वक्तुमिच्छन्ति मन्त्रिष्वभ्यन्तरीकृताः १४
अशास्त्रविदुषां तेषां कार्यं नाभिहितं वचः।
अर्थशास्त्रानभिज्ञानां विपुलां श्रियमिच्छताम् १५
अहितं च हिताकारं धाष्ट्याज्जल्पन्ति ये नराः।
अवश्यं मन्त्रबाह्यास्ते कर्तव्याः कृत्यदूषकाः १६
विनाशयन्तो भर्तारं सहिताः शत्रुभिर्बुधैः।
विपरीतानि कृत्यानि कारयन्तीह मन्त्रिणः १७
तान्भर्ता मित्रसंकाशानमित्रान्मन्त्रनिर्णये।
व्यवहारेण जानीयात्सचिवानुपसंहितान् १८
चपलस्येह कृत्यानि सहसानुप्रधावतः।
छिद्रमन्ये प्रपद्यन्ते क्रौञ्चस्य खमिव द्विजाः १९
यो हि शत्रुमवज्ञाय आत्मानं नाभिरक्षति।

चोंसे पूंछकर जिसमें अपना हित देखे करे ॥ १३ ॥ पर कोई कोई किसी प्रकारसे लोक संमति करनेमें बुलाए गये तो वे पशु बुद्धि ढिठाईसे शास्त्रका अर्थ न जाननेवाले पुरुष कुछ और ही कहदेते हैं ॥ १४ ॥ मूर्खोंका वचन और कभी न मानना चाहिये क्योंकि वे अर्थशास्त्रको नहीं जानते हैं और धनकी आशा बडी रखते हैं ॥ १५ ॥

जो पुरुष अहित बात को हितकीसी बनाकर कहते हैं ऐसे धूर्तोंको सलाहसे बाहरकर देना चाहिये क्योंकि वे सब कार्य भ्रष्टकर देते हैं ॥ १६ ॥ कोई मन्त्री ऐसे होते हैं कि वे शत्रुओंसे मिलकर अपने स्वामीका नाश करा देते हैं ॥ १७ ॥ स्वामीको उचित है कि उन धूर्त मन्त्रियोंकी परीक्षा कर उन्हें निकाल दें ॥ १८ ॥ चंचलित हो अविचारसे इधर उधर दौडते हुये राजाके छिद्र शत्रु लोग जानते हैं ॥ १९ ॥ जो राजा वैरीको हेय समझ कर ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अवाप्नोति हि सोऽनर्थान्स्थानाच्च व्यवरोप्यते २०
यदुक्तमिह ते पूर्वं प्रियया मेऽनुजेन च ।
तदेव नो हितं वाक्यं यथेच्छसि तथा कुरु २१
तत्तु श्रुत्वा दशग्रीवः कुम्भकर्णस्य भाषितम् ।
भ्रुकुटिं चैव संचक्रे क्रुद्धश्चैनमभाषत २२
मान्यो गुरुरिवाचार्यः किं मां त्वमनुशाससि ।
किमेवं वाक्श्रमं कृत्वा यद्युक्तं तद्विधीयताम् २३
विभ्रमाच्चित्तमोहाद्वा बलवीर्याश्रयेण वा ।
नाभिपन्नमिदानीं यद्व्यर्था तस्य पुनः कथा २४
अस्मिन्काले तु यद्युक्तं तदिदानीं विचिन्त्यताम् ।
ममापनयजं दुःखं विक्रमेण समीकुरु २५
यदि खल्वस्ति मे स्नेहो विक्रमं वाधिगच्छसि ।
यदि कार्यं ममैतत्ते हृदि कार्यतमं मतम् २६
स सुहृद्यो विपन्नार्थं दीनमभ्युपपद्यते ।
स बन्धुर्योऽपनीतेषु साहाय्यायोपकल्पते २७

॥ नहीं करता वह अनर्थोंको पाता है ॥ २० ॥ तुमसे जो सलाह मन्दोदरी र विभीषणने कही थी वही मुझे रुचती है ॥ २१ ॥

कुंभकर्णको ये बातें सुन रावण क्रोधमें भरकर बोला ॥ २२ ॥ कि मैं के तुल्य तुम्हारा पूजनीय हूं तुम मुझको क्या शिक्षा देते हो जो मैंने । है वह करो ॥ २३ ॥ विक्रम ज्ञान तथा दर्पके सहारे जो कार्य अबतक न किया उसकी कथा ही वृथा है ॥ २४ ॥ इस समय जो उचित है का विचार करो ॥ २५ ॥ यदि मुझसे तुम्हें कुछ प्रीति हो और अपने क्रमकी ओर कुछ ध्यान हो तो युद्ध करो ॥ २६ ॥ सुहृद वही है जो तीका भी साथ देता है और बन्धु वही है जो अनीतिकारी बन्धुकी मदद ॥ २७ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तमथैवं ब्रुवाणं स वचनं धीरदारुणम् ।
हृष्टोऽयमिति विज्ञाय शनैः श्लक्ष्णमुवाच ह २८
अतीव हि समालक्ष्य भ्रातरं क्षुभितेन्द्रियम् ।
कुम्भकर्णः शनैर्वाक्यं बभाषे परिसान्त्वयन् २९
शृणु राजन्नवहितो मम वाक्यमरिन्दम ।
अलं राक्षसराजेन्द्र संतापमुपपद्यते ॥
रोषं च संपरित्यज्य स्वस्थो भवितुमर्हसि ३०
नैतन्मनसि कर्तव्यं मयि जीवति पार्थिव ।
तमहं नाशयिष्यामि यत्कृते परितप्यते ३१
अवश्यं च हितं वाच्यं सर्वावस्थां गतं मया ।
बन्धुभावादभिहितं भ्रातृस्नेहाच्च पार्थिव ३२
सदृशं यच्च कालेऽस्मिन्कर्तुं स्नेहेन बन्धुना ।
शत्रूणां कदनं पश्य क्रियमाणं मया रणे ३३
अद्य पश्य महाबाहो मया समरमूर्धनि ।
हते रामे सह भ्रात्रा द्रवन्तीं हरिवाहिनीम् ३४
अद्य रामस्य तद्दृष्ट्वा मया नीतं रणाच्छिरः ।
सुखी भव महाबाहो सीता भवतु दुःखिता ३५

रावणको क्रुद्ध जान धीरेसे मधुर वचन बोला ॥ २८ ॥ रावणको अति व्यथित कुंभकर्ण धीरे धीरे बोला राजन् ॥ २९ ॥ एकाग्र चित्त हो मेरी बात सुनो सन्ताप करनेसे कुछ लाभ नहीं है ॥ ३० ॥ जिसके लिये आप परितप्त होते हैं युद्धमें मैं उनको मार डालूंगा ॥ ३१ ॥ हितकी ही बात कहनी चाहिये सो स्नेह व बन्धुभावसे मैंने ऐसा कहा था ॥ ३२ ॥ इस समय जो प्रिय बन्धुको करना योग्य है वह मेरे द्वारा किया अपने वैरियोंका पराभव देखिए ॥ ३३ ॥ आज रामलक्ष्मणके मरणके पीछे वानरोंकी रणसे भागती सेना देखना ॥ ३४ ॥

आज मेरे द्वारा लाया हुआ रामका शिरदेख आप सुखी होवेंगे ॥ ३५

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अद्य रामस्य पश्यन्तु निधनं सुमहत्प्रियम् ।
लङ्कायां राक्षसाः सर्वे ये ते निहतबान्धवाः ३६
अद्य शोकपरीतानां स्वबन्धुवधशोचिनाम् ।
शत्रोर्युधि विनाशेन करोम्यश्रुप्रमार्जनम् ३७
अद्य पर्वतसंकाशं ससूर्यमिव तोयदम् ।
विकीर्णं पश्य समरे सुग्रीवं प्लवगेश्वरम् ३८
कथं च राक्षसैरेभिर्मया च परिरक्षितः ।
जिघांसुभिर्दाशरथिं व्यथसे त्वं सदानघ ३९
मां निहत्य किल त्वां हि निहनिष्यति राघवः ।
नाहमात्मनि संतापं गच्छेयं राक्षसाधिप ४०
कामं त्विदानीमपि मां व्यादिश त्वं परन्तप ।
न परः प्रेक्षणीयस्ते युद्धायातुलविक्रम ४१
अहमुत्सादयिष्यामि शत्रूंस्तव महाबलान् ।
यदि शक्रो यदि यमो यदि पावकमारुतौ ४२
तानहं योधयिष्यामि कुबेरवरुणावपि ।
गिरिमात्रशरीरस्य शितशूलधरस्य मे ४३
नर्दतस्तीक्ष्णदंष्ट्रस्य बिभीयाद्वै पुरन्दरः ।
अथ वा त्यक्तशस्त्रस्य मृद्नतस्तरसा रिपून् ४४

जिन राक्षसोंके भाई बन्धु मारे गए हैं वे आज रामको मरा देखें ॥ ३६ ॥ ...आज हुए शोकयुक्त निशाचरोंके आंसू युद्धमें शत्रुको मार पोछूंगा ॥३७॥ ...आज दुःखी वानरराज सुग्रीवको मरा हुआ युद्धमें आप देखें ॥ ३८ ॥ राम ...मरणाकांक्षी इन राक्षसों और मुझसे रक्षित हो आप क्यों दुःखित होते ...हैं ॥ ३९ ॥ हे राक्षसेन्द्र ! राम मुझको मारकर तुमको मार सकेंगे ॥ ४० ॥ ...परन्तप आप युद्धके लिये मेरे अतिरिक्त और किसीकी ओर न देखिये ॥४१॥ ...मैं अकेला ही बडे बलवान् तुम्हारे वैरियोंको मार डालूंगा ॥ ४२-४३ ॥ ...तीक्ष्ण दंष्ट्रा वाले मेरे नादसे इन्द्र भी डर जाता है ॥ ४४ ॥ जिसको

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न मे प्रतिमुखः कश्चित्स्थातुं शक्तो जिजीविषुः।
नैव शक्त्या न गदया नासिना निशितैः शरैः ४५
हस्ताभ्यामेव संरभ्य हनिष्यामि सवज्रिणम्।
यदि मे मुष्टिवेगं स राघवोऽद्य सहिष्यति ४६
ततः पास्यन्ति बाणौघा रुधिरं राघवस्य मे।
चिन्तया तप्यसे राजन्किमर्थं मयि तिष्ठति ४७
सोऽहं शत्रुविनाशाय तव निर्यातुमुद्यतः।
मुञ्च रामाद्भयं घोरं निहनिष्यामि संयुगे ४८
राघवं लक्ष्मणं चैव सुग्रीवं च महाबलम्।
हनूमन्तं च रक्षोघ्नं येन लङ्का प्रदीपिता ४९
हरींश्च भक्षयिष्यामि संयुगे समुपस्थिते।
असाधारणमिच्छामि तव दातुं महद्यशः ५०
यदि चेन्द्राद्भयं राजन्यदि चापि स्वयंभुवः।
अपि देवाः शयिष्यन्ते मयि क्रुद्धे महीतले ५१
यमं च शमयिष्यामि भक्षयिष्यामि पावकम्।
आदित्यं पातयिष्यामि सनक्षत्रं महीतले ५२
शतक्रतुं वधिष्यामि पास्यामि वरुणालयम्।
पर्वतांश्चूर्णयिष्यामि दारयिष्यामि मेदिनीम् ५३

जीनेकी इच्छा होगी वह मेरे आगे न खडा हो सकेगा ॥ ४५ ॥ मैं वानरोंको केवल अपने हाथोंसे ही मार डालूंगा यदि राम मेरी मुष्टिके वेगको सहलेंगे ॥ ४६ ॥ तो फिर उनका रक्त मेरे बाण पीवेंगे हे राजन् ! तुम क्यों चिन्ता कर रहे हो ॥ ४७ ॥ अब रामका घोर भय छोडो मैं उनको युद्धमें मार डालूंगा ॥ ४८ ॥ राम लक्ष्मण और सुग्रीव तथा हनुमान्को मैं मार डालूंगा ॥ ४९ ॥ युद्धस्थलमें पहुंचते ही सब वानरोंको खा जाऊंगा ॥५०॥

हे राजन् ! मेरे क्रोध करनेपर देवता भी भूमिमें शयन करने लगेंगे ॥५१॥ मैं यमको भी नष्ट कर दूंगा सूर्यको भी पृथ्वी पर गिरा दूंगा ॥ ५२ ॥ इन्द्रको भी मार डालूंगा समुद्रको भी पी लूंगा और पृथ्वीको भी विदीर्ण

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दीर्घकालं प्रसुप्तस्य कुम्भकर्णस्य विक्रमम्।
अद्य पश्यन्तु भूतानि भक्ष्यमाणानि सर्वशः ५४
न त्विदं त्रिदिवं सर्वमाहारो मम पूर्यते ५५
वधेन ते दाशरथेः सुखावहं सुखं समाहर्तुमहं व्रजामि।
निहत्य रामं सहलक्ष्मणेन खादामि सर्वान्हरियूथमुख्यान् ५६
रमस्व राजन्पिब चाद्य वारुणीं कुरुष्व कृत्यानि विनीय दुःखम्।
मयाद्य रामे गमिते यमक्षयं चिराय सीता वशगा भविष्यति ५७
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे त्रिषष्टितमः सर्गः ॥६३॥ [२५९०]

॥ चतुःषष्टितमः सर्गः ॥

तदुक्तमतिकायस्य बलिनो बाहुशालिनः।
कुम्भकर्णस्य वचनं श्रुत्वोवाच महोदरः १
कुंभकर्णकुले जातो धृष्टः प्राकृतदर्शनः।
अवलिप्तो न शक्नोषि कृत्यं सर्वत्र वेदितुम् २
न हि राजा न जानीते कुम्भकर्ण नयानयौ।
त्वं तु कैशोरकाद्धृष्टः केवलं वक्तुमिच्छसि ३
स्थानं वृद्धिं च हानिं च देशकालविधानवित्।

र डालूंगा ॥ ५३ ॥ कुम्भकर्णका विक्रम सब ओरसे भक्ष्यमाण प्राणी आज लें ॥ ५४ ॥ और अधिक क्या सम्पूर्ण त्रैलोक्य भी मेरे आहारके लिये [illegible]ा नहीं होगा ॥ ५५ ॥ दशरथपुत्र रामका वध करने तथा तुम्हारे सुखके [illegible]ये यहाँसे मैं जाता हूं और लक्ष्मण सहित रामका वध करके मुख्य मुख्य [illegible]नरसेनाको भक्षण कर डालूंगा ॥ ५६ ॥ हे राजा मद्यपान करके तुम आज [illegible]ड़ा करो और दुःखको त्यागकर जो कुछ करता हो करो, रामको आज [illegible] यमसदनको पहुँचावेंगे और सीता चिरकालतक तुम्हारे स्वाधीन [illegible]ोगी ॥ ५७ ॥

॥ यहाँ ६३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

कुम्भकर्णका वचन सुन महोदर बोला ॥ १ ॥ हे कुम्भकर्ण ! तुमको बडा [illegible] है इससे अति ढीठ हो ॥ २ ॥ क्या राक्षसेन्द्र रावण नीति अनीति नहीं [illegible]ानते जो तुम सीख देते हो ? ॥ ३ ॥ देशकाल अपनी व वैरीकी हानि

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आत्मनश्च परेषां च बुध्यते राक्षसर्षभः ४
यत्त्वशक्यं बलवता कर्तुं प्राकृतबुद्धिना।
अनुपासितवृद्धेन कः कुर्यात्तादृशं नरः ५
यांस्तु धर्मार्थकामांस्त्वं ब्रवीषि पृथगाश्रयान्।
अनुबोद्धुं स्वभावेन न हि लक्षणमस्ति तान् ६
कर्म चैव हि सर्वेषां कारणानां प्रयोजनम्।
श्रेयः पापीयसां चात्र फलं भवति कर्मणाम् ७
निःश्रेयसफलावेव धर्मार्थावितरावपि।
अधर्मानर्थयोः प्राप्तं फलं च प्रात्यवायिकम् ८
ऐहलौकिकपारक्यं कर्म पुंभिर्निषेव्यते।
कर्माण्यपि तु कल्पानि लभते काममास्थितः ९
तत्र क्लृप्तमिदं राज्ञा हृदि कार्यं मतं च नः
शत्रौ हि साहसं यत्तत्किमिवात्रापनीयते १०
एकस्यैवाभियाने तु हेतुर्यः प्राहृतस्त्वया।
तत्राप्यनुपपन्नं ते वक्ष्यामि यदसाधु च ११
येन पूर्वं जनस्थाने बहवोऽतिबलास्तदा।
राक्षसा राघवं ध्वस्ताः कथमेको जयिष्यसि १२

वृद्ध रावण सब जानते हैं ॥ ४ ॥ जो अनुचित्त कर्म प्राकृत बुद्धिवाला मनुष्य नहीं करता वैसा कर्म कोई आदमी कैसे करेगा ! ॥ ५ ॥ धर्म अर्थ कामको स्वयं ही नहीं जानते ॥ ६ ॥ सब कारणोंका प्रयोजन कर्म ही है इसीसे पाप कर्मोंका भी फल होता है सो तुम्हारा ऐसा कथन अयोग्य है ॥ ७ ॥

धर्म अर्थ मोक्षको भी देते हैं और इनसे राज्यादि भोग भी मिल सकते हैं ॥ ८ ॥ पुरुष इस लोक और परलोकके लिये कर्म करते हैं ॥ ९ ॥ राजाने जो कुछ किया है वह अच्छी तरह विचार हम लोगोंकी सम्मतिसे किया है ॥ १० ॥ जो तुमने अकेले ही जाकर सबको मार आवोगे यह कहा उस विषयमें भी जो उचितानुचित है वह मैं कहता हूं ॥ ११ ॥ जिन रामने एकाकी जनस्थानमें बहुत राक्षसोंको मार डाला उसको तु

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ये पूर्वं निर्जितास्तेन जनस्थाने महौजसः ।
राक्षसांस्तान्पुरे सर्वान्भीतानद्य न पश्यसि १३
तं सिंहमिव संक्रुद्धं रामं दशरथात्मजम् ।
सर्पं सुप्तमहो बुद्ध्वा प्रबोधयितुमिच्छसि १४
ज्वलन्तं तेजसा नित्यं क्रोधेन च दुरासदम् ।
कस्तं मृत्युमिवासह्यमासादयितुमर्हति १५
संशयस्थमिदं सर्वं शत्रोः प्रतिसमासने ।
एकस्य गमनं तात न हि मे रोचते भृशम् १६
हीनार्थस्तु समृद्धार्थं को रिपुं प्राकृतं यथा ।
निश्चितं जीवितत्यागे वशमानेतुमिच्छति १७
यस्य नास्ति मनुष्येषु सदृशो राक्षसोत्तम ।
कथमाशंससे योद्धुं तुल्येनेन्द्रविवस्वतोः १८
एवमुक्त्वा तु संरब्धं कुम्भकर्णं महोदरः ।
उवाच रक्षसां मध्ये रावणं लोकरावणम् १९
लब्ध्वा पुरस्ताद्वैदेहीं किमर्थं त्वं विलम्बसे ।
यदीच्छसि तदा सीता वशगा ते भविष्यति २०

अकेले कैसे जीत सकोगे ॥ १२ ॥ जो राक्षस पहिले जनस्थानमें जीते गये हैं क्या उन्हें लङ्कामें भय युक्त तुम नहीं देखते ॥ १३ ॥

सिंहवत् क्रोधित रामको सोते सर्पके तुल्य तुम जगाना चाहते हो॥ १४॥ तेजसे नित्य ही दीप्त मृत्युके समान असह्य रामको कौन भय दे सकता है ॥ १५ ॥ अकेले जानेमें संशय है इससे मुझको तुम्हारा अकेले जाना नहीं रुचता ॥ १६ ॥ ऐसा कौन है जो स्वयं निर्बल हो बलवान् वैरीको प्राकृत समझ अपने वशमें करना चाहे ? ॥ १७ ॥ तुम इन्द्रसम रामसे अकेले कैसे युद्ध करनेको कहते हो ? ॥ १८ ॥ महोदर कुम्भकर्णसे ऐसा कह रावणसे बोला ॥ १९ ॥

आप सीताको बहुत दिनोंसे पाचुके हो जब चाहोगे तभी सीता तुम्हारे

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दृष्टः कश्चिदुपायो मे सीतोपस्थानकारकः।
रुचितश्चेत्त्वया बुद्धया राक्षसेन्द्र ततः शृणु २१
अहं द्विजिह्वः संह्रादी कुम्भकर्णो वितर्दनः।
पञ्च रामवधायैते निर्यान्तीत्यवघोषय २२
ततो गत्वा वयं युद्धं दास्यामस्तस्य यत्नतः।
जेष्यामो यदि ते शत्रून्नोपायैः कार्यमस्ति नः २३
अथ जीवति नः शत्रुर्वयं च कृतसंयुगाः।
ततः समभिपत्स्यामो मनसा यत्समीक्षितम् २४
वयं युद्धादिहैष्यामो रुधिरेण समुक्षिताः।
विदार्य स्वतनुं बाणै रामनामाङ्कितैः शरैः २५
भक्षितो राघवोऽस्माभिर्लक्ष्मणश्चेति वादिनः।
ततः पादौ ग्रहीष्यामस्त्वं नः कामं प्रपूरय २६
ततोऽवघोषय पुरे गजस्कन्धेन पार्थिव।
हतो रामः सह भ्रात्रा ससैन्य इति सर्वतः २७
प्रीतो नाम ततो भूत्वा भृत्यानां त्वमरिन्दम।
भोगांश्च परिवारांश्च कामान्वसु च दापय २८

वशमें होजावेगी ॥ २० ॥ हमने सीताके वश करनेका एक उपाय विचारा है ॥ २१ ॥ आप यह डोंडी पिटवा दीजिये कि महोदर द्विजिह्व, संह्रादी, कुम्भकर्ण और वितर्दन ये पांच राक्षस रामके मारनेको जावें ॥ २२ ॥ तब हम जाकर रामसे युद्ध करेंगे यदि उन्हें जीत लिया तो फिर और कुछ करनेकी जरूरत नहीं ॥ २३ ॥ यदि हम लोग न मार सके तो जो बात हमारे मनमें है वही करेंगे ॥ २४ ॥

रामनामांकित बाणोंसे अपनी देह कटाकर हमलोग युद्धस्थलसे यहां आवेंगे ॥ २५ ॥ हम सब यह कहते हुये आपके पास आवेंगे कि हम लोगोंने राम लक्ष्मणको खालिया ॥२६॥ हाथीपर एक राक्षसको चढा लङ्कामें कहला देना कि युद्धमें राम मारे गये ॥ २७ ॥ उस समय आप प्रसन्न हो भृत्योंको वस्त्र भूषण धनादि दिलवायें ॥ २८ ॥ फिर वीरोंको भी माला

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततो माल्यानि वासांसि वीराणामनुलेपनम्।
देयं च बहु योधेभ्यः स्वयं च मुदितः पिब　२९
ततोऽस्मिन्बहुलीभूते कौलीने सर्वतो गते।
भक्षितः ससुहृद्रामो राक्षसैरिति विश्रुते　३०
प्रविश्याश्वास्य चापि त्वं सीतां रहसि सान्त्वयन्।
धनधान्यैश्च कामैश्च रत्नैश्चैनां प्रलोभय　३१
अनयोपधया राजन्भूयः शोकानुबन्धया।
अकामा त्वद्वशं सीता नष्टनाथा गमिष्यति　३२
रमणीयं हि भर्तारं विनष्टमधिगम्य सा।
नैराश्यात्स्त्रीलघुत्वाच्च त्वद्वशं प्रतिपत्स्यते　३३
सा पुरा सुखसंवृद्धा सुखार्हा दुःखकर्शिता।
त्वय्यधीनं सुखं ज्ञात्वा सर्वथैव गमिष्यति　३४
तत्सुनीतं मम दर्शनेन रामं हि दृष्ट्वैव भवेदनर्थः।
इव ते सेत्स्यति मोत्सुको भूर्महानयुद्धेन सुखस्य लाभः　३५
नष्टसैन्यो ह्यनवाप्तसंशयो रिपुं त्वयुद्धेन जयं जयाधिप।

आदि देना फिर आप भी हर्षित हो खाना पीना ॥ २९ ॥ जब इस
लङ्का भरमें यह जनश्रुति फैल जायगी कि रामको राक्षसोंने खा
॥ ३० ॥ तब आप सीताके पास जा समझा बुझाकर उसे लोभ
जेयेगा ॥ ३१ ॥
यद्यपि यह सुन वह तुम्हारी इच्छा नहीं करेंगी तौ भी अवश हो तुम्हारे
में होजावेगी ॥ ३२ ॥ अपने स्वामीको मरा जान निराश होनेसे तुम्हारे
में होजावेगी ॥ ३३ ॥ वे पूर्व समयमें सुख पा चुकी है पर अब दुःखसे
होगई है इससे तुम्हारी अधीनतामें सुख समझ वशमें होजायगी ॥३४॥
अपने बुद्धिसे यही उपाय निश्चित किया है; युद्ध सुख प्राप्तिका उपाय
है क्योंकि रामको देखते ही राक्षसोंका वध होगा, अतः राम दर्शनके
उत्सुक मत हो, युद्ध बिना किये ही तुमको बडा सुख प्राप्त
॥ ३५ ॥ हे प्रजाधिपते ! सैन्यका नाश न करते हुये, विना संकट

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यशश्च पुण्यं च महान्महीपतिः श्रियं च कीर्तिं च चिरं समश्नुते ३६

इत्यार्षे श्रीमद्रा॰ वाल्मी॰ आदि॰ युद्धकांडे चतुःषष्टितमः सर्गः ॥६४॥ [२६२६]

पञ्चषष्टितमः सर्गः।

स तथोक्तस्तु निर्भर्त्स्यं कुम्भकर्णो महोदरम्।
अब्रवीद्राक्षसश्रेष्ठं भ्रातरं रावणं ततः १
सोऽहं तव भयं घोरं वधात्तस्य दुरात्मनः।
रामस्याद्य प्रमार्जामि निर्वैरो हि सुखी भव २
गर्जन्ति न वृथा शूरा निर्जला इव तोयदाः।
पश्य संपद्यमानं तु गर्जितं युधि कर्मणा ३
न मर्षयन्ति चात्मानं संभावयितुमात्मना।
अदर्शयित्वा शूरास्तु कर्म कुर्वन्ति दुष्करम् ४
विक्लवानां ह्यबुद्धीनां राज्ञां पण्डितमानिनाम्।
रोचते त्वद्वचो नित्यं कथ्यमानं महोदर ५
युद्धे कापुरुषैर्नित्यं भवद्भिः प्रियवादिभिः।
राजानमनुगच्छद्भिः सर्वं कृत्यं विनाशितम् ६
राजशेषा कृता लङ्का क्षीणः कोशो बलं हतम्।

तथा युद्धके सिवाय जो शत्रुको जीत लेता है वही महात्मा राजाका यश पुण्य, ऐश्वर्य व कीर्ति चिरकालतक लाभ देता है ॥ ३६ ॥

॥ यहां ६४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

कुम्भकर्ण ऐसा कहते हुये महोदरको जलीकटी सुना राक्षसेंद्र रावणसे बोला ॥ १ ॥ मैं उस दुरात्मा रामको मार तुम्हारा भय दूर करूंगा ॥ २ ॥ शूर लोग वृथा नहीं गर्जा करते युद्धमें कर्म करते हुये मेरी गर्जन देखो सुनो ॥ ३ ॥ शूर लोग अपने मुखसे अपनी बडाई नहीं करते हैं जबतक वैसा पराक्रम नहीं दिखाते चुप रहते हैं ॥ ४ ॥

हे महोदर ! कायर और पण्डितमानी राजाको तुम्हारी बात अच्छी लगेगी ॥ ५ ॥ तुम्हारे समान पुरुष जिस राजाके पास रहते हैं उसके सब कार्य नष्ट कर देते हैं ॥ ६ ॥ सोही तुमने भी किया कि लङ्कामें राजाही

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

राजानमिममासाद्य सुहृच्चिह्नममित्रकम् ७
एष निर्याम्यहं युद्धमुद्यतः शत्रुनिर्जये ।
दुर्नयं भवतामद्य समीकर्तुं महाहवे ८
एवमुक्तवतो वाक्यं कुम्भकर्णस्य धीमतः।
प्रत्युवाच ततो वाक्यं प्रहसन्राक्षसाधिपः ९
महोदरोऽयं रामात्तु परित्रस्तो न संशयः ।
न हि रोचयते तात युद्धं युद्धविशारद १०
कश्चिन्मे त्वत्समो नास्ति सौहृदेन बलेन च ।
गच्छ शत्रुवधाय त्वं कुम्भकर्ण जयाय च ११
शयानः शत्रुनाशार्थं भवान्संबोधितो मया ।
अयं हि कालः सुमहान्राक्षसानामरिन्दम १२
संगच्छ शूलमादाय पाशहस्त इवान्तकः ।
वानरान्राजपुत्रौ च भक्षयादित्यतेजसौ १३
समालोक्य तु ते रूपं विद्रविष्यन्ति वानराः ।
रामलक्ष्मणयोश्चापि हृदये प्रस्फुटिष्यतः १४
एवमुक्त्वा महातेजाः कुम्भकर्णं महाबलम् ।

...वाय और सबको मरवा डाला रावणके यहां मित्ररूप तुम पूरे शत्रु ...हो ॥ ७ ॥ इससे मैं तुम लोगोंकी अनीति दूर करनेको अब युद्ध करनेको ...ता हूं ॥ ८ ॥ कुम्भकर्णकी बात सुन रावण हंसता हुआ बोला ॥ ९ ॥ ... तात ! निस्सन्देह यह महोदर रामसे बहुत डर गया है इससे इसको ...द नहीं रुचता ॥ १० ॥ हे कुम्भकर्ण ! तुम्हारे तुल्य हमारे यहां और ...ई नहीं है सो शत्रुओंको मारने और जीतनेके लिये तुम जाओ ॥ ११ ॥ ...शत्रुनाशके ही लिये तुमको जगवाया है ॥ १२ ॥ इससे यमराजके समान ...म शूल हाथमें लेकर जाओ वानरों और राम लक्ष्मणको खा डालो ॥१३॥ ...तुम्हारा रूप देख वानर भागेंगे ॥ १४ ॥ रावणने कुम्भकर्णसे ऐसा कह

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पुनर्जातमिवात्मानं मेने राक्षसपुङ्गवः १५
कुम्भकर्णबलाभिज्ञो जानंस्तस्य पराक्रमम् ।
बभूव मुदितो राजा शशाङ्क इव निर्मलः १६
इत्येवमुक्तः संहृष्टो निर्जगाम महाबलः ।
राज्ञस्तु वचनं श्रुत्वा योद्धुमुद्युक्तवांस्तदा १७
आददे निशितं शूलं वेगाच्छत्रुनिबर्हणः ।
सर्वं कालाय संदीप्तं तप्तकाञ्चनभूषणम् १८
इन्द्राशनिसमप्रख्यं वज्रप्रतिमगौरवम् ।
देवदानवगन्धर्वयक्षपन्नगसूदनम् १९
रक्तमाल्यमहादामं स्वतश्चोद्गतपावकम् ।
आदाय विपुलं शूलं शत्रुशोणितरञ्जितम् २०
कुम्भकर्णो महातेजा रावणं वाक्यमब्रवीत् ।
गमिष्याम्यहमेकाकी तिष्ठत्विह बलं महत् २१
अद्य तान्क्षुधितः क्रुद्धो भक्षयिष्यामि वानरान् ।
कुम्भकर्णवचः श्रुत्वा रावणो वाक्यमब्रवीत् २२
सैन्यैः परिवृतो गच्छ शूलमुद्गरपाणिभिः ।
वानरा हि महात्मानः शूराः सुव्यवसायिनः २३

अपना नया जन्म माना ॥ १५ ॥ क्योंकि वह कुम्भकर्णके पराक्रमको अच्छी प्रकार जानता था ॥ १६ ॥

कुम्भकर्ण हर्षित हो राजाज्ञासे युद्ध करनेको तय्यार हुआ ॥ १७ ॥ और पैना काले लोहेसे बना हुआ अति प्रकाशित शूल धारण किया ॥१८॥ जो इन्द्रके वज्रहीके समान भारी था ॥ १९ ॥ वह लाल फूलोंकी मालासे भूषित अग्निके तुल्य प्रज्वलित तथा वैरियोंके रक्तसे रंगा हुआ था ॥ २० ॥ कुम्भकर्ण रावणसे बोला कि मैं अकेला जाता हूं यह बडी सेना ॥ २१ ॥ यहां ही रहे आज मैं सब वानरोंको भक्षण कर लूंगा इसपर रावण बोला ॥ २२ ॥ शूल मुद्गर धारण किये सैनिकों सहित जाओ क्योंकि वानर गण शूर और उद्योगी हैं ॥ २३ ॥ वे अकेले तुमको देख दांतोंसे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एकाकिनं प्रमत्तं वा नयेयुर्दशनैः क्षयम्।
तस्मात्परमदुर्धर्षः सैन्यैः परिवृतो व्रज॥
रक्षसामाहितं सर्वं शत्रुपक्षं निषूदय २४
अथासनात्समुत्पत्य स्रजं मणिकृतान्तराम्।
आबबन्ध महातेजाः कुम्भकर्णस्य रावणः २५
अङ्गदान्यङ्गुलीवेष्ठान्वराण्याभरणानि च।
हारं च शशिसंकाशमाबबन्ध महात्मनः २६
दिव्यानि च सुगन्धीनि माल्यदामानि रावणः।
गात्रेषु सज्जयामास श्रोत्रयोश्चास्यकुण्डले २७
काञ्चनाङ्गदकेयूरनिष्काभरणभूषितः।
कुम्भकर्णो बृहत्कर्णः सुहुतोऽग्निरिवाबभौ २८
श्रोणीसूत्रेण महता मेचकेन विराजितः।
अमृतोत्पादने नद्धो भुजङ्गेनेव मन्दरः २९
काञ्चनं भारसहं निवातं विद्युत्प्रभं दीप्तमिवात्मभासा।
बध्यमानः कवचं रराज संध्याभ्रसंवीत इवाद्रिराजः ३०
सर्वाभरणसर्वाङ्गः शूलपाणिः स राक्षसः।
त्रिविक्रमकृतोत्साहो नारायण इवाबभौ ३१

ट कर मार डालेंगे इससे सैनिकोंको साथ ले जाओ॥ २४॥ रावणने इतना कह आसनसे उठ मणिमाला कुम्भकर्णके गलेमें डाल ॥ २५॥ बहुंटा मुंदरी आदि आभूषण तथा बढिया हार भी पहि-ना॥ २६॥ पुष्प माला रावणने कुम्भकर्णके सब अङ्गोंमें पहिना कानोंमें कुंडल पहिनाये॥ २७॥ भूषण आदि धारण कर कुम्भकर्ण प्रज्वलित अग्निवत् शोभा देने लगा॥ २८॥ कटिमें काला सूत्र बांध समुद्र मथनके समय वासुकिसे बंधे मन्दराचलके समान शोभा देने लगा॥ २९॥ विजु-लीके समान चमकता हुआ कवच धारे सुमेरुके तुल्य शोभित हुआ॥३०॥ सब अङ्गोंमें भूषण धारण किये शूल हाथमें लिये वह राक्षस त्रिविक्रमके

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भ्रातरं संपरिष्वज्य कृत्वा चापि प्रदक्षिणम्।
प्रणम्य शिरसा तस्मै प्रतस्थे स महाबलः ३२
तमाशीर्भिः प्रशस्ताभिः प्रेषयामास रावणः।
शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषैः सैन्यैश्चापि वरायुधैः ३३
तं गजैश्च तुरङ्गैश्च स्यन्दनैश्चाम्बुदस्वनैः।
अनुजग्मुर्महात्मानो रथिनो रथिनां वरम् ३४
सर्पैरुष्ट्रैः खरैश्चैव सिंहद्विपमृगद्विजैः।
अनुजग्मुश्च तं घोरं कुम्भकर्णं महाबलम् ३५
स पुष्पवर्षैरवकीर्यमाणो धृतातपत्रः शितशूलपाणिः।
महोत्कटः शोणितगन्धमत्तो विनिर्ययौ दानवदेवशत्रुः ३६
पदातयश्च बहवो महानादा महाबलाः।
अन्वयू राक्षसा भीमा भीमाक्षाः शस्त्रपाणयः ३७
रक्ताक्षाः सुबहुव्यामा नीलाञ्जनचयोपमाः।
शूलानुद्यम्य खङ्गांश्च निशितांश्च परश्वधान् ३८

समान शोभा देने लगा ॥ ३१ ॥ रावणको आलिङ्गन कर व प्रदक्षिणा कर... महाबली कुम्भकर्ण रवाना हुआ ॥ ३२ ॥

रावणने प्रशस्त आशीर्वाद, शंख, दुंदुभिके शब्द और उत्कृष्ट शस्त्र धा... किया हुआ सैन्य साथमें देकर उसको भेजा ॥ ३३ ॥ गज, अश्व और मेघके समान गर्जना करनेवाले रथ साथमें देकर महात्मा रथी उस श्रेष्ठ रथीके पीछे पीछे चलने लगे ॥ ३४ ॥ और कुछ रथी सर्प, ऊंट, गर्दभ, सिंह, गज... मृग व पक्षीको ही वाहन रूपमें साथमें ले कुंभकर्णके पीछे पीछे गये ॥ ३५ ॥ रक्तके गन्धके कारण मत्त, अतिशय उच्छृंखल ऐसा वह देवदानवोंका शत्रु... हाथमें शूल लेकर जब बाहर होते हुए निकाला तो उसके ऊपर पुष्पवर्षा होने लगी और सेवक उसपर छत्र धारण करने लगा ॥ ३६ ॥

अत्यन्त दृढ, महाबलाढ्य, उग्रनेत्र युक्त व हाथमें शस्त्र लिये हुए ... भयंकर पादचारी राक्षस उसके साथ गया ॥ ३७ ॥ शूल, खड्ग, तेज किये हुए परशु, भिंदिपाल, परिघ, गदा, मुसल और फेंकनेके लिये ताडवृक्षों... बडी बडी ठूंठ जो शत्रुको सहन न हो ऐसे शस्त्र हाथमें लेकर उसके पीछे...

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भिन्दिपालांश्च परिघान्गदाश्च मुसलानि च।
तालस्कन्धांश्च विपुलान्क्षेपणीयान्दुरासदान् ३९
अथान्यद्वपुरादाय दारुणं घोरदर्शनम्।
निष्पपात महातेजाः कुम्भकर्णो महाबलः ४०
धनुःशतपरीणाहः स षट्शतसमुच्छ्रितः।
रौद्रः शकटचक्राक्षो महापर्वतसंनिभः ४१
संनिपत्य च रक्षांसि दग्धशैलोपमो महान्।
कुम्भकर्णो महावक्त्रः प्रहसन्निदमब्रवीत् ४२
अद्य वानरमुख्यानां तानि यूथानि भागशः।
निर्दहिष्यामि संक्रुद्धः पतङ्गानिव पावकः ४३
नापराध्यन्ति मे कामं वानरा वनचारिणः।
जातिरस्मद्विधानां सा पुरोद्यानविभूषणम् ४४
पुररोधस्य मूलं तु राघवः सहलक्ष्मणः।
हते तस्मिन्हतं सर्वं तं वधिष्यामि संयुगे ४५

...ड़ने लगे; उन राक्षसोंके नेत्र लाल थे और पर्वतसे भी विशाल शरीर ॥ ३८–३९ ॥ तदनन्तर भयंकर मुद्रासे युक्त ऐसा दूसरा एक बडा ...शरीर धारण करके महातेजस्वी व महाबलाढ्य कुंभकर्ण जल्दीसे ...कला ॥ ४० ॥ जिसकी देहकी चौडाई एकसौ धनुष है, ऊंचाई छेसौ ...हुए है, गाडीके पहियेके समान जिसके नेत्र हैं और महापर्वतके समान ...उसकी आकृति है ऐसा वह उग्र ॥ ४१ ॥ व दग्ध हुआसा दीखते हुए ...और प्रचंड मुखसे युक्त वह महान् कुंभकर्ण राक्षस एक जगह व्यवस्थित ...उसे अपनेको खडा करके हंसते हंसते बोला ॥ ४२ ॥

"जिस प्रकार अग्नि पतङ्गोंको जला देता है उस प्रकार क्रुद्ध हुआ मैं ...ज मुख्य मुख्य वानरोंकी सैन्यको दग्ध कर डालूंगा ॥ ४३ ॥ परन्तु ...वनचर वानरोंने सचमुच मेरा अपराध कुछ नहीं किया है, वह जाति भी ...मारे जैसे नगरोंके व बागोंके लिये आभूषण है ॥ ४४ ॥ नगरको जो वह ...घेरा पडा है उसका मूल लक्ष्मण सहित राम ही होगा। अतः उसका वध ...करनेसे सबका वध हो जायगा इसलिये संग्राममें मैं उसीको मारूंगा।"

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एवं तस्य ब्रुवाणस्य कुम्भकर्णस्य रक्षसः ।
नादं चक्रुर्महाघोरं कम्पयन्त इवार्णवम् ४६
तस्य निष्पततस्तूर्णं कुम्भकर्णस्य धीमतः ।
बभूवुर्घोररूपाणि निमित्तानि समन्ततः ४७
उल्काशनियुता मेघा बभूवुर्गर्दभारुणाः ।
ससागरवना चैव वसुधा समकम्पत ४८
घोररूपाः शिवा नेदुः सज्वालकवलैर्मुखैः ।
मण्डलान्यपसव्यानि बबन्धुश्च विहङ्गमाः ४९
निष्पपात च गृध्रोऽस्य शूले वै पथि गच्छतः ।
प्रास्फुरन्नयनं चास्य सव्यो बाहुरकम्पत ५०
निष्पपात तदा चोल्का ज्वलन्ती भीमनिःस्वना ।
आदित्यो निष्प्रभश्चासीन्न वाति च सुखोऽनिलः ५१
अचिन्तयन्महोत्पातानुदितान्रोमहर्षणान् ।
निर्ययौ कुम्भकर्णस्तु कृतान्तबलचोदितः ५२

॥ ४५ ॥ इस प्रकार वह कुंभकर्ण राक्षस बोलने लगा, तब समुद्रको कंपित करने जैसी दूसरे राक्षसोंने भी भयंकर गर्जना की ॥ ४६ ॥ अस्तु । वह बुद्धिमान् कुंभकर्णको शीघ्र बाहर निकलनेपर चारों तरफसे उसको भयंकर अपशकुन होने लगा ॥ ४७ ॥ ज्वाला व विद्युल्लतासे युक्त गर्दभके समान धूम्रवर्ण वाले मेघ प्रकट हुअे और समुद्र व अरण्य युक्त पृथ्वी कम्पित होने लगी ॥ ४८ ॥ अंगारसे युक्त मुख बाकर उग्ररूपसे शिवा बोलने लगी और दूसरे पक्षी गण अप्रदक्षिणिक चक्कर लगाने लगा ॥ ४९ ॥ रास्तेमें जाते जाते गृध्र पक्षी उसके शूलपर बैठ गया, उसके बांये अंग फडकने लगे, बांया हाथ कांपने लगा ॥ ५० ॥ भयंकर स्वरसे युक्त एक उज्वल ज्वाला आकाशसे नीचे आई, सूर्य निस्तेज हो गया और वायुका सुखकारक बहना बंद हो गया ॥ ५१ ॥ परन्तु शरीरको रोमांचित करनेवाले इन बडे उत्पातोंकी पर्वा न करता हुआ मृत्युबलसे प्रेरित हुआ कुंभकर्ण बाहर निकला ॥ ५२ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स लङ्घयित्वा प्राकारं पद्भ्यां पर्वतसंनिभः।
स ददर्श घनप्रख्यं वानरानीकमद्भुतम् ५३
ते दृष्ट्वा राक्षसश्रेष्ठं वानराः पर्वतोपमम्।
वायुनुन्ना इव घना ययुः सर्वा दिशस्तदा ५४
तद्वानरानीकमतिप्रचण्डं दिशो द्रवद्भिन्नमिवाभ्रजालम्।
स कुम्भकर्णः समवेक्ष्य हर्षान्ननाद भूयो घनवद्घनाभः ५५
ते तस्य घोरं निनदं निशम्य यथा निनादं दिवि वारिदस्य।
पेतुर्धरण्यां बहवः प्लवङ्गा निकृत्तमूला इव शालवृक्षाः ५६
विपुलपरिघवान्स कुम्भकर्णो रिपुनिधनाय विनिःसृतो महात्मा।
कपिगणभयमाददत्सुभीमं प्रभुरिव किङ्करदण्डवान्युगान्ते ५७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे पञ्चषष्टितमः सर्गः ॥६५॥ [२६८३]

लंकाके चारों तरफ अवस्थित पर कोटको पार करनेपर मेघतुल्य अद्भुत वानरसैन्य पर्वतप्राय कुंभकर्णको देखा ॥ ५३ ॥ उस राक्षसश्रेष्ठ कुंभकर्णको अवलोकन करनेपर जिस प्रकार हवासे मेघ तितर बितर हो जाता है उसी प्रकार वानरसैन्य तितर बितर हो गया ॥ ५४ ॥ वायुसे विदीर्ण हुआ मेघ जैसे उस वानर सैन्यको इधर उधर भागते देख मेघरूप कुंभकर्ण मेघके समान और जोर जोरसे गर्जने लगा ॥ ५५ ॥ आकाशमें मेघगर्जनाके समान उसकी भयंकर गर्जना सुनकर जड उखडे हुए शालवृक्षके समान बहुतसे वानर भूमिपर गिर गये ॥ ५६ ॥ और युगांत समयसें संहार करनेवाले सेवक व कालदंड साथमें लिये हुअे प्रभु कालस्वरूप रूद्र ही हैं कि क्या ऐसा वह प्रचंड परिघ धारण किया हुआ महात्मा कुंभकर्ण वानरसैन्योंको अतिशय भय उत्पन्न करता हुआ शत्रु वधके उद्देशसे बाहर निकला ॥ ५७ ॥

यहां ६५ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

॥ षट्षष्टितमः सर्गः ॥

स लङ्घयित्वा प्राकारं गिरिकूटोपमो महान्।
निर्ययौ नगरात्तूर्णं कुम्भकर्णो महाबलः १
ननाद च महानादं समुद्रमभिनादयन्।
विजयन्निव निर्घातान्विधमन्निव पर्वतान् २
तमवध्यं मघवता यमेन वरुणेन वा।
प्रेक्ष्य भीमाक्षमायान्तं वानरा विप्रदुद्रवुः ३
तांस्तु विप्रद्रुतान्दृष्ट्वा राजपुत्रोऽङ्गदोऽब्रवीत्।
नलं नीलं गवाक्षं च कुमुदं च महाबलम् ४
आत्मनस्तानि विस्मृत्य वीर्याण्यभिजनानि च।
क्व गच्छत भयत्रस्ताः प्राकृता हरयो यथा ५
साधु सौम्या निवर्तध्वं किं प्राणान्परिरक्षथ।
नालं युद्धाय वै रक्षो महतीयं विभीषिका ६
महतीमुत्थितामेनां राक्षसानां विभीषिकाम्।
विक्रमाद्विधमिष्यामो निवर्तध्वं प्लवङ्गमाः ७
कृच्छ्रेण तु समाश्वस्य संगम्य च ततस्ततः।
वृक्षान्गृहीत्वा हरयः संप्रतस्थू रणाजिरे ८
ते निवर्त्य तु संरब्धाः कुम्भकर्णं वनौकसः।
निजघ्नुः परमक्रुद्धाः समदा इव कुञ्जराः ९

महाबली कुम्भकर्ण प्राकारको लांघ करके नगरसे बाहर चला ॥ १
नादसे पर्वतोंको कंपाता समुद्रको क्षुभित करता बडे बलसे गर्जा ॥ २
उस भयंकर नयनवालेको आता देख सब वानर भागने लगे ॥ ३ ॥ अङ्गद उनको
भागते देख नल नील गवाक्ष और कुमुदसे बोला ॥ ४ ॥ कि भय
व्याकुल हो साधारण वानरोंके समान कहां भागे जाते हो ? ॥ ५ ॥

हे वीरों लौट आओ प्राणोंकी रक्षा क्यों करते हो ? ॥ ६ ॥ यह राक्ष
युद्धमें कुछ भी समर्थ नहीं है केवल भय मात्र है ॥ ७ ॥ बडे कष्टसे स
वानर लौटे और वृक्ष ले ले समरमें खडे होगये ॥ ८ ॥ लौटते ही स
वानर क्रोधित कुम्भकर्णको मारने लगे ॥ ९ ॥ किसीने गिरिशृङ्गोंसे किसी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रांशुभिर्गिरिशृङ्गैश्च शिलाभिश्च महाबलः।
पादपैः पुष्पिताग्रैश्च हन्यमानो न कम्पते १०
तस्य गात्रेषु पतिता भिद्यन्ते बहवः शिलाः।
पादपाः पुष्पिताग्राश्च भग्नाः पेतुर्महीतले ११
सोऽपि सैन्यानि संक्रुद्धो वानराणां महौजसाम्।
ममन्थ परमायत्तो वनान्यग्निरिवोत्थितः १२
लोहितार्द्रास्तु बहवः शेरते वानरर्षभाः।
निरस्ताः पतिता भूमौ ताम्रपुष्पा इव द्रुमाः १३
लङ्घयन्तः प्रधावन्तो वानरा नावलोकयन्।
केचित्समुद्रे पतिताः केचिद्गगनमास्थिताः १४
वध्यमानास्तु ते वीरा राक्षसेन च लीलया।
सागरं येन ते तीर्णाः पथा तेनैव दुद्रुवुः १५
ते स्थलानि तदा निम्नं विवर्णवदना भयात्।
ऋक्षा वृक्षान्समारूढाः केचित्पर्वतमास्थिताः १६
निपेतुः केचिदपरे केचिन्नैवावतस्थिरे।
केचिद्भूमौ निपतिताः केचित्सुप्ता मृता इव १७
तान्समीक्ष्याङ्गदो भग्नान्वानरानिदमब्रवीत्।

पाषाणोंसे किसीने वृक्षोंसे मारा पर कुम्भकर्ण कम्पित न हुआ ॥ १० ॥ उसके शरीरमें लगकर शिलायें फूट गईं और वृक्ष टूटटूट कर गिर पडे ॥ ११ ॥ कुम्भकर्ण भी वानरोंकी सेनाओंको मथने लगा ॥ १२ ॥ बहुतसे वानर पृथ्वीपर लोटने लगे ॥ १३ ॥ बचे हुये वानर एक दूसरेको लांघते और दौडते हुये भाग चले ॥ १४ ॥ वे जिस मार्गको होकर सागर उतरे थे उसी रास्तेसे भाग चले ॥ १५ ॥ और भयसे उच्च स्थलों और गढोंकी ओर भागे और ऋक्ष वृक्षों और पर्वतोंपर चढ गए ॥ १६ ॥ कोई गिर पडे कोई खडे ही न हुए कोई भयसे मरोंके तुल्य हो सोरहे ॥ १७ ॥ उन सबको भागते देख अङ्गद बोले कि हे

*

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अवतिष्ठत युध्यामो निवर्तध्वं प्लवङ्गमाः १८
भग्नानां वो न पश्यामि परिक्रम्य महीमिमाम्।
स्थानं सर्वे निवर्तध्वं किं प्राणान्परिरक्षथ १९
निरायुधानां क्रमतामसङ्गगतिपौरुषाः।
दारा ह्युपहसिष्यन्ति स वै घातः सुजीवताम् २०
कुलेषु जाताः सर्वेऽस्मिन्विस्तीर्णेषु महत्सु च।
क्व गच्छत भयत्रस्ताः प्राकृता हरयो यथा २१
अनार्याः खलु यद्भीतास्त्यक्त्वा वीर्यं प्रधावत २२
विकत्थनानि वो यानि भवद्भिर्जनसंसदि।
तानि वः क्व नु यातानि सोदग्राणि हतानि च २३
भीरोः प्रवादाः श्रूयन्ते यस्तु जीवति धिक्कृतः।
मार्गः सत्पुरुषैर्जुष्टः सेव्यतां त्यज्यतां भयम् २४
शयामहे वा निहताः पृथिव्यामल्पजीविताः।
प्राप्नुयामो ब्रह्मलोकं दुष्प्रापं च कुयोधिभिः २५
अवाप्नुयामः कीर्तिं वा निहत्वा शत्रुमाहवे।
निहता वीरलोकस्य भोक्ष्यामो वसु वानराः २६
न कुम्भकर्णः काकुत्स्थं दृष्ट्वा जीवन्गमिष्यति।
दीप्यमानमिवासाद्य पतङ्गो ज्वलनं यथा २७

वानरों लौट आओ एक बार फिर लडो ॥ १८ ॥ भाग कर तुम नहीं बच सकते इससे लौट आओ ॥ १९ ॥

हे वानरों! जब तुम निरायुध हो भागोगे तो स्त्रियां भी तुमको हसेंगी ॥ २० ॥ तुम लोग भयभीत हो प्राकृत वानरोंके समान कहां भागे जाते हो ॥ २१ ॥ तुम लोग अनार्य हो डरसे भागे जाते हो ॥ २२ ॥ लोगोंके सामने जो बडी डींग मारा करते थे वे अब कहां गई जो भागे जाते हो ॥ २३ ॥ सत्पुरुषोंकी सेवा करनेके योग्य मार्गमें चलो और भय छोड दो ॥२४॥ यदि आयु क्षीण होगई होगी तो मरकर ब्रह्मलोक पावेंगे॥ २५ ॥ और जो शत्रुको मार डालेंगे तो लोकमें कीर्ति होगी ॥ २६ ॥ रामको देख यह कुम्भकर्ण जीता हुआ न लौटेगा ॥ २७ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पलायनेन चोद्दिष्टाः प्राणान्रक्षामहे वयम् ।
एकेन बहवो भग्ना यशोनाशं गमिष्यति २८
एवं ब्रुवाणं तं शूरमङ्गदं कनकाङ्गदम् ।
द्रवमाणास्ततो वाक्यमूचुः शूरविगर्हितम् २९
कृतं नः कदनं घोरं कुम्भकर्णेन रक्षसा ।
न स्थानकालो गच्छामो दयितं जीवितं हि नः ३०
एतावदुक्त्वा वचनं सर्वे ते भेजिरे दिशः ।
भीमं भीमाक्षमायान्तं दृष्ट्वा वानरयूथपाः ३१
द्रवमाणास्तु ते वीरा अङ्गदेन वलीमुखाः ।
सान्त्वनैश्चानुमानैश्च ततः सर्वे निवर्तिताः ३२
प्रहर्षमुपनीताश्च बालिपुत्रेण धीमता ।
आज्ञाप्रतीक्षास्तस्थुश्च सर्वे वानरयूथपाः ३३

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे षट्षष्टितमः सर्गः ॥६६॥ [२७१६]

॥ सप्तषष्टितमः सर्गः ॥

ते निवृत्ता महाकायाः श्रुत्वाङ्गदवचस्तदा ।
नैष्ठिकीं बुद्धिमास्थाय सर्वे सङ्ग्रामकाङ्क्षिणः १

यदि भागकर अपनी रक्षा करेंगे तो सबकी कीर्ति नष्ट हो जावेगी ॥२८॥ अङ्गदके ऐसे वचन सुन भागते हुये वानर शूर लोगोंके आगे निन्दा योग्य वचन बोले ॥ २९ ॥ कुम्भकर्णने हम लोगोंका बडा क्षय किया है सो प्राणोंके बचानेकी आकांक्षासे भागे जाते हैं ॥ ३० ॥ यह कह सब वानर कुम्भकर्णको आता देख फिर भाग चले ॥ ३१ ॥ जब सब वानर भागे तो अङ्गदने फिर समझा बुझाकर लौटाया ॥ ३२ ॥ अङ्गदने उन सबको बहुत हर्षित किया जिससे वे फिर खडे हुये और अङ्गद आज्ञाकी बाट जोहने लगे ॥ ३३ ॥

॥ यहाँ ६६ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

अङ्गदके वचन सुन वानर युद्ध करनेकी इच्छासे फिर लौटे ॥ १ ॥ सब

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

समुदीरितवीर्यास्ते समारोपितविक्रमाः ।
पर्यवस्थापिता वाक्यैरङ्गदेन बलीयसा २
प्रयाताश्च गता हर्षं मरणे कृतनिश्चयाः ।
चक्रुः सुतुमुलं युद्धं वानरास्त्यक्तजीविताः ३
अथ वृक्षान्महाकायाः सानूनि सुमहान्ति च ।
वानरास्तूर्णमुद्यम्य कुम्भकर्णमभिद्रवन् ४
कुम्भकर्णः सुसंक्रुद्धो गदामुद्यम्य वीर्यवान् ।
धर्षयन्स महाकायः समन्ताद्व्याक्षिपद्रिपून् ५
शतानि सप्त चाष्टौ च सहस्राणि च वानराः ।
प्रकीर्णाः शेरते भूमौ कुम्भकर्णेन ताडिताः ६
षोडशाष्टौ च दश च विंशत्त्रिंशत्तथैव च ।
परिक्षिप्य च बाहुभ्यां खादन्स परिधावति ॥
भक्षयन्भृशसंक्रुद्धो गरुडः पन्नगानिव ७
कृच्छ्रेण च समाश्वस्ताः संगम्य च ततस्ततः ।
वृक्षाद्रिहस्ता हरयस्तस्थुः सङ्ग्राममूर्धनि ८
ततः पर्वतमुत्पाट्य द्विविदः प्लवगर्षभः ।
दुद्राव गिरिशृङ्गाभं विलम्ब इव तोयदः ९

युद्ध करनेको तैयार हुए क्योंकि अङ्गदने समझा बुझा उनको दृढ कर दिया था ॥ २ ॥ इससे सब मरनेपर तैयार वानर गण बडे बडे पेड और गिरि-शृङ्ग ले कुम्भकर्णके आगे दौडे ॥ ३-४ ॥ कुम्भकर्ण भी गदा ले चारों ओरसे प्रहार करने लगा ॥ ५ ॥ कुम्भकर्ण द्वारा हत होकर सातसौ आठसौ तथा सहस्र सहस्र वानर भूमिमें मरकर सोने लगे ॥ ६ ॥ बीस बीस वानरोंको एक ही संग पकड पकड खाकर दौडने लगा ॥ ७ ॥ एवं भक्षित होनेपर भी वानर गण अति कष्टसे स्वस्थ चित्त हो वृक्ष पाषाण शिलादि लेले युद्ध भूमिमें खडे हुये ॥ ८ ॥

लम्बायमान द्विविद पर्वत उखाड पर्वताकार कुम्भकर्णके ऊपर दौडा॥९॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तं समुत्पाट्य चिक्षेप कुम्भकर्णाय वानरः।
तमप्राप्य महाकायं तस्य सैन्येपतत्ततः १०
ममर्दाश्वान्गजांश्चापि रथांश्चापि गजोत्तमान्।
तानि चान्यानि रक्षांसि एवं चान्यद्गिरेः शिरः ११
तच्छैलवेगाभिहतं हताश्वं हतसारथिम्।
रक्षसां रुधिरक्लिन्नं बभूवायोधनं महत् १२
रथिनो वानरेन्द्राणां शरैः कालान्तकोपमैः।
शिरांसि नदतां जह्नुः सहसा भीमनिःस्वनाः १३
वानराश्च महात्मानः समुत्पाट्य महाद्रुमान्।
रथानश्वान्गजानुष्ट्रान्राक्षसानभ्यसूदयन् १४
हनूमाञ्शैलशृङ्गाणि शिलाश्च विविधान्द्रुमान्।
ववर्ष कुम्भकर्णस्य शिरस्यम्बरमास्थितः १५
तानि पर्वतशृङ्गाणि शूलेन स बिभेद ह।
बभञ्ज वृक्षवर्षं च कुम्भकर्णो महाबलः १६
ततो हरीणां तदनीकमुग्रं दुद्राव शूलं निशितं प्रगृह्य।
तस्थौ स तस्यापततः पुरस्तान्महीधराग्रं हनुमान्प्रगृह्य १७
स कुम्भकर्णं कुपितो जघान वेगेन शैलोत्तमभीमकायम्।

और वह पर्वत कुम्भकर्णके ऊपर छोडा पर वह उसपर गिर उसकी सेनापर गिरा ॥ १० ॥ और बहुतसे घोडे, हाथी और राक्षसोंको चूर्ण कर दिया ॥ ११ ॥ पर्वतके वेगसे घोडे, रथ, सारथी आदि मारे गये ॥ १२ ॥ वानरेंद्रोंके रथियोंने बाणोंसे राक्षसोंके शिरकाट डाले और बडा गर्जन किया ॥ १३ ॥ अन्य वानरोंने वृक्षोंसे रथों घोडों ऊटों और राक्षसोंको नष्ट कर डाला ॥ १४ ॥ तदनु हनुमान् आकाशस्थ हो पर्वत शिखर शिला और वृक्ष कुम्भकर्णके शिरपर फेंकने लगा ॥ १५ ॥ उन गिरिशिखरों और वृक्षोंको कुम्भकर्णने शूलसे काट डाला ॥ १६ ॥

तीक्ष्ण शूल ले वानर सेनाके ऊपर दौडा तब उसके आगे मानो एक पहाड हाथमें ले हनुमान् खडा हुवा ॥ १७ ॥ और उसीसे कुम्भकर्णको कोप कर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgac

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

संचुक्षुभे तेन तदाभिभूतो मेदार्द्रगात्रो रुधिरावसिक्तः १८
स शूलमाविध्य तडित्प्रकाशं गिरिर्यथा प्रज्वलिताग्निशृङ्गम्।
बाह्वन्तरे मारुतिमाजघान गुहोऽचलं क्रौञ्चमिवोग्रशक्त्या १९
स शूलनिर्भिन्नमहाभुजान्तरः प्रविह्वलः शोणितमुद्वमन्रुषा।
ननाद भीमं हनुमान्महाहवे युगान्तमेघस्तनितस्वनोपमम् २०
ततो विनेदुः सहसा प्रहृष्टा रक्षोगणास्तं व्यथितं समीक्ष्य।
प्लवङ्गमास्तु व्यथिता भयार्ताः प्रदुद्रुवुः संयति कुम्भकर्णात् २१

ततस्तु नीलो बलवान्पर्यवस्थापयन्बलम्।
प्रविचिक्षेप शैलाग्रं कुम्भकर्णाय धीमते २२
तदापतन्तं संप्रेक्ष्य मुष्टिनाभिजघान ह।
मुष्टिप्रहाराभिहतं तच्छैलाग्रं व्यशीर्यत २३
सविस्फुलिङ्गं सज्वालं निपपात महीतले २४
ऋषभः शरभो नीलो गवाक्षो गन्धमादनः।
पञ्च वानरशार्दूलाः कुम्भकर्णमुपाद्रवन् २५
शैलैर्वृक्षैस्तलैः पादैर्मुष्टिभिश्च महाबलाः।
कुम्भकर्णं महाकायं निजघ्नुः सर्वतो युधि २६

मारा उसके लगनेसे कुम्भकर्ण क्षुभित हो गया ॥ १८ ॥ तब विजुलीके समान शूल हाथमें ले कुम्भकर्णने हनुमान्की छातीमें मारा ॥ १९ ॥ उसके लगनेसे व हनुमान व्याकुल हो गया और उसके मुखसे खून बहने लगा ॥ २० ॥

हनुमानको कष्टमें देख राक्षस गण हर्षित हो नाद करने लगे और भयसे वानर गण रणछोड भागने लगे ॥ २१ ॥ तब महाबल नीलने सब सैन्यको लौटाया और एक गिरिशिखर कुम्भकर्णके ऊपर चलाया ॥ २२ ॥ उसको आता देख कुम्भकर्णने मुष्टिप्रहारसे चूर्ण कर दिया ॥ २३ ॥ और चिनगारी व ज्वालाके साथ वे पृथ्वीपर गिर पडे ॥ २४ ॥ तब ऋषभ शरभ नील गवाक्ष और गन्ध मान ये पांच वानर पुङ्गव एक ही साथ कुम्भकर्णपर टूट पडे ॥ २५ ॥ और कुम्भकर्णको पाषाणों वृक्षों थप्पडों लातोंसे मारे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स्पर्शानिव प्रहारांस्तान्वेदयानो न विव्यथे।
ऋषभं तु महावेगं बाहुभ्यां परिषस्वजे २७
कुम्भकर्णभुजाभ्यां तु पीडितो वानरर्षभः।
निपपातर्षभो भीमः प्रमुखागतशोणितः २८
मुष्टिना शरभं हत्वा जानुना नीलमाहवे।
आजघान गवाक्षं तु तलेनेन्द्ररिपुस्तदा २९
दत्तप्रहारव्यथिता मुमुहुः शोणितोक्षिताः।
निपेतुस्ते तु मेदिन्यां निकृत्ता इव किंशुकाः ३०
तेषु वानरमुख्येषु पातितेषु महात्मसु।
वानराणां सहस्राणि कुम्भकर्णं प्रदुद्रुवुः ३१
तं शैलमिव शैलाभाः सर्वे तु प्लवगर्षभाः।
समारुह्य समुत्पत्य ददंशुः प्लवगर्षभाः ३२
तं नखैर्दशनैश्चापि मुष्टिभिर्बाहुभिस्तथा।
कुम्भकर्णं महाबाहुं निजघ्नुः प्लवगर्षभाः ३३
स वानरसहस्रैस्तु विचितः पर्वतोपमः।
रराज राक्षसव्याघ्रो गिरिरात्मरुहैरिव ३४

गे ॥ २६ ॥ उन प्रहारोंसे उसको कुछ कष्ट न हुआ उसने हाथोंसे ऋषभको पकड लिया ॥ २७ ॥

कुम्भकर्णकी बाहुओंसे व्यथित ऋषभ भूमिपर गिर पडा और मुखसे रक्त बहने लगा ॥ २८ ॥ फिर कुम्भकर्णने मुष्टिकसे शरभको जांघसे नीलको और गवाक्षको लातसे मारा ॥ २९ ॥ उसके प्रहारसे पीडित हो ये सब मूर्च्छित हो भूमिपर गिर पडे ॥ ३० ॥ जब उन वानरोंको कभी कुम्भकर्णने गिरा दिया तो उसके ऊपर एक साथ असंख्य वानर दौडे ॥ ३१ ॥ वानरगण पर्वताकार कुम्भकर्णके ऊपर चढ जगह जगह उसको काटने लगे ॥ ३२ ॥ और नखों दांतो घूसों और बाहोंसे कुम्भकर्णको मारने लगे ॥ ३३ ॥

वह कुम्भकर्ण असंख्य वानरोंके लिपट जानेसे वृक्षयुक्त गिरिके समान

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बाहुभ्यां वानरान्सर्वान्प्रगृह्य स महाबलः ।
भक्षयामास संक्रुद्धो गरुडः पन्नगानिव ३५
प्रक्षिप्ताः कुम्भकर्णेन वक्त्रे पातालसंनिभे ।
नासापुटाभ्यां संजग्मुः कर्णाभ्यां चैव वानराः ३६
भक्षयन्भृशसंक्रुद्धो हरीन्पर्वतसंनिभः ।
बभञ्ज वानरान्सर्वान्संक्रुद्धो राक्षसोत्तमः ३७
मांसशोणितसंक्लेदां कुर्वन्भूमिं स राक्षसः ।
चचार हरिसैन्येषु कालाग्निरिव मूर्च्छितः ३८
वज्रहस्तो यथा शक्रः पाशहस्त इवान्तकः ।
शूलहस्तो बभौ युद्धे कुम्भकर्णो महाबलः ३९
यथा शुष्काण्यरण्यानि ग्रीष्मे दहति पावकः ।
तथा वानरसैन्यानि कुम्भकर्णो ददाह सः ४०
ततस्ते वध्यमानास्तु हतयूथाः प्लवङ्गमाः ।
वानरा भयसंविग्ना विनेदुर्विकृतैः स्वरैः ४१
अनेकशो वध्यमानाः कुम्भकर्णेन वानराः ।
राघवं शरणं जग्मुर्व्यथिता भिन्नचेतसः ४२

शोभा देने लगा ॥ ३४ ॥ वह महाबली वानरोंको पकड पकड भक्षण करने लगा ॥ ३५ ॥ कुम्भकर्णने अपने मुखमें जिन वानरोंको झोक लिया वे नाक और कानोंकी राहसे निकल भागे ॥ ३६ ॥ इसपर वह कुम्भकर्ण क्रोधित हो बहुतोंको पृथ्वीपर पटकने लगा ॥ ३७ ॥ कुम्भकर्ण क्रोधसे मूर्च्छित हो कालाग्निके समान वानर सैन्यमें घूमने लगा ॥ ३८ ॥ इन्द्र तथा जमराजके समान शूल हाथमें लिये कुम्भकर्ण युद्धमें शोभित हुआ ॥ ३९ ॥ कुम्भकर्ण वानरोंको ऐसे नष्ट करने लगा जैसे गरमीमें आग सूखेवनोंको जलाती है ॥ ४० ॥

सरदारोंके मर जानेसे त्रस्त हो अन्य वानर व्यथित हो भयङ्कर शब्द करने लगे ॥ ४१ ॥ कुम्भकर्णके प्रहारसे व्यथित हो वानरगण रामकी

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रभग्नान्वानरान्दृष्ट्वा वज्रहस्तात्मजात्मजः ।
अभ्यधावत वेगेन कुम्भकर्णं महाहवे ४३
शैलशृङ्गं महद्गृह्य विनदन्स मुहुर्मुहुः ।
त्रासयन्राक्षसान्सर्वान्कुम्भकर्णपदानुगान् ४४
चिक्षेप शैलशिखरं कुम्भकर्णस्य मूर्धनि ।
स तेनाभिहतो मूर्ध्नि शैलेनेन्द्रारिपुस्तदा ४५
कुम्भकर्णः प्रजज्वाल क्रोधेन महता तदा ।
सोऽभ्यधावत वेगेन वालिपुत्रममर्षणम् ४६
कुम्भकर्णो महानादस्त्रासयन्सर्ववानरान् ।
शूलं ससर्ज वै रोषादङ्गदे तु महाबलः ४७
तदापतन्तं बलवान्युद्धमार्गविशारदः ।
लाघवान्मोक्षयामास बलवान्वानरर्षभः ४८
उत्पत्य चैनं तरसा तलेनोरस्यताडयत् ।
स तेनाभिहतः कोपात्प्रमुमोहाचलोपमः ४९
स लब्धसंज्ञोऽतिबलो मुष्टिं संगृह्य राक्षसः ।
अपहासेन चिक्षेप विसंज्ञः स पपात ह ५०

शरणमें गये ॥ ४२ ॥ वानरोंको त्रस्त हो भागता देख अङ्गद कुम्भकर्णके सामने दौडा ॥ ४३ ॥ बडी भारी गिरिशिखर हाथमें ले नाद कर कुम्भकर्णके अनुचरोंको डरवाते हुए अङ्गदने ॥ ४४ ॥ उसको कुंभकर्णके शिरपर मारा जिसके लगनेसे ॥ ४५ ॥ कुम्भकर्ण क्रोधसे भुन गया और वानरोंको डरवाता अङ्गदके सामने दौडा और अङ्गदपर शूल चलाया ॥ ४६ ॥ महाबलाढ्य व प्रचंड गर्जना करनेवाला कुंभकर्णको क्रोधसे शूल फेकनेपर सब वानर भयभीत होगये ॥ ४७ ॥ पर युद्ध कुशल अङ्गद उस शूल प्रहारको बचा गए ॥ ४८ ॥ और उछल कर एक लात बलसे कुंभकर्णकी छातीमें मारी जिससे कुंभकर्ण मूर्च्छित होगया ॥ ४९ ॥

मूर्च्छा जगनेपर बलसे एक घूंसा अङ्गदको मारा जिससे वह भूमिपर गिर

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तस्मिन्प्लवगशार्दूले विसंज्ञे पतिते भुवि ।
तच्छूलं समुपादाय सुग्रीवमभिदुद्रुवे ५१
तमापतन्तं संप्रेक्ष्य कुम्भकर्णं महाबलम् ।
उत्पपात तदा वीरः सुग्रीवो वानराधिपः ५२
स पर्वताग्रमुत्क्षिप्य समाविध्य महाबलः ।
अभिदुद्राव वेगेन कुम्भकर्णं महाबलम् ५३
तमापतन्तं संप्रेक्ष्य कुम्भकर्णः प्लवङ्गमम् ।
तस्थौ विवृत्तसर्वाङ्गो वानरेन्द्रस्य संमुखः ५४
कपिशोणितदिग्धाङ्गं भक्षयन्तं महाकपीन् ।
कुम्भकर्णं स्थितं दृष्ट्वा सुग्रीवो वाक्यमब्रवीत् ५५
पातिताश्च मया वीराः कृतं कर्म सुदुष्करम् ।
भक्षितानि च सैन्यानि प्राप्तं ते परमं यशः ५६
त्यज तद्वानरानीकं प्राकृतैः किं करिष्यसि ।
सहस्वैकं निपातं मे पर्वतस्यास्य राक्षस ५७
तद्वाक्यं हरिराजस्य सत्त्वधैर्यसमन्वितम् ।
श्रुत्वा राक्षसशार्दूलः कुम्भकर्णोऽब्रवीद्वचः ५८
प्रजापतेस्तु पौत्रस्त्वं तथैवर्क्षरजःसुतः ।
धृतिपौरुषसंपन्नस्तस्माद्गर्जसि वानर ५९

पडा ॥ ५० ॥ जब अङ्गद मूर्च्छित हो गिर पडा तो फिर शूल ग्रहण कर कुंभकर्ण सुग्रीवकी ओर दौडा ॥ ५१ ॥ कुंभकर्णको आता देख वानरेंद्र सुग्रीव उछला ॥ ५२ ॥ और एकगिरि श्रृङ्ग उठाकर महाबली कुंभकर्णकी ओर दौडा ॥ ५३ ॥ उसको आते देख सब अङ्ग फैला कुंभकर्णके आगे खडा होगया ॥ ५४ ॥ तब कुंभकर्णको देख सुग्रीव बोला ॥ ५५ ॥ तुमने वानरोंको मारकर बडा दुष्कर कर्म किया तथा बडा यश पाया ॥ ५६ ॥ इससे अब इन साधारण वानरोंको त्याग मेरे इस गिरिशिखरकी चोटको सहन करो ॥ ५७ ॥

सुग्रीवके वचन सुन कुंभकर्ण बोला कि ॥ ५८ ॥ हे वानर ! तुम ऋक्षरजके पुत्र हो तथा पौरुषसे युक्त हो इसी कारण घमण्ड करते हो ॥ ५९ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स कुम्भकर्णस्य वचो निशम्य व्याविध्य शैलं सहसा मुमोच।
तेनाजघानोरसि कुम्भकर्णं शैलेन वज्राशनिसंनिभेन ६०
तच्छैलश‍ृङ्गं सहसा विभिन्नं भुजान्तरे तस्य तदा विशाले।
ततो विषेदुः सहसा प्लवङ्गा रक्षोगणाश्चापि मुदा विनेदुः ६१
स शैलशृङ्गाभिहतश्चुकोप ननाद रोषाच्च विवृत्य वक्त्रम्।
व्याविध्य शूलं च तडित्प्रकाशं चिक्षेप हर्यृक्षपतेर्वधाय ६२
तत्कुम्भकर्णस्य भुजप्रणुन्नं शूलं शितं काञ्चनदामयग्रिम्।
क्षिप्रं समुत्पत्य निगृह्य दोर्भ्यां बभञ्ज वेगेन सुतोनिलस्य ६३
कृतं भारसहस्रस्य शूलं कालायसं महत्।
बभञ्ज जानुमारोप्य तदा हृष्टः प्लवङ्गमः ६४
शूलं भग्नं हनुमता दृष्ट्वा वानरवाहिनी।
हृष्टा ननाद बहुशः सर्वतश्चापि दुद्रुवे ६५
बभूवाथ परित्रस्तो राक्षसो विमुखोऽभवत्।
सिंहनादं च ते चक्रुः प्रहृष्टा वनगोचराः॥
मारुतिं पूजयाञ्चक्रुर्दृष्ट्वा शूलं तथागतम् ६६
स तत्तथा भग्नमवेक्ष्य शूलं चुकोप रक्षोऽधिपतिर्महात्मा।
उत्पाट्य लङ्कामलयात्स श‍ृङ्गं जघान सुग्रीवमुपेत्य तेन ६७

कुंभकर्णके वचन सुन सुग्रीवने वह पर्वत कुंभकर्णको छातीमें मारा ॥ ६० ॥ पर वह गिरि उसकी छातीमें लग विदीर्ण हो गया। यह देख वानर गण बडे व्यथित हुए ॥ ६१ ॥ उस गिरिके लगनेसे कुंभकर्णने क्रोधकर प्रकाशित शूल वानरराज सुग्रीवके वधके लिये चलाया ॥ ६२ ॥ कुंभकर्ण द्वारा बडे बलसे चलाये तीक्ष्ण शूलको हनुमान्‌ने अपनी हाथोंसे पकड तोड डाला ॥ ६३ ॥

जब उस भारी शूलको अपनी जांघपर धर हनुमान्‌ने तोड डाला ॥६४॥ तो वानर बडे आनन्दित हुए हनुमान् द्वारा शूल टूटनेसे वानरोंकी सेना बडा नाद कर आगेको दौडी ॥ ६५ ॥ कुंभकर्ण उदासीन हो गया और सब वानरगण अति हर्षित हो हनुमानकी बडाई करने लगे ॥ ६६ ॥ अपना शूल टूटा हुआ देख कुंभकर्णने क्रोधसे मलयाचलका एक शिखर उखाड

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स शैलशृङ्गाभिहतो विसंज्ञः पपात भूमौ युधि वानरेन्द्रः ।
तं वीक्ष्य भूमौ पतितं विसंज्ञं नेदुः प्रहृष्टा युधि यातुधानाः ६८
समभ्युपेत्याद्भुतघोरवीर्यं स कुम्भकर्णो युधि वानरेन्द्रम् ।
जहार सुग्रीवमभिप्रगृह्य यथानिलो मेघमिव प्रचण्डः ६९
स तं महामेघनिकाशरूपमुत्पाट्य गच्छन्युधि कुम्भकर्णः ।
रराज मेरुप्रतिमानरूपो मेरुर्यथा व्युच्छ्रितघोरशृङ्गः ७०
ततस्तमादाय जगाम वीरः संस्तूयमानो युधि राक्षसेन्द्रः ।
शृण्वन्निनादं त्रिदिवालयानां प्लवङ्गराजग्रहविस्मितानाम् ७१
ततस्तमादाय तदा स मेने हरीन्द्रमिन्द्रोपममिन्द्रवीर्यः ।
अस्मिन्हृते सर्वमिदं हृतं स्यात्सराघवं सैन्यमितीन्द्रशत्रुः ७२

विद्रुतां वाहिनीं दृष्ट्वा वानराणामितस्ततः ।
कुम्भकर्णेन सुग्रीवं गृहीतं चापि वानरम् ७३
हनूमांश्चिन्तयामास मतिमान्मारुतात्मजः ।
एवं गृहीते सुग्रीवे किं कर्तव्यं मया भवेत् ७४
यद्धि न्याय्यं मया कर्तुं तत्करिष्याम्यसंशयम् ।
भूत्वा पर्वतसंकाशो नाशयिष्यामि राक्षसम् ७५
मया हते संयति कुम्भकर्णे महाबले मुष्टिविशीर्णदेहे ।

सुग्रीवको मारा ॥ ६७ ॥ उसके लगनेसे मूर्च्छित हो सुग्रीव गिर पडा उसको मूर्च्छित देख राक्षसगण गर्जने लगे ॥ ६८ ॥ पडे हुए पराक्रमी सुग्रीवके पास आ कुंभकर्ण उनको उठाकर चलता बना ॥ ६९ ॥ महा मेघाकार रूपवाले सुग्रीवको समरभूमिसे उठा कुंभकर्ण अति ऊंचे शिखर युक्त पहाडके तुल्य शोभा देने लगा ॥ ७० ॥ उसको लेकर कुंभकर्ण राक्षसोंसे पूजित हो लङ्काको चला ॥ ७१ ॥

सुग्रीवको पकडकर पराक्रमी कुंभकर्णने यह सोचा कि इसके मरनेसे रामसहित सब सेना मृतवत् होगई ॥ ७२ ॥ इधर उधर भागी हुई वानरोंकी सेना और कुंभकर्ण द्वारा सुग्रीवको पकडा देख ॥ ७३ ॥ हनूमान् सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये ॥ ७४ ॥ जो कुछ करना योग्य है वह अवश्य करूंगा ॥ ७५ ॥ मैं इस राक्षसको मार डालूंगा मेरे घूसोंसे

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विमोचिते वानरपार्थिवे च भवन्तु हृष्टाः प्लवगाः समग्राः ७६
अथ वा स्वयमप्येष मोक्षं प्राप्स्यति वानरः।
गृहीतोऽयं यदि भवेत्त्रिदशैः सासुरोरगैः ७७
मन्ये न तावदात्मानं बुध्यते वानराधिपः।
शैलप्रहाराभिहतः कुम्भकर्णेन संयुगे ७८
अयं मुहूर्तात्सुग्रीवो लब्धसंज्ञो महाहवे।
आत्मनो वानराणां च यत्पथ्यं तत्करिष्यति ७९
मया तु मोक्षितस्यास्य सुग्रीवस्य महात्मनः।
अप्रीतिश्च भवेत्कष्टा कीर्तिनाशश्च शाश्वतः ८०
तस्मान्मुहूर्तं काङ्क्षिष्ये विक्रमं मोक्षितस्य तु।
भिन्नं च वानरानीकं तावदाश्वासयाम्यहम् ८१
इत्येवं चिन्तयित्वाथ हनूमान्मारुतात्मजः।
भूयः संस्तम्भयामास वानराणां महाचमूम् ८२
स कुम्भकर्णोऽथ विवेश लङ्कां स्फुरन्तमादाय महाहरिं तम्।
विमानचर्यागृहगोपुरस्थैः पुष्पाग्र्यवर्षैरभिपूज्यमानः ८३
लाजगन्धोदवर्षैस्तु सेव्यमानः शनैः शनैः।
राजवीथ्यास्तु शीतत्वात्संज्ञां प्राप महाबलः ८४

प्रहारसे कुंभकर्णका सर्वाङ्ग फट जावेगा और सुग्रीव छूट जावेंगे ॥ ७६ ॥ सुग्रीव देवता दैत्य नागोंसे पकडे जानेपर भी छूट सकते हैं फिर इस राक्षसकी क्या सामर्थ्य है ॥ ७७ ॥ पर युद्धमें कुंभकर्णने सुग्रीवको ऐसा मारा है कि उसे अबतक चेतना नहीं हुआ ॥ ७८ ॥

मूर्च्छा जगनेपर उनको वानरोंके हितके लिये जो कुछ करना होगा अवश्य करेंगे ॥ ७९ ॥ यदि सुग्रीवको मैं छुडा लूं तो ये अप्रसन्न होंगे इससे उनकी कीर्तिका नाश होगा ॥ ८० ॥ इससे मैं तो भागी हुई वानरी सेनाको समझाऊं ॥ ८१ ॥ हनूमान् एवं सोच भागी हुई वानर सेनाको धैर्य दिलाने लगा ॥ ८२ ॥ सुग्रीवको लेकर कुंभकर्ण लङ्काको गया वहां उसपर पुष्प वर्षा हुई ॥ ८३ ॥ उस पुष्प वर्षा तथा राजमार्गकी शीतलतासे सुग्रीवको

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ततः स संज्ञामुपलभ्य कृच्छ्राद्बलीयसस्तस्य भुजान्तरस्थः।
अवेक्षमाणः पुरराजमार्गं विचिन्तयामास मुहुर्महात्मा ८५
एवं गृहीतेन कथं नु नाम शक्यं मया संप्रतिकर्तुमद्य।
तथा करिष्यामि यथा हरीणां भविष्यतीष्टं च हितं च कार्यम् ८६
ततः कराग्रैः सहसा समेत्य राजा हरीणाममरेन्द्रशत्रोः।
खरैश्च कर्णौ दशनैश्च नासां ददंश पार्श्वेर्विददार पार्श्वौ ८७
स कुम्भकर्णो हृतकर्णनासो विदारितस्तेन रदैर्नखैश्च।
रोषाभिभूतः क्षतजार्द्रगात्रः सुग्रीवमाविश्य पिपेष भूमौ ८८
स भूतले भीमबलाभिपिष्टः सुरारिभिस्तैरभिहन्यमानः।
जगाम खं कन्दुकवज्जवेन पुनश्च रामेण समाजगाम ८९

कर्णनासाविहीनस्तु कुम्भकर्णो महाबलः।
रराज शोणितोत्सिक्तो गिरिः प्रस्रवणैरिव ९०
शोणितार्द्रो महाकायो राक्षसो भीमदर्शनः।
अमर्षाच्छोणितोद्गारी शुशुभे रावणानुजः ९१
नीलाञ्जनचयप्रख्यः ससंध्य इव तोयदः।
युद्धायाभिमुखो भीमो मनश्चक्रे निशाचरः ९२

मूर्च्छा जागी ॥ ८४ ॥ कुंभकर्णकी भुजाओंमें दबे हुये सुग्रीव बार बार चिन्ता करने लगा ॥ ८५ ॥ कि इस बन्धन में पडे हुये क्या करूं जिससे सब कार्य सिद्ध हो ॥ ८६ ॥

सुग्रीवने झटपट कुंभकर्णके कान व नाक अपने दांतों व नखोंसे काट लिये ॥ ८७ ॥ तब नाक कान कटे तथा सर्वाङ्ग विदारित कुंभकर्णने सुग्रीवको भूमिपर बडे जोरसे पटक दिया ॥ ८८ ॥ रगडे जाने तथा राक्षसोंसे मारे जानेपर सुग्रीव वेगसे उछल आकाशको गया और वहांसे रामके पास जा पहुंचा ॥ ८९ ॥ कुंभकर्ण नाक कान कटे जाने तथा रक्तसे भीग जानेपर झरना ब॰॰ हुये गिरिके समान शोभायमान हुआ ॥ ९० ॥ रुधिरसे भीगा हुआ अतिकाय कुंभकर्ण रक्त बहता हुआ अति शोभित हुआ ॥ ९१ ॥ उस निशाचरने फिर युद्ध करनेकी इच्छा की ॥ ९२ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गते च तस्मिन्सुरराजशत्रुः क्रोधात्प्रदुद्राव रणाय भूयः।
अनायुधोऽस्मीति विचिन्त्य रौद्रो घोरं तदा मुद्गरमाससाद ९३
ततः स पुर्याः सहसा महात्मा निष्क्रम्य तद्वानरसैन्यमुग्रम्।
बभक्ष रक्षो युधि कुम्भकर्णः प्रजा युगान्ताग्निरिव प्रवृद्धः ९४
बुभुक्षितः शोणितमांसगृध्नुः प्रविश्य तद्वानरसैन्यमुग्रम्।
चखाद रक्षांसि हरीन्पिशाचानृक्षांश्च मोहाद्युधि कुम्भकर्णः ९५
यथैव मृत्युर्हरते युगान्ते स भक्षयामास हरींश्च मुख्यान् ९६
एकं द्वौ त्रीन्बहून्क्रुद्धो वानरान्सह राक्षसैः।
समादायैकहस्तेन प्रचिक्षेप त्वरन्मुखे ९७
संप्रस्रवत्तदा मेदः शोणितं च महाबलः।
वध्यमानो नगेन्द्राग्रैर्भक्षयामास वानरान् ९८
ते भक्ष्यमाणा हरयो रामं जग्मुस्तदा गतिम्।
कुम्भकर्णो भृशं क्रुद्धः कपीन्खादन्प्रधावत ९९
शतानि सप्त चाष्टौ च विंशत्त्रिंशत्तथैव च।
संपरिष्वज्य बाहुभ्यां खादन्विपरिधावति १००
मेदोवसाशोणितदिग्धगात्रः कर्णावसक्तग्रथितान्त्रमालः।
ववर्ष शूलानि सुतीक्ष्णदंष्ट्रः कालो युगान्तस्थ इव प्रवृद्धः १०१

कुंभकर्ण क्रोधके लिये दौडा पर अपनेको निरायुध समझ उसने एक मुद्गर लिया ॥ ९३ ॥ वह लङ्कासे बाहर निकल वानर सैन्यको खाने लगा ॥९४॥ कुंभकर्ण वानरोंकी सेनामें प्रवेश कर मोहसे वानरों, राक्षसों, पिशाचों और ऋक्षोंको खाने लगा ॥ ९५ ॥ क्रोधसे बहुत वानर व राक्षसोंको पकड जल्दीसे एक ही हाथसे उठा उठा मुखमें डालने लगा ॥ ९६–९७ ॥ पर्वतकी शिखाओंसे मार मार वानरोंको खाने लगा ॥ ९८ ॥ मरनेसे बचे हुये वानर भाग भाग रामकी शरणमें गए और कहा कि कुंभकर्ण सब वानरोंको खाये जाता है ॥ ९९ ॥ और सैकडों वानरोंको बाहोंसे पकड पकड खाता हुआ आगे दौडता है ॥ १०० तीक्ष्ण दांत निकाले कुम्भकर्ण शूलोंकी वर्षा कर रहा है ॥ १०१ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तस्मिन्काले सुमित्रायाः पुत्रः परबलार्दनः ।
चकार लक्ष्मणः क्रुद्धो युद्धं परपुरञ्जयः १०२
स कुम्भकर्णस्य शराञ्शरीरे सप्त वीर्यवान् ।
निचखानाददे चान्यान्विससर्ज च लक्ष्मणः १०३
पीड्यमानस्तदस्त्रं तु विशेषं तत्स राक्षसः ।
ततश्चुकोप बलवान्सुमित्रानन्दवर्धनः १०४
अथास्य कवचं शुभ्रं जाम्बूनदमयं शुभम् ।
प्रच्छादयामास शरैः संध्याभ्रमिव मारुतः १०५
नीलाञ्जनचयप्रख्यः शरैः काञ्चनभूषणैः ।
आपीड्यमानः शुशुभे मेघैः सूर्य इवांशुमान् १०६
ततः स राक्षसो भीमः सुमित्रानन्दवर्धनम् ।
सावज्ञमेव प्रोवाच वाक्यं मेघौघनिःस्वनः १०७
अन्तकस्याप्यकष्टेन युधि जेतारमाहवे ।
युध्यता मामभीतेन ख्यापिता वीरता त्वया १०८
प्रगृहीतायुधस्येह मृत्योरिव महामृधे ।
तिष्ठन्नप्यग्रतः पूज्यः किमु युद्धप्रदायकः १०९
ऐरावतं समारूढो वृतः सर्वामरैः प्रभुः ।
नैव शक्रोऽपि समरे स्थितपूर्वः कदाचन ११०

यह बात सुन सुमित्रानन्दन लक्ष्मण क्रोधकर युद्ध करने लगे ॥ १०२ ॥ पराक्रमी लक्ष्मणने सात बाण कुम्भकर्णके शरीरमें मारे ॥ १०३ ॥ उन बाणोंके पीडित हो कुंभकर्णने लक्ष्मणके बाणोंको तोड डाला ॥ १०४ ॥ कुंभकर्णके सुवर्णमय सुन्दर कवचको बाणोंसे भर दिया ॥ १०५ ॥ सुवर्णभूषित बाणोंके लगनेसे पीडित हो मेघोंसे युक्त किरणोंसहित सूर्यकेसमान शोभा देने लगा ॥ १०६ ॥ तब वह भीमदर्शन कुंभकर्ण लक्ष्मणसे मेघके तुल्य गर्जता हुआ निरादरसे बोला ॥ १०७ ॥ कि यमको जीतनेवाले मेरे सामने युद्ध कर तुमने निज वीरता दिखला दी ॥ १०८ ॥ मेरे सामने युद्धमें खडा रहे वही प्रशंसाके योग्य है ॥ १०९ ॥ ऐरावत हाथी पर सवार इन्द्र भी मेरे आगे युद्धमें कभी नहीं खडे हो सकते ॥ ११० ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अद्य त्वयाहं सौमित्रे बालेनापि पराक्रमैः ।
तोषितो गन्तुमिच्छामि त्वामनुज्ञाप्य राघवम् ॥ १११
यत्तु वीर्यबलोत्साहैस्तोषितोऽहं रणे त्वया ।
राममेवैकमिच्छामि हन्तुं यस्मिन्हते हतम् ॥ ११२
रामे मयाऽत्र निहते येऽन्ये स्थास्यन्ति संयुगे ।
तानहं योधयिष्यामि स्वबलेन प्रमाथिना ॥ ११३
इत्युक्तवाक्यं तद्रक्षः प्रोवाच स्तुतिसंहितम् ।
मृधे घोरतरं वाक्यं सौमित्रिः प्रहसन्निव ॥ ११४
यस्त्वं शक्रादिभिर्देवैरसह्यः प्राप्य पौरुषम् ।
तत्सत्यं नान्यथा वीर दृष्टस्तेऽद्य पराक्रमः ॥ ११५
एष दाशरथी रामस्तिष्ठत्यद्रिरिवाचलः ।
इति श्रुत्वा ह्यनादृत्य लक्ष्मणं स निशाचरः ॥ ११६
अतिक्रम्य च सौमित्रिं कुम्भकर्णो महाबलः ।
राममेवाभिदुद्राव कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥ ११७
अथ दाशरथी रामो रौद्रमस्त्रं प्रयोजयन् ।
कुम्भकर्णस्य हृदये ससर्ज निशिताञ्शरान् ॥ ११८

हे लक्ष्मण ! आज तुमने निजविक्रमसे मुझको संतुष्ट किया इससे मैं रामके पास जाना चाहता हूं ॥ १११ ॥ जो तुमने मुझको रणमें संतुष्ट किया है इससे मैं अब केवल राम ही के मारनेके लिये जाना चाहता हूं ॥ ११२ ॥ रामके मर जानेपर यदि और भी कोई सामने आवेगा तो मैं ...नका भी मंथन करूंगा ॥ ११३ ॥ कुंभकर्णके ये वचन सुन लक्ष्मण हंसते हुये यह वचन बोले ॥ ११४ ॥ तुमने जो इन्द्रादि देवोंसे असह्य विक्रम ...करना बतलाया वह ठीक है ॥ ११५ ॥ यह देखो श्रीराम गिरिके समान निश्चल खडे हैं यह सुन लक्ष्मणकी अवज्ञा कर वह राक्षस ॥ ११६ ॥ पृथ्वीको कंपाता हुआ रामके आगे दौडा ॥ ११७ ॥ तब रामने कठोर ...उसपर छोडनेके विचारसे उसके हृदयमें तीक्ष्ण बाण मारे ॥ ११८ ॥

*

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तस्य रामेण विद्धस्य सहसाभिप्रधावतः।
अङ्गारमिश्राः क्रुद्धस्य मुखान्निश्चेरुरार्चिषः ११९
रामास्त्रविद्धो घोरं वै नर्दन्राक्षसपुङ्गवः।
अभ्यधावत तं क्रुद्धो हरीन्विद्रावयन्रणे १२०
तस्योरसि निमग्नास्ते शरा बर्हिणवाससः।
हस्ताच्चास्य परिभ्रष्टा गदा चोर्व्यां पपात ह १२१
आयुधानि च सर्वाणि विप्रकीर्यन्त भूतले।
स निरायुधमात्मानं यदा मेने महाबलः १२२
मुष्टिभ्यां च कराभ्यां च चकार कदनं महत्।
स बाणैरतिविद्धाङ्गः क्षतजेन समुक्षितः १२३
रुधिरं परिसुस्राव गिरिः प्रस्रवणं यथा।
स तीव्रेण च कोपेन रुधिरेण च मूर्च्छितः १२४
वानरान्राक्षसानृक्षान्खादन्स परिधावति।
अथ शृङ्गं समाविध्य भीमं भीमपराक्रमः १२५
चिक्षेप राममुद्दिश्य बलवानन्तकोपमः।
अप्राप्तमन्तरा रामः सप्तभिस्तमजिह्मगैः १२६

रामके बाण लगनेपर वह बडे वेगसे दौडा ॥ ११९ ॥ रामके अस्त्रोंसे वेधित हो कुंभकर्ण बडा क्रोधकर युद्धमें वानरोंको डराता हुआ दौडा ॥ १२० ॥ बाण छातीमें लगनेसे दुःखसे उसके हाथसे गदा गिर पडी ॥ १२१ ॥ जो जो शस्त्र वह ले रहा था नीचे गिर पडे तब वह अपनेको निरायुध समझ ॥ १२२ ॥ मूक्कों और हाथोंसे सबको मारने लगा ॥ १२३ ॥ और पर्वतोंसे जिस प्रकार जलप्रवाह बहता है उसी प्रकार कुंभकर्णके शरीरसे रक्तप्रवाह होने लगा, तब रक्तप्रवाह व क्रोधसे बेभान हुएसे ॥ १२४ ॥ क्रोधमूर्च्छित कुंभकर्ण वानरों, राक्षसों और रीछोंको खाता हुआ दौडने लगा ॥ १२५ ॥

महाभीम कुंभकर्णने अति भयङ्कर गिरिशिखर शृंग उठाकर रामके ऊपर चलाया पर रामने बाणोंसे उस पर्वतको काट डाला ॥ १२६ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततस्तु रामो धर्मात्मा तस्य शृङ्गं महत्तदा ।
शरैः काञ्चनचित्राङ्गैश्चिच्छेद भरताग्रजः ११७
तन्मेरुशिखराकारैर्द्योतमानमिव श्रिया ।
द्वे शते वानराणां च पतमानमपातयत् ११८
तस्मिन्काले स धर्मात्मा लक्ष्मणो राममब्रवीत् ।
कुम्भकर्णवधे युक्तो योगान्परिमृशन्बहून् ११९
नैवायं वानरान्राजन्न विजानाति राक्षसान् ।
मत्तः शोणितगन्धेन स्वान्परांश्चैव खादते १३०
साध्वेनमधिरोहन्तु सर्वतो वानरर्षभाः ।
यूथपाश्च यथा मुख्यास्तिष्ठन्त्वस्मिन्समन्ततः १३१
अद्यायं दुर्मतिः काले गुरुभारप्रपीडितः ।
प्रचरन्राक्षसो भूमौ नान्यान्हन्यात्प्लवङ्गमान् १३२
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रस्य धीमतः ।
ते समारुरुहुर्हृष्टाः कुम्भकर्णं महाबलाः १३३
कुम्भकर्णस्तु संक्रुद्धः समारूढैः प्लवङ्गमैः ।
व्यधूनयत्तान्वेगेन दुष्टहस्तीव हस्तिपान् १३४
तान्दृष्ट्वा निर्धुतान्रामो रुष्टोऽयमिति राक्षसम् ।
समुत्पपात वेगेन धनुरुत्तममाददे १३५

बाणोंसे रामने विभीषणका कवच काट डाला ॥ १२७ ॥ उस गिरिशिखर समान कवचने गिरनेपर भी दोसौ वानरोंको कुचल दिया ॥ १२८ ॥ उस समय लक्ष्मण कुंभकर्णके मारनेका उपाय सोच रामसे बोले ॥ १२९ ॥ हे राजन् ! यह कुंभकर्ण मदान्ध हो वानरों और राक्षसोंको नहीं पहिचानता सबको खा रहा है ॥ १३० ॥ इससे वानरगण इस राक्षसपर चढ जावें ॥ १३१ ॥ तो यह दुष्ट भारसे पीडित हो धीरे धीरे चलेगा और अन्य वानरोंको न खा सकेगा ॥ १३२ ॥

लक्ष्मणके ऐसे वचन सुन वानरगण हर्षित हो, कुंभकर्णपर चढ गये ॥ १३३ ॥ पर उसने वेगसे अपना शरीर हिलाकर वानरोंको गिरा दिया ॥ १३४ ॥ सब वानरोंको कंपाते देख राम उत्तम धनुष ले बडे वेगसे

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

क्रोधरक्तेक्षणो धीरो निर्दहन्निव चक्षुषा।
राघवो राक्षसं वेगादभिदुद्राव वेगितः॥
यूथपान्हर्षयन्सर्वान्कुम्भकर्णबलार्दितान् १३६
स चापमादाय भुजङ्गकल्पं दृढज्यमुग्रं तपनीयचित्रम्।
हरीन्समाश्वास्य समुत्पपात रामो निबद्धोत्तमतूणबाणः १३७
स वानरगणैस्तैस्तु वृतः परमदुर्जयैः।
लक्ष्मणानुचरो वीरः संप्रतस्थे महाबलः १३८
स ददर्श महात्मानं किरीटिनमरिन्दमम्।
शोणितावृतरक्ताक्षं कुम्भकर्णं महाबलम् १३९
सर्वान्समभिधावन्तं यथारुष्टं दिशागजम्।
मार्गमाणं हरीन्क्रुद्धं राक्षसैः परिवारितम् १४०
विन्ध्यमन्दरसंकाशं काञ्चनाङ्गदभूषणम्।
स्रवन्तं रुधिरं वक्त्राद्वर्षं मेघमिवोत्थितम् १४१
जिह्वया परिलिह्यन्तं सृक्किणी शोणितोक्षिते।
मृद्नन्तं वानरानीकं कालान्तकयमोपमम् १४२
तं दृष्ट्वा राक्षसश्रेष्ठं प्रदीप्तानलवर्चसम्।
विस्फारयामास तदा कार्मुकं पुरुषर्षभः १४३

दौडे॥ १३५॥ क्रोधित नेत्रोंसे मानों भस्म ही करते राम उसके सामने दौडे॥ १३६॥ और कुंभकर्णके बलसे व्यथित वानरोंको हर्षित किया प्रत्यंचा-युक्त धनुष तथा उत्तम तरकस ले वानरोंको समझा राम कुंभकर्णकी ओर चले॥ १३७॥ उनके साथ अतिदुर्जय वानर और पीछे लक्ष्मण भी चले॥ १३८॥ महात्मा राम रुधिरवत् अरुण नेत्र किये महाबली कुंभकर्णको॥ १३९॥ क्रोध किए हुये दिग्गजके समान दौडते हुये और वानरोंको ढूंढते हुए चले आते हुये॥ १४०॥ सोनेका बहुंटा धारण किये मुखसे रक्त बहाते हुये वर्षाके बादल तुल्य॥ १४१॥ यमराजके तुल्य वानरोंका मर्द्दन करते कुंभकर्णको रामने देखा॥ १४२॥

तेजस्वी उस राक्षसश्रेष्ठको सत्पुरुषोत्तम रामने धनुषपर टंकोर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स तस्य चापनिर्घोषात्कुपितो राक्षसर्षभः।
अमृष्यमाणस्तं घोषमभिदुद्राव राघवम् १४४
ततस्तु धारोद्धतमेघकल्पं भुजङ्गराजोत्तमभोगबाहुः।
तमापतन्तं धरणीधराभमुवाच रामो युधि कुम्भकर्णम् १४५
आगच्छ रक्षोऽधिप मा विषादमवस्थितोऽहं प्रगृहीतचापः।
अवेहि मां राक्षसवंशनाशनं यत्त्वं मुहूर्ताद्भविता विचेताः १४६
रामोऽयमिति विज्ञाय जहास विकृतस्वनम्।
अभ्यधावत संक्रुद्धो हरीन्विद्रावयन्रणे १४७
दारयन्निव सर्वेषां हृदयानि वनौकसाम्।
प्रहस्य विकृतं भीमं समेघस्तनितोपमम् १४८
कुम्भकर्णो महातेजा राघवं वाक्यमब्रवीत्।
नाहं विराधो विज्ञेयो न कवन्धः खरो न च १४९
न वाली न च मारीचः कुम्भकर्णः समागतः १५०
पश्य मे मुद्गरं भीमं सर्वं कालायसं महत्।
अनेन निर्जिता देवा दानवाश्च पुरा मया १५१
विकर्णनास इति मां नावज्ञातुं त्वमर्हसि।
स्वल्पापि हि न मे पीडा कर्णनासाविनाशनात् १५२

दौड़ी ॥ १४३ ॥ रामके धनुषकी टंकोर सुन कुंभकर्ण क्रोधित हो उनकी ओर दौड़ा ॥ १४४ ॥ तब दृढ भुजावाले राम जल वर्षते हुये बादलके तुल्य उद्धत कुंभकर्णको दौड़ा आता देख बोले ॥ १४५ ॥ निशाचर आओ विषाद न करो मैं धनुषबाण लिये खड़ा हूं ॥ १४६ ॥ कुंभकर्ण यह जान कि राम यही है बड़े जोरसे हंसा और समरमें वानरोंको भगाता हुआ दौड़ा ॥ १४७ ॥ वानरोंके दिल दहलाता हुआ बादलके समान बड़े जोरसे हंसा ॥ १४८ ॥

कुंभकर्ण रामसे बोला कि मुझे विराध, कवन्ध, खर, वालि तथा मारीच न समझो ॥ १४९ ॥ वाली अथवा मारीच हम नहीं हैं; हम कुंभकर्ण हैं ये ध्यान रखो ॥ १५० ॥ यह काले लोहेका मेरा भयानक मुद्गर देखो ॥ १५१ ॥ श्रवण नासाहीन देख मेरी अवज्ञा न करना ॥ १५२ ॥ हे राम ! मेरे अङ्गों

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दर्शयेक्ष्वाकुशार्दूल वीर्यं गात्रेषु मेऽनघ।
ततस्त्वां भक्षयिष्यामि दृष्टपौरुषविक्रमम् १५३
स कुम्भकर्णस्य वचो निशम्य रामः सपुङ्खान्विससर्ज बाणान्।
तैराहतो वज्रसमप्रवेगैर्न चुक्षुभे न व्यथते सुरारिः १५४
यैः सायकैः सालवरा निकृत्ता वाली हतो वानरपुङ्गवश्च।
ते कुम्भकर्णस्य तदा शरीरं वज्रोपमानं व्यथयांप्रचक्रुः १५५
स वारिधारा इव सायकांस्तान्पिबञ्शरीरेण महेन्द्रशत्रुः।
जघान रामस्य शरप्रवेगं व्याविध्य तं मुद्गरमुग्रवेगम् १५६
ततस्तु रक्षः क्षतजावलिप्तं वित्रासनं देवमहाचमूनाम्।
व्याविध्य तं मुद्गरमुग्रवेगं विद्रावयामास चमूं हरीणाम् १५७
वायव्यमादाय ततोऽपरास्त्रं रामः प्रचिक्षेप निशाचराय।
समुद्गरं तेन जहार बाहुं स कृत्तबाहुस्तुमुलं ननाद १५८
स तस्य बाहुर्गिरिशृङ्गकल्पः समुद्गरो राघवबाणकृत्तः।
पपात तस्मिन्हरिराजसैन्ये जघान तां वानरवाहिनीं च १५९
ते वानरा भग्नहतावशेषाः पर्यन्तमाश्रित्य तदा विषण्णाः।
प्रपीडिताङ्गा ददृशुः सुघोरं नरेन्द्ररक्षोऽधिपसंनिपातम् १६०

पर अपना पराक्रम दिखाओ ॥ १५३ ॥ यह सुन रामने तीक्ष्ण बाण उसपर चलाये पर क्षुभित व व्यथित न हुआ ॥ १५४ ॥ जिन बाणोंसे साल तालके वृक्ष कट गये और बाली मारा वेही बाण उस समय कुंभकर्णके अङ्गोंमें लग उसको कुछ कष्ट न पहुंचा सके ॥ १५५ ॥

कुंभकर्णने उन बाणोंको जलकी धाराके समान पीलिया और रामको मुद्गरसे मारा ॥ १५६ ॥ फिर उस रुधिर लगे हुये मुद्गरसे वानर सेनाको भगा दिया ॥ १५७ ॥ तब रामने वायव्यास्त्रसे कुंभकर्णका हाथ काट डाला ॥ १५८ ॥ रामके बाणसे कटा हुआ मुद्गर सहित उसका हाथ वानर सेनापर गिरा जिससे अनेक वानर मर गये ॥ १५९ ॥ बचे हुए वानर भाग कर दूर जा खडे हो राम और कुंभकर्णका घोर युद्ध देखने लगे ॥ १६० ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स कुम्भकर्णोऽस्त्रनिकृत्तबाहुर्महासिकृत्ताग्र इवाचलेन्द्रः।
उत्पाटयामास करेण वृक्षं ततोऽभिदुद्राव रणे नरेन्द्रम् १६१
तं तस्य बाहुं सहतालवृक्षं समुद्यतं पन्नगभोगकल्पम्।
ऐन्द्रास्त्रयुक्तेन जघान रामो बाणेन जाम्बूनदचित्रितेन १६२
स कुम्भकर्णस्य भुजो निकृत्तः पपात भूमौ गिरिसंनिकाशः।
विचेष्टमानो निजघान वृक्षाञ्शैलाञ्शिलावानरराक्षसांश्च १६३
तं छिन्नबाहुं समवेक्ष्य रामः समापतन्तं सहसा नदन्तम्।
द्वावर्धचन्द्रौ निशितौ प्रगृह्य चिच्छेद पादौ युधि राक्षसस्य १६४
तौ तस्य पादौ प्रदिशो दिशश्च गिरेर्गुहाश्चैव महार्णवं च।
लङ्कां च सेनां कपिराक्षसानां विनादयन्तौ विनिपेततुश्च १६५
निकृत्तबाहुर्विनिकृत्तपादो विदार्य वक्त्रं वडवामुखाभम्।
दुद्राव रामं सहसाभिगर्जन्राहुर्यथा चन्द्रमिवान्तरिक्षे १६६
अपूरयत्तस्य मुखं शिताग्रै रामः शरैर्हेमपिनद्धपुङ्खैः।
संपूर्णवक्त्रो न शशाक वक्तुं चुकूज कृच्छ्रेण मुमूर्च्छ चापि १६७
अथाददे सूर्यमरीचिकल्पं स ब्रह्मदण्डान्तककालकल्पम्।
अरिष्टमैन्द्रं निशितं सुपुङ्खं रामः शरं मारुततुल्यवेगम् १६८

अपने हाथसे एक बडा भारी पेड उखाड रामके आगे दौडा ॥ १६१ ॥ पर तालवृक्ष सहित उसका वह भी हाथ रामने ऐन्द्रास्त्र संयुक्त बाणसे काट डाला ॥ १६२ ॥ वह कटी हुई कुम्भकर्णकी बाहु भूमिपर गिर पडी उस छटपटाती हुई भुजाने बहुतसे वानर और राक्षसोंको मार डाला ॥ १६३ ॥ हाथ कटे कुंभकर्णको फिर भी दौडे आते देख राम दो बाणोंसे उसके दोनों पैर भी काट डाले ॥ १६४ ॥

उसके वे दोनों कटे हुये पैर शब्द करते हुये भूमिपर गिर पडे ॥ १६५ ॥ हाथ पैर कटा हुआ कुंभकर्ण मुख फैला जोरसे गर्जता हुआ रामकी ओर दौडा ॥ १६६ ॥ तब रामने उसका मुख हजारों पैने बाणोंसे भर दिया जिससे वह मूर्च्छित होगया ॥ १६७ ॥ तब रामने अति तीक्ष्ण प्रचण्ड वायुके वेगतुल्य ऐन्द्र नामकबाण लिया ॥ १६८ ॥ प्रदीप्त सूर्यके समान

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तं वज्रजाम्बूनदचारुपुङ्खं प्रदीप्तसूर्यज्वलनप्रकाशम्।
महेन्द्रवज्राशनितुल्यवेगं रामः प्रचिक्षेप निशाचराय १६९
स सायको राघवबाहुचोदितो दिशः स्वभासा दश संप्रकाशयन्।
विधूमवैश्वानरभीमदर्शनो जगाम शक्राशनिभीमविक्रमम् १७०
स तन्महापर्वतकूटसंनिभं सुवृत्तदंष्ट्रं चलचारुकुण्डलम्।
चकर्त रक्षोऽधिपतेः शिरस्तदा यथैव वृत्रस्य पुरा पुरन्दरः १७१
कुम्भकर्णशिरो भाति कुण्डलालंकृतं महत्।
आदित्येऽभ्युदिते रात्रौ मध्यस्थ इव चन्द्रमाः १७२
तद्रामबाणाभिहतं पपात रक्षःशिरः पर्वतसंनिकाशम्।
बभञ्ज चर्यागृहगोपुराणि प्राकारमुच्चं तमपातयच्च १७३
तच्चातिकायं हि महत्प्रकाशं रक्षस्तदा तोयनिधौ पपात।
ग्राहान्परान्मीनवरान्भुजङ्गमान्ममर्द भूमिं च तथा विवेश १७४
तस्मिन्हते ब्राह्मणदेवशत्रौ महाबले संयति कुम्भकर्णे।
चचाल भूर्भूमिधराश्च सर्वे हर्षाच्च देवास्तुमुलं प्रणेदुः १७५
ततस्तु देवर्षिमहर्षिपन्नगाः सुराश्च भूतानि सुपर्णगुह्यकाः।
सयक्षगन्धर्वगणा नभोगताः प्रहर्षिता रामपराक्रमेण १७६

प्रकाशित वह बाण उस राक्षस पर चलाया ॥ १६९ ॥ रामके हाथसे छूटा हुवा वह बाण दिशाओंको प्रकाशित करता भीमदर्शन हो उस निशाचरके ऊपर पहुंचा ॥ १७० ॥ और कुंभकर्णका शिर काट डाला ॥ १७१ ॥ कुण्डलोंसे भूषित कुंभकर्णका शिर तब ऐसा शोभित होता था जैसा दो सूर्यों के बीच देवयोगसें रात्रिमें चन्द्रमा स्थित हो ॥ १७२ ॥ कुंभकर्णका वह गिरि सम शिर कटकर लङ्काके कोटपर गिरा ॥ १७३ ॥ और कुंभकर्णका वह धड़ समुद्रमें गिर, ग्राह मत्स्य और सर्पोंको कुचलता हुआ भूमिमें प्रवेश कर गया ॥ १७४ ॥ उस कुंभकर्णके मारे जानेपर पृथ्वी और पहाड प्रसन्न हो चल उठे और देवता भी प्रसन्न हो नाद करने लगे ॥ १७५ ॥

तदनंतर देवर्षि, महर्षि, भुजंग, देव, भूत, सुपर्ण, गुह्यक, यक्ष व गन्धर्व गण ये सब नभश्चर रामके पराक्रमसे आनन्दित हुए ॥ १७६ ॥ इसके बाद

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततस्तु ते तस्य वधेन भूरिणा मनस्विनो नैर्ऋतराजबान्धवाः ।
विनेदुरुच्चैर्व्यथिता रघूत्तमं हरिं समीक्ष्यैव यथा मतङ्गजाः १७७
स देवलोकस्य तमो निहत्य सूर्यो यथा राहुमुखाद्विमुक्तः ।
तथा व्यभासीद्धरिसैन्यमध्ये निहत्य रामो युधि कुम्भकर्णम् १७८
प्रहर्षमीयुर्बहवश्च वानराः प्रबुद्धपद्मप्रतिमैरिवाननैः ।
अपूजयन्राघवमिष्टभागिनं हते रिपौ भीमबले नृपात्मजम् १७९
स कुम्भकर्णं सुरसैन्यमर्दनं महत्सु युद्धेषु कदाचनाजितम् ।
ननन्द हत्वा भरताग्रजो रणे महासुरं वृत्रमिवामराधिपः १८०
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे सप्तषष्टितमः सर्गः ॥ ६७ ॥ [२८९६]

॥ अष्टषष्टितमः सर्गः ॥

कुम्भकर्णं हतं दृष्ट्वा राघवेण महात्मना ।
राक्षसा राक्षसेन्द्राय रावणाय न्यवेदयन् १
राजन्स कालसंकाशः संयुक्तः कालकर्मणा ।
विद्राव्य वानरीं सेनां भक्षयित्वा च वानरान् २

जिसका वध असम्भव था ऐसे कुंभकर्णका वध होजानेपर जैसे सिंहके अवलोकन करनेसे हाथी आक्रोश करता है उसी प्रकार राक्षसराजके बन्धुगण रामको देखनेसे भयभीत हो उच्चस्वरसे गर्जना करने लगे ॥ १७७ ॥ इसके बाद राहु मुखसे मुक्त हुआ सूर्य जिस प्रकार आकाशमें झलकने लगता है उसी प्रकार कुंभकर्णका वध करके राम वानरसैन्योंके बीच झलकने लगे ॥ १७८ ॥ भयंकर बलाढ्य शत्रुके वध होनेसे वानरोंको खूब आनन्द हुआ, प्रफुल्लित कमलके सदृश उनके मुख दीखने लगे और वे रामकी प्रशंसा करने लगे ॥ १७९ ॥ वृत्रके वधसे जिस प्रकार इन्द्र आनन्दित हुए थे उसी प्रकार महाबलाढ्य कुंभकर्णके वध करनेसे राम आनन्दित हुये ॥ १८० ॥

॥ यहाँ ६७ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

युद्धसे कुंभकर्णको मरा देख राक्षसोंने जा रावणसे निवेदन किया ॥ १ ॥ हे राजन् ! कुंभकर्ण वानरोंकी सेनाको भगाकर और बहुतसे वानरोंको

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रतपित्वा मुहूर्तं तु प्रशान्तो रामतेजसा।
कायेनार्धप्रविष्टेन समुद्रं भीमदर्शनम् ३
निकृत्तनासाकर्णेन विक्षरद्रुधिरेण च।
रुद्ध्वा द्वारं शरीरेण लङ्कायाः पर्वतोपमः ४
कुम्भकर्णस्तव भ्राता काकुत्स्थशरपीडितः।
अगण्डभूतो विवृतो दावदग्ध इव द्रुमः ५
श्रुत्वा विनिहतं सङ्ख्ये कुम्भकर्णं महाबलम्।
रावणः शोकसंतप्तो मुमोह च पपात च ६
पितृव्यं निहतं श्रुत्वा देवान्तकनरान्तकौ।
त्रिशिराश्चातिकायश्च रुरुदुः शोकपीडिताः ७
भ्रातरं निहतं श्रुत्वा रामेणाक्लिष्टकर्मणा।
महोदरमहापार्श्वौ शोकाक्रान्तौ बभूवतुः ८
ततः कृच्छ्रात्समासाद्य संज्ञां राक्षसपुङ्गवः।
कुम्भकर्णवधाद्दीनो विललापाकुलेन्द्रियः ९
हा वीर रिपुदर्पघ्न कुम्भकर्ण महाबल।
त्वं मां विहाय वै दैवाद्यातोऽसि यमसादनम् १०
मम शल्यमनुद्धृत्य बान्धवानां महाबल।

जाकर ॥ २ ॥ सबको संन्तप्त कर रामके तेजसे स्वयं भी शान्त होगया उसका आधा शरीर तो सागरमें प्रविष्ट हो गया ॥ ३ ॥ और आधा शरीर लङ्काके फाटकको घेर कर स्थित हुआ ॥ ४ ॥ कुंभकर्णका रामके बाणोंसे शिर अलग होगया शरीर विवृत्त होगया ॥ ५ ॥

कुंभकर्णको मरा सुन शोकसन्तप्त हो रावण मूर्च्छित हो गिर पडा ॥६॥ कुंभकर्णको मरा सुन रावणके पुत्र देवान्तक, नरान्तक, त्रिशिरा, और अतिकाय रुदन करने लगे ॥ ७ ॥ रामसे अपने भाईको मरा सुन महोदर और महापार्श्व शोकातुर होगये ॥ ८ ॥ जब रावणकी मूर्च्छा जगी तो कुंभकर्णके वधसे वह व्यथित हो विलाप करने लगा ॥ ९ ॥ हा वीर कुंभकर्ण ! तुम मुझे छोड यमपुरमें चले गये ॥ १० ॥ शत्रुओंका नाश कर हम सब भाई-

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

शत्रुसैन्यं प्रताप्यैकः क मां संत्यज्य गच्छसि ११
इदानीं खल्वहं नास्मि यस्य मे पतितो भुजः।
दक्षिणोऽयं समाश्रित्य न बिभेमि सुरासुरात् १ २
कथमेवंविधो वीरो देवदानवदर्पहा।
कालाग्निप्रतिमो ह्यद्य राघवेण रणे हतः १३
यस्य ते वज्रनिष्पेषो न कुर्याद्व्यसनं सदा।
स कथं रामबाणार्तः प्रसुप्तोऽसि महीतले १४
एते देवगणाः सार्धमृषिभिर्गगने स्थिताः।
निहतं त्वां रणे दृष्ट्वा निनदन्ति प्रहर्षिताः १५
ध्रुवमद्यैव संहृष्टा लब्धलक्षाः प्लवङ्गमाः।
आरोक्ष्यन्तीह दुर्गाणि लङ्काद्वाराणि सर्वशः १६
राज्येन नास्ति मे कार्यं किं करिष्यामि सीतया।
कुम्भकर्णविहीनस्य जीविते नास्ति मे मतिः १७
यद्यहं भ्रातृहन्तारं न हन्मि युधि राघवम्।
ननु मे मरणं श्रेयो न चेदं व्यर्थजीवितुम् १८
अद्यैव तं गमिष्यामि देशं यत्रानुजो मम।

योंको छोड कहां जाते हो ? ॥ ११ ॥

इस समयमें मृतप्राय मेरी दक्षिण भुजा कट गई ॥ १२ ॥ देवता दानवोंका अहंकार भंजन करनेवाले कुंभकर्णको रामने कैसे समरमें मार डाला ॥ १३ ॥ तुम रामके बाणोंसे पीडित हो पृथ्वीपर कैसे सोते हो ? ॥ १४ ॥ ये देखो आकाशस्थ देवगण समरमें तुमको मरा देख प्रसन्न हो नाद कर रहे हैं ॥ १५ ॥ निश्चय ही आज दुर्गम लङ्काके फाटकों और किलोंपर चढ आवेंगे ॥ १६ ॥ राज्य और सीताको ले अब मैं क्या करूंगा क्योंकि कुम्भकर्ण विना मेरी जीनेकी इच्छा नहीं ॥ १७ ॥

यदि अपने भाईके घातक रामको मैं न मार डालूं तो मेरा जीना व्यर्थ है ॥ १८ ॥ मैं आज यहां जाऊंगा वहां मेरा छोटा भाई है मैं भाइयोंके

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

न हि भ्रातॄन्समुत्सृज्य क्षणं जीवितुमुत्सहे १९
देवा हि मां हसिष्यन्ति दृष्ट्वा पूर्वापकारिणम्।
कथमिन्द्रं जयिष्यामि कुम्भकर्ण हते त्वयि २०
तदिदं मामनुप्राप्तं बिभीशणवचः शुभम्।
यदज्ञानान्मया तस्य न गृहीतं महात्मनः २१
विभीषणवचस्तावत्कुम्भकर्णप्रहस्तयोः।
विनाशोऽयं समुत्पन्नो मां व्रीडयति दारुणः २२
तस्यायं कर्मणः प्राप्तो विपाको मम शोकदः।
यन्मया धार्मिकः श्रीमान्स निरस्तो विभीषणः २३
इति बहुविधमाकुलान्तरात्मा कृपणमतीव विलप्य कुम्भकर्णम्।
न्यपतदपि दशाननो भृशार्तस्तमनुजमिन्द्ररिपुं हतं विदित्वा २४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डेऽष्टषष्टितमः सर्गः॥६८॥[२९२०]

एकोनसप्ततितमः सर्गः॥

एवं विलपमानस्य रावणस्य दुरात्मनः।
श्रुत्वा शोकाभिभूतस्य त्रिशिरा वाक्यमब्रवीत् १

बिना क्षणमात्र भी जीना नहीं चाहता ॥ १९ ॥ हे कुम्भकर्ण! तुम्हारे मा जानेसे मुझको देख देवता हसेंगे ॥ २० ॥ महात्मा विभीषणके वचन जिन्हें मैंने मोहसे ग्रहण न किया था वही मुझको प्राप्त हुआ ॥ २१ ॥ जबसे प्रहस्त और कुम्भकर्णका विनाश हुआ है तबसे बिभीषणका वचन मुझको लज्जित कर रहा है ॥ २२ ॥ श्रीमान् व धार्मिक विभीषणका जो मैं धिक्कार किया उसी कर्मका शोकप्रद फल मुझे प्राप्त हुआ है ॥ २३ ॥ अपने कनिष्ठ भ्राता कुंभकर्णका वध सुननेपर रावण अत्यन्त दुःखाकुल हुआ तथा अन्तःकरण व्याकुल हो पृथ्वीपर गिर पडा ॥ २४ ॥

॥ यहाँ ६८ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

एवं दुष्टात्मा रावणका रोदन सुन त्रिशिरा बोला ॥ १ ॥ निसन्देह

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एवमेव महावीर्यो हतो नस्तात मध्यमः।
न तु सत्पुरुषा राजन्विलपन्ति यथा भवान् २
नूनं त्रिभुवनस्यापि पर्याप्तस्त्वमसि प्रभो।
स कस्मात्प्राकृत इव शोचस्यात्मानमीदृशम् ३
ब्रह्मदत्तास्ति ते शक्तिः कवचं सायको धनुः।
सहस्रखरसंयुक्तो रथो मेघसमस्वनः ४
त्वयाऽसकृद्धि शस्त्रेण विशस्ता देवदानवाः।
स सर्वायुधसंपन्नो राघवं शास्तुमर्हसि ५
कामं तिष्ठ महाराज निर्गमिष्याम्यहं रणे।
उद्धरिष्यामि ते शत्रूंगरुडः पन्नगानिव ६
शम्बरो देवराजेन नरको विष्णुना यथा।
तथाद्य शयिता रामो मया युधि निपातितः ७
श्रुत्वा त्रिशिरसो वाक्यं रावणो राक्षसाधिपः।
पुनर्जातमिवात्मानं मन्यते कालचोदितः ८
श्रुत्वा त्रिशिरसो वाक्यं देवान्तकनरान्तकौ।
अतिकायश्च तेजस्वी बभूवुर्युद्धहर्षिताः ९
ततोऽहमहमित्येव गर्जन्तो नैर्ऋतर्षभाः।
रावणस्य सुता वीराः शक्रतुल्यपराक्रमाः १०

पितृव्य कुम्भकर्ण ऐसे ही महावीर थे पर आपको मर्दोंके लिये विलाप नहीं करना चाहियं ॥ २ ॥ आप तीनों लोकोंके नाश करनेकी सामर्थ्य रखते हैं फिर क्यों शोक करते हैं ? ॥ ३ ॥ आपको शक्ति कवच बाण धनुष और हजार खर जुतनेवाला रथ ब्रह्माने दिया है ॥ ४ ॥ आप अनेक बार देवता दानवोंको जीत चुके हैं सो अब रामको उचित शिक्षा दीजिये ॥ ५ ॥ आप यहां ही रहें मैं अकेला ही आपके वैरियोंको नष्ट कर दूंगा ॥ ६ ॥ विष्णुसे मारे हुये नरकासुरके तुल्य मेरे मारे हुये राम रणमें शयन करेंगे ॥ ७ ॥

त्रिशिराके ऐसे वचन सुन रावणने अपना पुनः जन्म समझा ॥ ८ ॥ और त्रिशिराकी बातोंसे देवान्तक, नरान्तक, अतिकाय युद्धके लिए प्रोत्साहित हुये ॥ ९ ॥ और सब कहने लगे कि हम युद्ध करनेको जांयगे ॥ १० ॥ ये

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अन्तरिक्षगताः सर्वे सर्वे मायाविशारदाः।
सर्वे त्रिदशदर्पघ्नाः सर्वे समरदुर्मदाः ११
सर्वे सुबलसंपन्नाः सर्वे विस्तीर्णकीर्तयः।
सर्वे समरमासाद्य न श्रूयन्ते स्म निर्जिताः १२
देवैरपि सगन्धर्वैः सकिंनरमहोरगैः।
सर्वेऽस्त्रविदुषो वीराः सर्वे युद्धविशारदाः।
सर्वे प्रवरविज्ञानाः सर्वे लब्धवरास्तथा १३
स तैस्तथा भास्करतुल्यदर्शनैः सुतैर्वृतः शत्रुबलश्रियार्दनैः।
रराज राजा मघवान्यथामरैर्वृतो महादानवदर्पनाशनैः १४
स पुत्रान्संपरिष्वज्य भूषयित्वा च भूषणैः।
आशीर्भिश्च प्रशस्ताभिः प्रेषयामास वै रणे १५
युद्धोन्मत्तं च मत्तं च भ्रातरौ चापि रावणः।
रक्षणार्थं कुमाराणां प्रेषयामास संयुगे १६
तेऽभिवाद्य महात्मानं रावणं लोकरावणम्।
कृत्वा प्रदक्षिणं चैव महाकायाः प्रतस्थिरे १७
सर्वौषधीभिर्गन्धैश्च समालभ्य महाबलाः।
निर्जग्मुर्नैर्ऋत श्रेष्ठाः षडेते युद्धकाङ्क्षिणः १८
त्रिशिराश्चातिकायश्च देवान्तकनरान्तकौ।
महोदरमहापार्श्वौ निर्जग्मुः कालचोदिताः १९

सब माया करनेमें चतुर तथा समरमें बडे दुर्मद थे ॥ ११ ॥ इनमें कोई भी युद्धमें जाकर कभी पराजित न हुआ था ॥ १२ ॥ युद्ध करनेमें कुशल होनेसे देवताओं, गन्धर्वों, किन्नरों, नागोंसे कभी नहीं हारे थे ॥ १३ ॥ सब विज्ञानी तथा वरदान प्राप्त किये हुये थे ॥१४॥ उन पुत्रोंके बीचमें बैठा रावण ऐसा शोभायमान हुआ जैसे इन्द्र देवताओंके बीचमें ॥ १५ ॥ रावण यह सुन उनको भूषित कर आशीर्वाद दे रणमें जानेकी आज्ञा दी ॥१६॥ और दो अपने भाइयोंको उनकी रक्षाके लिये भेजा ॥ १७ ॥

वे महात्मा रावणको प्रणाम कर युद्ध करनेको चले ॥ १८ ॥ वे सब बूटी और सुगन्धित पदार्थोंको छूकर युद्धकी चाहनासे चले ॥१९॥ कालसे प्रेरित त्रिशिरा, अतिकाय, देवांतक, नरान्तक, महोदर और महापार्श्व राक्षस युद्ध

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततः सुदर्शनं नागं नीलजीमूतसंनिभम्।
ऐरावतकुले जातमारुराह महोदरः २०
सर्वायुधसमायुक्तस्तूणीभिश्चाप्यलंकृतः।
रराज गजमास्थाय सवितेवास्तमूर्धनि २१
हयोत्तमसमायुक्तं सर्वायुधसमाकुलम्।
आरुरोह रथश्रेष्ठं त्रिशिरा रावणात्मजः २२
त्रिशिरा रथमास्थाय विरराज धनुर्धरः।
सविद्युदुल्कः सज्वालः सेन्द्रचाप इवाम्बुदः २३
त्रिभिः किरीटैस्त्रिशिराः शुशुभे स रथोत्तमे।
हिमवानिव शैलेन्द्रस्त्रिभिः काञ्चनपर्वतैः २४
अतिकायोऽतितेजस्वी राक्षसेन्द्रसुतस्तदा।
आरुरोह रथश्रेष्ठं श्रेष्ठः सर्वधनुष्मताम् २५
सुचक्राक्षं सुसंयुक्तं सानुकर्षं सकूबरम्।
तूणीबाणासनैर्दीप्तं प्रासासिपरिघाकुलम् २६
स काञ्चनविचित्रेण किरीटेन विराजता।
भूषणैश्च बभौ मेरुः प्रभाभिरिव भासयन् २७
स रराज रथे तस्मिन्राजसूनुर्महाबलः।

चले ॥ १९ ॥ ऐरावतके कुलमें उत्पन्न सुदर्शन नाम हाथीपर महोदर चढा ॥ २० ॥ हाथीपर सवार महोदर ऐसा शोभित हुआ जैसे अस्ताचल पर्वतके शिखरपर रवि ॥२१॥ उत्तम घोडे जुते श्रेष्ठ रथपर त्रिशिरा चढा ॥२२॥ त्रिशिरा रथपर सवार हो ऐसा शोभित हुआ जैसे विजली इन्द्र धनुषसहित मेघ ॥ २३ ॥ उत्तम रथपर सवार तीनों शिरोपर मुकुटधारी त्रिशरा ऐसी शोभा देने लगा जेसी तीन सुवर्ण समेत हिमालय ॥ २४ ॥ धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ तेजस्वी अतिकाय बडे उत्तम रणपर चढा ॥२५॥ उस रथमें सुन्दर पहिया लगे थे और तरकसों धनुषोंसे वह प्रकाशित था ॥ २६॥ सुवर्णका मुकुट धारे वह ऐसा शोभित हुआ जैसे निजदीप्तिसे सुमेरु पर्वत ॥ २७ ॥ महाबली रावणपुत्र उस रथपर चढ ऐसा शोभित हुआ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

वृतो नैर्ऋतशार्दूलैर्वज्रपाणिरिवामरैः २८
हयमुच्चैःश्रवःप्रख्यं श्वेतं कनकभूषणम्।
मनोजवं महाकायमारुरोह नरान्तकः २९
गृहीत्वा प्रासमुल्काभं विरराज नरान्तकः।
शक्तिमादाय तेजस्वी गुहः शिखिगतो यथा ३०
देवान्तकः समादाय परिघं हेमभूषणम्।
परिगृह्य गिरिं दोर्भ्यां वपुर्विष्णोर्विडम्बयन् ३१
महापार्श्वो महातेजा गदामादाय वीर्यवान्।
विरराज गदापाणिः कुबेर इव संयुगे ३२
ते प्रतस्थुर्महात्मानोऽमरावत्याः सुरा इव।
तान्गजैश्च तुरङ्गैश्च रथैश्चाम्बुदनिःस्वनैः ३३
अनूत्पेतुर्महात्मानो राक्षसाः प्रवरायुधाः ३४
ते विरेजुर्महात्मानः कुमाराः सूर्यवर्चसः।
किरीटिनः श्रिया जुष्टा ग्रहा दीप्ता इवाम्बरे ३५
प्रगृहीता बभौ तेषां वस्त्राणामावलिः शिवा।
शरदभ्रप्रतीकाशा हंसावलिरिवाम्बरे ३६

जैसे देवताओंसहित इन्द्र ॥ २८ ॥ भूषित उजले मनके वेगवान अश्वपर
नरान्तक सवार हुआ ॥ २९ ॥ प्रास लिये नरान्तक उस अश्वपर मह-
तेजस्वी षडाननके तुल्य शोभित हुआ ॥ ३० ॥ परिघ हाथमें ले देवान्तक
मन्दराचल लिए विष्णुके शरीरकी बिडम्बना करने लगा ॥ ३१ ॥ भारि-
काय, महापार्श्व गदा हाथमें ले ऐसी शोभा देने लगा जैसे गदाधारी
कुबेर ॥ ३२ ॥ ये राक्षस हाथियों, घोडों और रथोंपर सवार हो देवताओंके
तुल्य चले ॥ ३३ ॥ वे राक्षसश्रेष्ठ बडे बडे आयुध लेले कर चले ॥ ३४ ॥
उन लोगोंके शस्त्रों और वस्त्रोंकी उज्ज्वल पंक्ति ॥ ३५ ॥ शरदृतुमें
आकाशमें उडती हुई हंसोंकी पंक्तिके समान शोभित हुई वे सब ॥ ३६ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मरणं वापि निश्चित्य शत्रूणां वा पराजयम् ।
इति कृत्वा मतिं वीराः संजग्मुः संयुगार्थिनः　३७
जगर्जुश्च प्रणेदुश्च चिक्षिपुश्चापि सायकान् ।
जगृहुश्च महात्मानो निर्याता युद्धदुर्मदाः　३८
क्ष्वेडितास्फोटितानां वै संचचालेव मेदिनी ।
रक्षसां सिंहनादैश्च संस्फोटितमिवाम्बरम्　३९
तेऽभिनिष्क्रम्य मुदिता राक्षसेन्द्रा महाबलाः ।
ददृशुर्वानरानीकं समुद्यतशिलानगम्　४०
हरयोऽपि महात्मानो ददृशू राक्षसं बलम् ।
हस्त्यश्वरथसंबाधं किङ्किणीशतनादितम्　४१
नीलजीमूतसंकाशं समुद्यतमहायुधम् ।
दीप्तानलरविप्रख्यैर्नैर्ऋतैः सर्वतो वृतम्　४२
तद्दृष्ट्वा बलमायातं लब्धलक्षाः प्लवङ्गमाः ।
समुद्यतमहाशैलाः संप्रणेदुर्मुहुर्मुहुः ॥
अमृष्यमाणा रक्षांसि प्रतिनर्दन्त वानराः　४३
ततः समुत्कृष्टरवं निशम्य रक्षोगणा वानरयूथपानाम् ।
अमृष्यमाणाः परहर्षमुग्रं महाबला भीमतरं प्रणेदुः ४४
ते राक्षसबलं घोरं प्रविश्य हरियूथपाः ।

युद्ध करनेकी इच्छासे चले मार्गमें गर्जने, नाद करने तथा बाण फेंकने लगे ॥ ३७ ॥ और युद्धके मदसे वे महात्मा वीर बाहर निकल आनेके बाद गर्जना करने लगे; आक्रोश करने लगे; शत्रुओंकी निन्दा करने लगे और हाथमें बाण लेने लगे ॥ ३८ ॥ उनके चलने और नाद करनेसे पृथ्वी कांप उठी राक्षसोंके नादसे मानो आकाश फट गया ॥ ३९ ॥ उन राक्षसोंने निकल कर वानरोंको देखा ॥ ४० ॥ वानरोंने भी राक्षससेना देखी ॥४१॥ वह सेना काले मेघके समान प्रकाशित थी ॥ ४२ ॥ उस सेनाको आते देख वानरगण अपने अपने शस्त्र लेले ॥ ४३ ॥ गर्जना करने लगे राक्षसोंके आगे वानर और भी अधिक गर्जते थे ॥ ४४ ॥ वानरोंका भयङ्कर शब्द

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विचेरुरुद्यतैः शैलैर्नगाः शिखरिणो यथा ४५
केचिदाकाशमाविश्य केचिदुर्व्यां प्लवङ्गमाः।
रक्षःसैन्येषु संक्रुद्धाः केचिद्द्रुमशिलायुधाः ४६
द्रुमांश्च विपुलस्कन्धान्गृह्य वानरपुङ्गवाः।
तद्युद्धमभवद्घोरं रक्षोवानरसंकुलम् ४७
ते पादपशिलाशैलैश्चक्रुर्वृष्टिमनूपमाम्।
बाणौघैर्वार्यमाणाश्च हरयो भीमविक्रमाः ४८
सिंहनादान्विनेदुश्च रणे राक्षसवानराः।
शिलाभिश्चूर्णयामासुर्यातुधानान्प्लवङ्गमाः ४९
निर्जघ्नुः संयुगे क्रुद्धाः कवचाभरणावृतान्।
केचिद्रथगतान्वीरान्गजवाजिगतानपि ५०
निर्जघ्नुः सहसा वीरान्यातुधानान्प्लवङ्गमाः ५१
शैलशृङ्गान्विताङ्गास्ते मुष्टिभिर्वान्तलोचनाः।
चेलुः पेतुश्च नेदुश्च तत्र राक्षसपुङ्गवाः ५२
राक्षसाश्च शरैस्तीक्ष्णैर्बिभिदुः कपिकुञ्जरान्।
शूलमुद्गरखड्गैश्च जघ्नुः प्रासैश्च शक्तिभिः ५३
अन्योन्यं पातयामासुः परस्परजयैषिणः।

सुन राक्षस उनके शब्दसे भी घोरतर शब्द करने लगे ॥ ४५ ॥ वानर राक्षसोंकी सेनामें प्रवेश कर गये और घूमने लगे ॥ ४६ ॥ कोई आकाश मार्गसे, कोई पृथ्वी हीसे वृक्ष, शिला लिये राक्षससेनामें प्रवेश कर गये ॥ ४७ ॥ वृक्ष लिये वानरगण और राक्षसोंका घोर युद्ध आरम्भ हुआ ॥ ४८ ॥

वानरगण वृक्ष, शिला और पर्वतोंकी वर्षा करते और राक्षसोंके बाणोंको रोकते थे ॥ ४९ ॥ रणमें वानर और राक्षस सिंहनाद करने लगे ॥ ५० ॥ और वानर बडा क्रोध कर राक्षसोंको मारने लगे। कोई रथियों और कोई हाथी, घोडोंके सवारोंको मारने लगे ॥ ५१ ॥ एवं पीले नेत्रवाले वानर राक्षसोंको पत्थरों, मूकोंसे मारने लगे ॥ ५२ ॥ राक्षस कांपते, गिरते और नाद करते थे। राक्षसगण भी ॥ ५३ ॥ शूल, भाला, शक्ति, आदिसे वानरोंको

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रिपुशोणितदिग्धाङ्गास्तत्र वानरराक्षसाः ५४
ततः शैलैश्च खड्गैश्च विसृष्टैर्हरिराक्षसैः ।
मुहूर्तेनावृता भूमिरभवच्छोणितोक्षिता ५५
विकीर्णैः पर्वताकारै रक्षोभिरभिमर्दितैः ।
आसीद्वसुमती पूर्णा तदा युद्धमदान्वितैः ५६
आक्षिप्ताः क्षिप्यमाणाश्च भग्नशैलैश्च वानरैः ।
पुनरङ्गैस्तदा चक्रुर्वानरा युद्धमद्भुतम् ५७
वानरान्वानरैरेव जघ्नुस्ते नैर्ऋतर्षभाः ।
राक्षसान्राक्षसैरेव जघ्नुस्ते वानरा अपि ५८
आक्षिप्य च शिलाः शैलाञ्जघ्नुस्ते राक्षसास्तदा ।
तेषां चाच्छिद्य शस्त्राणि जघ्नू रक्षांसि वानराः ५९
निर्जघ्नुः शैलशृङ्गैश्च बिभिदुश्च परस्परम् ।
सिंहनादान्विनेदुश्च रणे राक्षसवानराः ६०
छिन्नवर्मतनुत्राणा राक्षसा वानरैर्हताः ।
रुधिरं प्रस्रुतास्तत्र रससारमिव द्रुमाः ६१
रथेन च रथं चापि वारणेनापि वारणम् ।
हयेन च हयं केचिन्निर्जघ्नुर्वानरा रणे ६२

मारते थे ॥ ५४ ॥ वानर राक्षसों दोनोंके शरीर रक्तसे भर गये। वानरों और राक्षसोंके चलाये हुए पाषाणों और खड्गोंसे ॥ ५५ ॥ पृथ्वी भर गई और रण दुर्मद राक्षसोंसे पृथ्वी व्याप्त होगई ॥ ५६ ॥ जब फेंकते फेंकते वृक्ष पर्वतादि चूर्ण होगये तो वानर अपने अङ्गोंसे युद्ध करने लगे ॥ ५७ ॥

राक्षस वानरोंको और वानर राक्षसोंसे ही राक्षसोंको मारने लगे ॥५८॥ वानरोंके हाथोंसे शिला छीन उन्हीसे राक्षस वानरोंको और राक्षसोंके हाथोंसे शस्त्रास्त्र छीन वानर उन्हीसे राक्षसोंको मारने लगे ॥ ५९ ॥ एवं राक्षस और वानर वृक्ष पर्वतोंसे परस्पर मार मार सिंहनाद करने लगे ॥ ६० ॥ वानरोंकी मारसे राक्षसोंके कवच वस्त्रादि टूट गये और बहुतसे मर भी गये ॥ ६१ ॥ वानरगण रथसे रथ, हाथीसे हाथी और घोडोंसे घोडोंको

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्षुरप्रैरर्धचन्द्रैश्च भल्लैश्च निशितैः शरैः।
राक्षसा वानरेन्द्राणां विभिदुः पादपाञ्शिला ६३
विकीर्णा पर्वतास्तैश्च द्रुमच्छिन्नैश्च संयुगे।
हतैश्च कपिरक्षोभिर्दुर्गमा वसुधाभवत् ६४
त वानरा गर्वितहृष्टचेष्टाः सङ्ग्राममासाद्य भयं विमुच्य।
युद्धं स्म सर्वे सह राक्षसैस्ते नानायुधाश्चक्रुरदीनसत्त्वाः ६५
तस्मिन्प्रवृत्ते तुमुले विमर्दे प्रहृष्यमाणेषु वलीमुखेषु।
निपात्यमानेषु च राक्षसेषु महर्षयो देवगणाश्च नेदुः ६६
ततो हयं मारुततुल्यवेगमारुह्य शक्तिं निशितां प्रगृह्य।
नरान्तको वानरसैन्यमुग्रं महार्णवं मीन इवाविवेश ६७
स वानरान्सप्त शतानि वीरः प्रासेन दीप्तेन विनिर्बिभेद।
एकः क्षणेनेन्द्ररिपुर्महात्मा जघान सैन्यं हरिपुङ्गवानाम् ६८
ददृशुश्च महात्मानं हयपृष्ठप्रतिष्ठितम्।
चरन्तं हरिसैन्येषु विद्याधरमहर्षयः ६९
स तस्य ददृशे मार्गो मांसशोणितकर्दमः।
पतितैः पर्वताकारैर्वानरैरभिसंवृतः ७०

मारने लगे ॥ ६२ ॥ तब पैने शूलोंसे राक्षसगण वानरोंके पेड और शिला काटने लगे ॥ ६३ ॥

तब फटे कटे पर्वतों, वृक्षों तथा मरे हुये वानरों और राक्षसोंसे पृथ्वी व्याप्त होगई ॥ ६४ ॥ तब वानर गर्वित हो राक्षसोंसे प्रसन्नतापूर्वक युद्ध करने लगे ॥ ६५ ॥ जब उस युद्धमें राक्षसगण मारे गये तो महर्षिगण हर्षित हो नाद करने लगे ॥ ६६ ॥ तब वेगवान् घोडेपर चढा शक्ति हाथमें ले नरान्तक वानरसेनामें घुसा ॥ ६७ ॥ प्रवेश करते ही उसने अपने भालेसे सातसौ वानर मार डाले ॥ ६८ ॥ वानरोंकी सेनामें अकेले विचरते हुये उस नरान्तकको विद्याधर और मर्षियोंने देखा ॥ ६९ ॥ पतित वानरोंमें संयुत तथा मांस रक्तकी कीचसे युक्त उस नरान्तकका मार्ग दिखाई देने लगा॥७०॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यावद्विक्रमितुं बुद्धिं चक्रुः प्लवगपुङ्गवाः।
तावदेतानतिक्रम्य निर्बिभेद नरान्तकः ७१
ददाह हरिसैन्यानि वनानीव विभावसुः।
यावदुत्पाटयामासुर्वृक्षाञ्शैलान्वनौकसः ७२
तावत्प्रासहताः पेतुर्वज्रकृत्ता इवाचलाः।
ज्वलन्तं प्रासमुद्यम्य सङ्ग्रामान्ते नरान्तकः ७३
दिक्षु सर्वासु बलवान्विचचार नरान्तकः।
प्रमृद्नन्सर्वतो युद्धे प्रावृट्काले यथानिलः ७४
न शेकुर्भाषितुं वीरा न स्थातुं स्पन्दितुं कुतः।
उत्पतन्तं स्थितं यान्तं सर्वान्विव्याध वीर्यवान् ७५
एकेनान्तककल्पेन प्रासेनादित्यतेजसा।
भग्नानि हरिसैन्यानि निपेतुर्धरणीतले ७६
वज्रनिष्पेषसदृशं प्रासस्याभिनिपातनम्।
न शेकुर्वानराः सोढुं ते विनेदुर्महास्वनम् ७७
पततां हरिवीराणां रूपाणि प्रचकाशिरे।
वज्रभिन्नाग्रकूटानां शैलानां पततामिव ७८

जब वानरोंने युद्धका विचार किया उसी बीचमें नरान्तकने सातसौ वानरोंको काट डाला ॥ ७१ ॥

वानरोंकी सेनाको अग्निवत् भस्म कर डाला जबतक वानर वृक्ष और पर्वत उखाडा चाहते थे ॥७२॥ तबतक ये भालेसे ऐसे कटकर गिर पडते थे जैसे वज्रसे पर्वत नरान्तक भाला ले रणमें ॥ ७३ ॥ घूमने और वानरसैनिकोंका मर्द्दन करने लगा ॥ ७४ ॥ उसने वानरोंको ऐसा घेर लिया कि न तो कोई बोल सकता न खडा रह सकता ॥ ७५ ॥ तेजवान् केवल एक भालासे ही वानरोंकी सब सेना पृथ्वीपर गिर पडी ॥ ७६ ॥ उस वज्रके तुल्य भालेका निपात वानर न सह सके ॥ ७७ ॥ गिरे हुये वानरवीरोंके रूप वज्रसे शिखर कट जानेपर गिरे हुये पहाडोंके तुल्य शोभा देने लगे ॥ ७८ ॥ जो

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ये तु पूर्वं महात्मानः कुम्भकर्णेन पातिताः।
ते स्वस्था वानरश्रेष्ठाः सुग्रीवमुपतस्थिरे ७९
प्रेक्षमाणः स सुग्रीवो ददर्श हरिवाहिनीम्।
नरान्तकभयत्रस्तां विद्रवन्तीं यतस्ततः ८०
विद्रुतां वाहिनीं दृष्ट्वा स ददर्श नरान्तकम्।
गृहीतप्रासमायान्तं हयपृष्ठप्रतिष्ठितम् ८१
दृष्ट्वोवाच महातेजाः सुग्रीवो वानराधिपः।
कुमारमङ्गदं वीरं शक्रतुल्यपराक्रमम् ८२
गच्छैनं राक्षसं वीरं योऽसौ तुरगमास्थितः।
भक्षयन्तं परबलं क्षिप्रं प्राणैर्वियोजय ८३
स भर्तुर्वचनं श्रुत्वा निष्पपाताङ्गदस्तदा।
अनीकान्मेघसंकाशादंशुमानिव वीर्यवान् ८४
शैलसंघातसंकाशो हरीणामुत्तमोऽङ्गदः।
रराजाङ्गदसंनद्धः सधातुरिव पर्वतः ८५
निरायुधो महातेजाः केवलं नखदंष्ट्रवान्।
नरान्तकमभिक्रम्य वालिपुत्रोऽब्रवीद्वचः ८६
तिष्ठ किं प्राकृतैरेभिर्हरिभिस्त्वं करिष्यसि।
अस्मिन्वज्रसमस्पर्शे प्रासं क्षिप ममोरसि ८७

वानर पूर्व कुम्भकर्णसे मारे गये थे वे स्वस्थ हो सुग्रीवके पास गये ॥७९॥ सुग्रीवने भी नरान्तकके भयसे वानरीसेनाको इधर भागता पाया ॥८०॥ और भागती हुई सेनाके पीछे नरान्तकको आते देखा ॥ ८१ ॥ उसे देखते ही सुग्रीव वीर अङ्गदसे बोले ॥ ८२ ॥ कि यह जो राक्षस घोडेपर चढा वानरसेनाको भक्षण करता चला आता है इसे जाकर मार डालो ॥ ८३ ॥ सुग्रीवकी आज्ञा पा अङ्गद सेनाके बीचबीचसे झट आगे बढा ॥ ८४ ॥ वहुंटा धारण किये अङ्गद सब धातुयुक्त गिरिवत् शोभित हुआ ॥ ८५ ॥ वालिपुत्र अङ्गद केवल नख और दांतोंको ही आयुध बनाए नरान्तकके पास पहुच उससे बोला ॥ ८६ ॥

इन बेचारे वानरोंको न मार कर पुष्ट मेरी छातीमें एक भाला मारो ॥८७॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अङ्गदस्य वचः श्रुत्वा प्रचुक्रोध नरान्तकः।
संदश्य दशनैरोष्ठं निःश्वस्य च भुजङ्गवत्॥
अभिगम्याङ्गदं क्रुद्धो वालिपुत्रं नरान्तकः ८८
स प्रासमाविध्य तदाङ्गदाय समुज्ज्वलन्तं सहसोत्ससर्ज।
स वालिपुत्रोरसि वज्रकल्पे बभूव भग्नो न्यपतच्च भूमौ ८९
तं प्रासमालोक्य तदा विभग्नं सुपर्णकृत्तोरगवीर्यकल्पम्।
तलं समुद्यम्य स वालिपुत्रस्तुरङ्गमस्याभिजघान मूर्ध्नि ९०
निमग्नपादः स्फुटिताक्षितारो निष्क्रान्तजिह्वोचलसंनिकाशः।
स तस्य वाजी निपपात भूमौ तलप्रहारेण विकीर्णमूर्धा ९१
नरान्तकः क्रोधवशं जगाम हतं तुरङ्गं पतितं समीक्ष्य।
स मुष्टिमुद्यम्य महाप्रभावो जघान शीर्षे युधि वालिपुत्रम् ९२
अथाङ्गदो मुष्टिविशीर्णमूर्धा सुस्राव तीव्रं रुधिरं भृशोष्णम्।
मुहुर्विजज्वाल मुमोह चापि संज्ञां समासाद्य विसिस्मिये च ९३
अथाङ्गदो मृत्युसमानवेगं संवर्त्य मुष्टिं गिरिशृङ्गकल्पम्।
निपातयामास तदा महात्मा नरान्तकस्योरसि वालिपुत्रः ९४
स मुष्टिनिर्भिन्ननिमग्नवक्षा ज्वाला वमञ्छोणितदिग्धगात्रः।
नरान्तको भूमितले पपात यथाऽचलो वज्रनिपातभग्नः ९५

वह सुन नरान्तकने बडा क्रोध किया और वालिपुत्र अङ्गदके आगे आकर ॥ ८८ ॥ प्रज्वलित भाला अङ्गदकी छातीमें बलसे मारा पर वह भाला अङ्गदकी छातीमें लगनेसे टूटकर भूमिपर गिर पडा ॥ ८९ ॥ जब भाला टूट गया तो अंगदने कूदकर नरान्तकके अश्वके शिरमें एक लात मारी ॥ ९० ॥ जिससे उस घोडेका शिर फट गया तथा मरकर भूमिपर गिर पडा ॥ ९१ ॥ अपने घोडेको मरा हुआ पृथिवीपर पडा देख नरान्तकने एक मूका बडे बलसे अंगदके शिरमें मारा ॥ ९२ ॥ उस प्रहारसे अंगदका मूंड फट गया और वह मूर्छित हो गिर पडा पर जल्दी चैतन्य हो ॥ ९३ ॥ वज्रके समान दृढ मूका बांध नरान्तककी छातीमें मारा ॥ ९४ ॥ उस घूंसेके लगनेसे नरान्तककी छाती फट गई रक्त बह चला और

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तदान्तरिक्षे त्रिदशोत्तमानां वनौकसां चैव महाप्रणादः।
बभूव तस्मिन्निहतेऽग्र्यवीर्ये नरान्तके वालिसुतेन सङ्ख्ये ९६
अथाङ्गदो राममनःप्रहर्षणं सुदुष्करं तं कृतवान्हि विक्रमम्।
विसिस्मिये सोऽप्यथ भीमकर्मा पुनश्च युद्धे स बभूव हर्षितः ९७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकांडे एकोनसप्ततितमः सर्गः॥६९॥[३०१७]

सप्ततितमः सर्गः।

नरान्तकं हतं दृष्ट्वा चुक्रुशुर्नैर्ऋतर्षभाः।
देवान्तकस्त्रिमूर्धा च पौलस्त्यश्च महोदरः १
आरूढो मेघसंकाशं वारणेन्द्रं महोदरः।
वालिपुत्रं महावीर्यमभिदुद्राव वेगवान् २
भ्रातृव्यसनसंतप्तस्तदा देवान्तको बली।
आदाय परिघं घोरमङ्गदं समभिद्रवत् ३
रथमादित्यसंकाशं युक्तं परमवाजिभिः।
आस्थाय त्रिशिरा वीरा वालिपुत्रमथाभ्ययात् ४
स त्रिभिर्देवदर्पघ्नै राक्षसेन्द्रैरभिद्रुतः।
वृक्षमुत्पाटयामास महाविटपमङ्गदः ५

निर्जीव हो वह गिर पड़ा ॥ ९५ ॥ जब अङ्गदने नरान्तकको मार डाला तो देवताओं और वानरोंने बड़ा नाद किया ॥ ९६ ॥ अंगदने रामके मनको हर्षित करनेवाला वह भीमकर्म किया जिसे देख राम आश्चर्य करने लगे युद्ध करनेको उद्यत होगये ॥ ९७ ॥

यहां ६९ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

नरान्तकको मरा देख देवान्तक, त्रिशिरा, महोदर रोने लगे ॥ १ ॥ फिर हाथीपर चढ महोदर अंगदके आगे दौड़ा ॥ २ ॥ भाईके दुःखसे संतप्त देवान्तक घोर परिघ ले अंगदके ऊपरको दौड़ा ॥ ३ ॥ सूर्यवत् प्रकाशित रथपर सवार हो त्रिशिरा भी अंगदकी ओर बढ़ा ॥ ४ ॥ जब तीन राक्षस पुंगव एक साथ ही अंगदकी ओर बढ़े तब उसने एक बड़ा वृक्ष उखा

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

देवान्तकाय तं वीरश्चिक्षेप सहसाङ्गदः ।
महावृक्षं महाशाखं शक्रो दीप्तामिवाशनिम् ६
त्रिशिरास्तं प्रचिच्छेद शरैराशीविषोपमैः ।
स वृक्षं कृतमालोक्य उत्पपात तदाङ्गदः ७
स ववर्ष ततो वृक्षाञ्छिलाश्च कपिकुञ्जरः ।
तान्प्रचिच्छेद संक्रुद्धस्त्रिशिरा निशितैः शरैः ८
परिघाग्रेण तान्वृक्षान्बभञ्ज स महोदरः ।
त्रिशिराश्चाङ्गदं वीरमभिदुद्राव सायकैः ९
गजेन समभिद्रुत्य वालिपुत्रं महोदरः ।
जघानोरसि संक्रुद्धस्तोमरैर्वज्रसंनिभैः १०
देवान्तकश्च संक्रुद्धः परिघेण तदाङ्गदम् ।
उपगम्याभिहत्याशु व्यपचक्राम वेगवान् ११
स त्रिभिर्नैरृतश्रेष्ठैर्युगपत्समभिद्रुतः ।
न विव्यथे महातेजा वालिपुत्रः प्रतापवान् १२
स वेगवान्महावेगं कृत्वा परमदुर्जयः ।
तलेन समभिद्रुत्य जघानास्य महागजम् १३

लिया ॥ ५ ॥ और वह पेड देवान्तकके ऊपर चलाया ॥ ६ ॥

त्रिशिराने बाणोंसे उसे काट डाला, वृक्ष कट जानेपर अङ्गद ऊपरको उछलके ॥ ७ ॥ शिला वृक्षादिकोंकी वर्षा करने लगा पर त्रिशिराने बाणोंसे उन्हें भी काट डाला ॥ ८ ॥ बचे हुये वृक्षोंको महोदरने परिघसे तोड डाला त्रिशिरा भी अंगदपर बाण बरसाता हुआ दौडा ॥ ९ ॥ और महोदरने अति क्रोध कर वज्र तुल्य कई तोमर अंगदकी छातीमें मारे ॥ १० ॥ देवांतक भी परिघसे अंगदको मार जल्दीसे अलग हट गया ॥ ११ ॥ उन तीनों राक्षसोंने एक ही साथ अंगदपर चोट की पर अंगद व्यथित न हुआ ॥ १२ ॥ किन्तु अति वेगसे कूद महोदरके हाथीको लातसे ताडित किया ॥ १३ ॥

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पेततुर्नयने तस्य विननाश स कुञ्जरः।
विषाणं चास्य निष्कृष्य वालिपुत्रो महाबलः १४
देवान्तकमभिद्रुत्य ताडयामास संयुगे।
स विह्वलस्तु तेजस्वी वातोद्धूत इव द्रुमः १५
लाक्षारससवर्णं च सुस्राव रुधिरं महत्।
अथाश्वस्य महातेजाः कृच्छ्राद्देवान्तको बली १६
आविध्य परिघं वेगादाजघान तदाङ्गदम्।
परिघाभिहतश्चापि वानरेन्द्रात्मजस्तदा १७
जानुभ्यां पतितो भूमौ पुनरेवोत्पपात ह।
तमुत्पतन्तं त्रिशिरास्त्रिभिर्बाणैरजिह्मगैः १८
घोरैर्हरिपतेः पुत्रं ललाटेऽभिजघान ह।
ततोऽङ्गदं परिक्षिप्तं त्रिभिर्नैर्ऋतपुङ्गवैः १९
हनूमानथ विज्ञाय नीलश्चापि प्रतस्थतुः।
ततश्चिक्षेप शैलाग्रं नीलस्त्रिशिरसे तदा २०
तद्रावणसुतो धीमान्विभेद निशितैः शरैः २१
तद्बाणशतनिर्भिन्नं विदारितशिलातलम्।
सविस्फुलिङ्गं सज्वालं निपपात गिरेः शिरः २२

लात लगनेसे उसके नेत्र निकल पडे और वह मृतक हो गिर पडा तब अंगदने उसका एक दांत निकाल लिया ॥ १४ ॥

दौड कर देवान्तकको उसीसे ताडित किया। जिससे वह कम्पित वृक्षके समान कांपने लगा ॥ १५ ॥ पर महाबली देवान्तकने परिघ उठा बडे वेगसे अङ्गदको मारा ॥ १६ ॥ उसके लगनेसे वह पृथ्वीपर बैठ गया पर शीघ्र ही उठा; उठते देख त्रिशिराने तीन बाण उसके माथेमें मारे ॥ १७-१८॥ तीन शत्रुओंसे युद्ध करते अङ्गदको देख हनुमान् और नील भी यह आये ॥ १९ ॥ और नीलने एक गिरिशृङ्ग ले त्रिशिरापर चलाया पर त्रिशिराने बाणोंसे उसे काट डाला ॥ २० ॥

परंतु वह बुद्धिमान रावणपुत्रने अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उस पर्वत शिखरको फाड दिया ॥ २१ ॥ सौ बाणोंसे कटनेके कारण उसके सब शिलातल

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स विजृम्भितमालोक्य हर्षाद्देवान्तको बली।
परिघेणाभिदुद्राय मारुतात्मजमाहवे २३
तमापतन्तमुत्पत्य हनूमान्कपिकुञ्जरः।
आजघान तदा मूर्ध्नि वज्रकल्पेन मुष्टिना २४
शिरसि प्राहरद्वीरस्तदा वायुसुतो बली।
नादेनाकम्पयच्चैव राक्षसान्स महाकपिः २५
स मुष्टिनिष्पिष्टविभिन्नमूर्धा निर्वान्तदन्ताक्षिविलम्बिजिह्वः।
देवान्तको राक्षसराजसूनुर्गतासुरुर्व्यां सहसा पपात २६
तस्मिन्हते राक्षसयोधमुख्ये महाबले संयति देवशत्रौ।
क्रुद्धस्त्रिशीर्षा निशिताग्रमुग्रं ववर्ष नीलोरसि बाणवर्षम् २७
महोदरस्तु संक्रुद्धः कुञ्जरं पर्वतोपमम्।
भूयः समाधिरुह्याशु मन्दरं रश्मिवानिव २८
ततो बाणमयं वर्षं नीलस्योपर्यपातयत्।
गिरौ वर्षं तडिच्चक्रं स गर्जन्निव तोयदः २९
ततः शरौघैरभिवृष्यमाणो विभिन्नगात्रः कपिसैन्यपालः।
नीलो बभूवाथ विसृष्टगात्रो विष्टम्भितस्तेन महाबलेन ३०
ततस्तु नीलः प्रतिलब्धसंज्ञः शैलं समुत्पाट्य सवृक्षखण्डम्।
ततः समुत्पत्य महोग्रवेगो महोदरं तेन जघान मूर्ध्नि ३१

विदीर्ण होगये ॥ २२ ॥ इसी बीचमें हनुमान्‌को देख देवान्तक परिघ ले उसके सामने दौडा ॥ २३ ॥ उसको आते देख हनुमान्‌ने उसके शिरपर एक मूका मारा ॥ २४ ॥ और ऐसा नाद किया जिसे सुन सब राक्षस कांपने लगे ॥ २५ ॥ देवान्तक मुष्टिके प्रहारसे विदीर्ण शिर हो भूमिपर गिर पडा ॥ २६ ॥ जब देवान्तक मारा गया तो क्रोधित हो त्रिशिराने नीलकी छातीमें तीक्ष्ण बाण मारे ॥ २७ ॥ फिर महोदर हाथीपर मन्दराचलपर चढे सूर्यके तुल्य ॥ २८ ॥ नीलकी छातीपर बाणोंकी वर्षा करने लगा ॥ २९ ॥ तब महोदरने नीलको बाणोंसे मारा तो वह मूर्च्छित होगया ॥ ३० ॥ पर शीघ्र चैतन्य हो नीलने एक पर्वतको उखाड लिया और महोदरके शिरपर मारा ॥ ३१ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततः स शैलाभिनिपातभग्नो महोदरस्तेन महाद्रिपेन ।
व्यामोहितो भूमितले गतासुः पपात वज्राभिहतो यथाद्रिः ३२
पितृव्यं निहतं दृष्ट्वा त्रिशिराश्चापमाददे ।
हनूमन्तं च संक्रुद्धो विव्याध निशितैः शरैः ३३
स वायुसूनुः कुपितश्चिक्षेप शिखरं गिरेः ।
त्रिशिरास्तच्छरैस्तीक्ष्णैर्बिभेद बहुधा बली ३४
तद्व्यर्थं शिखरं दृष्ट्वा द्रुमवर्षं तदा कपिः ।
विससर्ज रणे तस्मिन्रावणस्य सुतं प्रति ३५
तमापतन्तमाकाशे द्रुमवर्षं प्रतापवान् ।
त्रिशिरा निशितैर्बाणैश्चिच्छेद च ननाद च ३६
हनूमांस्तु समुत्पत्य हयं त्रिशिरसस्तदा ।
विददार नखैः क्रुद्धो नागेन्द्रं मृगराडिव ३७
अथ शक्तिं समासाद्य कालरात्रिमिवान्तकः ।
चिक्षेपानिलपुत्राय त्रिशिरा रावणात्मजः ३८
दिवः क्षिप्तामिवोल्कां तां शक्तिं क्षिप्तामसंगताम् ।
गृहीत्वा हरिशार्दूलो बभञ्ज च ननाद च ३९
तां दृष्ट्वा घोरसंकाशां शक्तिं भग्नां हनुमता ।
प्रहृष्टा वानरगणा विनेदुर्जलदा यथा ४०

उस महाशैलीके लगनेसे महोदरके सर्वांग चूर्ण होगये और निर्जीव हो वह गिर पडा ॥ ३२ ॥ अपने चचाको मरा देख त्रिशिराने हनुवाले हनुमान् पर तीक्ष्ण बाण छोडे ॥ ३३ ॥ हनुमानने भी एक पर्वतका शिखर ले त्रिशिराके ऊपर चलाया पर उसने बाणोंसे उसे काट डाला ॥ ३४ ॥ उस पर्वत शिखरको व्यर्थ देख हनुमानने उसपर वृक्षोंकी वर्षा की ॥ ३५ ॥ पर उसे भी त्रिशिराने पैने बाणोंसे काट डाला ॥ ३६ ॥ तब कूदकर हनुमानने त्रिशिराके घोडेको नखोंसे चीर फाड डाला ॥ ३७ ॥ तब त्रिशिराने हनुमान् पर शक्ति चलाई ॥ ३८ ॥ पर आती हुई उस शक्तिको हनूमानने पकडकर तोड डाली ॥ ३९ ॥

हनूमानके उस कार्यको देख सब वानर अति प्रसन्न हुये ॥ ४० ॥ तब

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततः खड्गं समुद्यम्य त्रिशिरा राक्षसोत्तमः।
निचखान तदा खड्गं वानरेन्द्रस्य वक्षसि ४१
खड्गप्रहाराभिहतो हनूमान्मारुतात्मजः।
आजघान त्रिमूर्धानं तलेनोरसि वीर्यवान् ४२
स तलाभिहतस्तेन स्रस्तहस्ताम्बरो भुवि।
निपपात महातेजास्त्रिशिरास्त्यक्तचेतनः ४३
स तस्य पततः खड्गं तमाच्छिद्य महाकपिः।
ननाद गिरिसंकाशस्त्रासयन्सर्वराक्षसान् ४४
अमृष्यमाणस्तं घोषमुत्पपात निशाचरः।
उत्पत्य च हनूमन्तं ताडयामास मुष्टिना ४५
तेन मुष्टिप्रहारेण संचुकोप महाकपिः।
कुपितश्च निजग्राह किरीटे राक्षसर्षभम् ४६
स तस्य शीर्षाण्यसिना शितेन किरीटजुष्टानि सकुण्डलानि।
क्रुद्धः प्रचिच्छेद सुतोऽनिलस्य त्वष्टुः सुतस्येव शिरांसि शक्रः ४७
तान्यायताक्षाण्यगसंनिभानि प्रदीप्तवैश्वानरलोचनानि।
पेतुःशिरांसीन्द्ररिपोः पृथिव्यां ज्योतींषि मुक्तानि यथेन्द्रमार्गात् ४८
तस्मिन्हते देवरिपौ त्रिशीर्षे हनूमता शक्रपराक्रमेण।
नेदुः प्लवङ्गाः प्रचचाल भूमी रक्षांस्यथो दुद्रुविरे समन्तात् ४९

त्रिशिराने हनूमान्की छातीमें चोट की ॥ ४१ ॥ जब हनूमान्के खड्ग लगा तो उसने त्रिशिराकी छातीमें एक लात मारी ॥ ४२ ॥ उस लातके लगनेसे त्रिशिरा मूर्च्छित हो भूमिपर गिर पडा ॥ ४३ ॥ जब वह गिर पडा तो हनुमानने उसके हाथसे तलवार छीन राक्षसोंको भयभीत करने लगा ॥ ४४ ॥ जब त्रिशिराकी भी मूर्च्छा जगी और उसने उठकर एक मूका हनुमान्को मारा ॥ ४५ ॥ उसके लगनेसे हनुमान्ने बडा कोप किया ॥ ४६ ॥ और उसके किरीट कुण्डलसहित तीनों शिर खड्गसे काट डाले ॥ ४७ ॥ वे प्रज्वलित अग्निकेसमान निकले हुये नेत्रोंसहित इन्द्रमार्गसे गिरे हुये नक्षत्रोंके तुल्य भूमिपर गिर पडे ॥ ४८ ॥ जब त्रिशिराको हनुमान्ने मार डाला तो वानर हर्षसे गर्जने लगे ॥ ४९ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

). In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

हतं त्रिशिरसं दृष्ट्वा युद्धोन्मत्तं तथैव च।
हतौ प्रेक्ष्य दुराधर्षौ देवान्तकनरान्तकौ ५०

चुकोप परमामर्षी मत्तो राक्षसपुङ्गवः।
जग्राहार्चिष्मतीं चापि गदां सर्वायसीं तदा ५१

हेमपट्टपरिक्षितां मांसशोणितफेनिलाम्।
विराजमानां विपुलां शत्रुशोणिततर्पिताम् ५२

तेजसा संप्रदीप्ताग्रां रक्तमाल्यविभूषिताम्।
ऐरावतमहापद्मसार्वभौमभयावहाम् ५३

गदामादाय संक्रुद्धो मत्तो राक्षसपुङ्गवः।
हरीन्समभिदुद्राव युगान्ताग्निरिव ज्वलन् ५४

अश्वर्षभः समुत्पत्य वानरो रावणानुजम्।
मत्तानीकमुपागम्य तस्थौ तस्याग्रतो बली ५५

तं पुरस्तात्स्थितं दृष्ट्वा वानरं पर्वतोपमम्।
आजघानोरसि क्रुद्धो गदया वज्रकल्पया ५६

स तयाभिहतस्तेन गदया वानरर्षभः।
भिन्नवक्षाः समाधूतः सुस्राव रुधिरं बहु ५७

त्रिशिरा, महोदर, देवान्तक और नरान्तकको मरा देख ॥ ५० ॥ महापार्श्वने बड़ा क्रोध किया और लोहसे बनी बड़ी भारी गदा उठा ली ॥५१॥ यह गदा सुवर्णके पत्रसे मढी मांससे भीगी तथा शत्रुओंके रक्तसे तर्पित होनेसे शोभित होरही थी ॥ ५२ ॥ निज तेजसे लपलपा रही थी लाल फूलोंकी मालाओंसे भूषित थी ॥ ५३ ॥ ऐसी गदा ले क्रोधकर महापार्श्व वानरोंके आगे दौड़ा ॥ ५४ ॥ रावणके छोटे भाई महापार्श्वको आता देख ऋषभ युद्ध करनेको खड़ा होगया ॥ ५५ ॥ उस वानरश्रेष्ठको आगे खड़ा देख उसने छातीमें गदा मारी ॥ ५६ ॥ उस प्रहारसे ऋषभकी छाती फट गई और वह मूर्च्छित हो बहुत रुधिर वमन करने लगा ॥ ५७ ॥

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

स संप्राप्य चिरात्संज्ञामृषभो वानरेश्वरः।
क्रुद्धो विस्फुरमाणौष्ठो महापार्श्वमुदैक्षत ५८
स वेगवान्वेगवदभ्युपेत्य तं राक्षसं वानरवीरमुख्यः।
संवर्त्य मुष्टिं सहसा जघान बाह्वन्तरे शैलनिकाशरूपः ५९
स कृत्तमूलः सहसेव वृक्षः क्षितौ पपात क्षतजोक्षिताङ्गः।
तां चास्य घोरां यमदण्डकल्पां गदां प्रगृह्याशु तदा ननाद ६०
मुहूर्तमासीत्स गतासुकल्पः प्रत्यागतात्मा सहसा सुरारिः।
उत्पत्य संध्याभ्रसमानवर्णस्तं वारिराजात्मजमाजघान ६१
स मूर्च्छितो भूमितले पपात मुहूर्तमुत्पत्य पुनः ससंज्ञः।
तामेव तस्याद्रिवराद्रिकल्पां गदा समाविध्य जघान सङ्ख्ये ६२
सा तस्य रौद्रा समुपेत्य देहं रौद्रस्य देवाध्वरविप्रशत्रोः।
बिभेद वक्षः क्षतजं च भूरि सुस्राव धातव्म इवाद्रिराजः ६३
अभिदुद्राव वेगेन गदां तस्य महात्मनः।
तां गृहीत्वा गदां भीमामाविध्य च पुनःपुनः॥
मत्तानीकं महात्मा स जघान रणमूर्धनि ६४
स स्वया गदया भग्नो विशीर्णदशनेक्षणः।
निपपात तदा मत्तो वज्राहत इवाचलः ६५

उस प्रहारसे ऋषभकी छाती फट गई और वह मूर्च्छित होगया॥ ५८॥ मूर्च्छा जगनेपर ऋषभ बडे वेगसे महापार्श्वके पास जा बडे जोरसे एक मुक्का उसकी छातीमें मारा ॥ ५९ ॥ जिसके लगनेसे वह भूमिमें गिर पडा ॥ ६० ॥ मूहूर्त भरतक वह उसी दशामें पडा रहा फिर चैतन्य हुआ कूद कर महापार्श्वने ऋषभको मारा ॥ ६१ ॥ ऋषभने उसीकी गदा जोकि उसके हाथसे छीनली थी बडे जोरसे महापार्श्वकी छातीमें मारी॥६२॥ उस गदाने महापार्श्वकी देहमें लगकर छाती विदीर्ण कर दी ॥ ६३ ॥ तिस पर भी वह ऋषभकी गदाके सामने दौडा फिर उसी गदासे ॥ ६४ ॥ ऋषभने महापार्श्वको ताडित किया जिससे निज गदा प्रहारसे ही महापार्श्व

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विशीर्णनयनो भूमौ गतसत्त्वो गतायुषः।
पतिते राक्षसे तस्मिन्विद्रुतं राक्षसं बलम् ६६
तस्मिन्हते भ्रातरि रावणस्य तन्नैर्ऋतानां बलमर्णवाभम्।
त्यक्तायुधं केवलजीवितार्थं दुद्राव भिन्नार्णवसंनिकाशम् ६७

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे सप्ततितमः सर्गः ॥७०॥ [३०८४]

॥ एकसप्ततितमः सर्गः ॥

स्वबलं व्यथितं दृष्ट्वा तुमुलं लोमहर्षणम्।
भ्रातॄंश्च निहतान्दृष्ट्वा शक्रतुल्यपराक्रमान् १
पितृव्यौ चापि संदृश्य समरे संनिपातितौ।
युद्धोन्मत्तं च मत्तं च भ्रातरौ राक्षसोत्तमौ २
चुकोप च महातेजा ब्रह्मदत्तवरो युधि।
अतिकायोऽद्रिसंकाशो देवदानवदर्पहा ३
स भास्करसहस्रस्य संघातमिव भास्वरम्।
रथमारुह्य शक्रारिरभिदुद्राव वानरान् ४
स विस्फार्य तदा चापं किरीटी मृष्टकुण्डलः।

विदीर्ण होगया ॥ ६५ ॥ और भूमिमें गिर पडा जब निर्जीव हो गिर पडा तो राक्षसोंकी सेना भाग निकली ॥ ६६ ॥ अर्थात् रावणके उस (मत्त संज्ञक) भाईको वध होनेसे राक्षसोंके सैन्यसमुद्रावने अस्त्र शस्त्र छोड छोडकर केवल प्राणकी आशा करके अमर्याद समुद्रके सदृश इधर उधर भाग गया ॥ ६७ ॥

यहां ७० वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

अपनी सेना तथा पराक्रमी अपने भाई त्रिशिरा, नरान्तक, देवान्तक ॥१॥ और अपने चचा महोदर महापार्श्वको निहत देख ब्रह्मासे बर पाया हुआ अतिकाय युद्धमें अति क्रोधित हुआ ॥ २-३ ॥ और रथपर सवार हो अतिकाय वानरोंके सामने दौडा ॥ ४ ॥ और उसने अपने धनुष पर टंको

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नाम संश्रावयामास ननाद च महास्वनम् ५
तेन सिंहप्रणादेन नामविश्रावणेन च ।
ज्याशब्देन च भीमेन त्रासयामास वानरान् ६
ते दृष्ट्वा देहमाहात्म्यं कुम्भकर्णोऽयमुत्थितः ।
भयार्ता वानराः सर्वे संश्रयन्ते परस्परम् ७
ते तस्य रूपमालोक्य यथा विष्णोस्त्रिविक्रमे ।
भयाद्वानरयोधास्ते विद्रवन्ति ततस्ततः ८
तेऽतिकायं समासाद्य वानरा मूढचेतसः ।
शरण्यं शरणं जग्मुर्लक्ष्मणाग्रजमाहवे ९
ततोऽतिकायं काकुत्स्थो रथस्थं पर्वतोपमम् ।
ददर्श धन्विनं दूराद्गर्जन्तं कालमेघवत् १०
स तं दृष्ट्वा महाकायं राघवस्तु सुविस्मितः ।
वानरान्सान्त्वयित्वा च विभीषणमुवाच ह ११
कोऽसौ पर्वतसंकाशो धनुष्मान्हरिलोचनः ।
युक्ते हयसहस्रेण विशाले स्यन्दने स्थितः १२
य एष निशितैः शूलैः सुतीक्ष्णैः प्रासतोमरैः ।
अर्चिष्मद्भिर्वृतो भाति भूतैरिव महेश्वरः १३

दे जोरसे नाद किया ॥ ५ ॥ उस सिंहतुल्य नाद व धनुषकी टंकोरसे वानरोंको अति व्यथित किया ॥ ६ ॥

वानरोंने पर्वताकार उसे देख यह समझा कि यह कुम्भकर्ण ही है पुनः जीवित होगया है ॥ ७ ॥ बढे हुए वामनजीका सा उसका बडा भारी शरीर देख भयसे वानर इधर उधर भाग हुये और ॥ ८ ॥ अतिकायको देख सब वानर रामकी शरणमें गये तब रामने भी अतिकायको रथपर सवार प्रलयकालके मेघोंके तुल्य गर्जते देखा ॥ ९-१० ॥ उसको देख राम वानरोंको समझा बिभीषणसे बोले ॥ ११ ॥

यह पर्वताकार कौन है जो हजार घोडे जोते रथपर चढा हुआ धनुष धारे है ॥ १२ ॥ यह तीक्ष्ण शूल, मुद्गर, भाला आदि धार महादेव ही के

*

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कालजिह्वाप्रकाशाभियं एषोऽभिविराजते।
आवृतो रथशक्तीभिर्विद्युद्भिरिव तोयदः १४
धनूंषि चास्य सज्जानि हेमपृष्ठानि सर्वशः।
शोभयन्ति रथश्रेष्ठं शक्रचापमिवाम्बरम् १५
य एष रक्षःशार्दूलो रणभूमिं विराजयन्।
अभ्येति रथिनां श्रेष्ठो रथेनादित्यवर्चसा १६
ध्वजशृङ्गप्रतिष्ठेन राहुणाभिविराजते।
सूर्यरश्मिप्रभैर्बाणैर्दिशो दश विराजयन् १७
त्रिनतं मेघनिर्ह्रादं हेमपृष्ठमलंकृतम्।
शतक्रतुधनुःप्रख्यं धनुश्चास्य विराजते १८
सध्वजः सपताकश्च सानुकर्षो महारथः।
चतुःसादिसमायुक्तो मेघस्तनितनिःस्वनः १९
विंशतिर्दश चाष्टौ च तूणास्य रथमास्थिताः।
कार्मुकाणि च भीमानि ज्याश्च काञ्चनपिङ्गलाः २०
द्वौ च खड्गौ च पार्श्वस्थौ प्रदीपौ पार्श्वशोभितौ।
चतुर्हस्तत्सरुचितौ व्यक्तहस्तदशायतौ २१

समान शोभित होता है ॥ १३ ॥ यह बिजुलीसहित मेघके समान विराजमान होरहा है ॥ १४ ॥ रौदा चढे हुए इसके धनुष इस रथको ऐसा शोभित करते हैं जैसे इन्द्र धनुष आकाशको ॥ १५ ॥ यह राक्षस श्रेष्ठ सूर्यवत्प्रकाशित रथपर सवार चला आता है कौन है? ॥ १६ ॥ यह जो बाणोंसे दशों दिशाओंको प्रकाशित करता अपने रथके शृंगपर ध्वजामें राहुकी मूर्तिसहित शोभित होरहा है ॥ १७ ॥ तथा तीन जगह झुका हुआ मेघतुल्य शब्द करता हुआ इन्द्र धनुषके समान जिसका धनुष शोभित होता है कौन है ॥ १८ ॥ इसका रथ ध्वजा पताका सहित अति सुन्दर है ॥ १९ ॥

रथपर तरकस और अतिभयंकर इतने ही धनुष तथा बहुतसी प्रत्यंचा रक्खी हैं ॥ २० ॥ अति प्रकाशित दो खड्ग जिनमें चार चार हाथके कब्जे

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रक्तकण्ठगुणो धीरो महापर्वतसंनिभः ।
कालः कालमहावक्त्रो मेघस्थ इव भास्करः २२
काञ्चनाङ्गदनद्धाभ्यां भुजाभ्यामेष शोभते ।
शृङ्गाभ्यामिव तुङ्गाभ्यां हिमवान्पर्वतोत्तमः २३
कुण्डलाभ्यामुभाभ्यां च भाति वक्त्रं सुभीषणम् ।
पुनर्वस्वन्तरगतः परिपूर्णो निशाकरः २४
आचक्ष्व मे महाबाहो त्वमेनं राक्षसोत्तमम् ।
यं दृष्ट्वा वानराः सर्वे भयार्ता विद्रुता दिशः २५
स पृष्टो राजपुत्रेण रामेणामिततेजसा ।
आचचक्षे महातेजा राघवाय विभीषणः २६
दशग्रीवो महातेजा राजा वैश्रवणानुजः ।
भीमकर्मा महात्मा हि रावणो राक्षसेश्वरः २७
तस्यासीद्वीर्यवान्पुत्रो रावणप्रतिमो बले ।
वृद्धसेवी श्रुतबलः सर्वास्त्रविदुषां वरः २८
अश्वपृष्ठे नागपृष्ठे खड्गे धनुषि कर्षणे ।
भेदे सान्त्वे च दाने च नये मन्त्रे च संमतः २९

लगे हैं ॥ २१ ॥ अगल बगल रक्खे हैं आप लाल फूलोंकी माला पहिने पर्वताकार रूप, दीर्घ मुखवाला शोभित होरहा है ॥ २२ ॥ यह ऊंचे दो शृंगों सहित हिमालयके तुल्य शोभित हो रहा है ॥ २३ ॥ इसका दो कुण्डलोंके बीचमें सुन्दर नेत्रसहित मुख पुनर्वसु नक्षत्रोंके बीचमें स्थित चन्द्रमाके तुल्य शोभित है ॥ २४ ॥

हे विभीषण जिसके भयसे आर्तहो वानरगण भाग खडे हुये हैं उस राक्षसको बताओ कि कौन है ॥ २५ ॥ जब रामने एवं पूछा तो विभीषण कहने लगा ॥ २६ ॥ कि कुबेरके छोटे भाई भयंकरकर्मा राक्षसेन्द्र रावण ॥ २७ ॥ का यह पुत्र हैं यह वीर्यबलमें रावण ही के समान है उत्तम तथा सब अस्त्र विद्या जाननेवाले राक्षसोंमें है ॥ २८ ॥ खड्ग चलाने, समझाने, बुझाने, शत्रुको वश करने तथा मन्त्र करनेमें यह बडा चतुर

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यस्य बाहुं समाश्रित्य लङ्का भवति निर्भया ।
तनयं धान्यमालिन्या अतिकायमिमं विदुः ३०
एतेनाराधितो ब्रह्मा तपसा भावितात्मना ।
अस्त्राणि चाप्यवाप्तानि रिपवश्च पराजिताः ३१
सुरासुरैरवध्यत्वं दत्तमस्मै स्वयंभुवा ।
एतच्च कवचं दिव्यं रथश्च रविभास्वरः ३२
एतेन शतशो देवा दानवाश्च पराजिताः ।
रक्षितानि च रक्षांसि यक्षाश्चापि निषूदिताः ३३
वज्रं विष्टम्भितं येन बाणैरिन्द्रस्य धीमता ।
पाशः सलिलराजस्य युद्धे प्रतिहतस्तथा ३४
एषोऽतिकायो बलवान्राक्षसानामथर्षभः ।
स रावणसुतो धीमान्देवदानवदर्पहा ३५
तदस्मिन्क्रियतां यत्नः क्षिप्रं पुरुषपुङ्गव ।
पुरा वानरसैन्यानि क्षयं नयति सायकैः ३६
ततोऽतिकायो बलवान्प्रविश्य हरिवाहिनीम् ।
विस्फारयामास धनुर्ननाद च पुनः पुनः ३७
तं भीमवपुषं दृष्ट्वा रथस्थं रथिनां वरम् ।
अभिपेतुर्महात्मानः प्रधाना ये वनौकसः ३८

है ॥ २९ ॥ इसके ही बाहुबलकी रक्षासे लङ्का निर्भय रहती है रावणकी धान्य मालिनीनामक भार्याका यह पुत्र है अतिकाय इसका नाम है ॥३०॥ इसने बडी तपस्या कर ब्रह्माको प्रसन्न किया है ॥ ३१ ॥

ब्रह्माके वरदानसे देवता दैत्योंसे अजेय है ॥ ३२ ॥ इसने देवताओं और दैत्योंको हरा कर राक्षसोंकी रक्षा की है ॥ ३३ ॥ इसने अपने बाणोंसे इन्द्रका वज्र भी रोक दिया था ॥ ३४ ॥ यह राक्षसश्रेष्ठ रावणका पुत्र अतिकाय है ॥ ३५ ॥ हे पुरुषपुङ्गव आप शीघ्र ही इसके मारनेका उपाय कीजिये ॥ ३६ ॥ इसी अन्तरमें बलवान् अतिकायने वानरसेनामें आकर धनुषपर टंकोर दे बडे बलसे गर्जन किया ॥ ३७ ॥ रथपर चढे उसको देख वानरोंमें जो अग्रणी थे वे सब उसके ऊपर दौडे ॥ ३८ ॥ उनमें कुमुद,

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कुमुदो द्विविदो मैन्दो नीलः शरभ एव च ।
पादपैर्गिरिशृङ्गैश्च युगपत्समभिद्रवन् ३९
तेषां वृक्षांश्च शैलांश्च शरैः कनकभूषणैः ।
अतिकायो महातेजाश्चिच्छेदास्त्रविदां वरः ४०
तांश्चैव सर्वान्स हरीञ्शरैः सर्वायसैर्बली ।
विव्याधाभिमुखान्सङ्ख्ये भीमकायो विशारदः ४१
तेऽर्दिता बाणवर्षेण भिन्नगात्राः पराजिताः ।
न शेकुरतिकायस्य प्रतिकर्तुं महाहवे ४२
तत्सैन्यं हरिवीराणां त्रासयामास राक्षसः ।
मृगयूथमिव क्रुद्धो हरिर्यौवनदर्पितः ४३
स राक्षसेन्द्रो हरियूथमध्ये नायुध्यमानं निजघान कंचित् ।
उत्पत्य रामं सधनुःकलापी सगर्वितं वाक्यमिदं बभाषे ४४
रथे स्थितोऽहं शरचापपाणिर्न प्राकृतं कंचन योधयामि ।
यस्यास्ति शक्तिर्व्यवसाययुक्तो ददातु मे शीघ्रमिहाद्य युद्धम् ४५
तत्तस्य वाक्यं ब्रुवतो निशम्य चुकोप सौमित्रिरमित्रहन्ता ।
अमृष्यमाणश्च समुत्पपात जग्राह चापं च ततः स्मयित्वा ४६

द्विविद, मैन्द, नील, और शरभ ये वानरपुङ्गव पेड ले ले एक ही संग दौड पडे ॥ ३९ ॥

उन लोगोंके पेड और गिरिशिखरोंको अतिकायने बाणोंसे काट डाला ॥ ४० ॥ और आगे दौडे आते हुए उन हरिपुङ्गवोंको बाणोंसे मारा ॥ ४१ ॥ जिससे वे पराजित होकर फिर युद्धमें अतिकायके आगे कुछ न कर सके ॥ ४२ ॥ तब उसने वानरसेनाको और भी भयभीत किया ॥४३॥ वानरोंमें जो उससे युद्ध करनेको न खडा हुआ उसने उसे अक्षत छोड दिया ॥ ४४ ॥ फिर वह दर्पयुक्त वचन रामसे बोला कि मैं धनुर्बाण धारे रथपर स्थित हूं जो शक्तिमान् तथा युद्ध कुशल हो वह जल्द मुझको युद्धदान दे ॥ ४५ ॥ एवं कहते हुए अतिकायका वह वचन सुन लक्ष्मणने

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

क्रुद्धः सौमित्रिरुत्पत्य तूणादाक्षिप्य सायकम्।
पुरस्तादतिकायस्य विचकर्ष महद्धनुः ४७
पूरयन्स महीं सर्वामाकाशं सागरं दिशः।
ज्याशब्दो लक्ष्मणस्योग्रस्त्रासयन्रजनीचरान् ४८
सौमित्रेश्चापनिर्घोषं श्रुत्वा प्रतिभयं तदा।
विसिस्मिये महातेजा राक्षसेन्द्रात्मजो बली ४९
तदातिकायः कुपितो दृष्ट्वा लक्ष्मणमुत्थितम्।
आदाय निशितं बाणमिदं वचनमब्रवीत् ५०
बालस्त्वमसि सौमित्रे विक्रमेष्वविचक्षणः।
गच्छ किं कालसंकाशं मां योधयितुमिच्छसि ५१
न हि मद्बाहुसृष्टानां बाणानां हिमवानपि।
सोढुमुत्सहते वेगमन्तरिक्षमथो मही ५२
सुखप्रसुप्तं कालाग्निं निबोधयितुमिच्छसि।
न्यस्य चापं निवर्तस्व प्राणान्न जहिमद्गतः ५३
अथवा त्वं प्रतिस्तब्धो न निवर्तितुमिच्छसि।
तिष्ठ प्राणान्परित्यज्य गमिष्यसि यमक्षयम् ५४

बडा कोप किया ॥ ४६ ॥ और क्रोधसे तरकससे बाण निकाल धनुषपर बडे बलसे टंकोर दी ॥ ४७ ॥

धनुषके उस शब्दसे सब दिशा पूर्ण होगई और राक्षसगण कांपने लगे ॥ ४८ ॥ लक्ष्मणके धनुषका शब्द सुन अतिकाय बडा अचम्भा करने लगा ॥ ४९ ॥ और लक्ष्मणको युद्धोद्यत देख बाण धनुषपर चढा यह कहने लगा कि ॥ ५० ॥ हे लक्ष्मण ! तुम अभी बालक हो इससे यहांसे चले जाओ मेरे बाणोंकी चोट हिमालय अन्तरिक्ष और मही भी नहीं सह सकती ॥ ५१–५२ ॥ तुम चुपचाप धनुष रखकर लौट जाओ मुझसे युद्ध कर अपने प्राण न गवांओ ॥ ५३ ॥ यदि मेरी बात न मानों तो खडे रहो अभी प्राण छोडकर यमालयको जाओगे ॥ ५४ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पश्य मे निशितान्बाणान्रिपुदर्पनिषूदनान् ।
ईश्वरायुधसंकाशांस्तप्तकाञ्चनभूषणान् ५५
एष ते सर्पसंकाशो बाणः पास्यति शोणितम् ।
मृगराज इव क्रुद्धो नागराजस्य शोणितम् ५६
इत्येवमुक्त्वा संक्रुद्धः शरं धनुषि संदधे ५७
श्रुत्वातिकायस्य वचः सरोषं सगर्वितं संयति राजपुत्रः ।
स संचुकोपातिबलो मनस्वी उवाच वाक्यं च ततो बृहच्छ्रीः ५८
न वाक्यमात्रेण भवान्प्रधानो न कत्थनात्सत्पुरुषा भवन्ति ।
मयि स्थिते धन्विनि बाणपाणौ निदर्शयस्वात्मबलं दुरात्मन् ५९
कर्मणा सूचयात्मानं न विकत्थितुमर्हसि ।
पौरुषेण तु यो युक्तः स तु शूर इति स्मृतः ६०
सर्वायुधसमायुक्तो धन्वी त्वं रथमास्थितः ।
शरैर्वा यदि वाप्यस्त्रैर्दर्शयस्व पराक्रमम् ६१
ततः शिरस्ते निशितैः पातयिष्याम्यहं शरैः ।
मारुतः कालसंयुक्तं वृन्तात्तालफलं यथा ६२
अद्य ते मामका बाणास्तप्तकाञ्चनभूषणाः ।
पास्यन्ति रुधिरं गात्राद्बाणशल्यान्तरोत्थितम् ६३

शत्रुओंका घमण्ड चूर करनेवाले तीक्ष्ण महादेवके त्रिशूलवत् मेरे बाण देखो ॥ ५५ ॥ सर्पाकार यह मेरा बाण तुम्हारा रक्तपान करेगा ॥ ५६ ॥ इतना कह अतिकायने धनुषपर बाण चढाया ॥ ५७ ॥ अतिकायके दर्पसे भरे वचन सुन लक्ष्मण कहने लगे ॥ ५८ ॥ कि केवल बकवाद करनेसे ही तुम बडे नहीं बन सकते हे दुष्ट सामने खडे मुझको तनिक अपना बल तो दिखाओ ॥ ५९ ॥ जिसके पौरुष होता है वह वीर कहाता है केवल बकनेसे शूर वीर नहीं होजाता ॥ ६० ॥ रथपर सवार हो जिस प्रकार चाहो अपना विक्रम दिखाओ ॥ ६१ ॥

तदनु तीक्ष्ण बाणोंसे मैं शिर काटूंगा ॥ ६२ ॥ आज मेरे बाण तुम्हारे अङ्गोंसे निकल गात्रीमें लगा रक्तपान करेंगे ॥ ६३ ॥ मुझको बालक जान

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बालोऽयमिति विज्ञाय न चावज्ञातुमर्हसि ।
बालो वा यदि वा वृद्धो मृत्युं जानीहि संयुगे ॥
बालेन विष्णुना लोकास्त्रयः क्रान्तास्त्रिविक्रमैः ६४
लक्ष्मणस्य वचः श्रुत्वा हेतुमत्परमार्थवत् ।
अतिकायः प्रचुक्रोध बाणं चोत्तममाददे ६५
ततो विद्याधरा भूता देवदैत्या महर्षयः ।
गुह्यकाश्च महात्मानस्तद्युद्धं ददृशुस्तदा ६६
ततोऽतिकायः कुपितश्चापमारोप्य सायकम् ।
लक्ष्मणाय प्रचिक्षेप संक्षिपन्निव चाम्बरम् ६७
तमापतन्तं निशितं शरमाशीविषोपमम् ।
अर्धचन्द्रेण चिच्छेद लक्ष्मणः परवीरहा ६८
तं निकृत्तं शरं दृष्ट्वा कृत्तभोगमिवोरगम् ।
अतिकायो भृशं क्रुद्धः पञ्च बाणान्समाददे ६९
ताञ्शरान्संप्रचिक्षेप लक्ष्मणाय निशाचरः ।
तानप्राप्ताञ्छितैर्बाणैश्चिच्छेद भरतानुजः ७०
स तांश्छित्त्वा शितैर्बाणैर्लक्ष्मणः परवीरहा ।
आददे निशितं बाणं ज्वलन्तमिव तेजसा ७१

मेरा अपमान न करना मुझको तुम अपना मृत्यु ही समझना ॥ ६४ ॥ वामन तो बाल ही थे पर अपने पैरोंसे उन्होंने तीनों लोक नाप लिये लक्ष्मणकी बात सुन अतिकायने एक बाण लिया ॥ ६५ ॥ उसी समय विद्याधर, देव, दैत्य, महर्षि, आदि उस युद्धको देखने लगे ॥ ६६ ॥ तब अतिकायने धनुषपर बाण चढा बलसे लक्ष्मणपर चलाया ॥ ६७ ॥ उस सर्पके तुल्य बाणको आता देख लक्ष्मणने अर्द्ध चन्द्राकार बाणसे काट डाला ॥ ६८ ॥ उसको कटा देख अतिकायने और पांच बाण ग्रहण किये ॥ ६९ ॥ और लक्ष्मण पर चलाए उनको मार्ग ही में लक्ष्मणने अपने बाणोंसे काट गिराया ॥ ७० ॥ उन बाणोंको काट एक बडा पैना बाण

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तमादाय धनुःश्रेष्ठे योजयामास लक्ष्मणः।
विचकर्ष च वेगेन विससर्ज च सायकम् ७२
पूर्णायतविसृष्टेन शरेण नतपर्वणा।
ललाटे राक्षसश्रेष्ठमाजघान स वीर्यवान् ७३
स ललाटे शरो मग्नस्तस्य भीमस्य रक्षसः।
ददृशे शोणितेनाक्तः पन्नगेन्द्र इवाचले ७४
राक्षसः प्रचकम्पेऽथ लक्ष्मणेषुप्रपीडितः।
रुद्रबाणहतं घोरं यथा त्रिपुरगोपुरम् ७५
चिन्तयामास चाश्वस्य विमृश्य च महाबलः।
साधु बाणनिपातेन श्लाघनीयोऽसि मे रिपुः ७६
विधायैवं विदार्यास्यं विनम्य च महाभुजौ।
स रथोपस्थमास्थाय रथेन प्रचचार ह ७७
एकं त्रीन्पञ्च सप्तेति सायकान्राक्षसर्षभः।
आददे संदधे चापि विचकर्षोत्ससर्ज च ७८
ते बाणाः कालसंकाशा राक्षसेन्द्रधनुश्च्युताः।
हेमपुङ्खा रविप्रख्याश्चक्रुर्दीप्तमिवाम्बरम् ७९
ततस्तान्राक्षसोत्सृष्टाञ्शरौघान्राघवानुजः।
असंभ्रान्तः प्रचिच्छेद निशितैर्बहुभिः शरैः ८०

लक्ष्मणने ग्रहण किया ॥ ७१ ॥ उसको धनुषपर चढा बडे वेगसे खींचकर छोडा ॥ ७२ ॥

यह बाण महाबली लक्ष्मणने उस राक्षसके मस्तकमें मारा ॥ ७३ ॥ वह बाण उस भयानक राक्षसके मस्तकमें घुस कर बिलकुल लीन होगया ॥७४॥ उस बाणके लगनेसे वह कष्टित हुआ ऊर्ध्व सांस ले सोचने और चिंता करने लगा ॥ ७५ ॥ वह लक्ष्मणसे बोला कि यद्यपि शत्रु हो तौ भी बाण चलानेमें चतुर हो ऐसा कह अतिकाय आगे बढा ॥ ७६ ॥ एक दो तीन पांच और सात बाण अतिकायने लिये और छोडे ॥ ७७-७८ ॥ धनुषसे छूटे सूर्यसम प्रज्वलित उन बाणोंने आकाशको प्रकाशमय कर दिया ॥ ७९ ॥ पर उन बाणोंको लक्ष्मणने अनेक पैने बाणोंसे काट डाला ॥ ८० ॥

aj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ताञ्शरान्युधि संप्रेक्ष्य निकृत्तान्रावणात्मजः ।
चुकोप त्रिदशेन्द्रारिर्जग्राह निशितं शरम् ८१
स संधाय महातेजास्तं बाणं सहसोत्सृजत् ।
तेन सौमित्रिमायान्तमाजघान स्तनान्तरे ८२
अतिकायेन सौमित्रिस्ताडितो युधि वक्षसि ।
सुस्राव रुधिरं तीव्रं मदं मत्त इव द्विपः ८३
स चकार तदात्मानं विशल्यं सहसा विभुः ।
जग्राह च शरं तीक्ष्णमस्त्रेणापि समादधे ८४
आग्नेयेन तदास्त्रेण योजयामास सायकम् ।
स जज्वाल तदा बाणो धनुश्चास्य तदात्मनः ८५
अतिकायोऽतितेजस्वी रौद्रमस्त्रं समादधे ।
तेन बाणं भुजङ्गाभं हेमपुङ्खमयोजयत् ८६
तदस्त्रं ज्वलितं घोरं लक्ष्मणः शरमर्दितम् ।
अतिकायाय चिक्षेप कालदण्डमिवान्तकः ८७
आग्नेयास्त्राभिसंयुक्तं दृष्ट्वा बाणं निशाचरः ।
उत्ससर्ज तदा बाणं रौद्रं सूर्यास्त्रयोजितम् ८८
तावुभावम्बरे बाणावन्योऽन्यमभिजघ्नतुः ।

उन बाणोंको भी कटा देख अतिकायने बडा क्रोध किया और उसने एक बडा तीक्ष्ण बाण ग्रहण किया ॥ ८१ ॥ और धनुषपर चढा उसे आगेको आते लक्ष्मणकी छातीमें मारा ॥ ८२ ॥ लक्ष्मणने शीघ्र उसे निकाल एक तीक्ष्ण शर ग्रहण किया और उसको आग्नेय अस्त्रसे संयुक्त किया ॥ ८३ ॥ आग्नेयास्त्रसे संयुक्त होनेपर उस बाणने धनुषको भी प्रकाशित कर दिया ॥ ८४-८५ ॥ अतिकायने भी ऐंद्रास्त्र लिया और उसमें सर्पाकार बाणको संयुक्त किया ॥ ८६ ॥ लक्ष्मणने उस अस्त्रको अतिकायपर चलाया ॥ ८७ ॥ जब अतिकायने आग्नेयास्त्रसे संयुक्त बाणको आते देखा तो उसने रौद्रास्त्र चलाया ॥ ८८ ॥ वे दोनों बाण आकाशमें मिल

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तेजसा संप्रदीप्ताग्रौ क्रुद्धाविव भुजङ्गमौ ८९
तावन्योऽन्यं विनिर्दह्य पेततुः पृथिवीतले ९०
निर्चिषौ भस्मकृतौ न भ्राजेते शरोत्तमौ।
तावुभौ दीप्यमानौ स्म न भ्राजेते महीतले ९१
ततोऽतिकायः संक्रुद्धस्त्वाष्ट्रमैषीकमुत्सृजत्।
तताश्चिच्छेद सौमित्रिरस्त्रमैन्द्रेण वीर्यवान् ९२
ऐषीकं निहतं दृष्ट्वा कुमारो रावणात्मजः।
याम्येनास्त्रेण संक्रुद्धो योजयामास सायकम् ९३
ततस्तदस्त्रं चिक्षेप लक्ष्मणाय निशाचरः।
वायव्येन तदस्त्रेण निजघान स लक्ष्मणः ९४
अथैनं शरधाराभिर्धाराभिरिव तोयदः।
अभ्यवर्षत संक्रुद्धो लक्ष्मणो रावणात्मजम् ९५
तेऽतिकायं समासाद्य कवचे वज्रभूषिते।
भग्नाग्रशल्याः सहसा पेतुर्बाणा महीतले ९६
तान्मोघानभिसंप्रेक्ष्य लक्ष्मणः परवीरहा।
अभ्यवर्षत बाणानां सहस्रेण महायशाः ९७

एक दूसरेको काटने लगे ॥ ८९ ॥ और एक दूसरेका तेज नष्टकर भूमिपर गिर पडे ॥ ९० ॥

जल जानेके कारण दोनों बाण शोभा नहीं देते थे और पृथ्वीमें पडे होनेसे नितान्त श्रोहत हो गए ॥ ९१ ॥ तब अतिकायने ऐषिक बाण छोडा पर लक्ष्मणने ऐन्द्रास्त्रसे उसे नष्ट कर दिया ॥ ९२ ॥ इस बाणको व्यर्थ देख अतिकायने एक बाणको यमास्त्रसे संयुक्त किया ॥ ९३ ॥ और वह बाण लक्ष्मणपर चलाया लक्ष्मणने उसको वायव्यास्त्रसे नष्ट कर दिया ॥ ९४ ॥ और क्रोध कर रावणात्मज अतिकायपर जलकी वर्षाके तुल्य बाणोंकी वर्षा की ॥ ९५ ॥ पर वे बाण अतिकायके कवचपर लगनेसे टूट टूट गिर पडे ॥ ९६ ॥

लक्ष्मणने उन बाणोंको व्यर्थ देख एक सहस्र बाण अतिकायके ऊपर

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सवृष्यमाणो वाणौघैरतिकायो महाबलः ।
अवध्यकवचः सङ्ख्ये राक्षसो नैव विव्यथे ९८
न शशाक रुजं कर्तुं युधि तस्य नरोत्तमः ।
अथैनमभ्युपागम्य वायुर्वाक्यमुवाच ह ९९
ब्रह्मदत्तवरो ह्येष अवध्यकवचावृतः ।
ब्राह्मेणास्त्रेण भिन्द्ध्येनमेष वध्यो हि नान्यथा ॥
अवध्य एष ह्यन्येषामस्त्राणां कवची बली १००
ततस्तु वायोर्वचनं निशम्य सौमित्रिरिन्द्रप्रतिमानवीर्यः ।
समादधे वाणमथोग्रवेगं तद्ब्राह्ममस्त्रं सहसा नियुज्य १०१
तस्मिन्वरास्त्रे तु नियुज्यमाने सौमित्रिणा बाणवरे शिताग्रे ।
दिशश्च चन्द्रार्कमहाग्रहाश्च नभश्च तत्रास ररास चोर्वी १०२
तं ब्रह्मणोऽस्त्रेण नियुज्य चापे शरं सपुङ्खं यमदूतकल्पम् ।
सौमित्रिरिन्द्रारिसुतस्य तस्य ससर्ज बाणं युधि वज्रकल्पम् १०३
तं लक्ष्मणोत्सृष्टविवृद्धवेगं समापतन्तं श्वसनोग्रवेगम् ।
सुपर्णवज्रोत्तमचित्रपुङ्खं तदातिकायः समरे ददर्श १०४
तं प्रेक्षमाणः सहसातिकायो जघान बाणैर्निशितैरनेकैः ।
स सायकस्तस्य सुपर्णवेगस्तथातिवेगेन जगाम पार्श्वम् १०५

छोडा ॥ ९७ ॥ पर अतिकाय उस बाण वृष्टिसे कुछ भी दुखित न हुआ ॥ ९८ ॥ जब लक्ष्मण किसी प्रकार अतिकायके अङ्गमें घाव न कर सके तो उनके पास वायु आकर बोला ॥ ९९ ॥ यह राक्षस अभेद्य कवच धारे हुए है इसे ब्रह्मास्त्रसे मारिये ॥ १०० ॥

लक्ष्मणसे वायुके ऐसे वचन सुन एक बाण लिया और उसे ब्रह्मास्त्रसे संयोजित किया ॥ १०१ ॥ जब लक्ष्मणने उस बाणको ब्रह्मास्त्रसे योजित किया तो दिशा, सूर्य, आकाश डर उठे और मही कांपने लगी ॥ १०२ ॥ यमदूतके तुल्य उस बाणको लक्ष्मणने अतिकायपर वज्रके तुल्य छोडा ॥ १०३ ॥ लक्ष्मणने छोडे हुये सुवर्ण और हीरा आदिकोंसे जडे हुये उस बाणको अतिकायने आते हुये देखा ॥ १०४ ॥ देखते ही अतिकायने बडे पैने बाणोंसे उसको काटना चाहा पर वह बाण उसके पास पहुंच ही गया ॥ १०५ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तमागतं प्रेक्ष्य तदातिकायो बाणं प्रदीप्तान्तककालकल्पम् ।
जघान शक्त्यृष्टिगदाकुठारैः शूलैः शरैश्चाप्यविपन्नचेष्टः १०६
तान्यायुधान्यद्भुतविग्रहाणि मोघानि कृत्वा स शरोऽग्निदीप्तः ।
प्रगृह्य तस्यैव किरीटजुष्टं तदातिकायस्य शिरो जहार १०७

तच्छिरः सशिरस्त्राणं लक्ष्मणेषुप्रमर्दितम् ।
पपात सहसा भूमौ शृङ्गं हिमवतो यथा १०८
तं भूमौ पतितं दृष्ट्वा विक्षिप्ताम्बरभूषणम् ।
बभूवुर्व्यथिताः सर्वे हतशेषा निशाचराः १०९
ते विषण्णमुखा दीनाः प्रहारजनितश्रमाः ।
विनेदुरुच्चैर्बहवः सहसा विस्वरैः स्वरैः ११०
ततस्तत्परितो याता निरपेक्षा निशाचराः ।
पुरीमभिमुखा भीता द्रवन्तो नायके हते १११

प्रहर्षयुक्ता बहवस्तु वानराः प्रफुल्लपद्मप्रतिमाननास्तदा ।
अपूजयल्लक्ष्मणमिष्टभागिनं हते रिपौ भीमबले दुरासदे ११२

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे एकसप्ततितमः सर्गः ॥७१॥ [३१९६]

उस जलते हुए यमतुल्य बाणको पास आया देख अतिकाय शक्ति, गदा, शूल बाणादिकोंसे नष्ट करने लगा ॥ १०६ ॥ पर उस सब प्रयत्नको व्यर्थ कर उस बाणने अतिकायका शिर काट कर फेंक दिया ॥ १०७ ॥

लक्ष्मणके बाणसे अतिकायका शिर पृथ्वी पर कटकर गिर पडा ॥१०८॥ उस शिरको भूमिमें पडा देख मरनेसे बचे राक्षस बहुत दुखित हुये ॥१०९॥ और उदासीन मुख हो ऊंचे स्वर रोने लगे ॥ ११० ॥ और निराश हो लङ्काको भाग गये ॥ १११ ॥ और इस तरह बडा सामर्थ्यसे युक्त और सामना करनेमें प्रबल ऐसे शत्रुका वध होनेसे अनेक वानर आनन्दित हुआ; और वे सब लक्ष्मणकी प्रशंसा करने लगे ॥ ११२ ॥

॥ यहाँ ७१ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

॥ द्विसप्ततितमः सर्गः ॥

अतिकायं हतं श्रुत्वा लक्ष्मणेन महात्मना।
उद्वेगमगमद्राजा वचनं चेदमब्रवीत् १
धूम्राक्षः परमामर्षी सर्वशस्त्रभृतां वरः।
अकम्पनः प्रहस्तश्च कुम्भकर्णस्तथैव च २
एते महाबला वीरा राक्षसा युद्धकाङ्क्षिणः।
जेतारः परसैन्यानां परैर्नित्यापराजिताः ३
ससैन्यास्ते हता वीरा रामेणाक्लिष्टकर्मणा।
राक्षसाः सुमहाकाया नानाशस्त्रविशारदाः ४
अन्ये च बहवः शूरा महात्मानो निपातिताः।
प्रख्यातबलवीर्येण पुत्रेणेन्द्रजिता मम ॥
तौ भ्रातरौ तदा बद्धौ घोरैर्दत्तवरैः शरैः ५
यन्न शक्यं सुरैः सर्वैरसुरैर्वा महाबलैः।
मोक्तुं तद्बन्धनं घोरं यक्षगन्धर्वपन्नगैः ६
तन्न जाने प्रभावैर्वा मायया मोहनेन वा।
शरबन्धाद्विमुक्तौ तौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ७
ये योधा निर्गताः शूरा राक्षसा मम शासनात्।
ते सर्वे निहता युद्धे वानरैः सुमहाबलैः ८

लक्ष्मणसे अतिकायको मरा सुन रावण उद्विग्न हो बोला कि ॥ १ ॥ धूम्राक्ष, अकम्पन, प्रहस्त और कुम्भकर्ण ॥ २ ॥ ये सब अतिवीर शत्रुओंकी सेनाके जीतनेवाले और कभी न हारनेवाले थे ॥ ३ ॥ पर इन सबको अक्लिष्टकर्मा रामने मार डाला और बड़े बड़े शरीरवाले नाना शस्त्र विशारद और भी अनेक महाबली राक्षस मारे गये ॥ ४ ॥ मेरे पुत्र इन्द्रजीतने राम लक्ष्मण दोनोंको वरदानसे प्राप्त बाणोंसे बांध लिया था ॥ ५ ॥ जिस बंधनको कोई भी नहीं छुडा सकता था पर न जाने कि अपने प्रभावसे या मायामोहन मन्त्र द्वारा ॥ ६-७ ॥ दोनों भाई शर बंधनसे कैसे छूट गये जो योधा युद्ध करनेके लिये गये उन सबको वानरोंने मार डाला ॥ ८ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तं न पश्याम्यहं युद्धे योऽद्य रामं सलक्ष्मणम्।
नाशयेत्सबलं वीरं ससुग्रीवं विभीषणम् ९
अहो सुबलवान्रामो महदस्त्रबलं च वै।
यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनं गताः १०
अप्रमत्तैश्च सर्वत्र गुल्मै रक्ष्या त्वियम्।
अशोकवनिका चैव यत्र सीताभिरक्ष्यते ११
निष्कामो वा प्रवेशो वा ज्ञातव्यः सर्वदैव नः।
यत्र यत्र भवेद्गुल्मस्तत्र तत्र पुनः पुनः १२
सर्वतश्चापि तिष्ठध्वं स्वैः स्वैः परिवृता बलैः।
द्रष्टव्यं च पदं तेषां वानराणां निशाचराः १३
प्रदोषे वार्धरात्रे वा प्रत्यूषे वापि सर्वशः।
नावज्ञा तत्र कर्तव्या वानरेषु कदाचन १४
द्विषतां बलमुद्युक्तमापतत्किं स्थितं यथा १५
ततस्ते राक्षसाः सर्वे श्रुत्वा लङ्काधिपस्य तत्।
वचनं सर्वमातिष्ठन्यथावत्तु महाबलाः १६
तान्सर्वान्हि समादिश्य रावणो राक्षसाधिपः।

मैं ऐसा किसीको नहीं पाता जो युद्धमें आज रामलक्ष्मण सेनासहित सुग्रीव व विभीषणका हनन करे ॥ ९ ॥ अहो राम बडे बलवान् हैं जिनके पराक्रमसे सब राक्षस नष्ट हो गये ॥ १० ॥ अब बडी सावधानीसे लङ्का तथा अशोकवाटिकाकी रक्षा करनी चाहिये ॥ ११ ॥ लङ्कामें आने तथा जानेवालेका वृत्त अवश्य जान लिया जावे ॥ १२ ॥ सब ओरसे तुम लोग स्थित हो हे राक्षसों वानरोंके पद सदा देखते रहो ॥ १३ ॥

संध्याकाल हो, मध्यरात्रि हो अथवा प्रातःकाल हो वानरके विषयमें तुम लोग कभी असावधान न रहो ॥ १४ ॥ दुश्मनकी सेना आक्रमणकी ताकमें है अथवा चुपचाप खडी है, इस तरफ अब तुम ध्यान दो ॥ १५ ॥ तदनंतर लंकाधिपति रावणका भाषण सुनकर वे सब महाबलाढ्य राक्षस उनकी आज्ञा मान्य की ॥ १६ ॥ इसके बाद सबको आज्ञा मान्य कर लेनेपर राक्षसाधिपति

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मन्युशल्यं वहन्दीनः प्रविवेश स्वमालयम् १७
ततः स संदीपितकोपवह्निर्निशाचराणामधिपो महाबलः।
तदेव पुत्रव्यसनं विचिन्तयन्मुहुर्मुहुश्चैव तदा विनिःश्वसन् १८
इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे द्विसप्ततितमः सर्गः ॥ ७२ ॥ [३२१४]

॥ त्रिसप्ततितमः सर्गः ॥

ततो हतान्राक्षसपुङ्गवांस्तान्देवान्तकादित्रिशिरोऽतिकायान्।
रक्षोगणास्तत्र हतावशिष्टास्ते रावणाय त्वरिताः शशंसुः १
ततो हतांस्तान्सहसा निशम्य राजा महाबाष्पपरिप्लुताक्षः।
पुत्रक्षयं भ्रातृवधं च घोरं विचिन्त्य राजा विपुलं प्रदध्यौ २
ततस्तु राजानमुदीक्ष्य दीनं शोकार्णवे संपरिपुप्लुवानम्।
रथर्षभो राक्षसराजसूनुस्तमिन्द्रजिद्वाक्यमिदं बभाषे ३
न तात मोहं परिगन्तुमर्हसे यत्रेन्द्रजिज्जीवति नैर्ऋतेश।
नेन्द्रारिबाणाभिहतो हि कश्चित्प्राणान्समर्थः समरेऽभिपातुम् ४
पश्याद्य रामं सह लक्ष्मणेन मद्बाणनिर्भिन्नविकीर्णदेहम्।
गतायुषं भूमितले शयानं शितैः शरैराचितसर्वगात्रम् ५

दीन रावण क्रोधरूप शल्य अन्तःकरणमें सलतेसे निवासस्थानमें प्रविष्ट किया ॥ १७ ॥ तदनंतर जिसका क्रोधाग्नि प्रदीप्त हुआ है ऐसा निशाचराधिपति महाबलाढ्य रावण उस पुत्रके दुःख मनमें लाकर उसासें डालने लगा ॥ १८ ॥

॥ यहाँ ७२ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

तब बचे हुए राक्षसोंने नरान्तक, देवान्तक, त्रिशिरा आदिका वध वहाँ जल्दीसे रावणसे जा निवेदन किया ॥ १ ॥ उन सबको मरा सुन रावण रोदन करने लगा ॥ २ ॥ तब शोकमें ग्रस्त रावणको देख राक्षसेन्द्रका पुत्र मेघनाद यह बोला ॥ ३ ॥ हे राजन्! हे तात! जबतक इन्द्रको जीतनेवाला मैं जीता हूं तबतक आपको दुःख न मानना चाहिये ॥ ४ ॥ आज मेरे बाणोंसे अङ्ग कटे हुये निर्जीव रामलक्ष्मणको पृथ्वीपर सोते देखोगे ॥ ५ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

इमां प्रतिज्ञां शृणु शक्रशत्रोः सुनिश्चितां पौरुषदैवयुक्ताम्।
अद्यैव रामं सह लक्ष्मणेन संतर्पयिष्यामि शरैरमोघैः ६
अद्येन्द्रवैवस्वतविष्णुरुद्रसाध्याश्च वैश्वानरचन्द्रसूर्याः।
द्रक्ष्यन्तु मे विक्रममप्रमेयं विष्णोरिवोग्रं बलियज्ञवाटे ७
स एवमुक्त्वा त्रिदशेन्द्रशत्रुरापृच्छ्य राजानमदीनसत्त्वः।
समारुरोहानिलतुल्यवेगं रथं खरश्रेष्ठसमाधियुक्तम् ८

समास्थाय महातेजा रथं हरिरथोपमम्।
जगाम सहसा तत्र यत्र युद्धमरिन्दमः ९
तं प्रस्थितं महात्मानमनुजग्मुर्महाबलाः।
संहर्षमाणा बहवो धनुःप्रवरपाणयः १०
गजस्कन्धगताः केचित्केचित्परमवाजिभिः।
व्याघ्रवृश्चिकमार्जारखरोष्ट्रैश्च भुजङ्गमैः ११
वराहैः श्वापदैः सिंहैर्जम्बुकैः पर्वतोपमैः।
काकहंसमयूरैश्च राक्षसा भीमविक्रमाः॥
प्रासमुद्गरनिस्त्रिंशपरश्वधगदाधराः १२
स शङ्खनिनदैः पूर्णैर्भेरीणां चापि निःस्वनैः।
जगाम त्रिदशेन्द्रारिराजिं वेगेन वीर्यवान् १३

आज रामलक्ष्मणको सफल बाणोंसे तृप्त कर दूंगा॥ ६॥

आज इन्द्र, यम, विष्णु, रुद्र, अग्नि और बलिके यज्ञमें वामनके तुल्य मेरा पराक्रम देखना॥ ७॥ एवं रावणसे कह तथा उसकी आज्ञा ले मेघनाद रथपर चढा॥ ८॥ रथपर सवार हो इन्द्रजीत झटपट समर भूमिको गया॥ ९॥ उसको जाते देख धनुर्बाणादि लिये बहुतसे वीर राक्षस पीछे पीछे चले॥ १०॥ उनमें कोई हाथियों, कोई घोडों, कोई व्याघ्रों, गदहों, ऊंटों और सर्पोंपर चढ कर चले॥ ११॥ कोई कोई राक्षस सूअरों, कुत्तों, सिंहों, शृगालों, कागों, हंसों, मयूरोंपर चढकर चले॥१२॥ शंख दुन्दुभि आदिका शब्द करता मेघनाद चला श्वेतछत्रसहित वह

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grar

स शङ्खशशिवर्णेन छत्रेण रिपुसूदनः ।
रराज प्रतिपूर्णेन नभश्चंद्रमसा यथा १४
वीज्यमानस्ततो वीरो हैमैर्हेमविभूषणः ।
चारुचामरमुख्यैश्च मुख्यः सर्वधनुष्मताम् १५
ततस्त्विन्द्रजिता लङ्का सूर्यप्रतिमतेजसा ।
रराजाप्रतिवीर्येण द्यौरिवार्केण भास्वता १६
स संप्राप्य महातेजा युद्धभूमिमरिन्दमः ।
स्थापयामास रक्षांसि रथं प्रति समन्ततः १७
ततस्तु हुतभोक्तारं हुतभुक्सदृशप्रभः ।
जुहुवे राक्षसश्रेष्ठो विधिवन्मन्त्रसत्तमैः १८
स हविर्लाजसत्कारैर्माल्यगन्धपुरस्कृतैः ।
जुहुवे पावकं तत्र राक्षसेन्द्रः प्रतापवान् १९
शस्त्राणि शरपत्राणि समिधोऽथ विभीतकाः ।
लोहितानि च वासांसि स्रुवं कार्ष्णायसं तथा २०
स तत्राग्निं समास्तीर्य शरपत्रैः सतोमरैः ।
छागस्य कृष्णवर्णस्य गलं जग्राह जीवतः २१

चन्द्रमायुक्त गगनके तुल्य शोभित होने लगा ॥ १३-१४ ॥ उसपर सुवर्ण विभूषित महोदर चमर भी झुक रहा था ॥ १५ ॥ तेजस्वी मेघनादसे लङ्का ऐसी शोभित हुई जैसे सूर्यसे अन्तरिक्ष ॥ १६ ॥ तेजस्वी इन्द्रजीतने समरमें पहुंचते ही अपने रथके चारों ओर सब राक्षसोंको स्थापित कर दिया ॥ १७ ॥ और उत्तम मन्त्रोंसे विधिवत् अग्निमें होम करने लगा ॥ १८ ॥ लाजा अक्षत, चन्दनादि, सुगन्धित वस्तुओंसे वह राक्षस अग्निमें आहुति देने लगा ॥ १९ ॥

उसमें शरपतके स्थानमें आयुध बिछाये ईंधन बहेरेके काष्ठका बनाया और लोहेका स्रुवाग्रहण किया ॥ २० ॥ उसने अग्नि स्थापन कर काले रंगके बकरेको पकड जीवित ही उसे अग्निमें डाल दिया ॥ २१ ॥ ऐसी

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सकृदेव समिद्धस्य विधूमस्य महार्चिषः ।
बभूवुस्तानि लिङ्गानि विजयं यान्यदर्शयन् २२
प्रदक्षिणावर्तशिखस्तप्तकाञ्चनसंनिभः ।
हविस्तत्प्रतिजग्राह पावकः स्वयमुत्थितः २३
सोऽस्त्रमाहारयामास ब्राह्ममस्त्रविशारदः ।
धनुश्चात्मरथं चैव सर्वं तत्राभ्यमन्त्रयत् २४
तस्मिन्नाहूयमानेऽस्त्रे हूयमाने च पावके ।
सार्कग्रहेन्दुनक्षत्रं वितत्रास नभस्थलम् २५
स पावकं पावकदीप्ततेजा हुत्वा महेन्द्रप्रतिमप्रभावः ।
सचापबाणासिरथाश्वशूलः खेऽन्तर्दधेऽऽत्मानमचिन्त्यवीर्यः २६
ततो हयरथाकीर्णं पताकाध्वजशोभितम् ।
निर्ययौ राक्षसबलं नर्दमानं युयुत्सया २७
ते शरैर्बहुभिश्चित्रैस्तीक्ष्णवेगैरलंकृतैः ।
तोमरैरङ्कुशैश्चापि वानराञ्जघ्नुराहवे २८
रावणिस्तु सुसंक्रुद्धस्तान्निरीक्ष्य निशाचरान् ।
हृष्टा भवन्तो युध्यन्तु वानराणां जिघांसया २९

आहुति देनेसे अग्नि शान्त हो गया और विजयके चिन्ह दीख पड़ने लगे ॥ २२ ॥ अग्निकी शिखा तप्त सोनेके तुल्य हो गई और फिर उसने स्वयं उठकर आहुति ग्रहण की ॥ २३ ॥ तब इन्द्रजित्ने अपना ब्रह्मास्त्र धनुष और रथ मंगवाया और सबको अभिमन्त्रित किया ॥ २४ ॥ जब उसने अपने शस्त्रोंको अभिमन्त्रित कर अग्निमें आहुति देनेका आरम्भ किया तो आकाश डर उठा ॥ २५ ॥

तेजस्वी मेघनाद अग्निमें आहुति दे धनुष, खड्ग, रथ, शूलादि युक्त आकाशमें अन्तर्हित हो गया ॥ २६ ॥ और राक्षसोंकी सेना युद्ध करनेकी इच्छासे आगे बढी ॥ २७ ॥ सब राक्षस तीक्ष्ण बाणों, भालों, अंकुशादिकोंसे वानरोंको मारने लगे ॥ २८ ॥ इन्द्रजित् राक्षसोंको देख बोला कि आप लोग वानरोंके मारनेकी इच्छासे संग्राम करें ॥ २९ ॥ तब वे राक्षस गर्जने

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ततस्ते राक्षसाः सर्वे गर्जन्तो जयकाङ्क्षिणः ।
अभ्यवर्षंस्ततो घोरान्वानराञ्शरवृष्टिभिः । ३०
स तु नालीकनाराचैर्गदाभिर्मुसलैरपि ।
रक्षोभिः संवृता सङ्ख्ये वानरान्विचकर्ष ह ३१
ते वध्यमानाः समरे वानराः पादपायुधाः ।
अभ्यवर्षन्त सहसा रावणिं शैलापादपैः ३२
इन्द्रजित्तु तदा क्रुद्धो महातेजा महाबलाः ।
वानराणां शरीराणि व्यधमद्रावणात्मजः ३३
शरेणैकेन च हरीन्नव पञ्च च सप्त च ।
बिभेद समरे क्रुद्धो राक्षसान्संप्रहर्षयन् ३४
स शरैः सूर्यसंकाशैः शातकुम्भविभूषणैः ।
वानरान्समरे वीरः प्रममाथ सुदुर्जयः ३५
ते भिन्नगात्राः समरे वानराः शरपीडिताः ।
पेतुर्मथितसंकल्पाः सुरैरिव महासुराः ३६
ते तपन्तमिवादित्यं घोरैर्बाणगभस्तिभिः ।
अभ्यधावन्त संक्रुद्धाः संयुगे वानरर्षभाः ३७
ततस्तु वानराः सर्वे भिन्नदेहा विचेतसः ।
व्यथिता विद्रवन्ति स्म रुधिरेण समुक्षितः ३८
रामस्यार्थे पराक्रम्य वानरास्त्यक्तजीविताः ।

लगे और वानरोंपर बाणवृष्टि करने लगे ॥ ३० ॥ मेघनाद भी वानरोंको काटने लगा वानर भी गिरि और पेडोंसे मेघनादको मारने लगे तेजस्वी रावणका पुत्र इन्द्रजित् क्रोधित हो वानरोंके अङ्ग काटने लगा ॥ ३१-३३ ॥ एक ही बाणसे नव पांच सात वानरोंको मार मार राक्षसोंको प्रसन्न करने लगा ॥ ३४ ॥

प्रकाशित बाणोंसे वह वानरोंको छिन्न भिन्न करने लगा ॥ ३५ ॥ वानर बाणोंसे सब अङ्ग कट जानेके कारण दुःखित हो पृथ्वीपर गिर पडे ॥३६॥ मेघनादपर क्रोध करके वानरगण बडे वेगसे दौडे पर व्यथित हो रक्तमें डूबे इधर उधर भागने लगे ॥ ३७-३८ ॥ अपने बाणोंका मोह छोड गर्वसे

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नर्दन्तस्ते निवृत्तास्तु समरे सशिलायुधाः ३९
ते द्रुमैः पर्वताग्रैश्च शिलाभिश्च प्लवङ्गमाः ।
अभ्यवर्षन्त समरे रावणिं समवस्थिताः ४०
तं द्रुमाणां शिलानां च वर्षं प्राणहरं महत् ।
व्यपोहत महातेजा रावणिः समितिञ्जयः ४१
ततः पावकसंकाशैः शरैराशीविषोपमैः ।
वानराणामनीकानि बिभेद समरे प्रभुः ४२
अष्टादशशरैस्तीक्ष्णैः स विद्ध्वा गन्धमादनम् ।
विव्याध नवभिश्चैव नलं दूरादवस्थितम् ४३
सप्तभिस्तु महावीर्यो मैन्दं मर्मविदारणैः ।
पञ्चभिर्विशिखैश्चैव गजं विव्याध संयुगे ४४
जाम्बवन्तं तु दशभिर्नीलं त्रिंशद्भिरेव च ।
सुग्रीवमृषभं चैव सोऽङ्गदं द्विविदं तथा ४५
घोरैर्दत्तवरैस्तीक्ष्णैर्निष्प्राणानकरोत्तदा ।
अन्यानपि तदा मुख्यान्वानरान्बहुभिः शरैः ४६
अर्दयामास संक्रुद्धः कालाग्निरिव मूर्च्छितः ।
स शरैः सूर्यसंकाशैः सुमुक्तैः शीघ्रगामिभिः ४७
वानराणामनीकानि निर्ममन्थ महारणे ।
आकुलां वानरीं सेनां शरजालेन पीडिताम् ४८

हुये शिला, वृक्षादि ले पुनः लौटे ॥ ३९ ॥ और गिरिशृंग, शिला, वृक्षादि मेघनादपर बरसाने लगे ॥ ४० ॥ पर पर्वत, शृंगों व शिलाओंकी उस बडी घोर वर्षाको तेजस्वी मेघनादने काट डाला ॥ ४१ ॥

विषधर सर्पोंके समान बाणोंसे वानरोंको मारा ॥ ४२ ॥ गन्धमादनके अठारह और नलके नव बाण मारे ॥ ४३ ॥ घाती सात बाण मैन्दके और पांच गजके मारे ॥ ४४ ॥ जाम्बवान्के दश, नीलके तीस बाण मारे और सुग्रीव, ऋषभ, द्विविदको ॥ ४५ ॥ घोर बाणोंसे प्राणरहितसा कर दिया ॥ ४६ ॥ अन्य वानर पुङ्गवोंको भी क्रोधकर मेघनादने शीघ्रगामी उन बाणोंसे ॥ ४७ ॥ मथ डाला और बाणजालसे पीडित ॥ ४८ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हृष्टः स परया प्रीत्या ददर्श क्षतजोक्षिताम्।
पुनरेव महातेजा राक्षसेन्द्रात्मजो बली ४९
संसृज्य बाणवर्षं च शस्त्रवर्षं च दारुणम्।
ममर्द वानरानीकं परितस्त्विन्द्रजिद्बली ५०
स्वसैन्यमुत्सृज्य समेत्य तूर्णं महाहवे वानरवाहिनीषु।
अदृश्यमानः शरजालमुग्रं ववर्ष नीलाम्बुधरो यथाम्बु ५१
ते शक्रजिद्बाणविशीर्णदेहा मायाहता विस्वरमुन्नदन्तः।
रणे निपेतुर्हरयोऽद्रिकल्पा यथेन्द्रवज्राभिहता नगेन्द्राः ५२
ते केवलं संददृशुः शिताग्रान्बाणान्रणे वानरवाहिनीषु।
मायाविगूढं च सुरेन्द्रशत्रुं न चात्र तं राक्षसमप्यपश्यन् ५३
ततः स रक्षोऽधिपतिर्महात्मा सर्वा दिशो बाणगणैः शिताग्रैः।
प्रच्छादयामास रविप्रकाशैर्विदारयामास च वानरेन्द्रान् ५४
स शूलनिस्त्रिंशपरश्वधानि व्याविद्धदीप्तानलसप्रभाणि।
सविस्फुलिङ्गोज्ज्वलपावकानि ववर्ष तीव्रं प्लवगेन्द्रसैन्ये ५५
ततो ज्वलनसंकाशैर्बाणैर्वानरयूथपाः।
ताडिताः शक्रजिद्बाणैः प्रफुल्ला इव किंशुकाः ५६

रुधिरसे भीगी हुई वानरसेनाको देखकर प्रसन्न हुआ तब वह मेघनाद ॥४९॥ बाणों और अन्य शस्त्रास्त्रोंकी वर्षासे वानरोंकी सेनाको व्यथित करने लगा ॥ ५० ॥ फिर स्वसेनाको छोड अदृश्य हो वानरसेनामें पहुंच बाणोंकी वर्षा करने लगा ॥ ५१ ॥ उन बाणोंके लगनेसे वानरोंके शरीर फट गये और मोहित हो वानर पृथ्वीपर गिर पडे ॥ ५२ ॥

उन्होंने युद्धमें वानर सेनापर बाण वर्षा होते देखी पर अन्तर्हित होनेसे इन्द्रजितको न देख पाया ॥ ५३ ॥ महात्मा मेघनादने पैने बाणोंसे सब दिशाओंको आच्छादित कर दिया ॥ ५४ ॥ फिर उसने अग्निके तुल्य शूल, निस्त्रिंश तथा परिघोंकी वर्षा वानरसेना पर की मेघनादके बाणोंसे ताडित वानरगण उस समय फूलेटेसू तुल्य शोभा देने लगे ॥ ५५-५६ ॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उदीक्षमाणा गगनं केचिन्नेत्रेषु ताडिताः ।
शरैर्विविशुरन्योऽन्यं पेतुश्च जगतीतले ५७
हनूमन्तं च सुग्रीवमङ्गदं गन्धमादनम् ।
जाम्बवन्तं सुषेणं च वेगदर्शिनमेव च ५८
मैन्दं च द्विविदं नीलं गवाक्षं गवयं तथा ।
केसरिं हरिलोमानं विद्युद्दंष्ट्रं च वानरम् ५९
सूर्याननं ज्योतिमुखं तथा दधिमुखं हरिम् ।
पावकाक्षं नलं चैव कुमुदं चैव वानरम् ६०
प्रासैः शूलैः शितैर्बाणैरिन्द्रजिन्मन्त्रसंहितैः ।
विव्याध हरिशार्दूलान्सर्वांस्तान्राक्षसोत्तमः ६१
स वै गदाभिर्हरियूथमुख्यान्निर्भिद्य बाणैस्तपनीयवर्णैः ।
ववर्ष रामं शरवृष्टिजालैः सलक्ष्मणं भास्कररश्मिकल्पैः ६२
स बाणवर्षैरभिवृष्यमाणो धारानिपातानिव तानचिन्त्य ।
समीक्षमाणः परमाद्भुतश्री रामस्तदा लक्ष्मणमित्युवाच ६३
असौ पुनर्लक्ष्मण राक्षसेन्द्रो महास्त्रमाश्रित्य सुरेन्द्रशत्रुः ।
निपातयित्वा हरिसैन्यमस्मान्शितैः शरैरर्दयति प्रसक्तम् ६४
स्वयंभुवा दत्तवरो महात्मा समाहितोऽन्तर्हितभीमकायः ।

ऊपर देखते ही किसी किसीके आखोंमें भी बाण लगे ॥ ५७ ॥ हनुमान्, सुग्रीव, अङ्गद, गन्धमादन, जाम्बवान्, सुषेण, ॥५८॥ मैन्द, द्विविद, नील, गवाक्ष, गवय, केसरी, हरिलोमा, विद्युद्दंष्ट्र ॥ ५९ ॥ सूर्यानन, ज्योतिर्मुख, दधिमुख, पावकाक्ष, नल और कुमुद ॥ ६० ॥ इन वानर पुङ्गवोंको मेघनादने भालाशूल बाणोंसे मारा ॥ ६१ ॥

एवं मुख्य मुख्य वानरोंको व्याकुल कर सूर्यवत् प्रकाशित बाणोंकी वर्षा राम लक्ष्मण पर करने लगा ॥ ६२ ॥ उस बाणवृष्टि पर कुछ ध्यान न दे राम लक्ष्मणसे कहने लगे ॥ ६३ ॥

हे लक्ष्मण ! इन्द्रका वैरी यह मेघनाद ब्राह्मास्त्र ग्रहणकर हम लोगोंपर बाण बरसाता है ॥ ६४ ॥ इसको ब्रह्माका वरदान है इससे आकाशमें

a Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कथं नु शक्यो युधि नष्टदेहो निहन्तुमद्येन्द्रजिदुद्यतास्त्रः ६५
मन्ये स्वयंभूर्भगवानचिन्त्यस्तस्यैतदस्त्रं प्रभवश्च योऽस्य ।
बाणावपातं त्वमिहाद्य धीमन्मया सहाव्यग्रमनाः सहस्व ६६
प्रच्छादयत्येष हि राक्षसेन्द्रः सर्वा दिशः सायकवृष्टिजालैः ।
एतच्च सर्वं पतिताग्र्यशूरं न भ्राजते वानरराजसैन्यम् ६७
आवां तु दृष्ट्वा पतितौ विसंज्ञौ निवृत्तयुद्धौ हतहर्षरोषौ ।
ध्रुवं प्रवेक्ष्यत्यमरारिवासमसौ समासाद्य रणाग्र्यलक्ष्मीम् ६८
ततस्तु ताविन्द्रजितोऽस्त्रजालैर्बभूवतुस्तत्र तदा विशस्तौ ।
स चापि तौ तत्र विषादयित्वा ननाद हर्षाद्युधि राक्षसेन्द्रः ६९
ततस्तदा वानरसैन्यमेवं रामं च सङ्ख्ये सह लक्ष्मणेन ।
निषूदयित्वा सहसा विवेश पुरीं दशग्रीवभुजाभिगुप्ताम् ॥
संस्तूयमानः स तु यातुधानैः पित्रे च सर्वं हृषितोऽभ्युवाच ७०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदिकाव्ये युद्धकाण्डे त्रिसप्ततितमः सर्गः ॥७३॥[३२८४]

चतुस्सप्ततितमः सर्गः ॥

तयोस्तदासादितयो रणाग्रे मुमोह सैन्यं हरियूथपानाम् ।
सुग्रीवनीलाङ्गदजाम्बवन्तो न चापि किंचित्प्रतिपेदिरे ते १

अन्तर्द्धान हो हम लोगोंको मारना चाहता हैं ॥ ६५ ॥ जो स्वयंम्भू भगवान् इस संसारके रचयिता हैं उनके अस्त्रका प्रभाव मैं जानता हूं ॥ ६६ ॥

यह इन्द्रजित् बाणोंके जालसे सब दिशाओंको पूर्ण किये देता है ॥ ६७ ॥ मुझे और तुमको मूर्च्छित हो भूमिमें पतित देख यह राक्षस अपनी विजय समझ लङ्काको लौट जायगा ॥ ६८ ॥ यह विचार दोनों भाई उसके बाणोंसे मरेके तुल्य होगये और इन्द्रजित् भी उन दोनोंको विषण्ण कर हर्षसे गर्जने लगा ॥ ६९ ॥ तदनंतर संग्राममें वानर सैन्य व लक्ष्मणसहित रामको मृतप्राय करके जल्दीसे इन्द्रजित् रावणसे सुरक्षित लंकानगरको प्रवेश किया; राक्षसोंसे प्रशंसित हो अपने पितासे बोला ॥ ७० ॥

॥ यहाँ ७३ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

रामलक्ष्मणको एवं मूर्च्छित होनेपर वानरसेना अत्यन्त मोहित हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततो विषण्णं समवेक्ष्य सर्वं विभीषणो बुद्धिमतां वरिष्ठः ।
उवाच शाखामृगराजवीरानाश्वासयन्नप्रतिमैर्वचोभिः २
मा भैष्ट नास्त्यत्र विषादकालो यदार्यपुत्रौ ह्यवशौ विषण्णौ ।
स्वयंभुवो वाक्यमथोद्वहन्तौ यत्सादिताविन्द्रजितास्त्रजालैः ३
तस्मै तु दत्तं परमास्त्रमेतत्स्वयंभुवा ब्राह्मममोघवीर्यम् ।
तन्मानयन्तौ युधि राजपुत्रौ निपातितौ कोऽत्र विषादकालः ४

ब्राह्ममस्त्रं ततो धीमान्मानयित्वा तु मारुतिः ।
विभीषणवचः श्रुत्वा हनूमानिदमब्रवीत् ५
अस्मिन्नस्त्रहते सैन्ये वानराणां तरस्विनाम् ।
यो यो धारयते प्राणांस्तं तमाश्वासयावहे ६
तावुभौ युगपद्वीरौ हनूमद्राक्षसोत्तमौ ।
उल्काहस्तौ तदा रात्रौ रणशीर्षे विचेरतुः ७
भिन्नलाङ्गूलहस्तोरुपादाङ्गुलिशिरोधरैः ।
स्रवद्भिः क्षतजं गात्रैः प्रस्रवद्भिः समन्ततः ८
पतितैः पर्वताकारैर्वानरैरभि संवृताम् ।
शस्त्रैश्च पतितैर्दीप्तैर्ददृशाते वसुंधराम् ९
सुग्रीवमङ्गदं नीलं शरभं गन्धमादनम् ।

गई ॥ १ ॥ वानरोंको दुःखित देख विभीषण वानर यूथपोंको समझाते हुये बोले ॥२॥ कि तुम लोग न डरो रामलक्ष्मण स्वयं ही इन्द्रजित्के अस्त्र-जालमें फस गये हैं ॥ २–३ ॥ यह ब्रह्मास्त्र ब्रह्माने मेघनादको दिया था उसकी सफलता दिखलाने ही को दोनों पतित हुये हैं ॥ ४ ॥ विभीषणके वचन सुन हनुमान बोले ॥ ५ ॥ कि हे विभीषण ! आओ मैं और आप हतशेष वानरोंको दिलासा देवें ॥ ६ ॥

यह कह हनुमान और विभीषण प्रज्वलित अग्नि ले उस रातको घूमने लगे ॥ ७ ॥ और देखा तो पूछ, हाथ, जांघ, पाद, धड कटे हुये तथा अङ्गोंसे रक्त बहते हुए ॥ ८ ॥ वानरोंसे पृथ्वी व्याप्त होरही है बहुतसे अस्त्र शस्त्र टूटे पडे हैं ॥ ९ ॥ उन दोनोंने सुग्रीव, अङ्गद, नील, शरभ, गन्धमादन,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जाम्बवन्तं सुषेणं च वेगदर्शिनमेव च १०
मैन्दं नलं ज्योतिमुखं द्विविदं चापि वानरम्।
विभीषणो हनूमांश्च ददृशाते हतान्रणे ११
सप्तषष्टिर्हताः कोट्यो वानराणां तरस्विनाम्।
अह्नः पञ्चमशेषेण वल्लभेन स्वयंभुवः १२
सागरौघनिभं भीमं दृष्ट्वा बाणार्दितं बलम्।
मार्गते जाम्बवन्तं च हनूमान्सविभीषणः १३
स्वभावजरया युक्तं वृद्धं शरशतैश्चितम्।
प्रजापतिसुतं वीरं शाम्यन्तमिव पावकम् १४
दृष्ट्वा समभिसंक्रम्य पौलस्त्यो वाक्यमब्रवीत्।
कच्चिदार्य शरैस्तीक्ष्णैर्न प्राणा ध्वंसितास्तव १५
विभीषणवचः श्रुत्वा जाम्बवानृक्षपुङ्गवः।
कृच्छ्रादभ्युद्गिरन्वाक्यमिदं वचनमब्रवीत् १६
नैर्ऋतेन्द्र महावीर्य स्वरेण त्वाभिलक्षये।
विद्धगात्रः शितैर्बाणैर्न त्वां पश्यामि चक्षुषा १७
अञ्जना सुप्रजा येन मातरिश्वा च सुव्रत।
हनूमान्वानरश्रेष्ठः प्राणान्धारयते क्वचित् १८

जाम्बवान्, सुषेण, वेगदर्शी, ॥ १० ॥ मैन्द, नल, ज्योतिर्मुख, द्विविद तथा पनसको समरभूमिमें मरा पडा देख ॥ ११ ॥ मेघनादने दिनके पंचम भागमें सरसठ करोड वानर मारे थे उन सबको भी देखा ॥ १२ ॥

वानरोंकी सेनाको बाणोंसे पीडित देख ये दोनों जाम्बवान्को ढूंढने लगे क्योंकि वे प्रथम तो वृद्ध दूसरे सैकडों बाण लगे थे पर ब्रह्माके पुत्र होनेसे इस दशामें भी कुछ दीप्तियुक्त होंगे इससे पहले उन्हींको ढूंढने लगे ॥ १३-१४॥ जाम्बवान्को देख बिभीषण बोले कि हे आर्य्य! आप जीवित हैं या हत प्राण होगये ॥ १५ ॥ बिभीषणकी बात सुन जाम्बवान् बडे कष्टसे बोला कि ॥ १६ ॥ हे राक्षसेंद्र! तुमको मैं वाणीके शब्दसे पहचानता हूं पर व्याकुलताके कारण नेत्रसे नहीं देख पाता ॥ १७॥ हे सुव्रत! पवनपुत्र वानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् जीते हैं वा नहीं ॥ १८ ॥ जाम्बवान्की बात सुन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुत्वा जाम्बवतो वाक्यमुवाचेदं विभीषणः।
आर्यपुत्रावतिक्रम्य कस्मात्पृच्छसि मारुतिम् १९
नैव राजनि सुग्रीवे नाङ्गदे नापि राघवे।
आर्य संदर्शितः स्नेहो यथा वायुसुते परः २०
विभीषणवचः श्रुत्वा जाम्बवान्वाक्यमब्रवीत्।
शृणु नैर्ऋतशार्दूल यस्मात्पृच्छामि मारुतिम् २१
अस्मिञ्जीवति वीरे तु हतमप्यहतं बलम्।
हनुमत्युज्झितप्राणे जीवन्तोऽपि मृता वयम् २२
धरते मारुतिस्तात मारुतप्रतिमो यदि।
वैश्वानरसमो वीर्ये जीविताशा ततो भवेत् २३
ततो वृद्धमुपागम्य विनयेनाभ्यवादयत्।
गृह्य जाम्बवतः पादौ हनूमान्मारुतात्मजः २४
श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं तथा विव्यथितेन्द्रियः।
पुनर्जातमिवात्मानं मन्यते प्लवगोत्तमः २५
ततोऽब्रवीन्महातेजा हनूमन्तं स जाम्बवान्।
आगच्छ हरिशार्दूल वानरांस्त्रातुमर्हसि २६
नान्यो विक्रमपर्याप्तस्त्वमेषां परमः सखा।

विभीषण बोले कि आप रामलक्ष्मणको छोड हनुमानको कैसे पूछते हैं? ॥ १९ ॥ जैसा स्नेह तुमने हनुमानमें दर्शाया वैसा न तो सुग्रीव व अङ्गद न राममें ही किया ॥ २० ॥ यह सुन जाम्बवान् बोले कि मैं हनुमान्को जिस कारण पूछता हूं सो सुनो ॥ २१ ॥

हनुमानके जीते हुए मरी हुई सेना भी जानो जीवित ही है और हनुमानके मर जानेपर हम लोग जीते भी मरेके समान हैं। ॥२२॥ जो हनुमान् जीवित होंगे तो हम लोगोंकी जानकी आशा होगी नहीं तो नहीं ॥ २३ ॥ यह सुन हनुमान् जाम्बवानके चरण पकड बोला कि मैं आपकी कृपासे जीवित हूं ॥ २४ ॥ हनूमानके वचन सुन जाम्बवान्ने अपना पुनर्जन्म माना ॥ २५ ॥ और फिर बोला कि हे हरिश्रेष्ठ! वानरोंकी रक्षा करनेके तुम योग्य हो ॥ २६ ॥ तुम इन वानर लोगोंके परम मित्र हो अब तुम्हारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

त्वत्पराक्रमकालोऽयं नान्यं पश्यामि कंचन २७
ऋक्षवानरवीराणामनीकानि प्रहर्षय।
विशल्यौ कुरु चाप्येतौ सादितौ रामलक्ष्मणौ २८
गत्वा परममध्वानमुपर्युपरि सागरम्।
हिमवन्तं नगश्रेष्ठं हनूमन्गन्तुमर्हसि २९
ततः काञ्चनमत्युग्रमृषभं पर्वतोपमम्।
कैलासशिखरं चात्र द्रक्ष्यस्यरिनिषूदन ३०
तयोः शिखरयोर्मध्ये प्रदीप्तमतुलप्रभम्।
सर्वौषधियुतं वीर द्रक्ष्यस्योषधिपर्वतम् ३१
तस्य वानरशार्दूल चतस्रो मूर्ध्नि संभवाः।
द्रक्ष्यस्योषधयो दीप्ता दीपयन्तीर्दिशो दश ३२
मृतसंजीवनीं चैव विशल्यकरणीमपि।
सुवर्णकरणीं चैव संधानीं च महौषधीम् ३३
ताः सर्वा हनुमन्गृह्य क्षिप्रमागन्तुमर्हसि।
आश्वासय हरीन्प्राणैर्योज्य गन्धवहात्मज ३४
श्रुत्वा जाम्बवतो वाक्यं हनूमान्मारुतात्मजः।
आपूर्यत बलोद्धर्षैर्वायुवेगैरिवार्णवः ३५

पराक्रमका समय आया है ॥ २७ ॥ इससे अब ऋक्षों और वानरोंको प्रसन्न करो और दुःखमें पडे रामलक्ष्मणको मुक्त करो ॥ २८ ॥

हे वायुपुत्र ! समुद्रके ऊपर ऊपर दूरतक चले जाओ और हिमवान् गिरि-पर पहुंचो ॥ २९ ॥ उसके आगे तुमको ऋषभ पर्वत दिखाई देगा फिर उसके आगे कैलास गिरि देखोगे ॥ ३० ॥ उन दोनोंके बीचमें सब औषध-युक्त पर्वत देखोगे ॥ ३१ ॥ हे हरिपुङ्गव ! उस पर्वतपर दिशाओंको, प्रज्वलित करती चार औषधियां देखोगे ॥ ३२ ॥ उनके मृतसंजीविनी विशल्यकरणी, सुवर्णकरणी और संधानी नाम हैं ॥ ३३ ॥ उनको लाकर वानरोंको जिलाकर उनको दिलासा दो ॥ ३४ ॥ जाम्बवानूकी बात सुन हनुमान् बलकी उद्धर्षतासे पूर्ण होगया ॥ ३५ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स पर्वततटाग्रस्थः पीडयन्पर्वतोत्तमम् ।
हनूमान्दृश्यते वीरो द्वितीय इव पर्वतः ३६
हरिपादविनिर्भग्नो निषसाद स पर्वतः ।
न शशाक तदात्मानं वोढुं भृशनिपीडितः ३७
तस्य पेतुर्नगा भूमौ दरिवेगाच्च जज्वलुः ।
शृङ्गाणि च व्यकीर्यन्त पीडितस्य हनूमता ३८
तस्मिन्संपीड्यमाने तु भग्नद्रुमशिलातले ।
न शेकुर्वानराः स्थातुं घूर्णमाने नगोत्तमे ३९
सा घूर्णितमहाद्वारा प्रभग्नगृहगोपुरा ।
लङ्का त्रासाकुला रात्रौ प्रनृत्येवाभवत्तदा ४०
पृथिवीधरसंकाशो निपीड्य पृथिवीधरम् ।
पृथिवीं क्षोभयामास सार्णवां मारुतात्मजः ४१
पद्भ्यां तु शैलमाविध्य वडवामुखवन्मुखम् ।
विवृत्योग्रं ननादोच्चैस्त्रासयन्रजनीचरान् ४२
तस्य नानद्यमानस्य श्रुत्वा निनदमुत्तमम् ।
लङ्कास्था राक्षसव्याघ्रा न शेकुः स्पन्दितुं क्वचित् ४३
नमस्कृत्वा समुद्राय मारुतिर्भीमविक्रमः ।

हनुमान् पर्वताग्रमें खडे हो दूसरे पर्वतके तुल्य दिखाई देने लगे ॥ ३६ ॥ त्रिकूट गिरि जिस पर हनुमान खडे थे उनके पादसे निर्भिन्न हो नीचेको घुस गया ॥ ३७ ॥ उस पर्वतके सब शिखर गिर पडे और फिर सब फट गये ॥ ३८ ॥ उस गिरिके पीडित होनेपर जब उसपरके वृक्ष शिला भग्न होगई तो उसपर वानर भी न ठहर सके ॥ ३९ ॥ उसपर बसी हुई लङ्काके भी बहुतसे द्वार मन्दिरादि गिर पडे ॥ ४० ॥ हनूमानने उस पर्वतको दबाकर पृथ्वीको चलायमान कर दिया ॥ ४१ ॥ पादोंसे पर्वतको पीडित कर मुख फैला राक्षसोंको भयभीत करते हुये हनूमानने बडे बलसे नाद किया ॥ ४२ ॥ उस गर्जनको सुन लङ्काके राक्षस भयसे जहांके तहां सिमिटि कर पड रहे ॥ ४३ ॥ तब हनूमान रामको प्रणाम कर परमोत्कृष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

राघवार्थे परं कर्म समीहत परन्तपः ४४
स पुच्छमुद्यम्य भुजङ्गकल्पं विनम्य पृष्ठं श्रवणे निकुच्य।
विवृत्य वक्त्रं वडवामुखाभमापुप्लुवे व्योम्नि स चण्डवेगः ४५
स वृक्षखण्डांस्तरसा जहार शैलाञ्छिलाः प्राकृतवानरांश्च।
बाहूरुवेगोद्गतसंप्रणुन्नास्ते क्षीणवेगाः सलिले निपेतुः ४६
स तौ प्रसार्योरगभोगकल्पौ भुजौ भुजङ्गारिनिकाशवीर्यः।
जगाम शैलं नगराजमग्र्यं दिशः प्रकर्षन्निव वायुसूनुः ४७
स सागरं घूर्णितवीचिमालं तदम्भसा भ्रामितसर्वसत्त्वम्।
समीक्ष्यमाणः सहसा जगाम चक्रं यथा विष्णुकराग्रमुक्तम् ४८
स पर्वतान्पक्षिगणान्सरांसि नदीस्तटाकानि पुरोत्तमानि।
स्फीताञ्जनांस्तानपि संप्रवीक्ष्य जगाम वेगात्पितृतुल्यवेगः ४९
आदित्यपथमाश्रित्य जगाम स गतश्रमः।
हनूमांस्त्वरितो वीरः पितुस्तुल्यपराक्रमः ५०
जवेन महता युक्तो मारुतिर्वातरंहसा।
जगाम हरिशार्दूलो दिशः शब्देन नादयन् ५१

कर्म करनेकी कांक्षा करने लगा॥ ४४॥

प्रचण्ड वेगसे हनुमान अपनी पूंछ ऊपरको उठा कान सिकोड मुख फैला गगन मार्ग होकर कूदा ॥ ४५॥ कूदनेके समय लङ्कास्थित वृक्ष, पर्वत, शिलायें और वहां सदा रहनेवाले प्राकृत वानर उनकी बाहु और जांघोंके वेगसे प्रेरित हो सागरमें गिर पडे ॥ ४६॥ वेगनाव हनूमान अपनी भुजोंको फैला हिमालयको सब दिशाओंको खींचता हुआ सो गया॥ ४७॥ समुद्रको देखता हुआ हनुमान विष्णुके कराग्रसे छूटे क्रमके तुल्य आगे बढा॥ ४८॥ पवनके वेगके समान वेगवान हनूमान पर्वत वृक्ष सर नदी तडाग पुर धन व मनुष्य देखता चला जाता था पराक्रमी हनुमान् आकाश मार्ग होकर बडी जल्दीके साथ चला गया॥ ४९-५०॥

पवन कुमार दिशाओंको निज नादसे पूरित करता हुवा चला गया॥५१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरञ्जाम्बवतो वाक्यं मारुतिर्भीमविक्रमः।
ददर्श सहसा चापि हिमवन्तं महाकपिः ५२
नानाप्रस्रवणोपेतं बहुकन्दरनिर्झरम्।
श्वेताभ्रचयसंकाशैः शिखरैश्चारुदर्शनैः ५३
शोभितं विविधैर्वृक्षैरगमत्पर्वतोत्तमम् ५४
स तं समासाद्य महानगेन्द्रमतिप्रवृद्धोत्तमहेमशृङ्गम्।
ददर्श पुण्यानि महाश्रमाणि सुरर्षिसङ्घोत्तमसेवितानि ५५
स ब्रह्मकोशं रजतालयं च शक्रालयं रुद्रशरप्रमोक्षम्।
हयाननं ब्रह्मशिरश्च दीप्तं ददर्श वैवस्वतकिङ्करांश्च ५६
वह्न्यालयं वैश्रवणालयं च सूर्यप्रभं सूर्यनिबन्धनं च।
ब्रह्मालयं शंकरकार्मुकं च ददर्श नाभिं च वसुंधरायाः ५७
कैलासमुग्रं हिमवच्छिलां च तं वै वृषं काञ्चनशैलमग्र्यम्।
प्रदीप्तसर्वौषधिसंप्रदीप्तं ददर्श सर्वौषधिपर्वतेन्द्रम् ५८
स तं समीक्ष्यानलराशिदीप्तं विसिस्मिये वासवदूतसूनुः।
आप्लुत्य तं चौषधिपर्वतेन्द्रं तत्रौषधीनां विचयं चकार ५९
स योजनसहस्राणि समतीत्य महाकपिः।
दिव्यौषधिधरं शैलं व्यचरन्मारुतात्मजः ६०

हनुमान्‌ने बडी शीघ्रतासे जा रात ही में हिमालय पहाडको देखा ॥५२॥ झरने सोतों कन्दराओं निर्झरोंसहित श्वेत बादलके समान उजले उस पर्वतोत्तमपर हनुमान् गया। उस पर्वतराजपर पहुंच उसने बहुतसे आश्रम देखे ॥ ५३–५५ ॥ फिर उसीपर ब्रह्मकोश रजतालय इन्द्रालय देदीप्यमान ब्रह्मशिर तथा यमराजके किंकरोंको देखा ॥ ५६ ॥ फिर कुबेर स्थान सूर्य-निबन्धन स्थान ब्रह्मासन पृथ्वीकी नाभि आदि भी देखी ॥ ५७ ॥ फिर कैलाश पर्वत देखा उसपर स्थित शिवको भी देखा ॥ ५८ ॥ उस पर्वतको अग्निवत् प्रकाशित देख हनुमान् आश्चर्य करने लगा और संजीवनी आदि ढूंढने लगा ॥ ५९ ॥

हनुमान् एक हजार योजन लांघकर औषधियों युक्त उस गिरिपर घूमने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

महौषध्यस्ततः सर्वास्तस्मिन्पर्वतसत्तमे ।
विज्ञायार्थिनमायान्तं ततो जग्मुरदर्शनम् ६१
स ता महात्मा हनुमानपश्यंश्चुकोप रोषाच्च भृशं ननाद ।
अमृष्यमाणोऽग्निसमानचक्षुर्महीधरेन्द्रं तमुवाच वाक्यम् ६२
किमेतदेवं सुविनिश्चितं ते यद्राघवे नासि कृतानुकम्पः ।
पश्याद्य मद्बाहुबलाभिभूतो विकीर्णमात्मानमथो नगेन्द्र ६३
स तस्य शृङ्गं सनगं सनागं सकाञ्चनं धातुसहस्रजुष्टम् ।
विकीर्णकूटं ज्वलिताग्रसानुं प्रगृह्य वेगात्सहसोन्ममाथ ६४
स तं समुत्पाट्य खमुत्पपात वित्रास्य लोकान्ससुरान्सुरेन्द्रान् ।
संस्तूयमानः खचरैरनेकैर्जगाम वेगाद्गरुडोग्रवेगः ६५
स भास्कराध्वानमनुप्रपन्नस्तं भास्कराभं शिखरं प्रगृह्य ।
बभौ तदा भास्करसंनिकाशो रवेः समीपे प्रतिभास्कराभः ६६
स तेन शैलेन भृशं रराज शैलोपमो गन्धवहात्मजस्तु ।
सहस्रधारेण सपावकेन चक्रेण खे विष्णुरिवार्पितेन ६७
तं वानराः प्रेक्ष्य तदा विनेदुः स तानपि प्रेक्ष्य मुदा ननाद ।
तेषां समुत्कृष्टरवं निशम्य लङ्कालया भीमतरं विनेदुः ६८

लगा ॥ ६० ॥ पर उस पर्वतपरकी चारों महौषधियां अदृश्य होगई ॥६१॥ उन औषधियोंको हनुमान्ने न देख बडा कोप किया उस पर्वतसे बोला कि तुमने यह क्या किया कि जो रामपर दया नहीं करते अब मैं तुम्हें चूर्ण कर डालूंगा इतना कह उन्होंने शृङ्ग, शिला, काट बडी शीघ्रताके साथ नीचेसे उसको हिलाया और ॥ ६२-६४ फिर उसे उखाड गगनको कूद गरुडवत् वीर्यवान् हनुमान चल दिया। ॥ ६५ आकाशके मार्गमें प्रवेश कर पर्वतको लिये वह बराबर सूर्य समान प्रकाशित हुआ ॥ ६६ ॥ उस पर्वत सहित पर्वताकार हनुमान सुदर्शन चक्रको लिये विष्णुके समान शोभा देने लगा ॥ ६७ ॥

हनुमानको आते देख सब वानर नाद कर उठे और उस नादको सुन लङ्कानिवासी राक्षस अति भयङ्कर नाद करने लगे ॥ ६८ ॥ ततः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततो महात्मा निपपात तस्मिञ्शैलोत्तमे वानरसैन्यमध्ये ।
हर्युत्तमेभ्यः शिरसाभिवाद्य बिभीषणं तत्र च सस्वजे सः ६९
तावप्युभौ मानुषराजपुत्रौ तं गन्धमाघ्राय महौषधीनाम् ।
बभूवतुस्तत्र तदा विशल्यावुत्तस्थुरन्ये च हरिप्रवीराः ७०
सर्वे विशल्या विरुजा क्षणेन हरिप्रवीराश्च हताश्च ये स्युः ।
गन्धेन तासां प्रवरौषधीनां सुप्ता निशान्तेष्विव संप्रबुद्धाः ७१

यदा प्रभृति लङ्कायां युध्यन्ते हरिराक्षसाः ।
तदाप्रभृति मानार्थमाज्ञया रावणस्य च ७२
ये हन्यन्ते रणे तत्र राक्षसाः कपिकुञ्जरैः ।
हता हतास्तु क्षिप्यन्ते सर्व एव तु सागरे ७३

ततो हरिर्गन्धवहात्मजस्तु तमोषधीशैलमुदग्रवेगः ।
निनाय वेगाद्धिमवन्तमेव पुनश्च रामेण समाजगाम ७४

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकाण्डे चतुःसप्ततितमः सर्गः ॥ ७४॥[३३५८]

हनुमान त्रिकूट पर्वतपर उत्तर वानरोंको प्रणाम कर बिभीषणको मिले ॥६९॥ उन औषधियोंकी गन्ध पाकर रामलक्ष्मण तथा अन्य वीर वानर मूर्छा रहित होगये ॥ ७० ॥ संग्राममें जो जो वानर हत हो गये थे वे सब उस श्रेष्ठ औषधीके गंधसे जिस तरह रात्रिमें निद्रिस्थ मनुष्य जगता है उसी तरह शल्यरहित व वेदनारहित हो जाग उठे ॥ ७१ ॥ लंकामें वानर व राक्षसोंके युद्धमें वानरश्रेष्ठने जिन राक्षसोंका संग्राममें वध किया था उन सब राक्षसोंको रावणने समुद्रमें फेंकवा दिया था; ताकि शत्रुको हमारे मृतसेनाकी संख्याका पता न चले (इसलिये उस औषधीके गन्धसे राक्षस जीवित नहीं हुआ) ॥ ७२-७३ ॥ तदनंतर महावेगवान वायुपुत्र हनुमानने उस औषधिमय हिमालय पर्वतको जहाँसे लाया था वहीं रखकर रामचन्द्र-जीके पास लौट आया ॥ ७४ ॥

॥ यहां ७४ वाँ सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

॥ पञ्चसप्ततितमः सर्गः ॥

ततोऽब्रवीन्महातेजाः सुग्रीवो वानरेश्वरः ।
अर्थ्यं विज्ञापयंश्चापि हनूमन्तमिदं वचः १
यतो हतः कुम्भकर्णः कुमाराश्च निषूदिताः ।
नेदानीमुपनिर्हारं रावणो दातुमर्हति २
ये ये महाबलाः सन्ति लघवश्च प्लवङ्गमाः ।
लङ्कामभिपतन्त्वाशु गृह्योल्काः प्लवगर्षभाः ३
ततोऽस्तं गत आदित्ये रौद्रे तस्मिन्निशामुखे ।
लङ्कामभिमुखा सोल्का जग्मुस्ते प्लवगर्षभाः ४
उल्काहस्तैर्हरिगणैः सर्वतः समभिद्रुताः ।
आरक्षस्था विरूपाक्षाः सहसा विप्रदुद्रुवुः ५
गोपुराट्टप्रतोलीषु चर्यासु विविधासु च ।
प्रासादेषु च संहृष्टाः ससृजुस्ते हुताशनम् ६
तेषां गृहसहस्राणि ददाह हुतभुक्तदा ।
प्रासादाः पर्वताकाराः पतन्ति धरणीतले ७
अगुरुर्दह्यते तत्र परं चैव सुचन्दनम् ।
मौक्तिका मणयः स्निग्धा वज्रं चापि प्रवालकम् ८

ततः तेजस्वी सुग्रीव हनुमानसे यह बोला ॥ १ ॥ कि जहां कुम्भकर्ण और नरान्तक आदि रावण कुमार मारे गये हैं वहां अब रावण युद्धदान न देने पावे ॥ २ ॥ महाबली वानर उल्कादि ले लङ्काको शीघ्र ही जावें ॥ ३ ॥ इस प्रकारकी आज्ञा पा सन्ध्या होते ही सब वानर उल्कादि ले ले लंकाके सन्मुख चले ॥ ४ ॥ उल्का हाथोंमें लिये वानरोंने नगरोंसे राक्षसोंको डरवाया ॥ ५ ॥ वानरोंने गोपुर, अटारी, छज्जा और चर्या तथा घरोहरोंमें आग लगादी ॥ ६ ॥ उन राक्षसोंके सहस्रों घर अग्निने जला दिये जल जलकर पृथ्वीपर गिर पड़े ॥ ७ ॥

अगरुचन्दन मोती, मणि, हीरा आदि जलकर खाक होगये ॥८॥ क्षौम,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षौमं च दह्यते तत्र कौशेयं चापि शोभनम्।
आविकं विविधं चौर्णं काञ्चनं भाण्डमायुधम् ९
नानाविकृतसंस्थानं वाजिभाण्डपरिच्छदम्।
गजग्रैवेयकक्ष्याश्च रथभाण्डांश्च संस्कृतान् १०
तनुत्राणि च योधानां हस्त्यश्वनां च चर्म च।
खड्गा धनूंषि ज्याबाणास्तोमराङ्कुशशक्तयः ११
रोमजं वालजं चर्म व्याघ्रजं चाण्डजं बहु।
मुक्तामणिविचित्रांश्च प्रासादांश्च समन्ततः १२
विविधानस्त्रसंघातानग्निर्दहति तत्र वै।
नानाविधान्गृहांश्चित्रान्ददाह हुतभुक्तदा १३
आवासान्राक्षसानां च सर्वेषां गृहगृध्नुनाम्।
हेमचित्रतनुत्राणां स्रग्भाण्डाम्बरधारिणाम् १४
सीधुपानचलाक्षाणां मदविह्वलगामिनाम्।
कान्तालम्बितवस्त्राणां शत्रुसंजातमन्युनाम् १५
गदाशूलासिहस्तानां खादतां पिबतामपि।
शयनेषु महार्हेषु प्रसुप्तानां प्रियैः सह १६
त्रस्तानां गच्छतां तूर्णं पुत्रानादाय सर्वतः।
तेषां शतसहस्राणि तदा लङ्कानिवासिनाम् १७

कौशेय आदि रेशमी कपडे जलने लगे ॥ ९ ॥ घोडोंके अलंकार, हाथियोंके अलंकार रथोंके भूषण ॥ १० ॥ योधोंके कवच, बख्तर आदि तथा खड्ग धनुषबाण, भाला शक्तियों, ॥ ११ ॥ रोमज वस्त्र, चामरादि चर्म तथा व्याघ्र चर्म और कस्तूर्यादि अंडज पदार्थ तथा मुक्तामण्यादि जटित प्रासाद ॥१२॥ विविध अस्त्र शस्त्रादि और नाना गृहोंको अग्निने राख कर दिया ॥१३॥ सब राक्षसोंके स्थान सुवर्णके कवचादि धारे माला वस्त्रधारी ॥ १४ ॥ मदिरा-पानसे चञ्चलनेत्र स्त्रियोंके वस्त्र पकडे शत्रुओंपर क्रोध किये ॥ १५ ॥

गदा, खड्ग हाथोंमें लिये अपनी अपनी प्रियोंके साथ सोते ॥ १६ ॥ डरसे चारों ओर भागते हुये सैकडों, हजारों लंकामें रहनेवालोंको ॥ १७ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अदहत्पावकस्तत्र जज्वाल च पुनः पुनः ।
सारवन्ति महार्हाणि गम्भीरगुणवन्ति च १८
हेमचन्द्रार्धचन्द्राणि चन्द्रशालोत्तमानि च ।
तत्र चित्रगवाक्षाणि साधिष्ठानानि सर्वशः १९
मणिविद्रुमचित्राणि स्पृशन्तीव दिवाकरम् ।
क्रौञ्चबर्हिणवर्णानां भूषणानां च निःस्वनैः ॥
नादितान्यचलाभानि वेश्मान्यग्निर्ददाह सः २०
ज्वलनेन परीतानि तोरणानि चकाशिरे ।
विद्युद्भिरिव नद्धानि मेघजालानि घर्मगे २१
ज्वलनेन परीतानि गृहाणि प्रचकाशिरे ।
दावाग्निदीप्तानि यथा शिखराणि महागिरेः २२
विमानेषु प्रसुप्ताश्च दह्यमाना वराङ्गनाः ।
त्यक्ताभरणसंयोगा हाहेत्युच्चैर्विचुक्रुशुः २३
तत्र चाग्निपरीतानि निपेतुर्भवनान्यपि ।
वज्रिवज्रहतानीव शिखराणि महागिरेः २४
तानि निर्दह्यमानानि दूरतः प्रचकाशिरे ।
हिमवच्छिखराणीव दह्यमानानि सर्वशः २५

अग्निने जलाकर भस्मकर डाला बडे बडे मोलके गम्भीर गुणवाले ॥ १८ ॥ सुवर्ण चन्द्राकार, अर्द्धचन्द्राकार बने महलोंके झरोखे व सुधामय हर्म्य ॥१९॥ मणियों मूंगोसे खचित क्रौंचमयूर वीणा और भूषणोंके शब्दोंसे नादित मन्दिर अग्निने जला डाले ॥ २० ॥ और अग्निसे जलते हुये तोरण सविद्यु मेघोंके समान प्रकाशित होने लगे ॥ २१ ॥ अग्निसे जलते हुये घर दावाग्नि लगे पर्वतके शिखरोंके तुल्य प्रकाशित होने लगे ॥ २२ ॥ स्त्रियां गहना वस्त्रादि फेंक हाहाकार करने लगीं ॥ २३ ॥ अग्निसे जलकर मन्दिर इन्द्रके वज्रसे कटे गिरिशिखरोंके तुल्य पृथ्वीपर गिरने लगे ॥ २४ ॥ अग्नि प्रज्वलित प्रासादादिकोंके जलनेसे रातमें लङ्का पुष्पमय टंसूके तुल्य शोभित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर्म्याग्रैर्दह्यमानैश्च ज्वालाप्रज्वलितैरपि ।
रात्रौ सा दृश्यते लङ्का पुष्पितैरिव किंशुकैः   २६
हस्त्यध्यक्षैर्गजैर्मुक्तैर्मुक्तैश्च तुरगैरपि ।
बभूव लङ्का लोकान्ते भ्रान्तग्राह इवार्णवः   २७
अश्वं मुक्तं गजो दृष्ट्वा क्वचिद्भीतोपसर्पति ।
भीतो भीतं गजं दृष्ट्वा क्वचिदश्वो निवर्तते   २८
लङ्कायां दह्यमानायां शुशुभे च महोदधिः ।
छायासंसक्तसलिलो लोहितोद इवार्णवे   २९
सा बभूव मुहूर्तेन हरिभिर्दीपिता पुरी ।
लोकस्यास्य क्षये घोरे प्रदीप्तेव वसुंधरा   ३०
नारीजनस्य धूमेन व्याप्तस्योच्चैर्विनेदुषः ।
स्वनो ज्वलनतप्तस्य शुश्रुवे शतयोजनं   ३१
प्रदग्धकायानपरान्राक्षसान्निर्गतान्बहिः ।
सहसा ह्युत्पतन्ति स्म हरयोऽथ युयुत्सवः   ३२
उद्घुष्टं वानराणां च राक्षसानां च निःस्वनम् ।
दिशो दश समुद्रं च पृथिवीं च व्यनादयत्   ३३

हुई ॥ २५ ॥ ज्वालाको प्रज्वलित करनेके लिये बडे भयानक हवायें चलने लगी मानो लंका फूलसे युक्त पलाश वृक्ष सदृश दीखने लगा ॥ २६ ॥ महॉतसे छोडे हुए हाथी सवारसे छोडे हुए घोडे इनके योगसे वह लंका प्रलयकालमें जलचर प्राणियोंसे युक्त समुद्रसदृश दीखने लगा ॥ २७ ॥ कहीं छूटे हुये अश्वोंको देख डरसे हाथी भागता था कहीं डरे हुये हाथीको देख घोडा लौट पडता था ॥ २८ ॥

लङ्काके जलनेपर उसकी छायासे लाल रंगके समुद्रके समान वह क्षीर-सागर शोभा देने लगा ॥ २९ ॥ दो घडीमें वानरोंने लङ्काको जला दिया ॥ ३० ॥ व्याकुल स्त्रियोंका रोदन सौ योजनतक सुनाई दिया ॥३१॥ राक्षस नगरके बाहर भागे उनको वानर कूद कूद मारने लगे ॥ ३२ ॥ उस समय वानर व निशाचरोंके शब्दसे सब दिशा पूर्ण होगई ॥ ३३ ॥ राम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विशल्यौ च महात्मानौ तावुभौ रामलक्ष्मणौ।
असंभ्रान्तौ जगृहतुस्त उभे धनुषी वरे ३४
ततो विस्फारयामास रामश्च धनुरुत्तमम्।
बभूव तुमुलः शब्दो राक्षसानां भयावहः ३५
अशोभत तदा रामो धनुर्विस्फारयन्महत्।
भगवानिव संक्रुद्धो भवो वेदमयं धनुः ३६
उद्घुष्टं वानराणां च राक्षसानां च निःस्वनम्।
ज्याशब्दस्तावुभौ शब्दावति रामस्य शुश्रुवे ३७
वानरोद्घुष्टघोषश्च राक्षसानां च निःस्वनः।
ज्याशब्दश्चापि रामस्य त्रयं व्याप दिशो दश ३८
तस्य कार्मुकनिर्मुक्तैः शरैस्तत्पुरगोपुरम्।
कैलासशृङ्गप्रतिमं विकीर्णमभवद्भुवि ३९
ततो रामशरान्दृष्ट्वा विमानेषु गृहेषु च।
संनाहो राक्षसेन्द्राणां तुमुलः समपद्यत ४०
तेषां सनह्यमानानां सिंहनादं च कुर्वताम्।
शर्वरी राक्षसेन्द्राणां रौद्रीव समपद्यत ४१
आदिष्टा वानरेन्द्रास्ते सुग्रीवेण महात्मना।

लक्ष्मणने भी श्रेष्ठ धनुष धारण किये ॥ ३४ ॥ रामने धनुषपर टंकोर दी जिससे बहुत भारी शब्द हुआ ॥ ३५ ॥ उस समय टङ्कोर देते राम प्रलयकालमें कोप किये महादेवके तुल्य शोभित हुये ॥ ३६ ॥

वानरों निशाचरोंका नाद और धनुषका शब्द दोनों एक दूसरेको जीतते हुये सुनाई देते थे ॥३७॥ वानरों, राक्षसों और रामके धनुषका शब्द इन तीनोंसे सब दिशा पूर्ण होगई ॥ ३८ ॥ रामके चापसे छूटे बाणोंके लगनेसे लङ्काके फाटक विदीर्ण हो गिर पडे ॥ ३९ ॥ इसपर राक्षसगण युद्ध करनेके लिये तैयार होने लगे ॥ ४० ॥ उन राक्षसोंके सिंहनाद करनेसे वह रात्रि कालरात्रिके तुल्य भयङ्कर होगई ॥ ४१ ॥ सुग्रीवने वानरोंको आज्ञा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसन्नं द्वारमासाद्य युध्यध्वं च प्लवङ्गमाः ४२
यश्च वो वितथं कुर्यात्तत्र तत्राप्युपस्थितः ।
स हन्तव्योऽभिसंप्लुत्य राजशासनदूषकः ४३
तेषु वानरमुख्येषु दीप्तोल्कोज्ज्वलपाणिषु ।
स्थितेषु द्वारमाश्रित्य रावणं क्रोध आविशत् ४४
तस्य जृम्भितविक्षेपाद्व्यामिश्रा वै दिशो दश ।
रूपवानिव रुद्रस्य मन्युर्गात्रेष्वदृश्यत ४५
स कुम्भं च निकुम्भं च कुम्भकर्णात्मजावुभौ ।
प्रेषयामास संक्रुद्धो राक्षसैर्बहुभिः सह ४६
यूपाक्षः शोणिताक्षश्च प्रजङ्घः कम्पनस्तथा ।
निर्ययुः कौम्भकर्णाभ्यां सह रावणशासनात् ४७
शशास चैव तान्सर्वान्राक्षसान्स महाबलान् ।
राक्षसा गच्छताद्यैव सिंहनादं च नादयन् ४८
ततस्तु चोदितास्तेन राक्षसा ज्वलितायुधाः ।
लङ्काया निर्ययुर्वीराः प्रणदन्तः पुनःपुनः ४९
रक्षसां भूषणस्थाभिर्भाभिः स्वाभिश्च सर्वशः ।
चक्रुस्ते सप्रभं व्योम हरयश्चाग्निभिः सह ५०

दी कि फाटकोंपर जा युद्ध करो ॥ ४२ ॥ जो स्वस्थानपर स्थित मेरी आज्ञाके विरुद्ध करेगा वह अवश्य मार डाला जायगा ॥ ४३ ॥

जब सब वानर उल्का ले लङ्काके फाटक घेर खडे हुये तो रावण बडा कुपित हुआ ॥ ४४ ॥ क्रोधकर जंभाई लेनेपर सब दिशा उससे युक्त होगई ॥ ४५ ॥ रावणने कुम्भकर्णके पुत्र कुम्भ और निकुम्भको युद्ध करनेके लिये रवाना किया ॥ ४६ ॥ कुम्भकर्णके पुत्रोंके साथ यूपाक्ष, शोणिताक्ष, प्रजंघ और कम्पन भी चले ॥ ४७ ॥ उन सबको रावणने आज्ञा दी कि यहींसे सिंहनाद करते रवाना हो ॥ ४८ ॥ रावणकी आज्ञा पा राक्षस गर्जना करते शस्त्र लिये बाहर निकले ॥ ४९ ॥

राक्षसोंके भूषणोंकी दीप्तिसे तथा अपनी दीप्तिसे वानरोंने गगनको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तत्र ताराधिपस्याभा ताराणां भा तथैव च ।
तयोराभरणाभा च ज्वलिता द्यामभासयत् ५१
चन्द्राभा भूषणाभा च ग्रहाणां ज्वलिता च भा ।
हरिराक्षससैन्यानि भ्राजयामास सर्वतः ५२
तत्र चार्धप्रदीप्तानां गृहाणां सागरः पुनः ।
भाभिः संसक्तसलिलश्चलोर्मिः शुशुभे ध्रुवम् ५३
पताकाध्वजसंयुक्तमुत्तमासिपरश्वधम् ।
भीमाश्वरथमातङ्गं नानापत्तिसमाकुलम् ५४
दीप्तशूलगदाखङ्गप्रासतोमरकार्मुकम् ।
तद्राक्षसबलं भीमं घोरविक्रमपौरुषम् ५५
ददृशे ज्वलितप्रासं किङ्किणीशतनादितम् ।
हेमजालाचित भुजं व्यावेष्टितपरश्वधम् ५६
व्याघूर्णितमहाशस्त्रं बाणसंसक्तकार्मुकम् ।
गन्धमाल्यमधूत्सेकसंमोदितमहानिलम् ५७
घोरं शूरजनाकीर्णं महाम्बुधरनिःस्वनम् ।
तद्दृष्ट्वा बलमायातं राक्षसानां दुरासदम् ५८

प्रकाशित कर दिया ॥ ५० ॥ चन्द्रमा व दोनों सैन्योंके भूषणोंकी प्रभाने अन्तरिक्षको प्रकाशित कर दिया चन्द्रमाकी दीप्ति, भूषणोंकी दीप्ति और ग्रहोंकी दीप्तिने सब ओरसे वानर तथा राक्षस सैन्यको शोभित किया॥५१-५२॥ अधजले मकानोंकी दीप्तिसे मिलकर सागरका जल अधिक शोभित हुआ ॥ ५३ ॥ ध्वजा, उत्तम हथियार, परिघ, घोडे, हाथी, नाना भांतिके पैदल, प्रदीप्त शूल, गदा, खड्ग, भाला, तोमर, धनुष, वाहिनी ॥ ५४-५५ ॥ ज्वलित भाला किंकिणियोंसे नादित सुवर्णजटित भुजोंसमेत परिघोंसे वेष्टित ॥ ५६ ॥ धनुषोंपर बाण चढे गन्धमाला मधुओंकी गंधसे पवनको मोदित करता ॥ ५७ ॥ शूरजनोंके युक्त होनेसे अति घोर शब्द करते राक्षसोंकी सैन्यको आता देख ॥ ५८ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संचचाल प्लवङ्गानां बलमुच्चैर्ननाद च ५९
जवेनाप्लुत्य च पुनस्तद्बलं रक्षसां महत् ।
अभ्ययात्प्रत्यरिबलं पतङ्गा इव पावकम् ६०
तेषां भुजपरामर्शव्यामृष्टपरिघाशनि ।
राक्षसानां बलं श्रेष्ठं भूयः परमशोभत ६१
तत्रोन्मत्ता इवोत्पेतुर्हरयोऽथ युयुत्सवः ।
तरुशैलैरभिघ्नन्तो मुष्टिभिश्च निशाचरान् ६२
तथैवापततां तेषां हरीणां निशितैः शरैः ।
शिरांसि सहसा जन्हू राक्षसा भीमविक्रमाः ६३
दशनैर्हतकर्णाश्च मुष्टिभिर्भिन्नमस्तकाः ।
शिलाप्रहारभग्नाङ्गा विचेरुस्तत्र राक्षसाः ६४
तथैवाप्यपरे तेषां कपीनामासिभिः शितैः ।
प्रवरानभितो जघ्नुर्घोररूपा निशाचराः ६५
घ्नन्तमन्यं जघानान्यः पातयन्तमपातयत् ।
गर्हमाणं जगर्हान्यो दशन्तमपरादशत् ६६
देहीत्यन्यो ददात्यन्यो ददामीत्यपरः पुनः ।
किं क्लेशयसि तिष्ठेति तत्रान्योन्यं बभाषिरे ६७

वानर सेनाने आगे बढ नाद किया ॥ ५९ ॥ राक्षसोंकी सेना वेगसे कूद वानर सेनामें घुस पडी ॥ ६० ॥ उन राक्षसोंके भुजबलसे चलाये गये वज्र परिघसहित राक्षसोंकी वह सेना फिर अति शोभित हुई ॥ ६१ ॥ और वृक्ष, पाषाण और घूंसोंसे राक्षसोंको वानर मारने लगे ॥ ६२ ॥ तथा राक्षस बाणोंसे वानरोंके मूड काटने लगे ॥ ६३ ॥ वानरों द्वारा कान कटे, शिर कटे अङ्ग भङ्ग हुये राक्षसगण भी इधर उधर घूमने लगे ॥ ६४ ॥ राक्षसोंने भी वानरोंको तलवारसे मारा ॥ ६५ ॥ किसीसे किसीको मारनेके पहले ही मारा डाला किसीने गिराते हुये ही गिरा दिया, कोई किसीको काटने लगा, उसके उसने भी काट लिया ॥ ६६ ज्योंहीं एक दूसरेसे युद्ध मांगता वैसे ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विप्रलम्भितशस्त्रं च विमुक्तकवचायुधम्।
समुद्यतमहाप्रासं मुष्टिशूलासिकुन्तलम् ६८
प्रावर्तत महारौद्रं युद्धं वानररक्षसाम्।
वानरान्दश सप्तेति राक्षसा जघ्नुराहवे ६९
विप्रलम्भितवस्त्रं च विमुक्तकवचध्वजम्।
बलं राक्षसमालम्ब्य वानराः पर्यवारयन् ७०

इत्यार्षे श्रीमद्रा० वाल्मी० आदि० युद्धकांडे पञ्चसप्ततितमः सर्गः ॥७५॥ [३४२८]

दूसरा दे देता ॥ ६७ ॥ परस्पर शस्त्रोंको बचाते हुये बडे बडे भाला, शूल, खड्ग आदिसे ॥ ६८ ॥ वानरों और राक्षसोंका महा भयङ्कर संग्राम होने लगा ॥ ६९ ॥ और जिन राक्षसोंको वस्त्रसे अस्तव्यस्त होनेपर कवच व ध्वज गिर गया था ऐसे राक्षस सैन्यको पकडकर वानर गराडा देने लगा ॥७०॥

यहां ७५ वां सर्ग समाप्त हुआ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

n Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

uru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jal

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

u Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur